सं० ३४



वा॰ अथवाद्याध्यायप्रारंभः ॥ अबवाद्याध्यायकाप्रारंभहोताहृये इसभारतखंडकेवाद्योंकात
१ था अपर देशकेभी वाद्यों का इसअध्यायमें वर्णनकीया जाताहृये पूर्वग्रंथोंकोदेषकर अब वा
द्यशास्त्रमें चार प्रकारका है जयमें तत १ आनद्ध २ सुषिर ३ घन ४ ततउसकों कहिते हैं जो
तंती वातार पाकर वजाया जावे जयसें वीणा सितार रवाव सरोद देऊड़ा ॥ सारंगी रंजिनी

अथवाद्याध्यायः प्रारभ्यते तत्रवाद्यस्यचातुर्विध्यम् ततानद्धंचसुषि
रंघनंवाद्यंचतुर्विधम् ततंवीणादिकंवाद्यमानद्धंमुरजादिकं
वंशादिकंतुसुषिरंकांस्यतालादिकंघनम् ॥

सारिंदा तंबूरा मीनसारंगी कानून स्वरशृंगार मोचंग एकतारा अलाबूसारंगी आनंदल
हरी स्वरवीणा गोपीयंत्र एसरार इत्यादिक वाद्य तत संज्ञिकहृयें । अथआनद्ध । आनद्ध उ
सकों कहिते हृयें जोसब चर्म्म सें मढ़ाहो ओर वितत भी उसकों कहिते हैं जयमें मृदंग खो
ल तवला ढोलक ढोल मर्द्दल खंजरी डुक्कड़ डफ डमरू हुडका ढक्का जगाफम्प चर्च्चरी

ढाल काड़ा नगारा ॥ टिकारा धौंसा खोरदक इत्यादिक हयें अथसुषिर ।। सुषिर वा
द्य उसकों कहिते हैं जो वायु सें अर्थात् श्वाससें वजाया जावें जयसें शंख वंशी वेणा
कावंजली तुम्बा अलगोजा गोमुख अर्थात् नरसिंहा नयवांशी रोश नचौंकी सानेयी अ
र्थात् सरनाई वान्सुली· शृंग रणशृंगा तुरी कमल तुवडी· कहल इत्यादिक सुषिरसाज
हैं अथघनवाद्य घनवाद्य उसकों कहिते हैं जो कांस्यका अथवालोहकावा अपर धातुनि
र्मित हो अथवा केवलकाष्ठमय हो जयसें छेंटा । झांज । कासर कांस्यघट्ताली· घटता
ल· मंदिरा· सम्म शराव· वा जलतरंग· चूड़ी· रामघड़ताल· कंसी· झुंगरू· इत्यादिकघनवा
द्य हैं अवइसवाद्यकों गुनिलोग अर्द्धवाद्य गिनते हैं क्योंकि तीन वाद्यो में अर्थात् तत वित
त सुषिर इनमें स्वर ताल दोनो हैं अर घनमें स्वर मिलानेका अभाव मानते हैं अर उसमें
ताल तोहै इसवास्ते अर्द्धवाद्य हैं जयसें कहाहै जगमें सभसुरताकहें वाजे साडेतीन ता
ल तंत अरफूंक गुनि अर्द्ध ताल सुरहीन इसतें साडेतीन प्रकार के वाद्योंका प्रकार वर्णन
कर्ते हैं । अवइन में जोतत वाद्य हैं सो दोप्रकारके हैं एक सभ्य अर दूसरे ग्राम्य सभ्यवा

वा॰ य वोह है जोसभाके योग्यहो॰ श्रर ग्राम्य वोह है जो ग्राम में वजाते योग्य हो प्रथम सभ्य
२ वाद्य येह हयें जयसें॰ वीणा॰ त्रितंत्री॰ वासितार॰ रवाव॰ सरोद॰ रंजिनी॰ कानून॰ स्वरतरङ्ग॰
स्वरवीणा॰ स्वरश्रृंगार येहीसभततनवाद्योंमें सभ्यवाद्य कहे हये॰ श्रोर सुषिर वाद्योंमें तो एक
वंशीवाद्य थीं वोर किसी वाद्यका वहुत व्यवहार नहींहै येही वंशी वा श्रलगोजा सभ्यवा
द्य हैं प्रायः समूह वाद्य में सुषिर वाद्यों का व्यवहार हये सोभी श्रागेकहा जायेगा॰। श्रव
श्रानद्ध में मृदंग तवला ढोलक येह भी सभ्यवाद्य हैं घनमें घुंगरू॰ कंसी॰ श्रोरसाज स
मूह में कामदेते हैं॰ ग्राम्यवाद्य वहिर्हारिक हैं ततमें सिरंदा॰ तम्बूरवाव॰ सुषिरमें तूती॰
तरी श्रादिक॰ वितत में ढोल डफ घनमें फौज छैना नगारा॰ इत्यादिक ग्राम्य हयें ॥
प्रथम महतीवीणा ॥ यहयंत्रश्रति प्राचीन श्रोरसभ्य यंत्र है श्रथ प्रथम श्रध्याय ॥१॥
यंत्रवा वाद्यदोनो नाम वाजेके हैं कैंक लोक साजभी कहते हैं ये प्रथान महर्षि नारदजी ह ३
का कियाहोयाहै प्राचीन संगीत शास्त्रकर्णेवाल्योंने तारयंत्र मात्रकाही प्रथम निर्मा
ण किया सामान्य में उनका वीणानामहै श्रोर सभवीणों सेंवडी महती वीणा हैं श्रोर २

पहो पीछें विशेष विशेष आकार और प्रकृतिके अनुसार रुद्रवीणा सारस्वतवीणा रंजनीवीणा कछपीवीणा और स्वरवीणा इत्यादि विशेष विशेष आख्य क्या छोटी छोटी नाम और और कियागया है किन्तु अब हम लोक महती वीणा का विषय वर्णन करणेमें प्रवृत्त भये हैं सो स्वतरां इसस्थलमें वीणा संबंधमें जो किछु है सो बोलाजायगा सो कुतुहली पाठकगण उसके समुदाय कों महती वीणा संबंधवाला जाणते हैं यहि यंत्र भारतवर्षके सभप्रकारके वाद्य यंत्रकी अपेक्षाकर्के अधिकतर प्राधान्य जाता क्यों कि इसयंत्रके वजावणेवालाकोई विरलाही मिलताहै इसैं यह जाणियों जाता है कि इसके वजावणेकीरीती बहुत कठिन है सो इसैं अति परिश्रम साध्य ही कारण है तिस निमित्तही संगीतकुतूहलीयोंके मध्यमें अग्रसर अर्थात आगे चलनेकौं कोई नहीं समर्थ हो सका सो विशेषकर्के वीणा वजाउणेके अभ्यासमें जिस प्रकार परिश्रम करणेकी आवश्यकता है तिसकी अपेक्षाकर्के थोड़े परिश्रमसें कछपीवीणा वजाउणेमें वडी चतुराई आउती है और कछपी वीणा सें भी प्रायः सभप्रकार कि वीणें के साजनें की विधि प्रतीत

वा॰ होजाती है सोवीणा वादन इतना दुरूह व्यापार है जो यह विस्तीर्ण भारत भूमि में
३ संगीतकी इतनी अधिक चर्चा होतेभी हमारी निम्न लिखित में कितने व्यक्ति मात्र
3 वीणा बजाउणे वाल्योंका नाम अवगत है यथा जीवनसा निरमोलशाह महम्मद
अलि नासिर आहमद छज्जूखां गुलवखां गुलामरसूल करीमखां उस्तादल
छमीप्रसादमिश्रजी फिरोजखां नौवादखां प्रभृति येह सभ वर्तमान नहीं है गुला
मह सैनखां मेंहदी हुसैनखां ओयारिसखां अनैत अलि इत्यादिक कितनेक व
र्तमानभी हैं पंच मिश्रलछमीप्रसाद महाशय के निकट वीणाके अनेक विषय जा
ने हुवे हैं वाहू अभया चरण भी अच्छे है यवन जाती में अनैत खां अब अच्छे हैं येह
कोहलीयग्रंथमें इसका ऐसा लक्षण लिखा है यथा अर्थ वीणाका दंड स्थूथ वंश।
का बनाना अथवा काष्टजो तन आदिक है उसका बनाना और दोनूं वे बरोबर गोल
उसकों लिगाते अर सात हेटि ओं लिगातियों टाली हृतकी लकडी कियां दो मस्त।
कमै एक वाम पार्श्वे चार दक्षपार्श्वे सारां १८ वा १९ वा २१ सितेसें दृढकर लगावे

सारे इनसें ऊन अधिकभी किसी किसी आचार्यने कल्पित करी हैं सो तीव्र कोमल का
कामभी उसेंसे लेलेतेहैं और स्वर धरी एक पटडी हस्ति दंतनिर्मित नीचे लिगाती उसीके

दंडं वंशमयं कांतं वर्तुलं तत्स्वगुणमकं नवमुष्टिस्वरस्थानं चा
त्रयं तत्रैव कारयेत् तस्मिन् दंडे समं स्थाप्य मोहिनीं सन्निवेशये
त् दक्षिणे विन्यसेदन्यत्तल्लग्नं तं त्रीद्वयं क्रमात् हस्तवस्त्रमयी
कार्या मोहिनी दंडरंजिका तावच्च भ्रामयेत्सर्वां मोहिनीं च श
नैः शनैः अस्यास्त्वष्टादश प्रोक्ताः सारिकाः पूर्वसूरिभिः ॥
एतास्तु तारवादित्यस्निग्धं तिपट्टिकोपरि मदनस्य च सिक

ऊपर चारतार चढीरहितीहैं तीन आसपासहोतीहयें येही महती वीणा कालक्षणक

वा॰ ४

ह्रांहै कोहला चार्य्यनें इसवीणाके वामभागमें जोप्रथमतार होतीहै सोपीतलकी होती
है सोषड्जस्वरमेंबांधीजातीहै इसके आगेउससें मोटी पीतलकीतार होतीहै उसको उदारा
समकीमध्यमस्वरहोतीहै आगे एकतार पीतरकीउदारा पंचमस्वरहोतीहै आगे मुदारा
षड्ज आगेमुदारामध्यमलोहेकी होती है कैंक उस्ताद इसकोंभी पीतलकीरषतेथे अ

महत्यानामवीणायाएतल्लक्षणमुच्यते॰ उक्तमपिवा
यप्रधानत्वात्पुनरुक्तम् ॥

वलोहेकी होतीहै इसकों नायिकीतारवोलते है लोहेसें पीतलकी तारसे मूर्छना
ओर गमक अच्छेतिः सरण होता है॰ आगे दक्षपार्श्व में दो लोहेकीतार होती है उनकों
चिकारीयां वोलते है वोहतार षड्ज पर स्वर होती है दूसरी उसतें दून स्वर में होती है
प्रथम तार वाम हस्तकी कनिष्ठिका अंगुली सें किसी किसी वक्त छेडीजातीहै अर त
र्जनी सें नायिक तार कों वजाया जाता है मध्यमा सें दूसरी तीसरी चौथी पीतलकी

तारें वजाई जाती हैं अर दहना हस्तकी कनिष्ठा अंगुलीके नखसें चिकारीयां का छेड होता रहिता है प्रायकर्के इससाज में रागका अलाप॰ अर्थात् रागका जोड वहुत अच्छा वजाया जाता है अर रागकीगत अर गलेका साथ येभीवजाया तो जाता है परंतु इस साजमें उस्ताद लोग कम वजाते हैं अर सितार सिरंगी में गत अैर गलेका साथ वहुत वर्तते है अव वहुधा लोग इनमें अलाप भीकर तेहैं परंच वीणा जयसी गमकमूर्छना प्राय नही सिद्धहोती कोई कोई उस्ताद करलेते है अवयेह जो तंत्री सें समस्वर अर्थात् षड्ज १ ऋषभ २ गंधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ संगीतशास्त्रवाल्यांके निश्चय होते हैं इनकाहीं नाम इटालीय भिन्न है॰ जयसें ऊट[सा] १ रे[रे] २ मि[ग] ३ फा[म] ४ सो[प] ५ ला[ध] ६ वि[नि] ७ येहनाम हैं अर अंग्रेजी वाल्यांके नाम भिन्नहैं जयसें सि[सा] १ डि[रे] २ इ[ग] ३ ऐफ[म] ४ जी[प] ५ ऐ[ध] ६ वि[नि] ७ येही सप्तस्वरों के चिह्न कल्पित करे हैं वास्तव सें प्रयोजन एकही है अर हमलोक ऋषभ गंधार मध्यम धैवत निषाद इनपांच स्वरां कों तीव्र॰ अर्थात् चढा कोमल अर्थात् उतरा मानते हैं अैर येह दोनों आधा स्वर उतरे कों कहते हैं अर

वा॰ ५ 5

इणास्वर चढे कों कहिते हैं सो प्रयोजनपकही है और वीणाकास्वर अतीवमधुर अ
र निरंतर सुननेंयोग्य हये पित्रानो प्रभृति १उरोपीय यंत्रमें जो सकल कार्य्य संपन्न
होताहये तिससें अधिकतर वीणासें निष्पादित होता हये॰ परंच मूर्छना प्रभृति जितने
क संगीतो पयोगि उत्कट उत्कट जो कार्य्य हयें सो इसी वाद्य सें अर्थात वीणा सें ही
सहिज तहां प्रतिपन्न होते हयें सोई कार्य्यसमुदाय १उ रूपीय यंत्रों में अतीव दुःसा
ध्य हैं जोवीणाकावादन है सो अतीव मधुरता का संयोगि हये॰ और सबसें उत्कृष्ट वाद्य
हये॰ उ१ लाड और उ१लियम जोन्स प्रभृति हिंदु संगीतज्ञ महोदय गण असमुत्कृष्ट
पियानो साज के साथ तुल्यता स्थापन कर्त्ते हये॰ अंग्रेजी संस्कृत अभिधान कर्त्ता।
मणियर उ१लियम स साहिब १उ रूपीय लायार यंत्र और वीणा इन दोनोकों सम बो
लता हये जयसें हमारी वीणा में सात तारां हैं वैसेंही लायार साज में भी सात ही
तार बांधी हये ग्रीक और रूप देश का इरा हृत कर्त्ता उ१लियम स्मिथ साहिब के क
हे हूवे ग्रंथ में लिखाहै जैणासे ग्रीक देशी हैंसो जिस तरण लायार इत्यादिक और

ौर यंत्रोंका विषय कुछभी नहीं जानते थे तिनके पहिलेभी आसियास्य वाना देश में
ौर मिसर देशमें लायार प्रभृति यंत्र का बहुत प्रचलनथा कुछकालपीछेमें ग्रीक देशी
जो हुये सो लायार की उत्कर्षता दर्शनमें ग्रीस देश में प्रथम सोई वाद्यमगवालीया इस वि
षयकी यो षकता हाकिन साहिब अर वार्णिसाहिब ौर कार लेन् जेल् साहिब कृत सं
गीत ग्रंथ में बहुत बहुत प्रमाण देषणे में पाया जाता हये येही वीणा अतिप्राची न साज
है ौर भारतवर्ष इसका प्रथम स्थान है तिसमें ौर कुछ संदेह नहीं है परंतु देश भेद ।
अवयव भेद ौर नाम भेद करके वर्तमान है इतना मात्र विशेषहये· संस्कृत संगीत कार्त्ता
जो हैं सो नाना जातीकी वीणाका नाम लिखते हैं जयसें वल्लरीजाती की वीणा पहले
भारत में प्रचलित थी मणियर् उइलियम् साहिब तिसकों हार्प नाम सें लिखते हैं ।
अब अरब देश में शन् हार्पकों कहिते हैं ौर चीन देश में कीणा कहिते हैं इजिट देशमें वी
णाकों वेण बोलते हैं वीणा अर वेण इनदोनों नामोंका कितने अंशमें ऐक्य देषाजाता
है· वल्लरी ौर हार्प येह एक विधका यंत्र नहीं है वास्तव में हार्प वल्लरी का अनुकृत

वा॰ यंत्र है॰ इस सो जाने इस विषय में कोई संदेह नही करसकते इति महती वीणा प्रस्तावः।
९ प्रथमः १ अथ काछपी वीणा जिसकों भारतवर्षीयलोक कछुआ वा मध्यम अथवा।
सेतार बोलतें हैं हम लोकोंके देशमें कछपीनामक अपर एकविध वीणाका प्रचल
तथा अबके जो लोक हैं तिसकों कछुआ॰ सेतार॰ मध्यम बोल के व्यवहार कर्ते हैं सेता
र येह पारसिक भाषा है॰ एक पठाण वंशका बादशाह गयेस उद्दीन बुल बान के राज्य
में अमीरखसरो नाम विख्यात कविप्रधान राजसभासदों के मध्यमें परिगणित था
तिसने काछपी त्रितंत्री इत्यादि वीणाकों सामान्यतः करकें सेतार नामधरा वास्तव में॥
त्रितंत्री कायेही अर्थ है जो तीन तार जिस में होवे पारसी में भी से तीनका वाचक है
अर यद्यपि सितार में पांच वा सप्त तारां होती हैं परंतु उन में तीनस्वर होते हैं एक मध्य
म अगे जोड़े की भी षड्ज स्वर होती है अर षड्ज उदार की भीयेही॰ तीसरी पंचम तिस
में आथीलर्ज होती है येही तीन स्वर होनेसें सेतार नाम रखा गया सेतार त्रितंत्री वीणाके
नामों में भिन्नता नहीहै और काछपी अर त्रितंत्री की मूर्त्ति भी सदृश ही हये कुछ कुछ

6

विशेष इये अबकाछपी वीणाकों काष्टका अथवा अलाबू का खोल दियाजाता है अर पी
तल की वा फ़लाद की तारां लिगाई जाती हैं अरत्रितंत्री में काष्टका खोल छोटासा होता
है अर और भी कुछक विशेषहै॰ अर काछपी वीणाका खोल कछपकीपृष्टवत होता है इ
सी सें काछपी वीणा वा कूर्मी वीणा येनाम प्रसिद्द हैं और काछपी वीणाकी दीर्घता सामान्य
चारफ़ट होती है बजावनेवाले अपनी इछा पूर्वक फ़ुत अधिक भी कर वालेते हैं किन्तु राग
बजावनेकेवास्ते कुछक वडी डांडीहो अर्थात चौडी अधिक हो किंउके जेकर अधिक नाहो त
व गमक मूर्छना भली प्रकार सें दिषाइ नही देते॰ कंउके॰ काछपीकीलंबाई चार फ़ट होने सें
तिसकी छटीनीचेकी सें पांच इंच फ़ुट तंत्रासन अर्थात सरपटी॰ होती है तिसतें तीन फ़ुट
पांच अंच आदि अर्थात तारदान स्थापनकरना चाहिये॰ परिमाणमें चारफ़ट की न्यूनाधिक
तामें इसके ही समान तंत्रासन आदिभी न्यूनाधिक होवेगी॰ शास्त्रकार इस काछपी वीणाकों
ही सरस्वती वाग्देवीकीवीणा लिखते हैं यथा सरस्वत्यस्तुकाछपी अब काछपी वीणाकों तीन
वा चार पीतलकी तारें होती हैं अर चार वा पांच फ़लादकी होती हैं कैंक गुणीलोग इसी वा

वा.

घको दोहरा बनवाते हैं वोह नव वा दश तरखें सुंदरीयोंके नीचेसें बांधते हैं. ॥

एक चिह्न विशिष्ट लोहेकी तारकों नायकी अथवा प्रधान तार बोलते है नायकी तार पक्की
लोहेकी होतीहै सो दृढ़तर होतीहै बजावनेकेवक्त उसीकाही विशेषप्रयोजन है यही तार
उदारा सप्तक के मध्यम स्वर पर बांधीजातीहै दूसरी दो तारें पीतलकी उदारा सप्तक के ष
ड्ज पर बांधी जाती हैं और चतुर्थतार पंचमनाम उदारासप्तक के पंचम पर होती है· अब पां
चवी तार पीतलकी पंचम के अर्द्ध पर वा षड्ज निम्न सप्तक के षड्ज पर होती है अर्थात
जोड़े सें अर्द्ध स्वर पर होतीहै सानीधपमगरेसा पिछलेसापर· त्वद्रतंत्री· अपने अपने कान
क कीलक वाछिद्र सहिचर सारिका पर मिलती हैं इच्छासें कच्छपीवीणा नें भी इउरोप
देशाके गिटार यंत्रकीन्याई दोतीन स्वर एकत्रध्वनितकरसकते हैं किंतु भारतीय संगीत में इस
रीतिका वडाव्यवहार नहीं काच्छपी वीणाकें काष्टदंडकेऊपर सतारां घ्यात लोहादि धातु निर्मि
त सारिका अर्थात सुंदरीयां होती हैं अर तंत सेंवाधी होई होती हैं तिन में छाई सप्तक निकस
ते हैं· येह काच्छपी वीणा महिती वीणा के तुल्यहीहै प्रस्तुत जोजो यत्नसाध्य महतीका वाद
न है सो सो थोड़े आयास सें सिद्धहोसके हैं अर राग के ठाटबदलनें के वक्त स्वरसारिका।

बा· तीव्र कोमल करणे में रागोंका व्यवहार भी· अच्छा याद रहिता है महती बजानेवालोंको प्रा
यः तीव्र कोमलका भेद कम याद रहिता है क्योंकि सारका तो स्थिरहैं उनीपर सभव्यवहार हो
8 ने में प्रायः इसकी सारिका विन्यासमें निषाद प्रथम सप्तकका दोनो प्रकार का बांधा रहिता है
मध्यम भी दोनो कहीं गंधारभी दोनों इच्छा पूर्वक बांधते हैं कैंक अचल ठाठ भी बांधते हैं
परंतु सप्तदश सारिका वाअष्टादश श्रेष्ठहैं का छपी वीणा बजावन के वक्त उसवीणाका पीछा
बजावने वालेकी ओर होता है अरअगलाभाग सुनने वाले कीतरफ होताहै अर दहिने हाथकी
बकू सें दबा रहिता है अर बाम हाथसें सारिका पर गति होती रहिती है अर सितार भीयस्मारहि
ता है जैसें गिर नपरे प्रायः कुछक आश्रय दक्षिण जंघाका भीदीया जाता है वाम हाथकी तर्जि
नी मध्यमा अनामिकाभि सारोंपर कामदेती हैं अर दक्ष हाथकी तर्जिनी वा मध्यमा अर कनिष्ट
काके नखसें चिकारी का छेड होता है कैंकजोडे का वा षडज का भी छेड करते हैं उस्ताद लो
क इस काछपी अर महती वीणाको अनेक अंशोंमें बरोबर मानते हैं ग्रीक और रोमान देशीय
लोकोंमें पुरा हन ग्रंथ कर्त्ता उइलियम स्मिथ साहिब के मतमें लायार· टेस टीडो· और कर

कच्छपी यह तीन जातीके सम वाय है इस समय में ईउरोप का गीटार यंत्र कोंभी सहित कच्छपी
के अनेक प्रकारकी सदृशता प्रतीत होतीहै एन्साइक्लोपिडिया ग्रोगेता रिज साहिव कहिते हैं
कच्छपीसें गीटार की उत्पत्तिहै स्कुल अव इउनिमर्षल् मिउजिक ग्रंथ कार डाक्तार एडल्फ मार्क
स साहिव केमतमें गीटार कच्छपीका अवयव भेदमात्रहै जर्म्मान् जातीजो हैं सोतिसकों जिता
र कहिते हैं वस्तुतः कच्छपी वीणा सामान्य कानाम सेतार नामअमीर खिस्रू ने भारतवर्ष में।
आकर धरा इसके पहिलेंनी और और देशों मेंभी उक्तविध यंत्र यही नाम ही प्रचलत था इटा
लिका कर्त्ता कहिता है जो अर्वदेश विषेभी कच्छपी अवयव भेद सें गीटारनामकर्के विख्यात है
अति प्राचीन कालमें भी जव जव पारसिक लोक भारत खंड में व्यापार के वास्ते आते जाते थे तो
उन्होनें कच्छपी वीणा कों अच्छाजान कर अपने देश में लेजाना योग्य माना. तोलेगये और से
तार नाम रषा. और अमीर खिस्रू सें पेहले भी कच्छपी वीणा का प्रचलत था परंतु कहीं कहीं
और नाम इसका कच्छपी था अव संगीतज्ञ मध्यम वोलते है क्युंके इसवाद्य में मध्यम स्वरयुक्त प्र
थम तार लगाहै अर पारसी नाम सेतार है. अव कच्छपी यंत्र जव अर्व में गया तव किंचित्

वा. अवयव भेदसें गीटार हो गया अर एसरिया देशमें एसोर प्राचीन ग्रीश में खितारा विद्वदि
६ यों के देशमें किमोर निऊवियाय. में किशोर. अपरा पर देश में भिन्न भिन्न नाम में प्रसिद्ध
9 है सो अरब्य देश में ही जो गीटार नाम यंत्र की उत्पत्ति है डाक्तार वार्णि साहिब भी यही
बात स्पष्टाक्षर सें स्वीकार कर्तेथे और रिज़ साहिब कृत एन्साइक्लो पीडया में लिखित
है जो ख्रीः नवम शताब्दी में अरब देश के जोहैं जिस लाग स्पेन देश में आपणो पास्से आधि
पत्य स्थापन किया उसी समय तिनके द्वाराही गीटार यंत्र उक्त देशमें लेगये और स्थापित भया
इसतें अनंतर गीटार यंत्र इउरोपके समदेशमें अंग भेद करकें अर्थात आकृति भेद सें भिन्न ना
म सें व्यवहृत होता भया फलतः भारत वर्ष में जो कच्छपी वीणा है वोही समस्त वाद्यों का
मूल है इतिकच्छपीप्रस्तावः २ अथ त्रितंत्री वीणा. कच्छपी वीणाके प्रस्तावमें कहा है जो
त्रितंत्रीके अवयव प्रायः कच्छपी केही सदृश हैं केवल इसका खोल काष्ठका होता है इस
में तीनही तार होती है इतनामात्र भेदहै कच्छपी सें जोजो कार्य्य संपादित होते है यत सोई
सोई कार्य्य अनेकांशसें सपन्न होसके हैं किंचित स्वच्छता निबंधन सें राग रागिनी के अलाप

का उपयोगि जो मूर्छनादिकार्य्य है सो निष्पन्न करणा कष्ट साध्य होता है कछुपी की लोहे की तारही नाथ की तार होती है जिस तरां उदारा के मध्यम में बांधे इसकी नाथकी तार भी केवल तिसीतरांबांधी रहिती है तिसकी पितल निर्म्मित दूसरी तार जिसतरां उदारा के स्वर में बांधने का समय रीति है सो इस की दूसरी तार ठीक उसीतरा है केवल तीसरी तार में विलक्षणता प्रतीत होती है कछुपी की तो तीसरी तार दूसरी के सम स्वर होती है अर इस त्रितंत्री की तीसरी तार तिस्र सप्तक की पंचम स्वर में बांधते हैं इस त्रितंत्री की एक तार पक्कीलोह। निर्म्मित होती है अर दोपी तल की होती हैं और सारिका बंधमें त्रितंत्री का कछुपी में कुछ विशेषनही है छाई सप्तक इसमें भी उसीतरा संपन्न होते हैं और ग्रीक देश के पासेका हार मसेर लाइयर् यंत्र की तारके साथ कोइ विलक्षणता नही देखी केवल बंधन विषय में किंचित अनेक्य प्रतीत होता है इतित्रितंत्री प्रस्ताव स्तृतीयः ३ अथ किन्नरी प्रस्तावः किन्नरी नाम अपर एक वीणा इस देशमे बहुत काल से प्रचलित है किसी किसी ग्रंथकारके मत में इस यंत्र का खोल अलाबू वा काष्ठ निर्म्मित नहीं था पहिले समय मों नारिकेल के खोल

वा०
१०
10

द्वारा तयार होताथा अब इस समय के लोक संगीत कुशल ह्ली जो हैं सो कोई तो तूंबमहती के अंडे का बनवाते हैं कोइ धनवान रजिता दि उत्कृष्ट धातुका बनवा लेते है फलतः नारिकेल खोल निर्मित किन्नरी की ध्वनी का अरु धातु अंड निर्मित खोल किन्नरी की ध्वनी का विशेष कुछभी नही है इस वीणा में पांच तारे होती हैं जय में कच्छपी वीणा में पांच तारकी स्वर होती है उसीतरो किन्नरी की होती है एकदोनो चिकोरीयां कच्छपी में अधिक है।
इसमे नही होती यां येही विशेष है ओर इस का अवयव कच्छपी से अतिच्छद है ओर तिसकी ध्वनि भी ओर की अपेक्षा करके मृदु है एड ओयार्ड एफ रिंबल एल एलडि साहिब कृत पियानो फोर्टी यंत्रके ति हास में ग्रंथ में लिखा है जो किन्नरी जातीय वीणा ही इहूदियो के देश में किन्नर ओर ग्रीश देश मे शम्बूका नाम विख्यातथी किंतु देश भेद से भी नायके भेद होयो होयां किन्नरी का अवय भेद संभव नही है येह यंत्र कोमल कंठी स्त्रीजाती करके अधिक व्यवहृत होतीथी इति किन्नरी वीणा प्रस्ताव अन्तर्थः ५ अथ रंजिनी वीणा० ॥
रंजिनी वीणा कितने क अंश में महती वीणा की न्याई काठ की होती है कुछक महती

में छोटी होती है इसका सारिका न्यास कच्छपी वीणा की न्याई है और तारा सात ही होती
हैं और तूंबे भी इसकों दोइ होते हैं इसते येह महिती वीणा के सदृश ही होती है ॥ इतिरंजि
नी प्रस्तावः पंचमः ५ अथरुद्रवीणा॰ अथवा रबाब॰ भारत खंडमें यवनाधिकार से पहिले
येह वाद्य रुद्रवीणा करकें प्रसिद्धथा तदनंतर विजयी यवनराज गण कर्त्तक रबावनाम से ।
विख्यात हुवा सो रबाव यंत्र भी सितारादिकों की न्याई इसमें भी एक हस्तीदंत का तंत्रासन
होता है और एक ही खोल दंडद्वारा प्रस्तुत होता है इसका खोल अरदंड एकही अखंड काष्ठ
में बना होया होता है और वोह खोल गो थाचर्य में अथवा छाग के वरीक चमडे सें मडा
होया होता है इस यंत्र में छे खूंटी यां में छे तंतीयो बंधी रहिती हैं इस में लोहा दिधातु की
तंत्री नही होती अंत्र चर्मकी होती हैं रबाब यंत्र में सारिका विन्यास नही होती उसको मोडेप
र राखकर वामे हाथ की तर्जनी में मच्छका एक मोटा सा छिलका तंती से बांधकर तार के
ऊपर स्वर स्थानों में चलाउते हैं और दक्षिण हाथकी तर्जनी वा वडी अंगुली अंगुष्ट से एक
चंदन का वा वंशका बना हुवा त्रिभुजाकृति नाखून होता है जिस कों पारसी में जडोया वो

वा. लते हैं तिसके आघात योग में वजावते हैं इसका आघात उलटा लिगाते हैं येही विशे
११ ष है और इसमें भी साईं छिसमक स्वर वीणावत प्रतिपन्न होते हैं रवाव की जिस जिस तं
त्र में जोजो स्वर निष्पन्न होते हैं सोसो आगे नक्शे में दिखाये जावेंगे। इस रवाव को।
छेतंत्र पश्चिम में हिंदुस्थानके रामपुर प्रभृतिदेश में इसकावहुत प्रचार देषते हैं आफ
गान पारस्य प्रभृति देशमें भी येह यंत्र रवाव नाम से ही प्रसिद्ध है अरव देशके इसकों
रुवेब वोलते हैं अर्वके शब्दशास्त्र जाननेवाले फिरोजावादी मजद अलदीन तिसकों
अभिधान ग्रंथमें कामूस नामलिखा है येह प्रायः शत सहस्र वत्सर व्यतीत होये है
जो वसद ग्राम निवासी संगीत कुशली अवडूला इसी यंत्र कों पहिले निर्माण करके॥
रुवव नामरखा उईलाई साहिव कहिते हैं कि स्पेनिस गीटार के अवयवके साथ अ
नेकांशमें समता है प्रतीत होता है जु रुद्रवीणा ही स्पेनिस गीटार और म्याण्डलिन
प्रभृति यंत्रका आदर्श है अर्थात इसीकों देखकर वनायाहै रुद्रवीणा ईउरोप देश उक्त
यंत्र समूह की अपेक्षाकरके अनेक प्राचीन है इतिरुद्र वीणाप्रस्तावः षष्टः ६ अथ।

शारदीयवीणा वा शरद अथवा सरोदा शारदीय वीणाके दंडसें लेकर खोल पर्य्यंत प्रा
यः समुदाय अवयव एकही अखंड काष्टद्वारा तियार होती है: खोलका मुख स्थान के
सदृश गोधादिके चर्मद्वारा मढाया जाता है इसयंत्रमें भी रुद्रवीणा कीन्याई सारिका वि
न्यासन हीं है इसीतरह इसमें भी छे खूंटियां होती हैं छे तंदीयां होती हैं सो वजाउणेवाले।
लोक आपणी इच्छा अनुसार लोह पीतर की तारें भी घालेते हैं और गुणीलोक यंत्र दंडके
पासों में सातसें लेकर एकादश पर्यंत अपनी इच्छा से अपर भी खूंटियां लिगाते हैं जिन
कों पारस्य भाषा में तरफ कहिते हैं और संस्कृत में पार्श्वतंत्रिका कहिते हैं नियमित आघा
तद्वारा वाजती नहीं केवल पूर्वप्रधान छेही तारां वजाउनेके समय तिनोंके स्वरसा दृशपबोल
ने सें सभी प्रतिध्वनित होतीयां हैं शारदी की प्रधान छेही तारां हैं शारद यंत्र आपनी गोद में
स्थापन करके वजा या जाता है॰ इसका दंडभी सारिका रहित है अर तंती उपर अंगुली यां
स्वर स्थानों में धरी जाती हैं अर इस यंत्रका वंग देश में सितारादिकी न्याई बहुता प्रचार
नहीं है भारत वर्षके उत्तर देश मे अर पश्चिम देश में इसका बहुत व्यवहार है यवन राज्यों

वा. के राजत्व काल में एही यंत्रकों यात्रिक यंत्र बोलतेथे जब बादशाह बाग सेवनार्थ सैल।
१२ करणे जातेथे तब वोह लोग हाथी ऊंठके ऊपर चढ़कर बजातेथे आगे आगे परंतु इस
क्षण में भी रुद्र वीणा के बदले सम्प गिणा गया है और कहीं कहीं इसतरो भी हुवाहै जो इ
सके बजाउणेवाले हैं सो इसके सम स्वर कंठ मिलाकर सभा में गान कर्तेथे फिरभी।
महती वीणा. कच्छपी अर रुद्रवीणाके सदृश नहीं हये. इनमें शारद की ध्वनि कुछ नीरस
अर कर्कश है आफगान स्थान अर अरब प्रभृति आसिया देशके रहिणे वाले अनेक।
देशों में प्रचलित है और आर बीच शारद भारत वर्ष की अपेक्षा करके आकार में क्षुद्र और
दोनो पासों में भी तारतम्य अवयव गत भेद है अर्थात उत्कृष्टता है नाम में कोई विलक्ष
णता नहीं येही शारद यंत्र किंचिन्मात्र अवयव भेदकर मिशर देश में रुम्पा नाम से प्रसिद्ध
है इतिशारदीयवीणाप्रस्तावः सप्तमः ७॥ अथ स्वरशृंगार वा स्वर सिंगार इसयंत्रका।
खोलरबाबकीन्याईं एक अभिन्न काष्ठद्वारा निर्मित होता है और सितारादिकों कीन्याईं तूं
बे से बनता है तूंबेके ऊपर एक काष्ठकी पटडी लगी होई होती है जिसको तबली पारस्य में

बोलते हैं अर पटड़ी ऊपर दंत निर्मित तंत्रासन होता है पारसी में जिसकों सिंगेआरी कहिते
हैं और पूर्वकथित अलाबु में काष्ट निर्मित एक दंड योजित होता है इस दंड के ऊपर में एक सम
तल लोह निर्मित पट्टक होता है हिंदी में इसकों पटड़ी कहिते हैं सो स्वर के आधिक्य करणेवा
ले दंड के पार्श्वों में भी लगी रहिती है और एक और तूंबा महती वीणा कीन्याई जोड़ा हुवा होता
है इस यंत्र को छे खूटियां होती हैं तीन लोहे की अर तीन पितल की" स्वरसिंगार में सारिका तारें होती हैं
विन्यास नहीं है रवाव कीन्याई येह यंत्र भी स्कंध के ऊपर धरकर वामे हाथ की तर्जनी और ।
मध्यमा अंगुली लोह पट्ट के ऊपर में जो तार तिस तार के ऊपर ऊपर घर्षण करते हैं दक्षि
ण हस्त की तर्जिनी वा वृद्धांगुली की टकोर सें लोह नखून धारकर रवाव कीन्याई वजाउ
ते हैं इसतें भी सार्द्ध द्विसप्तक निष्पन्न होते हैं महती काछपी और रुद्रवीणा येह तीन जा
ती की वीणा कों मिलाते सें स्वरशृंगार की उत्पत्ति हूये प्रसिद्ध वीणाकार पियार खांने इस
यंत्र कों निर्माण किया हूये इस यंत्र के नीचे का खोल तूंबे का होता है ध्वनि· पट्टक और· तं
त्रासन· येह तीन अंश काछपी के सदृश है और दंड रुद्रवीणा के तुल्य हूये इसमें विशेष·

वा॰ रुद्रवीणा की पटड़ी काष्ठ निर्मित होती है और स्वरशृंगार की पटड़ी की जगा लोह निर्मित
१२ होती है सो पहिले भी कहि दिया है और रुद्रवीणा में तंती होती है इस में लोहे पीतर की ता
13 र होती है और स्वर पद्धिती रुद्रवीणा के तुल्य है स्वरसिंगार गुणगरिमा अर्थात् वड़याई का है
जो महती वीणा अरु॰ कच्छपी॰ रुद्रवीणा॰ इन तीनो के सदृश कोई भी नहीं है स्वरशृंगार की
ध्वनि मृदु है परंच थोड़ा चिर रहिती है॰ ॥ इति स्वरशृंगार प्रस्तावोऽष्टमः अथ स्वरवहार ॥
स्वरवहार यंत्र कच्छपी वीणा का ही अवयव भेद है इन दोनों के मध्य में आपस में येही विशे
ष है कि स्वरवहार का ध्वनि कोश काष्ठ निर्मित होता है और परिमाण में भी कच्छपी से कु
छ वड़ा होता है कच्छपी मे जय में सात छूटिया होती है वैसें ही स्वरवहार में भी होती हैं औ
र धातु निर्मित तार भी संवद्ध करी जाती हैं अधिक इस में तरफ होती हैं दंड के पास में काष्ठ नि
र्मित तरफ पर छूटियों में वांधी होई होती हैं तरवें पितल कीयां चाहिये और प्रधान सात ता
र स्थापन के निमित्त ध्वनि पट्टक के ऊपर में जय में एक तंत्रासन होता है इसी पास तं
त्रिका स्थापन के वास्ते और और अतिरिक्त क्षुद्र तंत्रासन देते हैं यही तंत्रासन प्रधान तार के

तेत्रासन में लेकर प्रायः अर्द्ध हस्त पर्यन्त प्रधान तारों के नीचे होते है इस यंत्र कास्कंवणा
अर बजाना काच्छपी वीणा के सदृश है इसकी स्वर करणी अथवा सारिका न्यास काच्छपी।
वीणा के सदृश हये और स्वरतंत्रिका बजाने वाले की इच्छापूर्वक स्वर होती हैं अर सप्त तार ही
प्रधान इसमें काच्छपी की न्याई बाजती हैं कही पांच भी होती है पार्श्वतंत्रिका तिनके सहिकार
में ही बजती है॰ स्वरवहार काच्छपी से अवयव में बड़ी है इसकी ध्वनि भी परिमाण के अनुरूप हो
ती है गंभीर और दीर्घ क्षणस्थायी होती है काच्छपी भी उत्तम शिल्पी द्वारा बड़ी बनवाई जावे तो स्व
रवहार से इसकी ध्वनी भी न्यून नही होती॰ वास्तव में काच्छपी हि इसका मूल है काच्छपी से
ही देख कर स्वरवहार बनाया गया आधुनिक यंत्र है॰ प्रायः ५० वर्ष इसको बन्या हुवे है सं १९
५० तक प्रसिद्ध वीणाकार पियार खांथा उसके शागिर्द गोलाम महम्मद खांने येह साजति
यार कियाथा सो गुलाम महम्मद खां लखनौ उवाले नबाब की सभा में वीणाकार था॰ इति स्वर
वहार प्रस्तावो नवमः अथ विपंची वीणा सो विपंची वीणा किन्नरी वीणा की न्याई है इसकी
ध्वनि कोश डिम्ब शुक्ति अथवा धात्वादि अन्य कोई पदार्थ नाहोने से विभिन्न प्रकार अवयव व

वा॰ शिष्ट एकजातीके तूंबे में ही बनालेते हैं इसजातीके तूंबेकों बंगालेकी बोली में तितलाउ बोलते
१४ हैं विपंचीका प्रमाण तार संख्या सारिका विन्यास स्वरबंधन ध्वनिमाधुर्य्य धारण प्रकार बजाउना।
14 इत्यादिक नियम इसका सम्प्रदाय भी किन्नरी वीणा के सदृश है पहलें विपंची वीणा में सात ही तार बां
धते सें इस समय में पांचतारों से अधिक व्यवहार नहीं है इति विपंचीप्रस्तावो दशमः १० अथ नादे
श्वरीवीणा॰ नादेश्वर वीणाका ध्वनिकोश ध्वनिपट्टक देखने में केवल ईउरोपके वाइलीन यंत्र के स
दृश है और उसका दंड अरु तारसंख्या स्वरबंधन प्रणाली सारिका विन्यास इत्यादिक सभी कच्छपीके
तुल्य हैं एह यंत्र अति आधुनिक है वाइलीन अरु कच्छपी इनदोनों यंत्रों से बना है॰ इति नादेश्वर
वीणाप्रस्ताव एकादशः ११ अथ भरतवीणाप्रस्तावः भरत वीणा के नाम श्रवण मात्र अनेक ही हैं
भरत ऋषिप्रणीत वीणा एही अर्थ ग्रहण करके इसका शास्त्रमत अतिप्राचीन यंत्र मनमें आवता
है किन्तु वास्तव में सो नहीं है एह यंत्र अतिआधुनिक है रुद्रवीणा और कच्छपी इनदोनों कों मि
ला बनें सें उसकी उत्पत्ति हुये भरत वीणाका ध्वनि कोश केवल रुद्रवीणा के सदृश काष्ठ निर्मित
और चर्माच्छादित और दंड कीलक तारसंख्या स्वरबंधन धारण वादन प्रणाली एह सभ सम्प्रदाय

कच्छपी के सदृश है अधिक इस यंत्र में पित्तलकी यां कुछ्छक पार्श्वतंत्रिका होती हैं सोई पार्श्व
तंत्रिका वजावने में नही आवती यां केवल प्रधान तारके आश्रय बोलती है और भरत वीणाकी।
तार नायकी लोहेकी है और कोई कोई धातुतार के अभाव में तंती भी होती है परंतु इसकी ध्वनि
की मधुरता के सम स्वाव· कच्छपी इन के वीच कोई भीसदृश नही हये इसकी अपेक्षा से अनेक
नीरस हैं इतिभरतवीणा प्रस्तावो द्वादशः १२ अथतंबरुवीणा वा तम्बूरा तंबरु वीणा एक आ।
लावुनिर्म्मित खर्पर वाद्यध्वनिकोश एककाष्ठ निर्म्मित दंड और काष्टकाध्वनि पट्टक प्रभृतिद्वारा
प्रस्तुत होता है तंबरु गंधर्वने येह यंत्र रचाया गीत वाद्यके समय स्वर विश्राम नाहोने के निमित्त
येह यंत्रबना· इसको दोतार लोहेकी होती हैं अर दो· पीतर की होती है कही पंचम भी लोहे की
होती है· येह समचार तारा होती हैं प्रथम जोडेकी स्वर· अर्थात मध्यवर्त्ति दोनों तारों की स्वर मध्य
सप्तक के षड्ज पर होती है और प्रथम सप्तक के खड्ज पर पिछली षड्ज· स्वर होती हये· अवगा
यक लोक गायन करन के समय में इसयंत्र की पैहली तार को निषाद स्वर पर कर लेते हैं अथ
वा मध्यम स्वर पर मेलते हैं अथवा प्रथम ग्राम के पंचम पर करते हैं भारत वर्षकी तम्बरुवी

बा.
१५
15

णा में सारिका विन्यास नहीं है बजाणे वाले इस यंत्र के दंपर दक्षिण हस्त की अनामिका
से तारों को बजाते है कहीं मध्यमांगुली से बजाते हैं तम्बूरु वीणा में नाहेन की भीजरू
त नहीं है केवल अंगुली के आघात से बाजती है और इसका बजावणा अतिसुगम है अर्था
त् अल्पायाससाध्य है. पारस्य देश में भी तंबूरु वीणा का प्रचलन है तिसदेश में इसी में छे
तारों बांधते है और पंजी २५ सारिका का व्यवहार कर्ते हैं तुरुष्क देशके कोई आठतारों और
पैंतीस ३५ सारिका बांधते है कोई कोई नौतार और चुताली ४४ सारिका बांधते है और तम्बूरु
वीणा की सारिका धातु निर्मित नहीं हैं किंतु तंतीके चार चार पेचों से होती है और सोई सारि
का अरबदेश के स्वर ग्रामानुसार विन्यस्त है और अरबदेश मे यही यंत्र ही किंचित अवयव भे
द से अऊद नाम से प्रसिद्ध है स्पार् गाई तर् उइल किन शान बोलते हैं रव्रीः जन्मके १५ ७५
वर्ष पहिले मिसर देश में इसी यंत्रका प्रचारथा हाईरोग्लिफिक लिखन प्रणाली के चित्र में
अर्थात् मूर्तिदेखने से स्पष्टप्रतीत है किन्तु आधुनिक आदिम मिसरदेश के लोक इसी यंत्र।
का बड़ा व्यवहार कर्ते नहि और ग्रीक. रूढ़ीया मेनियान तुर्की प्रभृति जो सभ देशों के भिन्न।

भिम्र लोक तथा यगिया वसति तिनके मध्यमें इसका बहुत व्यवहार देखागया मिष्टार वनोसि
बोलते हैं पसरिया देश में भी पहिलें तंबरु वीणा प्रचलितथी किन्तु हमारे देश प्रचलित तंबरु
वीणा में व्यवहृतकीलकों के निकट तारदान·अर छिद्रयुतं तेजासन होते हैं और पसरिया देशके
लोक मिजराव द्वारा इसकों वजावते हैं इसकाण पर्य्यन्त भी तुरुष्क देशके अंतर्गत टाइग्रीस और
इउ फ्रेटिस् नदीतीरस्थ पसरिया देशके मध्यमें तेंबूरा यंत्र का प्रचलन देखा जाता है दक्षिण के इ
टालीय खेती करणेवालेभी इसी यंत्र कों किंचित् अवयव भेदसें केलेसियान नाम से व्यवहार क
र्ते हैं तम्बुरु जातीके कलेसियान यंत्र में दोइ मात्र तंतीयां बांधीरहिती हैं सुविख्यात संगीत
ग्रंथकार डाक्तार वार्णी इस जातिके यंत्रका विषय आपने कीये होये ग्रंथमें ४९ पृष्ठमें यथोचित
निर्देश कर दीया है येही तंबरु यंत्रहि किंत् अवयव भेदसें चीन देश में सान्सीन् कहिते हैं और जा।
पान में सामसीन नामसें विख्यात है इन देशों में तम्बरु वीणाका ध्वनि पट्टक भीति सतिस देशके
सर्प विशेष के चर्म्मद्वारा आच्छादित होता है और तिसमें तीनमात्र तारयोजित होती है सोलोक ति
सकों मजरा वद्वारा वजावते हैं मिष्टार होमेयार डिहेल् साहिब बोलते हैं ततार देश में कासि

वा. १९ यान ह्रदके तीरवासी कालमक जातीयो के मध्यमें भी तेवरु वीणासदृश यंत्र प्रचलित है रूषिया
देश में भी एही प्रकार यंत्र है उसकों बालालाइका नाममें प्रसिद्ध है येह यंत्र पूर्वदेश सें आनया हो।
या है हमकों येह भासता है पहिलें भारतवर्ष में वल्लरिका नामकी वीणा प्रचलितथी सो वल्लरि
16 का ही अपभ्रंश नाम सें येही यंत्र होगाई तैसेंही बालालिका होगई होगी इति तम्बुरु वीणाप्रस्ता
वस्त्रयोदशः १३ अथकानूनप्रस्तावः येहकानून एक बहुतंत्री विशिष्ट यंत्र है इस यंत्र की उत्पत्ति
स्थान सें संगीतकारों ने नाना विधमत प्रकाश कीये हैं आबो याल उस सोफा· नाम करके एक ज
न पारसिक देशी संगीत ग्रंथकार कहिते हैं येह अरब देशमें ही इस यंत्र का उत्पत्तिस्थान है ख्रिष्ट
के प्रथम शताब्दी में अरब देशका निकोमें कास् नामक संगीत वित् पंडित था उसने उत्पति इस
यंत्र की करीथी तिसके मत सें मिसर देश में इसकी प्रथम सृष्टि भई अर्थात् वना डेर डेर संगीत
कर्त्तायों के मध्यमेभी इसीतरां विस्तर मत भेद लक्षितहुवा किन्तु उक्त पंडित गणने किसकारण
में वा प्रमाण विशेष दृष्ट सें कानून की उत्पत्तिस्थान मिसरदेश कहा हम कों येह प्रतीत होता हये
इसी भारतवर्ष में कानून की प्रथम उत्पत्ति है· अति प्राचीन कालमें इस खंड में शततंत्री एक

प्रकारकी वीणाथी ऋग् वेद में लिखा है जो कात्यायण ऋषि इस वीणाका कर्त्ताथा उसी वीणाकों
कैंक लोक कात्यायिणी वीणा बोलते हैं इसतें भारत वर्ष ही उत्पति स्थान है जब मिसर देशके लो
क व्यापार निमित्त आते जाते थे तब कात्यायनी वीणा आपणे देशमें लेगये प्रान्स देशका सुप्र
सिद्ध पंडित माष्टार भलेटि उमिसरके संगीत संबंधके इस वृत्तांतके लिखने के समय मों स्पष्टाक्ष
र सें स्वीकार कीयाहै जो भारत वर्षमें ही मिसर देशी लोक कात्यायिणी वीणा आपने देशमें लेग
ये थे तिसके अनुसार आपणे देशमें कानून नामक यंत्र प्रसिद्ध कीया॰ तदनंतर अरब देशके लो
क मिसर देशके बने हुवे कानून यंत्रकों ले जाकर कानून नाम रखा इहूदी जाती के लोग संगीत वेत्ता
सलोमेनके मतमें खृष्ट जन्मके समें पांच सो ५०० वर्ष पहिलें मिसर देशमें ही कानून उत्पन्न हुवा है
मिसरके कानूनकी दीर्घता चलीस पर्व प्रस्तार षोडश पर्व वेध दो पर्व मात्र होत हैं इसमें बहुत छे
दियां और तंत आबद्ध होती हैं अर एक संदूक में धरा रहिता है माष्टार भलेटिउ साहिब केमतानुसा
र सें पहिलें कथन किया गया है येह कानून यंत्र मिसर देशसें आर्वमें ले गये थे और कानून नाम
धरा किंतु माष्टार लेन साहिब बोलता हये खृष्ट जन्मके समें तीन सो ३०० वर्ष पहिले आरब देश

वा. १७ में ही कानून प्रस्तुत हुवाथा· सो अरब देशके कानून के चालीस कीलक हैं और ५· तारबांधि
यां रहिती हैं और सम्प्रदाय यंत्र पूर्वकथित नियम के अनुसार से एकही वाक्य में स्थापित रहिता है
तिसके पीछे पारिसकदेश के लोक अरब देश में उक्त यंत्र कों ल्याकर्के उसमें और दोतार रूपा
दई सो चिताली तार वाला यंत्र होगया कालक्रम में भारतवर्ष के अति गौरव की सामग्री सोई का
17 त्यायिनी वीणाही देश भेद में नाम भेद और अवयव भेद प्राप्त होकर पारिस देश के वाणिये हा
रा एही भारत वर्ष में ले आये हुयें ० हायके वडे आक्षेप का विषय हुयें इस समय में कहां वोह का
त्यायिणी वीणा कहां उस में शत तंत्रीयां होयां कहां उसके निर्म्माण कर्णे वाला महर्षि कात्यायन
खृष्ट के तीन सो सतार वर्ष पहिलें ग्रीसके रहिणे वाला मासिडोनियांका अधीश्वर आलेक जांडा
र के अभ्यतरण में ही एह स्वर्गभूमि भारत भूमी में पदार्पण किया सो उक्त महात्मा के पादस्पर्श ना
होने से ही भारत का सौभाग्य सूर्य्य चिर कालका उदय हुवा होया अस्त होगया· तिस समें से
लयकर इस महा राज्यकी स्वाधीनता लोप दर्शन विज्ञान शिल्प साहित्य की दुरवस्था संगीत
शास्त्रका क्षय उसके संग संगही कात्यायिणी प्रभृति नाना जाती की वीणा का विनाश पारसि

क ग्रालेफ जांडार चटस्को साहिब बोलते हैं येह ख्रिष्ट के ग्राठसौ वर्ष पीछे का नूतयंत्र कोई
कोई ग्रंश में परिवर्तित हो कर भारत वर्ष में स्थापित हूवा ग्रब भारत वर्षके कानून की दीर्घ
ता प्राय दो हाथ होती है कंही एक हाथभी होता है इस में बाई सें लेकर तीस पर्य्यंत तारां होती
है सो लोह पीतर की होती हैं ग्राधुनिक भारत वर्षके कानून की तार मिसर ग्रब देश के कानू
न कीन्याई एक काष्टके संदूक मध्यमें दोनो पार्स्यों के कीलक द्वारा बांधी रहिती हैं येह यंत्र सम
स्थलमें स्थापन करके फेरन हूनों से बजाते हैं केक एकहाथ वाममें कड़ा लोहेका रखते हैं उस से
मीड़ गमक देते हैं ग्रर केंक ग्राठ ग्रंगुली सें बजाते हैं इसका प्रथम समक उदारा स्वर होता है
द्वितीय मुदारा त्रितीय तारा समक होता है एकतार उच्चसमक कासा स्वर होता है सम बाईस।
होगई द्वितीय पक्षमें उदारा पंचम सें तारा के उच्चसप्तकका पंचम पर्य्यंत स्वर पाया जाता है ॥
एड्‌डो यार्ड एफ रिंबल्ट एल एलडी साहिब कृत पियाना यंत्रका इतिहास विषयक ग्रंथमें
दृष्ट है यहूदियों के देश में येह कानून यंत्र नाबि ग्रथवा सालटरी नाम सें प्रसिद्ध था रोमसलि
निबोल ते हयें प्रसिद्ध सलमान भारत वर्ष सें मेह गुनी काष्ट जिसको संस्कृत में नन्दिक काष्ट।

वा॰ कहिते हैं उसको लेकर साल्टरी हार्थ लाइ यार शांइक प्रभृति यंत्र समुदाय ही प्रायः एक
१८ जाती के हैं तव निर्म्माण गत अथवा उपादान गत भेदमें ध्वनिका तार तम्य लक्षित होता है
48 ख्रिष्टके ११ १८ वर्षमें नाना विधसाल्टरीका चित्र मय प्रतिरूप प्यारीमेर नामक कौतुकागा
र में देखेगये ते तिसकाल मों स्पेन देश में उक्त यंत्रकों कानिकम् वोलतेथे अन्योन्य वीणाजा
ती की न्यांई अंगुलित्र अथवा केवल मात्र अंगुली द्वारा साल्टरी के वजाउणे की रीतिथी॰।
ख्रिष्टके त्रयोदशशताब्दीमें गुलाम नामक एकजन शिल्पीका किया होया इटाली देशमें
कानून नामक वाद्यके वदले इटोल नामक वाद्यरचा सो सिटोल यंत्रताडिती वा अंगुलित्र
करके नही वजता केवल अंगुलीसें वजता है मिष्टार फेटस् साहिव वोलता है कि येह साज
सिटोल यंत्र सें त्रयोदश शताब्दी के मध्यमें इटाली देशमें हिंक्लाभिकर्ड नामक अपर एक।
प्रकार का यंत्र प्रस्तुत भयाथा सो क्रमसें क्लाभिकार्ड वेलिजियम् औेर जारमेनि देश में हिं
प्रारंभितहुवा सोक्लाभिकार्ड यंत्रके अनुसार करके ख्रिष्ट की षोडश शताब्दी में क्लाभिसिथि
रीयं अथवा सर्केजिक सेतार नाम सें एकप्रकार का यंत्र प्रस्तुत भया प्रसिद्ध लामि नियास

और मारसेन्से॰ बोलते हैं क्लावि सिम्बिरीयमेका आदि उत्पत्ति से तार सें भई अनंतर क्लाविकर्ड
और क्लावि सिम्बिलीयम् क्रममें भर्जिनेल॰ स्पिने हार्य सिकर्ड प्रभृति यंत्र प्रस्तुत भया॰ हार्य्य
सिकर्ड दोवाणे में अविकल अधुनातन अनुप्रस्थ मह पियाम फोर्ट यंत्र कीन्याई था हार्य यंत्रके
अनुकरण में हार्य सिकर्ड की उत्पत्ति है बेलजियम् का अंतःपाती आंटर्प नगर वासी प्रसिद्ध
रकर् कर्हक अर्थात् रकर् कर्ता है हार्य सिकर्डका विशेष चमत्कारित्व और शृंगोव लाभक्ष वा॰
१७ १॰ ख्रिष्टाब्द में इटालीदेशके अंतःपाती टस्कानी प्रदेशकी राजधानी पाडुवा नगर वासी
सि गनर वार्त्ति लोमियो क्रिष्टफाली रोमे देशकी नाट्यशाला में ऐक्यवादन जन्य अर्थात्।
इकट्ठे वजाउणे के निमित्त फलारेन्स नगरमें पियान फोर्ट यंत्र पहिले प्रस्तुत की याथा १७१९
ख्रि॰ वर्षमें सुविख्यात फ्रांस देशका हार्य सिकर्ड के निर्माण करिणेवाला मेरियस पियान
यंत्र कों निर्माण करके आपणे देशमें प्रस्तुत किया इसीतरां स्वल्पकालके मध्यमें येही पियाना
यंत्र इउ रूपके सर्व वादिसम्मत और सर्वदेश प्रचलित होगया सोक्रममें इसका निर्माण कौ
शल धृतिपारिपाट्य बहुविधिकी उन्नती के साधन वास्ते नानादेशके शिल्पीगण विशेष।

वा॰ अथव सायके सहकार सें चेष्टा करणे लगे उनके मध्यमें एवड् उड् कलर प्रभृति का इ
१९ त्यादि सभशिल्पीगण पियान यंत्रके करणेवाले उसके संबंध से अत्यंत ख्याति लाभ किया
19 था क्या वडे प्रसिद्ध लोकों में भये प्रायः ८ आठवर्ष व्यतीत होयेसें हमारे देशमें इसी कानू
न यंत्रका प्रतिरूप स्वरवृग नामएक यंत्र प्रसिद्धः हूवा॰ सो स्वनपाया इसीतर्ह्रों यंत्र निर्म्माण
में वंग देशका कोई एक विशेष संगीतज्ञ॰ उस से निर्माण करणे की विधि कोंजा॰ नलि
या सोउसने नाम करण भी किया कलक तेमे भी एकप्रसिद्ध यंत्र निर्माता था उसने यंत्र र
चा तो हम लोक भी उसी तरां रचने लगे इस सें और भी एक यंत्र नूतन रचलिया जो अब
भी हमारे देशमें स्थान स्थान में प्रचलित हये एड ञो याई विंवलडेर पियान फोई नामक
ग्रंथ में इलसिमार अध्याय में तिशा का एक चित्र प्रतिरूप जिसकों मारलेनास वोलते हयें
सो देखणे में आउता हये इसकों मिसर देश में कानुन कहिते हैं अर अरब पारस्य देश में
कानून कहिते हैं सोई प्रचलितहये जिसके अवकरण में अवशेषमों र उरोपदेशका प्रसि
द्ध यंत्र पियान प्रसिद्ध होयाहै सोयंत्रजो भारतके सहस्राधिक वत्सर प्रचलित कात्यायण।

वीणाथी सोईएकप्रकार सें प्रतिपन्नभई इतिकान्तप्रस्तावअन्तर्देशः १४ अथप्रसारि
णीवीणा॰ दो विकारी परित्यागअर पांचाहूंदी विशिष्ट एक कच्छपीवीणाके दंडके पासे
सें और तीन कीलक युक्त एक क्षुद्रदंडसें लग्नकरणे सें प्रसारिणी वीणा होती है इसी
यंत्रके प्रधान दंड सो १६ सोलो थान और अतिरिक्त क्षुद्रदंडतें भी १६ थान सभ मिला।
के ३२ वतीस थान सारिका काच्छपीवत् विन्यस्त हैं प्रधान दंडपर पांचहीतार किंयत प
रिमाण सें रंजिनी वीणाके मत वंधनकोरी तिस है और क्षुद्र दंड स्थित तीनतार प्रधान दंड
के तार मध्य समक करिके वांधते हैं अर्थात् प्रधान दंडके दोई चिह्न विशिष्ट तार जि।
स स्वर में वांधी रहितीं हैं सोक्षुद्र दंडस्थ दोई चिह्न विशिष्ट तार हैं तिसकी अपेक्षा करके ए
क समक उच्च करके वांधते हैं किंतु प्रधान दंडके दोई चिह्न विशिष्टतार उदाराके निम्न
सम कके षड्ज करिके वांधते की रीति है इतरां क्षुद्रदंडके दोई चिह्न वशिष्ट तारही उदा
के षड्ज स्वरसें आवद्ध होतीं हैं अपरा पर तार जिस जिस स्वर में वांधते हैं सोई दिखाते हैं
नकशे में०० सेतारादि अन्यान्य यंत्र जिस पद्धिती सें वजाउते हैं न इसकी वादन

वा॰ प्रणाली यथार्थ तिसके अनुरूप नहीं है प्रसारिणी समतल॰ स्थानमें वा क्रोड में अर्था
२॰ त् आपणी गोद में ठीक समभाव में स्थापित करके वंशवा काष्ठ निर्मित एक क्षुद्र शला
का दक्षिण हाथके मुष्टि संयोग में धारण करिके अनंतर तिसीके आघात में बजावते हैं
और वामे हाथकी वृद्धांगुली तारके ऊपर में सारिका में दीप और घर्षण के सहिकार में सं
चालन करते हैं किन्तु प्रत्येक आघात ही यंत्र के सारिका शून्य स्थान में होना उचित है
वादक गण स्वेच्छानुसार में शलाका के बदलें कोणस् अर्थात् मजराब भी व्यवहार
कर सकते हैं प्रसारिणी वीणा में निम्न लिखित नियम सो दोनो दंड मिलाके सार्द्ध त्रि
सप्तक स्वर हो जाते हैं ॥ नक्शा॰॥ प्रधान दंड॰ अथ क्षुद्र दंडिका इसयंत्र में दोनो दंड
जोड़नेका तात्पर्य एह हये जो प्रथमतः अन्यान्य यंत्र की अपेक्षा करिके एक सप्तक अ
धिक स्वर अनायास में प्रतिपन्न होता हये जिसकारण अपरापर वीणादी में सार्द्ध द्विसप्त
कका अधिक स्वर नही पाया जाता किन्तु इस में सार्द्ध त्रिसप्तक पर्य्यन्त विनाक्लेश में
प्रतिपन्न कर सकते हये इसमें में प्रधान दंडस्थ तारका स्वर नीवा है अर क्षुद्र दंडस्थता

रका स्वर एकसप्तकउच्चकरिके बांधते हुये बजाउणे के समय मों दोनो दंडका उच्च अर
नीच स्वर योग देणे में बाजा विशेष करके अलंकृत होता हुये और मधुर भी होता हुये ।
येह प्रसारिणी वीणा आधुनिक यंत्र हुये॰ इतिप्रसारिणीप्रस्तावः पंचदशः १५ अथस्व
रवीणा स्वर वीणा संस्कृतग्रंथानुसार अतिप्राचीनयंत्र हुये एह देषणे यों अने कोश में
रवावके तुल्यहुये इसका ध्वनिकोश अलाहू निर्मित होता हुये और दंडादि अव यव का
ष्ठके होते हैं रवावका कोश जिसतरां में चर्माछादित होता है इसका काष्ठ पटडीसें वैसा
ही आछादित होता हुये स्वरवीणाकी तारां चारही होती हैं ॥ इसयंत्र में तीन सप्तक ही
पाये जाते है ॥ इतिस्वरवीणाप्रस्तावःषोडशः १६ । अथसारंगी॰ यंत्रभी अतिप्राचीनका
लसे लेकर भारतवर्षमें प्रचलित है इसका ध्वनिकोशभी अर दंडभी दोनो एकस्थान
अखंड काष्ठ द्वारा निर्मित होता है ध्वनि कोश भी पतले चर्म्मद्वारा आछादित होता है
और दंड काष्ठकी पटडी से आहृत होता है और दंड के ऊर्द्ध भाग में दोनों पार्श्वों में दो दो
करके चार इष्ट कीलक हैं और इन में चर्मत न्तुपाते हैं और दक्षपार्श्वमें वनाने वाले।

वा· २१ 21

की इच्छानुसार स्वद्र कीलक होते हैं उनमें पित्तल की तारें होती हैं कुछ पक्की ता
रें भी होती हैं उल्लिखित प्रधान चारही तन्त्र हैं येह यंत्र क्रोड में अर्थात सवभाव से उ
त्सल उत्संग में गावके वक्ष स्थलके सहिकार में वजाते हैं अर वाम हाथकी चारही
अंगुलीयों के नावों के स्वर्श घर्षण सें स्वर गमक तानादिनि कालते हैं अर नखांको
एक पार्श्वमें घर्षण कर्ते हैं अर दक्षिण हाथ से एक धनुषी· जिसको गज कहिते हैं
उसके साथ वजाउते हैं इस वाद्य में भी पूर्ण विसमक प्रतिपन्न होते हैं ॥ सारंगी को
मल कंठी है अर्थात सुंदर कोमलकंठ वाली स्त्री के सदृश स्वर है· अर जहां नृत्य हो
ती है उस शाला में इसका वहुत व्यवहार है सारंगी की ध्वनी अति शयकर्के मधुर है
और कंठ स्वरके सदृश है इस वाद्यकी स्वर अर श्रेष्ठस्त्रीका कंठ एक ही भासते हैं कंठ अ
थवा वाद्य भिन्न भिन्न प्रतीति नही देते ॥ येह यंत्रभी वहुत प्राचीन कालसें भारत वर्ष
के प्रायः सर्वत्र एही वहुल भाव सें प्रचलित है और धन स्तन यंत्र का आदी यंत्र हूये
एजनविसप कार्टक अनुवादित है जिवेलियम राज्यके राजधानी में व्रसेल नगर

मेरहिरोवाला· संगीत विद्या लय का अध्यापक पफजे फेटीस साहिब हान सुवि
ख्यात वाद्यलीन निर्माता एसटेडी भेरिया सका जीवन हत्तान्त और यन्त्र यंत्र का आ
दिउत्पत्ति विषयक इतिहास ग्रंथमें स्पष्टाक्षर लिखते हैं कहा है जो खृष्ट जन्मके
५··· पांचहजार वर्ष पहिले महाबल पराक्रान्त लंकाधिपति रावणराजाने इसजाती
के यंत्र की उत्पत्ति करी थी· पीछे में नाना देश में किंचित् किंचित् अवयव भेद से ना
नानाम से प्रसिद्ध भई २ उरोपके देश में भायलिन् चीनके· आरहीन पारस्यके का
मांचा अवयव भेद से नाम है एसिरिया देश में भी इसी का प्रचार था· इतिसारंगीप्र
स्ताव: १८ अथ एसराए यंत्र अतिआधुनिक हये· सेतार और सारंगी इनके मिलाप से
बना है एह यंत्र खर्पर से लेकर दंड पर्य्यन्त काष्ठनिर्मित होता हये और खर्पर भी कि
तनेक अंश मे सारंगी सदृश होता है अर दंड भी यथार्थ· सेतार के दंडवत् होता है दंड
के ऊपर भाग में जोड़ी होई पांच कीलक में पांचही तार होती हैं जयसे सितार में हैं वेसे
ही स्वर होती हये अधिक इस मे पित्तलकी पार्श्वतंत्रिका व्यवहृत होती हैं किंतु तिन

वा· की संख्यास्वर वेधन वादकगण की इच्छानुसार इसकी पार्श्वतं त्रिका इत्यग्र रूपमें
२२ वजती नहीं हैं प्रधान तार के कम्पन से प्रतिध्वनित होती हैं वादक गण के वामें हा।
थके होले पकड़ने के आश्रय में यंत्रलंबभाव में खड़ाकरकें दक्षिण हाथमें लेइ हुई य
न्त्र षी सें बजाते हैं सेतार वादन की प्रणाली में इसके बजाउण में वामें हाथकी तर्जनी
ऊैर मध्यमा सें बजाउते हैं एसराज् की नायकी तारही केवल बजती रहिती है अपर तार
स्वर सह योग्यता के निमित्त व्यवहार करणेके योग्य हैं यह यंत्रभी कोमल कंठी स्त्री जा
ती के गाने की मधुरता योग्य है ऊैर तिसके गीतके गाउण के अनुसार बाजता है कभी
कभी से तारादि यंत्रकी न्याई स्वतसिद्ध भीबाजना देषणे मे आता है इति ॥ एसराज् प्रक
रणम् ४९ अथ मायूरी वीणा· वा· ताऊस मायूरी यंत्र एसराज् का अवयव भेद मात्र यं
त्र है केवल इसके स्वर्प मूल में एककाष्ठादि निर्मित मयूरकी ग्रीवा पदादि चरण
चिह्न होते हैं बोलते है येही यंत्र संस्कृत में मायूरी· अर पारस्य भाषा में ताऊस कहा जा
ता है इसका धारण स्वर वेधन सारिका· वादनादि व्यवहार एसराज् के तुल्य है· वास्तव।

में ये हयंत्र थोड़े कालकाही बनाहोया प्रतीत होता है जो किसी उत्तर॰ पश्चिम देश
वासीने इस एसराज कों मयूर का कंठ लिगा दीया है ४॰ वर्ष॰ वा ५॰ वर्ष के मध्यमें ।
एसराज यंत्रही मयूरी॰ बना कोई कोई कहिते हैं बंग देशस्थ विष्णुपुर केपासेका सेवा
राम नामक शिल्पी था सो प्रथम ताऊस को उत्पन्न करता भया॰ और येबातस्वीकारभी है॰
इतिमयूरीप्रकरणम् अथालाबूसारंगी॰ प्रथम सारंगीका अवयव भेदमात्र है विशेष
के मध्यमें यही जो सारंगी दारु निर्मित है इसके खर्पर से लेकर प्रायदंडप्रांत पर्य्यन्त
समुदाय और पश्चाद्भाग भी एक अखंड अलाबूद्वाराप्रस्तुत होता है अति प्राचीन काल
में इसी यंत्र की खर्परी को कोई कोइ नारिकेल से निर्म्माण कर्ते हुये अलाबूसारंगीका
अंगुली स्थान ध्वनिपट्टक प्रभृतिसभ और और अंग सभकाष्ठके ही होते हैं इसका प्रधान
तंत्र पार्श्व तंत्रिका सभकका स्वरबंधन और प्रयोग भी सारंगीकी न्यांई है किन्तु धारण अ
र वादन प्रणाली में सारंगी से कुछ अधिक प्रतीत होता है सारंगी की न्यांई गोद में धर क
के इस कों भी बजाते हैं खर्परांशकों वामस्कंध में स्थापन करिके वामहस्त कुछक प्र

वा॰ माण में आकुंचित करिके उक्त हस्तका ताल और अंगुली की सहिकार तासें धारते हैं और
२२ वादन काल में सारंगी में जिस तरां तंत्रके नीचे नीचे वामके नखके घर्षण से स्वर निर्गत
23 होता है तिसके बदले तारके ऊपर ऊपर अंगुली के टीप योग सें॰ इउरोपी वाङ्लीन यंत्र की
रीति में संपूर्ण स्वर दिखाते हैं वस्तुतः वाङ्लीन॰ अर अलावू सारंगी यह दोनो साज एकजा
ती के हैं इसे वास्ते कोई कोई पुरुष इउरूप देशके इसी कों भारत वर्षका वाङ् लीन वाद्य बोल
ते हैं अलावू सारंगी वंग देशमें प्रसिद्ध है॰ इत्यलावू सारंगी प्रकरणम २९ अथ मीन सारं
गी॰ मीनसारंगी एसराजका रूपांतर मात्र है दोनो के मध्य में विभिन्नता यही है जो मीन सा
रंगी के ध्वनि कोश से लेकर दंडप्रांत पर्य्यन्त समुदाय एकाङ्गगामी एक आवरण दीर्घाका
र अलावू निर्म्मित होता है इसकी सारकाकी संख्या और विन्यास कीलक तारकी संख्या और।
योजना पार्श्वत त्रिकाका नियम स्वर बंधन धारण वादन अंगुली विक्षेप इत्यादि सभ जि
तनाक विषय है सो एसराज के अनुरूप है यंत्रके खर्पर के मूल में काष्ठादि निर्म्मित एक
मत्स्य स्वावाकृति होती है इसवास्ते इस वाद्य को मीन सारंगी बोलते हैं इति मीनसारंगी

प्रस्तावः अथ स्वरसंगवा स्वरसो स्वरसंगयंत्र देखने में एसराज् कीन्याई है एसराज का
अंग जिस जिसवस्तुका वनता है उस का भी अवयव उसी उसी वस्तुका होता हये।
इसवादनादिका नियमभी सभ एसराज् कीन्यांई एसराज्की न्याई पार्श्वतंत्रिका नहीं रहि
तीयां स्वरसंग यहीनाम प्रसिद्ध है वंग देशान्तर गत अंचल देश में इस प्रकारके यंत्र
का प्रचार वहुत देखने में आउता है ओर तहांके निवासी सेवाराम दास नें येह रचाथा॰
अवजो सकल तत यंत्र का प्रचलन अधिक सें अधिक देखाजाता है तिस के समुदा
य का विस्तार सहित विवरण देखाही है इस सें भिन्न वहुत यंत्रो का नाम संगीत ग्रंथों
में दृष्टिगोचर है किन्तु सो सकलयंत्र का प्रचलन नहीं देखा॰ उनो यंत्रा का भी नाम प
रिशिष्ट यथास्थानमो लिखेंगे अर्थात् अकारादिक्रम सें इतिस्वरसंगप्रस्तावस्तयोविंशः
२३ इतिसंगीतरणवीरसिंहमहोदधौसम्पततनयंत्राणि॰ अथग्राम्य तत यंत्राणि॰ ॥
सारंदा॰ यंत्र॰ किसी किसी सभा में भी वाजता है सो॰ शावानुयाईसभा में वा॰ सिखोकीस
भा में होता है ओर गृहस्थी जनों के वहिर्द्वार प्रायः वाजता है इसी सें विचार कर देखा

वा· गया है जो येह वाद्य सभ्य नहीं होसका सारिंदाका अंग समुदायभी काष्ट निर्मित होता
२५ है इसकाध्वनिकोश कितनाक चर्म्माछादित होताहये· अर कितनेअंशखाली रहिता है·
25 इस वाद्य में घोडेकी पुछके बाल निर्मित तार तीनहीं बांधे रहिते हैं अर कहीं तन्त चर्मम
यभी अथवा तार धातुकी भी बांधते है ॥ · ॥ सारंगी यंत्रभी सारिंदा यंत्रके अनुकृत है
अथवा· सारिन्दा सारंगी के अनुकृत है इस में भी कुछ संदेहनहीं है वस्तु संबंधकी उन्नती
का विषय विचारकर्के देखणे सें प्रतीत होता हये कि सारिन्दा हीं आदिम यंत्र हये काल
सहकार सें देशकी सभ्यता के संग संग में संस्कृत होकर सारंगीके आकार· में परिण
तहोके वर्तमान· हये· किन्तु· इसमें भी एक विषमसंदेह उपस्थित होता हये· जिसका
रण संस्कृत संङ्गीत ग्रंथ समूह में सारिंदाकानामोल्लेखनहीं है अर्थात् कौनसा पहिलें
निर्म्माणकियागया· तवसारिन्था नामदेषने पायाजाता है प्रतीत होता है कि सारिन्था
का अपभ्रंश सें सारिन्दा कहिते हयें सारंगीकानाम सकलग्रंथों में हिं लक्षित हये सो
होवे पर दोनें यंत्र अति प्राचीन हयें इतिसारिन्थाप्रस्तावः २४ एकतारा· वा एकतन्त्रि

का॰ इसवाद्यकों एकअलाबू चौडासा चर्म छादित होता है और उस में एक दंड वंश
का लगा रहिता है और एकमात्र छुटी होती हये उससाथ लोहे की एक तार होती है
इसी वास्ते नाम एकतारा प्रसिद्ध है वादक लोक इसी तार कों अपने कंठस्वरानुकूल
स्वर करके गाते हैं॰ इस यंत्रकों॰ बाउल॰ विरागी॰ मांगी॰ अनेकसाधु दक्षिण हाथकी
तर्जनी में बजाकर भिक्षाटन द्वार द्वार करते हैं तिनो से भिन्न किसीरागी युक्त सभा में।
इसका प्रचलन ही देखा॰ इति एकतारिकाप्रस्तावः २५ अथानंदलहरी॰ येह ग्राम्यं
ओंके मध्यमें परिगणित है प्रायः अर्द्ध हस्त परिमित एक शून्य गर्भ काष्ठकाखोल एक
तंत्र सहित होता है और चर्म करके आच्छादित होता है एक मृण्मयः वा काष्ठादि नि
र्मित भांड॰ उप करण में आनंद लहरी यंत्र प्रस्तुत होता है उल्लित खोलका एक ही
मुखकी अपेक्षा करके किंचित्प्रशस्त चर्म द्वारा॰ आच्छादित करणा चाहिये और इसी आ
छादिक चर्मकों ठीक मध्यस्थल में एक ही छिद्र करके पूर्व कथित तन्त्रका एकप्रान्त
उक्त मृत्तिकादि निर्मित भांडेके आच्छादक चर्मके मध्य स्थित छिद्र में संलग्न करते

वा. इसे यंत्रका काष्ट निर्मित खोल भी वामी कक्षा में दृढ रूप से पकड कर वाम हस्त
२५ में बलसहित आकर्षण कर्ते हैं और दक्षिण हाथ में धारण करी होई जो शलाका है
तिस्के द्वारा वजाते हैं वामे हाथ के आकर्षण से स्वर की उच्च-नीचता-सम्पन्न होती है
इसी यंत्रकों भिक्षुगण व्यवहार कर्ते हैं इत्यानंदलहरीप्रस्तावः २८ अथ गोपीयंत्र
म एकही डूढ हाथ परिमित ग्रंथीके सहित सद्दः वंशदंडका ग्रंथियुक्त प्रांत के छे
सात अंगुल अखंड भावसे राख करिके अवशिष्टांश चार ही समान भाग से चीर कर्के
तिसके दो अंश त्याग कर्के जोनसे दो अंश वाकी है तिन्हूके प्रांत में आनंदलहरी के
खोलके सदृश एकही अलाबु निर्मित खोल आवद्ध करिके तिसमें आनंद लहरी
की रीति से एक लोहे की तार आवद्ध कर्के उसी तारके अपर प्रांत में उक्त वंशदंड के अ
विकृत भाग में प्रोथित एक कीलक में संवद्धक हैं यत्र दंडके प्राय मध्यस्थल दक्षिण
हस्तकी तर्जनी परित्याग से अवशिष्ट समुदाय अंगुलियों की सहायता से पकडकर
तर्जनी द्वारा तारकों वजावते हैं दंडधारक अंगुलि चतुष्टयके आकुंचन और प्रसारण

से इसके स्वरकी नीचता और उच्चता प्रकाश पाती है ये यंत्रभी वाइलेका मिल्लक
अवहारकर्ते रहिते हैं इतिगोपीयंत्रप्रस्तावः ॥ २७ अथततयंत्रोत्पत्ति जोसंपूर्णतत
यंत्रका विषय है अर्थात वीणादिक जोवाजे हैंए उन्हका विषय पहिले हिंवर्णनहु
आहै तिनके मध्यमे अनेकही एहि आसिया विशेषतः एहिभारत वर्षमे उत्पन्न हो
कर नाना देशों मे नाना विध संज्ञाकर्के प्रचलित हुए हैं - अन्हु भेदसें विविधविलसि
त प्रदर्शनकर्के विख्यात हैं सो एकप्रकारप्रतिपन्नभये है ॥ सो इसयंत्रउसीतरहसेंरहे
है वदले नहि गए और किसी स्थानमे आकारसें कितनेकवदलेगए हैं कितनेकयंत्रकी
पहिलीसंज्ञादेशभेदसें भाषाभेदसें वर्णगत विकृतिप्राप्तहोजाती है ॥ किन्तु एकर
तेहोयं मूलअनुसंधानकर्तेहोयांजाणिसकते हैं जे एहोही एकहीयंत्र कोई एकदे
श विशेषसें उत्पन्नहोकर विभिन्नदेशोंमे विभिन्ननाम वा आकारधारणकियाहै सो उन्ह
सभका विलास विभ्रम भिन्न भिन्नहुआहै औरके तेहीयंत्रहुएहीके वर्तमान समयके
निर्माणकरेहुए प्रसिद्धतम विख्यात यंत्र सकल के पत्तन भूमिस्वरूप नगरके यंत्रहोरा

वा. येहैं सोभाषाके तत्ववेत्ताजोहैं ओहि विभिन्नदेशप्रचलितभाषासमूहकोंपरस्परसहा।
२६ य्यसमालोचनाकर्तेंगए इसीतह्वाकितनासत्यकाक्याप्रघटकर्तेहैं अवशेषमेंऐसादिन
26 आवेजित दिनमेहमारेलोकोंका एहीवाक्यसत्यकरिकेप्रतिपन्नहोवे जो पश्चिममेमे पार
स्यवा सिडिया देशान्तर्गत ईराण प्रदेश पूर्वमे मध्यदेश दक्षिणमें विंध्यगिरि और उत्त
रमे हिमाचल एहि चतुः सीमान्तर्वर्ती विस्तीर्ण भूमीभागके अधिवासियोंके निकट यु
उरोप और और अनेक देशोंकी न्याई अधिकांश संगीत यंत्रका विशेषकर्के ततयंत्रके ति
मिन्न चिरकालके निमित्तसें अथमर्ण क्याकर्जदार रगहेहैं हमलोकोंका एहिमतहै औ
रजेकर इतिहास विचारकर्के जो ऐसाबे तवजाण सकतेहैं। जो प्रायसमुदाय युरोपके दे
शका संगीत इतिहास लेखकगण और हमारेलोक इसीमतको संपूर्ण अनुमोदनक
र्तेहैं सोसभभी एहिकहितेहैं। हमारेदेशमे जो सकल प्रसिद्ध तत संगीत यंत्र प्रच
लित हैं सोसभकाही आदिमस्थल पूर्वदेश सकलकेही मध्यमे कोईक पूर्वाञ्चलके
सकलयंत्रका अनुकृतिहै कोई वा उन्हीके आकारके परिवर्तन उन्हीकेवदलनेसें

होयाहोया सुप्रसिद्धजोफिटिसनामकहै तिस्केमतमेभी पूर्वांचलही इउपेरोदेशका संगीत
देवीका शैशवदोलाक्या संगीतदेवीके वाल्यावस्थाकापंन्हूडाहै सोकहितेहैं पहिपश्चि
मोचलमेंईसमतह्नोकुछभीनहीं जो पूर्वांचलमेनहिभया जेकर ओह इउरोप देशके सभ
पंडित पूर्व देशके जितने संगीत यंत्रका जन्मदेश वोलकर मुक्तकंठसे अंगीकार क
र्ते हैं तदवी कोई इसी पूर्वप्रान्तके कोई एकदेश विशेषके आदिम जन्मभूमी वोलके
सन्मान देणेकों नहीं चाहते ॥ उहूसभके मतमे सभयंत्रके निमित्त इउरोपका साक्ष्य
संवंधमें वाकि गौणसंवंधसे प्रधानतः मिसर आरव आसिरिया औरभारतवर्ष पहि
केदेशके निकट विशेष ऋणीहैं किंतु इहूसभके मध्यमे कौनदेश ये प्रकृत जन्मभू
मि सो तिसको स्थिरनहीं करसकते सभकाही इसविषयमेंस्यातमतभेदलक्षित होता
है पहिले बुद्धिमान लोक कालनिर्णयमो उहूकी आशाहतहोगईहैं वास्तवतासे
उहूसभका जन्मकाल इतना प्राचीहै जो इतिहासके अधिकारके भी वाहरही है।
और तिस्का ओही वाहरका भाग एक घन विस्तीर्ण जवनिकाद्वारा अंतरितहै अर्थात

बा. २७

बीचमैंअव्यवथानयुक्तहोगयाहै उह्नसभकेमध्यमे कोई कोई बोलते हैं जो कितनेक
यंत्र मिसर देशमें कितनेक आरब देशमें कितनेक वा आसिरिया में और सभदेशोंमें
बहुत भारतवर्षमें ही कितनेकयंत्र उसीतह्नाकेरहे और कितनेकरूपान्तरितहोकर
आसियाके औरऔर देशोंमेभी और यूरोप देशमे उहांमेंआयेहैं सभप्रकारके यन्त्रस्त
यंत्रका और अधिकांश और और तह्नाके ततयंत्रका जन्मभूमी जो भारतवर्षहै तिसके वि
षयमें सभही एक अविसंवादी क्या मत प्रकाशकियागयाहै सुप्रसिद्धमनसियर म
शिराट साहिब कहिते हैं जो जितनेक यन्त्रस्तत यंत्र पहिले समय मो आसिरियादेश
के किह्नूकि मिसरदेशके शह सभकेमध्यमे कितनेकहि परिचित नहींथे जेकर और
कोई कोई इतिहासलेखककें बोलागयाहै जो हिब्रूदेशके उसीतह्ना कितनेक यंत्रथे।
किन्तु तिह्नकेमध्यमेसभके अंगुलित्रको यन्त्रःबोलकर भ्रमथा सोवास्तवतासेंभीयन्त्र
स्ततयंत्र संपूर्णभारतवर्षकेहीहैं वाराणासुनामे हिन्दुसभकाजो एक अतिशयकरके।
पुरातन यन्त्रस्ततयंत्रथा सोप्रायपंचसहस्त्रवर्षव्यतीतहुए सो लङ्काधिपतिरावण ति

मोलकर्के आपणेनामकर प्रसिद्धकरदिये चीनका उइहीत जापानकाकोफिउ हिन्दुदे
शका सारङ्गी और सारिंदा और आरब और पारस्यका केमानगे और रबाब पटे संपूर्णही
उसी एकही यंत्रकप्रतिरूपकेविना और किछनही हम इसीतरह प्रतिरूप यंत्र जो आ
सिरिया और हिब्रू देशमेभी अवशेषमे उत्पन्न होसकतेहैं सो कितनेक संभवपरहैं ॥
एकजे फिटस तिहकों रेजमि फिल सोफिकुइटेला हिष्टोरि देला मिउसिकुर नामक
ग्रंथमे लिखाहुआहैकि जोसभ धनुस्ततयंत्र इउरोप से पहिले उत्पन्नहोकर आसिआ
के और और देशमे लेगयेहै सो कहिते हैं धनुस्ततयंत्र पहिलेसे इटालीमे उत्पन्नहोक
र ग्रीसमे और तिससेंहोके आसियामाइनरमे और पीछेसें पारस्य और आरब देशमे केमा
नगे एराउसी नामसें प्रचलितहुआहै किन्तु इउरोप देशके युद्धयात्रावाले सभलोक
जिस समयमे जेरुजेलमसें लडकर्के आए तिससमयमे उहसभके साथ साथही और हि
यंत्रकों और लोकभी आपणे देशमे लेगए किन्तु भारतवर्षके वारणास्तुभी ऊपर कहेहु
ए सभयंत्रकासूत्र सोभी और औरही तिस्कों तिस्के पीछे कियेहुए ग्रंथमे स्पष्ट स्वरमे

वा. अंगीकार किया गयाहै जिस समयमो हम इस तह्रा सें लिखयाथा उसक्षणमे ह
२८ म पूर्व देशके संगीत संबंधसे संपूर्ण अनभिज्ञथा अ· कुछभीनही जानताथा क्रम
२८ सें प्राप्त अनुसंधानके पीछेसें अब शेषमै पहि सत्यही जाणाया है जो पूर्वदेशमे न
हींथा सो इस तह्रा कि कभी और पश्चिम देशमे नहींथा इस समयमे हम निर्भय हो
कर बोल सकते हैं जो भारत वर्ष सर्वाङ्ग संपन्न भाषाका क्या संस्कृत भाषाकी उच्ची
पोडीमे चढकर सबकी मनुष्यों के मनकी अनेक प्रकारकी चिन्ता और भाव परं परा
का प्रकाशक दर्शन शास्त्रकों सर्वाङ्ग सुंदर कविता के निमित्त और ताहां वासीलोकों
का प्रधानतम हर्षकों देणे वाला संगीत के प्राचीन तम चिह्न समूहकों प्रगट करने
वाला कियाहै सोइ भारत वर्ष सभ धनुस्तत यंत्रका आदि जन्म स्थानहै और तिसी सें
आसियाके और और स्थलमे सोई सभयंत्र परिचितरूपहैं अनेकयंत्रहैं देखणे सें निश्च
यपहि होताहै कि एसभ भारत वर्षके ही काढिणे से प्रतीति होतीहै इसमे किंचिन्मात्र
भी संदेह नहीं है जेकर कोई धनुस्तत यंत्र पहीली अवस्था देखणेकी इच्छाकरे तव तिस

की प्राचीन सरल भावका अन्त संधान कर्णाजावे क्या शिल्प ताकी चतुराई जिसकी संपू
र्णता संपादनमें नहीं देखी इसीतरह यंत्रही ग्रहणकरकें भारत वर्षके वारणास्त्र इत्यादिको
मैं दृष्टिकरें इतने हरजानेके निमित्त केहे आवश्यकताहै कि जो एकतंत्री वीणाका।
जितने इउरोप देशके पंडितगण समुदाय तत यंत्रको आदि कहिकर स्वीकार कियाग
याहै सो एहि भारत वर्ष में ही उत्पन्नहुएहैं सोई एक तंत्री वीणा भारत वर्षका प्रसिद्ध पि
नाक यंत्रहै इसका प्राचीनत्व प्रतिपन्न क्या सिद्ध करणेके निमित्त भारत वर्षके पंडितगण
इसीकों देवदेव महादेवजीका निर्माण कियाहोयाहै और तिसीकोंही निरंतर प्रियतम्हक
हितेहैं ॥ सो जोहो वे सो होय सभप्रकारके तत यंत्रही जो पूर्व देशमें उत्पन्न हुएहैं तिन्हमे
किंचित् मात्रभी सशयनहीहै और जोगणसेलोक धनुयंत्र संपूर्ण भारत वर्षमें ही उत्पन्न
नहीं होकर पूर्वदेश में और और देशोंसें ही उत्पन्न हुएहैं ऐसें कहितेहैं उन्हसभके म
त जो भ्रांति संकुलथे सो अनेकही स्थानमें देखगएहैं। सुप्रसिद्ध फिटिस् कहिते है
भारतवर्षहीसभजो धनुस्ततयंत्रहैं उन्हका जन्म स्थानहै — भारतवर्षसें ही प्रथम ॥

वा॰ आसियाके और और देशोंमेंभी लोग एहैं हम लोक जिसद्वारा रावण और अस्तुति एहि
29 होते हिंदु यंत्रके साथ अरदेशोंके केमानते आगजके साथ तुल्यता करके तिस द्वारा
शेषोक्त यंत्रकों पूर्वोक्तयंत्रकी अनुकृति मात्र नहिं कहिकर ठहिरनहिसकते एकहि
यंत्र जोकोई एकदेश विशेषसे उत्पन्न होकर विभिन्न देशोंमे नामभेदसे प्रचलितहुए
हैं सो अनेकही स्वीकार करतेहैं सो एह युक्तिभी अनुतमोदितनहीं के हर्षको हरतनहीं
करसकतीहै सो भाषाके तत्ववेत्ता महात्मा सो प्रत्यक्ष दिखायदेतेहैं जो यंत्र इंग्लंडमे।
पाइप सोईयंत्र जर्म्मणिका फिफे फ्रान्सिका पिपिउ: गलदेशाके पिडोव डोयेलस
के पिब् स्वइडेनके पिपा और डेनमार्कके पिज्वप सोस्पष्ट उपलब्धका देख सकतेहो
जो यंत्र इंग्लण्डके हार्प सोई जर्म्मणिका हार्फे फिनलंडका हार्पु आइसलंडका हर्पा
हंगेरीका हार्फा फ्रान्सका हार्पे स्पेनका आर्पा अंग्लोस्याक्सनदके हर्पे वा ध्यार्पे
रजो एलउद् यंत्र आरबका सोईही स्पेनका लद् स्वइडेनके लुता डेनमार्कके।
ल्यत जर्म्मणिके लते इटालीके ल्युतो फ्रान्सके लुत और इंलिण्डके लोक लिउट

और जो यंत्र पूर्व देशसें सरजातिका कियाहुआ पहिलें स्पेनमें ले जायकर गिटार
नामसें कथन कियागया ओर्हि यंत्रही पीछें जर्म्मणदेशके पर्वतके प्रदेशवासी लो
कका जितार तिइरियाका किसार पुरातन ग्रीसका कितारा हय ओरइसमे पूर्वदेशमे
सोई जो पारस्य ओर भारत वर्षका सेतार सोई इससमयमो सभई लोक खुले कंठसें
अंगीकार करलियाहै भाषाके तत्वकों जानने वाले सभलोकजोहैं उन्हके पूछनेसें
सो सभलोक ग्रीसके नियमानुसार सें कहितेहैं सो उसदेशके व्याकरणसें कि सक
गज इत्यादि शब्द एक परिवारके परस्पर वदलेजातेहैं के जैसें सितार किसार गिटार
कितारा जितार इत्यादि पूर्वदेशके प्रचलित यंत्र सभके सहित पश्चिम देशके यंत्र सम
हका अनेक नामका साहश्यहै कभी नहि हुआकि कभी ऐसा समय हुआकि आवश्य
कही होगया जिसकारण मै इन्हसभकी आदिभूमि निर्णीतहोसकतीहै अथ शुषिरयंत्र
प्रकारः एहेसभयंत्रआच्छिद्रयुक्तहैं के॰ वीचसें पोले ओर छिद्रो करकें भी युक्त जैसें वंसरी
है इसीनिमित्त इत्यादिसभकों शुषिर यंत्र कहितेहैं सो एहे सभयंत्र स्थाप करकें फूक

बा० मारने की सहायता सें बजते हैं इन्ह सभके मध्यमे जो इन्ह सभकी अपेक्षाकरके अधिक प्र
२० चलितहै सो इन्हके विषयमेंहि विवरण किया जावेगा यहि सभ यंत्र प्रथमसेंहि दो
३० प्रधान श्रेणी सें विभक्तहै: एकतल और द्वितल तिन्हके मध्यमे अभी और चार प्रधान
जातिसें विभाग किए गए हैं वंशी जाति काहलजाति शृंगजाति और शंखजाति वंशी
जातिके मध्यमे मुरली सरल वंशी वा लघु वंशी और वेणु इत्यादिहै काहल जातिके
मध्यमे रोशनचौकी कमल और सानाई के० सरनाई इत्यादिहैं शृंगजातिके मध्यमे
शृङ्ग, रण शृंग और तुरी इत्यादिहैं शंखजातिके मध्यमे शंख गोमुख व क्या० नरसींगा
इत्यादिहैं यह समुदाय एकंतलयंत्र भए हैं द्वितल यंत्रके मध्यमे केवल तंबूरीही ब
तीजाती है इन्हसभके मध्यमे अनेकही पारस्यदेशके नामसेंही परिचितहैं किन्तु
इन्हसभका एक एक संस्कृतनाम भीहै सो प्रत्येकके विवर्ण स्थानमें लिखा जावे
गा सुविधाके निमित्त तिन्ह सभका जोनाम साधारण में वर्णन न कियेहैं सोई स
कल नामसेंही व्यवहार कियागया इस सकल यंत्रके मध्यमे शंख और शृंग ॥

अति प्राचीनहैं सो सभ यंत्रके फूतकार यंत्रके आदीहैं जिसपाससेके शिल्पकौशल द्वारा संबंध कियाजाताहै इह सभकेही यंत्रहैं सुतरां इह सभका प्रकृत पक्षमे एह के हा जे नाम प्राप्त हो नहीं सकता इहसभका दोनोही प्रकृति प्रसूत पदार्थ सभ्यताके सभाके सामान्य नमसे के समे में ही प्रथम व्यवहृत होवेंगे एहि सम्प्रदाय यंत्रही ततयंत्रकी न्याई वभिन्न अवस्थामे और वभिन्न उपलक्षमे व्यवहृतहै सो एह सभ भिन भिन्न भागसें विभक्त हुएहै तिह्नके मध्यमे कितनेक सभाके जोगयंत्र कितनेक वाहरले द्वारके कितनेक गृहके वजंतर कितने क ग्राम्य कितनेक वा मांगल्य क्या· मंगल कार्य्यमे वजाउणेवाले किन्तु इह सभके मध्यमे अनेकही दो वा तीन तिह्नाके श्रेणी भुक्त भी होतेहैं क्या· तीनही पंक्तिमें स्वीकार किया जाताहै सो नीचेमे तिह्न सभके मध्यमें कितनेक का एकही तालिका दीजातीहै ॥

सभामें	वाहरके द्वारमें	गृहमें	ग्राममें	मंगलविवाहादिमें
मुरली	रोशन चौकी	नरी	गोमुख	शंख

वा॰ तुक्का सरह्नाई रणसिंगा शंख गोमुख
३१ फलम मृदङ्ग तुबुड़ी रामसिंगा
वेणु

31

सरलवंशी ॐ सरलवंशी

वंशीजातीप्रकारः ॥ सामान्यता करके पकड कर जो यंत्र फूंकदेणेसें वजनेवाले हैं
उन्हूं सभ की सामान्य संज्ञा वंशी हैं किस कारणसें कि अति पूर्वकाल क्या बहुत
चिर कालसें प्रथम छिद्र सहित कोई फूंकसें वजने वाला यंत्र रचनेके समयमें
वांसकाही यंत्र रचना कियाथा पीछे और और कारणसेंभी इसकी निर्माण विधि सं
पादित होकर स्थिरकरीगई और वजाउणेकी रीतिकी विचित्रता और उपादानका॰वा॰
कारणका और छिद्र संख्याका विशेषकर भिन्नताके अनुसारसें नाना प्रकारके आका
र और नामरूपहैं जैसें तैल क्या तिलोत्पन्न स्नेहद्रव्यही प्रकृततैलहै किन्तु इसस
मयमें एरंड सर्षपादि सें उत्पन्न जो द्रव क्या स्नेह पदार्थ भी तैल शब्दमेंही प्रसिद्ध हो

गयाहै जो वंशी श्रीकृष्णभगवानजी व्यवहार कियाथा को बजाउतेहैं ओर वंशी बोल
ते है तिसीको मुरली बोलाजाताहै ग्रीसके प्रभेता रोमके फिस्चुला मिसिरके सिवि
ओर अबके लोक अंगरेजी फ्लुट ओर जर्म्मणि देशके फलि मेणिर इहूसभके साथ तिस
का अनेक तर्हीका सादृश्य है जो सरल भावसे वाजताहै तिस्को पारस्यभाषामें अलगो
जा वंगदेशकी भाषामे सरलवंशी ओर संस्कृत भाषामें बुक्कस ओर इंगरेजी भाषामें फ्ला
जिउलेट ओर लाटीन भाषामें फिस्चुला तितिमा वोलतेहैं सोसभप्रकारकी वंशी वर्त्तु
ल वा गोल होताहै सरल ओर पर्व दोष वर्जित वा वीचमे कोई गंघनहीं यह सभ
पहिले वांसके हीथे किन्तु पीछेसे खदिर रक्त चंदन इत्यादि काष्टका स्वर्ण ओर रौप्य
ताम्र ओर लोहा इत्यादि धातुके भी निर्माण किए गए हैं कंही कंही हाथी के दंद के
ओर स्फटिक के भी यह यंत्र बणे हैं इहू सभयंत्रो का गर्भ शून्यहै के वीचसें पोले हैं
इहू सभ की दो सी माहै शिरो देश ओर अधो देश सो शिरो देश बंद होताहै ओर अधो दे
श खुल्हा रहिं दाहै इहू की दीर्घता आट नौ अंगुलसें लेकर एक हाथ लंवे ओर तिस

वा० सें भी अधिक हो सकते हैं जो वंशी मुरली पदवाच्य है तिसका विषय पहिलें ही विवरण
३२ होगया है अथ मुरलीप्रकारः यह नलाकार वर्तुल और सरल वा सूधी होती है इसकी
दीर्घता अनेक प्रकारकी कही हुये किन्तु निरंतर एक हाथ परिमाण की ही देखणेमें आ
32 उती है और शिरो भागका तीन अंगुलि परिमित निम्न देशमे वा नीचें एक छिद्र होता
है तिसका नाम फूत्कार वा फूंक देनेवाला रंध्र उसी रंध्रके साथ चार अंगुलि कहीं क
हीं तिसकेही नीचें छे छिद्र होते हैं इह सभका साधारण नाम तार रंध्र है पहिले सें
सूटकी न्याईं इसके दोनो पार्श्वोंमें वेद होते है किन्तु इससमयमे तिसका और बड़ा व्यव
हार नहीं है श्रीकृष्णजीकी प्रतिमामें जिसतरहां हाथोंमे मुरली दई जाती है उसी तरहां
इहां टेढे भावसें दोनो हाथों करकें ही धारी जाती है सो पहिले सिखणे वालेंको सरल
भावसें पकड़ा इकर मस्तक ऊंचा और वामे मोढेके पास थोड़ी नम्रार कर और कोम
ल भावसे राखके वक्षस्थल विस्तीर्ण करके अभ्यास करनेकी विधि देखी जाति है ॥
मुरली दोनो हाथके अंगूठेयों के मध्य भागमें टिप देके पकड़नेसे वामे हाथकी

तर्जनी मध्यमा और अनामिका यहितीन अंगुलि मुरली के शिरो देशके तीन छिद्र के मुखमै और दक्षिण हस्तके यहि तीनही अंगुलि के नीचेमे स्थितजो तीन छिद्र हैं उन्हू के ऊपर वजाउणके समयमै प्रयोजनके अनुसार विनियोजित करते हैं पहिले प्रकारके आ यना नुसार क्या प्रमाण के अनुसार से पकड़ कर निम्न लिखित प्रकारसे यह वजाउणा हो तीहै इसके फूंक वाले छिद्रको पकगलेके पासे हिलायकर तिसको ऊपर अधरके क्या नीचेके ओठके ऊपर स्थिर और दृढ भावसे रावके अधर क्या ओठको पकन दवाइके दोनों के मध्यमे फूत्कार क्या फूंकदेण वालेछिद्रके निमित्त एक छोटा छे छिद्रोंसे वडा परिसर छिद्र रावते हैं अधर एक मुखके पासे रहे और फूत्कारंध्रका आधाक भाग मुखके हेट रावे और ओठ एक वाहिरमे रहे और उक्त रंध्रके खुले हुए भागको आवरणकर्के इस त हुसे जिस क्षण फूत्कार वाहिर होवे तिस क्षणमें प्राय समुदाय फूत्कारही रंध्र मध्यमें प्रवेश कर जाता है फूत्कार आरंभ करतेलें तिसके प्रयोग कालके वलका न्यूनाधिक के वशते स्वरकाभी उच्चता और नीचता संपन्न होतीहै हमलोका के देशमे जिस प्रकार

वा॰ मुरली है युरोपमे सोई फ्लूट है यह दोनोंही अति प्राचीन कालसें प्रचलित हुए होए अबतक
२२ कचले आउतेहैं यह दोनो काही प्राचीनताके प्रतिपादनके निमित्त दोनो देशोंमेही इसके संबंधमे नाना
प्रकार का प्रवादहै भारत की मुरली श्रीकृस्नजीकों अतिप्रिय॰ तमथी और ओही श्रीकृस्नभगवान इसको
33 निर्माण करणेवाला हुआहै युरोपका फ्लूट सर्वतन वा पहिले समेका रोमका फिश्चूला और एनीसका
आवलस मिनर्भा देवीका अति प्रिय तम और तिसी करकें हि निर्मित इसतरहा कहितेहैं पूर्व समेमे फ्लू
ट स्पष्ट होणेके पीछेंही प्रथमसें इतरजन भी इसकों व्यवहारकरतेथे और उसी निमित्त यह तैसा
आदरमणीय नहिथा॰ किन्तु जबसें ग्रीस देशके लोकोंने पारस्यादि देश जीत लिया तबसें लेकर
तैसेंही संगीतका विशेष करकें देखणेका आरंभहुआ उसी समयमे फ्लूटका इतना आदर अधिक
हुआ कि जोणसे लोक इस यंत्रकों वजाउणे नहीं जानतेथे सो उह लोकों की गणती अच्छे लोकों
मे नहींथी प्लुटार्क कहितेहैं विख्यात ग्रीस देशका राजा पेरिक्लिश नामक इस यंत्रका वडा उत्साह
देणे वाला था और उसीने ग्रीसके नाट्यशालामे यहरमे पहिले सं नवे शित वा स्थापन किया और
हमारे पासके लोक पूर्व देशसें विशेष करकें आसिरि या और मिसरमे मुरलीकी न्यांई यंत्र वड़

तसे पहिलेकाल प्रचलितथा अवयवोंमे कोई भिन्नतालक्षित नहीं होती सो किहाहय
कि स्तम्र प्रसिद्ध जो कोइ स्थान वा नगर विशेष हैं उसके ध्वंसका नाश होणेके उपरंत उ
सके बिचसें एक जगासें मृण्मय प्रतिमा निकसी तिसके साथ एक यंत्र निकसथा तिस
का आकार निरंतर मुरलीकी न्याँईथा सो किस समय मो ओर किस प्रकारकी घटनासे
जो इस प्रकारका यंत्र उस जगामें प्रामकुआथा सो किहा नहीं जाता ओह प्रतिमा आसि
रिया देशकाहीथा । सोइसस्थलमे यह अवश्यही स्वीकार करना चाहिये जो सभ प्रकार
के फूककर्के वजणेवालेयंत्रका आदि यंत्र शोवहे संगीत इतिहास लेखक जो प्रसिद्ध हैं
चार्लस वर्गिनामक साहिव इस समयमे वर्तमान मतकी साक्षी देतेथे । अथसरलवंशी
प्रारम्भ इसीको पारस्य भाषामे आलगोजा ओर इंगरेजी भाषामे फ्लाजिउलेट कहिते हैं
इसीतह्रा इसको सरल भावसे वा सुथी पकडनेसे इसका नाम सरलवंशी भयाहै सो मु
रलीकी न्याँई इसमे भी सात तार छिद्रहै ओर फूकदेणेवालेछिद्रके स्थानमे एक वायु
छिद्र होताहै उस स्थान सें वायु निर्गत होताहै वा वायु निकसताहै फूकवालेछिद्रमे

वा. फूकनहीदेणी चाहिये क्यों कि यह शिर देश इसका खुल्ला रहिंदाहै इसी स्थानमेंही फूक
३८ देणेसें वा मुख खुल्ला राखणे करके आवश्य क तम तार छिद्र सभमेंही अंगुलि रखने हा
रा वजाणेणे क्रिया संपादित होतीहै किन्तु पकड़नेकीरीती मुरलीसे सभस्वतंत्रहै प्रथम
34 तः इसकों सरल भावसें पकड़ना होताहै और ऊपरके चार छिद्रोंमे दहिणे हाथकी चार
अंगुलि और नीचेंके तीन छिद्रोंमे वामे हाथकी तीन अंगुलि उन्ह छिद्रोंमे धोड़नी चाहि
ये इतनामात्र मुरलीकों [illegible] और आलगोजेका भेदहै और और सभ विषयमे यही सरल।
वंशी प्राय मुरलीकीन्यांईहै अथ्थलघवंशीप्रकारः यह यंत्र केवल बांसकाही होताहै —
अवस्थामे इवोंक्तक्या अलगोजाके सामानही होताहै लोकोंमे इसकोंभी प्राय सरल भा
वसें पकड़करकें वजाउतेहैं ॥ तव वशेष यहि जो इसको मुखके एक कोणेपे एक टेढ़
भावसें पकड़े सें इसके दोना मुख अना वद्ध क्याः खुलेही रहितेहैं और सरल वंशीसें जो
एक वायु वाला छिद्र होताहै सो इसमे नहीं होता और और संपूर्ण विषयमे यह सर
ल वंशी की न्यांईहै ॥ अथकाहलजाति ॥ इसीसकल यंत्रकों सरवा काना क्या।

होर किसी स्थान विशेष कौं इस के मुखमै देकर वजाउतेहैं इसतरहाका यंत्र कि पूर्व देश में ।
कि पश्चिमदेशमैं एह दोनो देशों मेहिं विभिन्न नाममैं प्रचलित है वंग देशमै कलम गो
पा नचैाकी सरहनाई और अंगरजी क्लारि अनेट ओव ए प्रभृति इसी पंक्तिके अंतर्गत है ॥
अथकलमप्रकारः इसको आकार लिखणेवाली कलम की न्याँई है ईसीनिमित्त इसका नाम
कलमहै । एह यंत्र इस प्रकार के नाममैं अनेक देशमै प्रसिद्धहै इसीकौं संस्कृत मै
कलम और पारस्य अफगान वा तुर्कस्थान तातार प्रभृति देशमैभी कलम और ग्रीसके
कलमस इसी निमित्त बोधहोताहै जो एह भारतवर्षका यंत्र होवेगा । इसका एक मुख क
लम की न्याँई काठाहोया और अपर का दूसरा मुख और और वंशीकी न्याँई अनावद्ध
खुला होताहै । इसका दैर्घ्य अपेक्षा करके थोडाहै ॥ इसकी तार छिद्र संख्या और और वंशीकी
न्याँई सातही होतेहैं एह सरल भावसें वजाया जाताहै किन्तु और और यंत्र जिस प्रकार फूं
क वाले छिद्रमैं फूंकमारनेसैं ही वजताहै एह उसी तरहानहीं । मस्तकके पासे का जि
सस्थानमें वजाउतेहैं उसस्थानमै देशी सरहनाइके तरहा एक छोटा नलसायहीरहिताहै

वा. के उसके मुखबीच नल दिया रहिता है। और बजाउणे लगानेके पहिलें तिसकौं धुंधुं
३५ कर्के भिजाइ कर फेर बजाउणेलगतेहैं॥ अथ रोशनचौकीप्रारम्भः यह यंत्र हमारे देश
35 मे और पारस्य देशोमे बहुत प्रचलित है॥ दोखणोमे अनेक गेवार एकेमतहै। कलमकी
न्याई इसके मुखमे एक नलदेकर इसकौं बजाउतेहैं। इसका आकार ऊपरके भाग का ढका
और निम्नदेश मे पित्तलकीन्याई धातुकर्के संयुक्त और धतूरे के पुष्पका आकार होता है
और किसी किसी का सम अवयवभी शुद्ध का ढका होताहै। और लंवाई इसकी साधार
णसें एक हाथ जितना होतीहै॥ लखणो इत्यादि देशोमे इसकी अपेक्षाकर्के अनेकही वडे
यंत्रौंका व्यवहारहै तिह्नका स्वरभी अपेक्षाकृत निम्नतरहै वा गंभीरहै हमारे देशोंमें
नव वा॰ नौवाजे नौवतमे जो रोशन चौकी व्यवहारमेंहै तिसका स्वर तीव्रहै वा॰ साधा
रण यंत्रकी अपेक्षाकर्के तीन चार स्वर ऊर्द्धमैंहै पूर्वतन वा पहिले समेमे मुसल्मा
न लोकों के राज्यके समयमें राजेयौंके पास उत्सव और मंगलकार्यकी खुशीकर्के इसका
व्यवहार बहुतथा आजतक भी यही मुसल्मान और हिन्दु लोकोंके मध्यमे उक्त वि

यकार्य्य क्या मंगलकार्य्यके खुशीकर्के व्यवहार होता है ॥ अथसरङ्गाईआरम्भः यह
यंत्र कि अवयवमे कि वादन प्रणाली क्या पंक्तिमे क्या दोनो पंक्तिके विषयमे ही संपूर्ण
पहिले कहेहुए यंत्रकीन्याँईहै यह दोनो यंत्रकाही स्वरगत जो विलक्षणताहै सोई इ‌ह्नु ।
सभका भेद होकर्द्वीय निश्चय स्वर कौं क्या देता है यहियंत्र मुसलमान सम्राट् अकवर
शाह जीकौं अतिप्याराथा सो सदा हीतो वतके मिलनेमे इसीका वजना सुणनेमे वडा
प्रसन्न होताथा इस्कायारस्यनाम सिर्णाईहै अथवेएआरम्भः यही हमलोकौंके देशमे वे
एउ क्या वास द्वारा निर्मित होति है इसी वास्ते इस्काभी नाम वेएउ होयाहै यही वेणु मिसर
देशि यौंने अंगरेज लोक जिस्कौं दार्वि सुट क्या: तिस देसके लोक फकीर लोक वंशी ।
वोलके व्यवहार कर्ते हैं इसीकौं मिसर देशके धर्म संबंधवाले व्यापारमे जिकार नामक
न्टत्यके सहित फकीर लोक व्यवहार करते हैं । इसकी दीर्घता वंशी जातीके ओर ओर सम्प्र
दाय यंत्रकी अपेक्षा कर्के अधिकहै । इसीयंत्रकौं सन्मुख छे ओर पीछेमे एकही मात्र छि
द्र होताहै । इस्केव जाउणे की रीति इस जाती के ओर ओर यंत्र की अपेक्षा कर्के स्वतंत्रहै

वा॰ का भिन्न है। मुखछेदा कर्कें और यंत्रकों भी छेदा कर पकड कर अल्प का थोडी थोडी फू
२९ क दीया करते हैं॥ तब इस यंत्रकी वजाणेणे– रीती सिद्ध करते है उसी फूकके देणेके समय
मे जोबल प्रयोग कियाजाता है तिसकी तारतम्यके अनुसारसें अनेक प्रकारके स्वर प्रगट
26 होते है। सो अच्छीतरहासें शिक्षा होया जो वजाउणे वाला है तिसके हाथ सें इस यंत्रसें अति सुं
दर और सुणनेमे अति मधुरस्वर उत्पन्न होसकता है किन्तु तिसके वजाउते होया अनेक दिन प
कड कर अभ्यास नहीं करने सें अच्छी तहा वजाय नहींसकता॥ अथशृंगजातिप्रारम्भः॥ य
ह सकल यंत्र महिष मेष वा॰ गो इत्यादि दीर्घ शृंग धारी जन्तु सकलका शृंग कोष देकें
यंत्र तियार होता है इसजातीके सभ यंत्रोंका आदिशृंग है यह पहिलें कि हागया है शंख और
शृंग यह अनेक प्रकारके यंत्रहीस्वता सिद्ध हैं और सभप्रकारके फूकदेणेवाले यंत्रोंके आ
दी हैं। यहि शृंग जो कुछ भारतका कि यही पूर्व देशमे स्थित सभदेशाके हि जो यंत्र हैं सो।
ऐसे ही हैं जितनेक पश्चिम देशाके स्थितजो होर देश उन्हमे हरणकी न्याईं अनेक नामसें
प्रसिद्ध हैं यहि यंत्र भारत का शृंग पारस्य देशका कारणं हिब्रु देशका केरेण ग्रीसका

केराम रोमदेशका कर्ण फ्रान्सका कर जर्म्मणिका हरण औपेलसका करण इंग्रेरीका कर्न
और इंलण्डका हरण। एहि शृंग जो हमारे देशक कितनेक पूर्व कालसैं प्रसिद्धहोयाहुआहै
सो किहानहीता परंतु किह्महैकि देवादिव महादेव इसकों व्यवहारकियाहै। एह यंत्र सभके
मस्तक का आगेका भाग सूईके तुल्य और मध्यकाभाग और ऊपर की अपेक्षाकर्के वडे विस्तार
वाला होताहै और आकार इस्का टेढा होताहै सो इस्के शिरके ऊपर एक किया हुया छिद्र
होताहै सोई फूकवाले छिद्रका कार्य्य कर्ताहै॥ अथ रणशृङ्ग। सभदेशोंमेंही रणके स्थलमें
सेना पासके लोकोंके उत्साह करणे कौं वा उह्नकौं वुलाउणे वास्ते वा कोई कार्य्यके निमित्त
क्या संकेत करण इसीवास्ते एह यंत्र व्यवहार कियाजाताहै सो वोलते हैं कि इस्का नाम
रण शृङ्गहै॥ सो जेकर उक्तजो कार्य्यहैं सो सभही देशोंमे इस्का चलनहै। तदवी पहिलैं ह
म लोकोंके देशोंमे और ग्रीसमे इस्का अत्यंत चलन आदर पूर्वक था॥ अव इस समयमो इंग
र जोके निकट वुगल नामक यंत्रद्वारा जोहोताहै पहिलैं सोई कार्य्य इसद्वाराभी संपादित।
क्या कीयाजाताथा शृङ्गजातिके और और सभयंत्रकी अपेक्षा क्या जाणकर्के इसयंत्रकाआकार

अतिशय क्या निश्चय करके बड़ा है यह निरंतर पित्तलका वा तांबेका होता है फूकसें बजने वाले जो
होरयंत्र हैं उन्हसे विशेष इसमो स्वरकी चलाकी वा कोमलता करी जाती है ॥ अथ रणशृङ्ग प्रारम्भः
यह मंगलकार्य्यमे व्यवहार होता है। इसकी लंबाई पहिले यंत्रकी न्यांई है किन्तु आकारमे और स्वरमे
क्या आपसबीच अनेक फरक है ॥ शृङ्गकी अपेक्षा करके इसका व्यास क्या चौड़ा बड़ा है। और
जेकर दोनोंकाही स्वर तीक्ष्ण है तदवी रणसिंगका स्वर सूक्ष्म है और इसका स्वर मोटा है और बजा
उणेमे दोनोंका एकही रूप है। अथ तुरी प्रारम्भः ॥ यह ईंगरेजी टेम्पेट यंत्रके सामान्य है अंगजा
तीके और और यंत्रसें इसकी सुंदरता यह है जो यह सरल है। यह पित्तलका बणता है रणशृ
ङ्गकी न्यांई यह भी रण स्थानमे वर्तमान होता है। किन्तु इसके द्वारा आवाहन् नही क्या किसी
कौं बुलाउते नहीं। इसकी लंबाई और व्यास रणशृङ्गकी अपेक्षा करके थोड़ा है। यदि हमलोकोंके
नये वाजे वा नौवतमे बजाउते हैं ॥ बजाउणेकी प्रनाली रणशृङ्गकी न्यांई है। अथ भेरी प्रारम्भः
इसकौं सभलोक भड्ड बोलते हैं। यह हरबीन यंत्रके आकार और उसीकी न्यांई एक नलेके।
भीतर और उसी तह्काका उस नलेके बीच और नला होता है। बजाउणेके समयमो एक एककर्के

वाहिर निकासलेतेहैं यहि पहिले युद्ध के समय व्यवहार होताथा किन्तु इसक्षणमे केवल नौ
वतकेवीच इस्का व्यवहार देखणेमे आउताहे ॥ अथ शंखजातीप्रारंभः यहि जातिके यंत्रौंके मध्यमे शं
ख और गोमुख वा नरसिंगा यहि दोनो प्रसिद्ध हे शंख शब्द सभके मध्यमे बहुत चिर कालकाहे ऐसे
कि यही सभ फूक वाले यंत्रका हि आदीहे कि केवल मृदङ्गके संगही बराबर समेकाहे सो शंखका
विषय पहिलें एक प्रकार लिखा गयाहे। यह शंख सभ यंत्रका आदी हे सो प्रसिद्ध संगीत इ
तिहासवेत्ताजोहैं सोभी इसी मतकी पुष्टि कौंकरगयेहें ॥ अथ द्विदलयंत्रप्रारम्भः। यहि एकहि दल
यंत्रहे। इस जातीका यही एक मात्रही यंत्रहे सो हमारे पासेके वैंग देशमे प्रसिद्धहे इस्कौं सभ
लोक तुवड़ी। वीणा बोलतेहैं ॥ सामान्य ग्राम्य जन सर्पोंकों पकड़ने वाले इस्कौं वर्तमानकोतेहैं
बोलतेहैं कि यहि ग्राम्य यंत्रके मध्यमे परिगणित होगयाहे ॥ सोसभ इस्कौं साधारणसें तुवड़ी
वा पूगी बोलतेहैं और हमारे द्विगर्त देशमे वीणा कहितेहैं। इसी यंत्रके नीचेके देशमे छिद्रवाले दो
नल परस्पर वा इकठे बराबर सूत्र पातसें संयुत और ऊपरके भागमे एक कौड़ेतूंबेका तिन
लाउएकाका तुणहकीलकड़ीका खोल जोडाहुआ होताहे उसी खोलकौं वायुकोशबोलते हैं।



वा॰ तिसका ऊपरकाभागनलकीतहा ओर कुक्कुकटेढा होताहै ओर इसी नलोकारके शिरकेऊपरमें।
३८ एक छिद्र होताहै। उसीकों फूकवाला छिद्र कहितेहैं इसी यंत्रमे ओर नो ५ छिद्र होतेहैं इस्केरच
३८ णोमे कदुतंबी वा तिक्त अलाबूका तंबाव्यवहारकरताहै बोलते हैं इसीका नाम तित्तिरी होयाहै
इसीकों इउरोपदेशाके संगीत इतिहासके लेखक तित्ति बोलतेहैं॥ इसके संग सो सभ इउरोप
देशाके व्यागपाइपके पाइपके तुल्य गणना करतेहैं किन्तुहमलोक तित्तिरी वा तुवडी के संग
अवकेलोक व्यागपाइपके निर्माण विधिके अनेक प्रभेदे देखणेमे आउतेहैं व्यागपाइपका
वायुकोश चर्मका ओर तित्तिरी का वायुकोष कदु तुंबेका सो निरंतर इउरोपदेशाके जाहैं सो
किसतरासें इसप्रकारके सिद्धांतमे उपस्थितहुएहैं) सोकिहानहीजाता। कोई कोई स्थलमे अति
पूर्व कालसें मुनि ऋषियोंके समयमै अलाबूके अभावमे मृग चर्म व्यवहार होताथा सोनिरंत
र तदानी तन क्या उससमेके लोक तित्तिरी ओर अधुनातन क्या अववर्त्तमानसमेके लोक व्यागपा
इप एह दोनोंही समान हो सकतेहैं इउरोपदेशाके पंडित गणके मध्यमे भी कोई कोई बोलते
हैं। जो मृगी ओर तुवडीएकही है। एहि तुवडी यंत्र कभी कभी नासिका द्वाराभी वजाउतेथे

नं॰ २

अथवाद्याध्यायप्रारंभः अबवाद्याध्यायकाप्रारंभहोताहये (अ) इसभा
रतखंडकेवाद्योंकातथा अपरदेशकेभी वाद्योंका इसअध्यायमें
वर्णनकीयाजाताहये पूर्वग्रंथोंकोदेखकर अब वाद्यशास्त्रमे
चार प्रकारकाहे जयसे तत १ आनद्ध २ सुषिर ३ घन ४

अथवाद्याध्यायः प्रारभ्यते तत्र वाद्यस्यचातुर्विध्यम्
ततानद्धंचसुषिरंघनंवाद्यंचतुर्विधम् ततंवीणादिकंवाद्यमा
नद्धंमुरजादिकं वंशादिकंतुसुषिरं कांस्यतालादिकंघनम्

तत उसकोंकहितेहैं जिसजो तंती तातार पाकर सेंवजायाजावे अथजय
सें वीणा १ सितार रबाव सरोद देओडा ॥ सारंगी रंजिनी सारिंदा
तंबूरा मीनसारंगी कानून सुरसृंगार मोचंग एकतारा अलावूस

वा·
१

रंगी आनंदलहरी स्वरबीणा गोपीयंत्र पसरार इत्यादिक वाद्य तत संज्ञि
कहयें अथ आनद्ध· आनद्ध उसको कहिते हयें जो साज चर्म्म सें मढ़ा हो
और वितत भी उसको कहिते हैं जयसें मृदंग खोल तबला ढोलक
ढोल मर्द्दल खंजरी घुड्डू डम्फ डमरू, डडका, ढक्का, जगझम्प
चर्च्चरी दारा काडा नगारा॥ टिकारा धौंसा खोरदक इत्यादिक हयें
अथ सुखिर· सुखिर वाद्य उसको कहिते हें जो वायु सें अर्थात् श्वाससें
वजाया जावे जयसें शंख वंशी वेणु मोवंजली तुड्डा अलगो
जा गोमुख अर्थात् नरसिंहा नयवांसी रोशनचौंकी हानेयी
अर्थात् सरनाई वाकृती· शृंग रणशृंग तुरी कमल तवडी· कहलर
त्यादिक सुखिर साज हैं अथ घनवाद्य घनवाद्य उसको कहिते हैं जो
कांस्य का अथवा लोह का अपर धातु निर्मित हो वा केवल काष्ठमय हो जय
वा अथ
२

से घंटा। झाँज। काँसर कांस्यघटताली। घटताल। मंदिरा। स्वस्ति शाब्द।
वा। जलतरंग। घड़ी। रामघडताल। कंसी। घुंगरू। इत्यादिक घनवाद्य
हैं अवरूसवाद्यको गुनिलोग अर्द्धवाद्य गिनते हैं क्युंकि तीन वाद्योंमें
अर्थात् तत वितत सुषिर इनमें स्वर ताल दोनों हैं अर घनमें स्व
रकेई का अभाव मानते हैं अरु ताल है इसवास्ते अर्द्ध वाद्य है जयपुरमें कहा है
जगमें सभस्वरता कहै वाजे साडेतीन तालतंत अरफूंक पुनि अर्द्ध ताल गुरहीं
न॥ इसनें साडेतीन प्रकारकेवाद्योंका प्रकार वर्णन कीया हैं अवरून
में जो तत वाद्य हैं सो दोप्रकारके हैं एक सभ्य अर दूसरे
ग्राम्य सभ्य वाद्य वो है जो सभाके योग्य है। अर ग्राम्य वो है जो ग्रा।
ममें वजाने योग्य है। प्रथम सभ्य वाद्य ये है हवे जयपुर। वीणा।

मिलाते

त्रितंत्री. वा सितार. रवाव. सरोद, रंजिनी. कानून. सुरतरङ्ग.
स्वरवीणा. सुरशृंगार येही सब ततवाद्योंमें सम्पवाद्य कहे हये.
वा. [और शुषिर वाद्योंमें तो एक वंशीवाद्य यों वगेर किसी वाद्य
२ का वहुत व्यवहार नहीहै येही वंशी वा अलगोजा सम्पवाद्य हैं.
प्रायः समूह वाद्यमें शुषिर वाद्यों का व्यवहार हये सोभी आगे कहा
जायेगा. अब आनद्धमें मृदंग तवला ढोलक येहभी
सम्पवाद्य हैं घनमें. घुंगरू. कांसी. और साज समूह में का
मदते हैं. ग्राम्यवाद्य वहिहारिक ... हैं ततमें सिरंगा. तु
छरवाव. शुषिरमें तूंती. तुरी आदिक. विततमें ढोल.
उफ घनमें झांज छैना नगारा. इत्यादिक ग्राम्य हये

॥ अथ प्रथम अध्यायः ॥

यंत्र वा वाद्य दोनो नाम बाजेके है
कैक लोक साज भी कहते है

प्रथम महती वीणा ॥ एह यंत्र अति प्राचीन और सभी यंत्रों में प्रधान महर्षि नारदजीका
किया होया है ॥ प्राचीन संगीत शास्त्र करणेवाल्यों ने तार यंत्र मात्र का ही प्रथम
उनका निर्माण किया सामान्य से, वीणा नाम है और सभ वीणों से वजी महती वीणा है और
एही पीछे विशेष विशेष आकार और प्रकृति के अनुसार महती वीणा, रुद्रवी
णा, सारस्वत वीणा, रंजनी वीणा, कच्छपी वीणा, और स्वर वीणा इत्यादि वि
शेष विशेष व्याख्या छोटी छोटी नाम और और किया गया है। किन्तु अब हम
लोक महती वीणा का विषय वर्णन करणे में प्रवृत्त भये हैं, सो इतना इस स्थ
ल में वीणा संबंध से जो कि छ है सो बोला जायगा, सो कुछ इसी पाठक गण
उसके समुदाय को महती वीणा संबंध वाला जाणते हैं। एहि यंत्र भारतवर्ष के
सभ प्रकार के वाद्य यंत्र की अपेक्षा के अधिकतर प्राधान्य [redacted] जाने
क्योंकि इस यंत्र के बजावणे वाला कोई विरला ही मिलता है, इससे एह जा
णिया जाता है कि इसके बजावणे की रीती बहुत कठिन है सो इससे अतिप

वा.

२

जिस निमित्त ही संगीतकुतूहलीयों के मध्य में अग्रसर अर्थात् आगे चलने को को
ई न ही समर्थ हो सका। सो विशेषकर के वीणा बजाने के अभ्यास में जिस प्रकार
परिश्रम करने की आवश्यकता है, तिसकी अपेक्षा कर के थोड़े परिश्रम से
कुछ पी वीणा बजाने में बड़ी चतुराई आ जाती है और कुछ भी वीणा से
भी प्रायः सम प्रकार के वीणाओं के बाजने की विधि प्रतीत हो जाती है
सो वीणा वादन इतना दुरूह व्यापार है जो, एह विलीन भारत भूमि में संगी
त की इतनी अधिक चर्चा होते भी हमारी निम्न लिखित में कितने कु व्यक्ति
मात्र वीणा बजाने वालों का नाम अवगत ~~[illegible]~~ हैं, यथा—
जीवनशाह, निरमोलशाह, महम्मद अली, नासिर अहमद, छज्जू खां,
गुलब खां, गुलाम रसूल, करीम खां, उस्ताद लछमी प्रसाद मिश्रजी,
फिरोज खां, नौबाद खां ॥ इति

यह सब वर्त्तमान नहीं है गुलाम हुसेन खां मैंहदी हुसेन खां उमीयादित
खां अनैत अलि इत्यादिक कितनेक वर्त्तमान भी हैं परंच मिश्र ल
क्ष्मी प्रसाद महाशय के निकट वीणा के अनेक विषय जाने हु
वे हैं बाबू अघ्यापाचरण भी अच्छे हैं यवन जाती में अनैत खां अ
च्छे हैं यह को हलीय ग्रंथ में इसका ऐसा लक्षण लिखा है यथा

दंडं वंशमयं कांतं वर्तुलं तुम्बयुग्मकं । नवमुष्टि स्वरस्थानं
चातयत्नेन कारयेत् तस्मिन् दंडे सप्त संख्या मोदिनी
संनिवेशयेत् दक्षिणे विन्यसेद्वात् तदूर्द्ध तंत्री द्वयं कार्य
तू हलवन्मयी कार्या मोदिनी दंड रंजिका तावच्च भा
मयेत् पूर्वा मोदिनीं च शनैः शनैः अस्यात् षोदशाप्रो

सारंग नसें ऊन ग्राधिक भी किसी किसी ग्राचार्य ने
कल्पित करी हैं सो तीव्र कोमल का कान में
उसें लेले ने हये ८

स्वर्प. वीणाका दंड सूधे वंश का वनाना अथवा काष्ठ जो वृन ग्रादि कहे है उ
सका वनाना. ओर दोनूं वे वरोवर गोल उसको लगाने ग्रार सात खूंटि
ग्रांलियानियां टाली वृत्तकीलक डूं कियां दो मलक मे एक वा
मध्य में चार दल पार्श्व. सारी १८ वा १९ वा २१ तिसमें द्र ढ़कर

वा. ४

सो: सारिका: पूर्व स्वरिभि: एतास्तु तार वादिना लिपटात
पट्टिकोपरि मदनस्य च तिक स्य योगेन सुदृढी कृता:
महत्या नाम वीणाया एतल्लक्षण मुच्यते. उक्तमपि

लगावे ओर सुर परी एक पटडी ह लिखंता निर्मित वौबेलिया नी — नीचे र
उसी के ऊपर चार तार चडी रहती हैं यही महती वीणाका ल
क्षण कहे हैं. कोहलाचार्य ने ॥ ॥ ॥

तीन ग्राम सब होती हये ९

४
रुद्रवीणस्य लक्षणं

अर्थ• वीणा का दंड सहस्थेवं शाका बनाना अथवा काष्ठ जो तून आदिक हैं उसका बनाना और दो तूंबे बरोबर गोल उसकों लिगाने अर सात खूंटि आं लिगानियां टाली वृक्षकी लकडी की यां दो मस्तक मैं एक वाम पार्श्वे चार दक्ष पार्श्वे सारी १८ वा १९ वा २१ सिल्थे हैं दृढ कर लगावे

काः सारिकाः पूर्वसूरिभिः एतास्तु तारवादिन्य स्त्रिव्रंति पट्टिको परि मदनस्यच सिक्थ यस्य योगेन सुदृढीकृताः महत्या नाम वीणा या एतल्लक्षणमुच्यते• उक्त मपि वाद्य प्रधानत्वात्पुनरुक्तम्•

सारी इनसे ऊन अधिक भी कीसी किसी आचार्य ने कल्पित करी हैं सो तीव्र कोमल का काम भी उसें लेलेते हैं—और हरएक पट्टी हस्ति दंत निर्मित नीचे लिगानी उसी के ऊपर चार तार चढी रहिती हैं तीन आस पास होती हयें येही महती वीणा का लक्षण कहा है को हलाचार्य नें

इसवीणाके वामभागमें जो प्रथमतार होती है सोपीतरकी होती है सोषड्ज
स्वरसें बांधी जाती है उसके आगे उससें मोटी पीतलकी तार होती
है उसकी उदारा सप्तकी मध्यमस्वर होती है आगे एक तार पीतरकी उदारा
पंचमस्वर होती है आगे मुदारा षड्ज आगे मुदारा मध्यम लोहे
की होती है कैंक उस्ताद इसकोंभी पीतलकी रखते थे अब लोहेकी
होती है इसकों नायिकी तार बोलते हे लोहेसें पीतलकी तारसें
मूर्छना और गमक अच्छे निःसरण होता है। आगे दक्षपार्श्व
में दो लोहेकी तार होती हें उनकों चिकारीयां बोलते हें वोह
तार षड्जपर सुर होती है दूसरी उससे दून स्वरमें होती है।
प्रथम तार वाम हस्तकी कनिष्टिका अंगुली सेंकिसी कितीव जा

छेड़ी जाती है और तर्जनी सें नायिक तार को बजाया जाता है मध्यमा
सें दूसरी तीसरी चोथी पीतलकी तारें बजाई जाती हैं और दक्षिण
हलकी कनिष्ठा अंगुली के नख सें चिकीरीयां का छेड़ होता रहि
बा॰ ता है प्रायकर्के इससाज में रागका अलाप अर्थात् रागका
५ जोड़ बहुत अच्छा बजाया जाता है और रागकी गत ~~[illegible]~~
और गलेका साथ भी बजाया तो जाता है परंतु इससाज में
5 उस्ताद लोग कम बजाते हैं और सितार सिरंगी में गत
और गलेका साथ बहुत करते है ॥ अब बहुधा लोग इनमें भी अलाप
भी करते हैं परंच बीणा जयसी गमक मूर्छना प्राय नहीं सिद्ध है

तो कोई कोई उस्ताद कर लेते हैं ~~इति वीणा प्रकार~~ अब येह जो तंत्री सें स
प्त स्वर अर्थात् षड्ज १ ऋषभ २ गंधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७
संगीत शास्त्र वाल्यों के निष्पन्न होते हैं इनका ही नाम इटालीय भिन्न है
जयसें अट् १ रि २ मि ३ फा ४ सो ५ ला ६ वि ७ येह ना
म हैं अर अंग्रेजी वाल्यों के नाम भिन्न हैं जयसें सि १ डि २ इ ३ येफ ४
जी ५ ए ६ वि ७ येही सप्त स्वरों के चिह्न कल्पित करे हैं वास्तव सें
प्रयोजन नहीं है अर हम लोक ऋषभ गंधार मध्यम
धैवत निषाद इन पांच स्वरों कों तीव्र. अर्थात् चडा कोमल.
अर्थात् उतरा मानते हैं और येह दोनों आधा स्वर उतरे कों
कहते हैं अर पूर्ण स्वर चडे कों कहिते हैं ^ प्रयोजन नहीं है
सो

और वीणा का स्वर अतीव मधुर अर निरंतर सुननेंयोग्य हये पियानो प्र
भृति ३३रोपीय यंत्रमें जो सकल कार्य्य संपन्न होता हये सो तिससेंअ
धिकतर वीणासें निष्पादित होता हये. परंच मूर्छना प्रभृति जितने
क संगीतोपयोगि उत्कट उत्कट जो कार्य्य हयें सो इसी वाद्यसें अर्थात् वी
वी णासें ही सहिजतरसें प्रतिपन्न होते हयें सोई कार्य्यसमुदाय ३उ रूपीय यं
५ त्रोंमें दुःसाध्य हैं जो वीणा का वादन है सो अतीव मधुरता का संयोगि हये. और
अतीव^ सबसें उत्कृष्ट वाद्य हये. ३३ लार्ड और ३३ लियमू जोन्स प्रभृति हिंदु
संगीतज्ञ महोदय गण अतुल्य पियानो साज के साथ तुल्यता
स्थापन कर्ते हयें. अंग्रेजी संस्कृत अभिधान कर्त्ता मार्शियर ३३ लिय
मस्तू साहिव ३३ रूपीय लायार यंत्र और वीणा इन दोनोंको सम वो
लता हये जबसें हमारी वीणामें सात तारां हैं वैसेंही लायार साजमेंभी

सात ही तार बांधी हयें, ग्रीक, और, रूप देश का पुरा वृत्त कर्त्ता उइ
लियम् स्मिथ साहिब के कहे हुवे ग्रंथमें लिखाहै जो एरेस ग्रीक देशी
हैंसो जिस तरह लायार, इत्यादिक और और यंत्रोंका विषय कुछभी
नही जानते थे तिनके पहिलेभी आसियास्य देशमें और मिसर देश तारा
में लायार, प्रभृति यंत्र का बहुत प्रचलनथा कुछकालपी
छेमें ग्रीक देशी जो हयें सो लायार, की उत्कर्षता दर्शन
में ग्रीस देशमें प्रथम ~~आनयन~~ सोई वाद्यमंगवालीया इस
विषयकी पोषकता हकिन् साहिब, ग्गर बालिसाहिब
और कार लेन् जेलू साहिब कृत संगीत ग्रंथ मे बहुत बहु
त प्रमाण देखनेसे पाया जाता है येही वीणा ग्रतिप्रा

चीनसाजेहै और भारतवर्ष इसका प्रथम स्थान है तिसमें और कुछ
संदेह नही है परंतु देशभेद अवयव भेद और नाम भेद करके
वर्त्तमान है इतना मात्र विशेष हुये. संस्कृत संगीत की जो है सो नाना
वा जाती की वीणा को नाम लिखते हैं अपतें वल्लरी जाती की वीणा पहले
भारत में प्रचलित थी. मालियर उइलियम् साहिब ति
सको हार्प नाम सें लिखते हैं अब ब्रह्मदेश में ~~असीको~~ हार्प को शाज
कहिते हैं और चीनदेश में कीण कहिते हैं इजिप्ट देशमें वी
णाको वेण बोलते हैं वीण और वेण इनदोनों नामोंका कितने
देशमें ऐक्य देखा जाता है, वल्लरी और हार्प येह एक विधका
यंत्र नहीं है वास्तव सें हार्प वल्लरी का अनुकृत यंत्र है। इस

॰वीणा मूर्ति ~~जि~~ स येलि खासी॰

इति ~~श्री~~ महती वीणा प्रस्ताव: प्रथम: १

सो जाने इस विषय में कोई संदेह नहीं कर सके = अथ कच्छपी वीणा जिस को भारतवर्षीय लोक कछुआ वा मध्यम अथवा सेतार बोलते हैं हम लोकों के देश में कच्छपी नामक अपर एक विध वीणा का प्रचलन था अब के जो लोक हैं तिस कों कछुआ॰ सेतार॰ मध्यम बोल के व्यवहार करते हैं सेतार येह पारसिक भाषा है॰ ~~[illegible]~~ पक पठाण वंश का बादशाह गयेस उद्दीन तुलखान के राज्य में अमीर खिसरो नाम विख्यात कवि प्रधान राज सभासदों के मध्य में परिगणित था तिसने कच्छपी त्रितंत्री इत्यादि वीणा के सामान्यत: करके सेतार नाम धरा वालव से त्रितंत्री की येही अर्थ है जो तीन तार जिसमें होवे पारसी में भी से तीन का वाच क है और यद्यपि सितार में पांच वा सप्त तारें होती हैं परंतु ३

नमें तीन स्वर होते हैं एक मध्यम अगे जोडे की भी षड्ज सुर
होती है अर षड्ज उदार की भी येही. तीसरी पंचम तिससें आधी
लर्ज होती है येही तीन स्वर होनेसे सेतार नाम रखा गया से
तार त्रितंत्री वीणाके नामसे में मिलता नहीं है और काछपी अर त्रि
वा तंत्रीकी मूर्ति भी सदृश ही हये कुछ कुछ विशेष हये अब
८ काछपी वीणाको काष्टका अथवा अलाबू का खोल दियाजाता
8, है अर पीतल की वा फुलाद की तारां लिगाई जाती हैं. अर त्रि
तंत्रीमें काष्टका खोल छोटासा होता है अर और भी कुछक विशे
षहै. अर काछपी वीणाका खोल कछपकी पृष्ठवत् होता है इसी से
काछपी वीणा वा कूर्मीवीणा येनाम प्रसिद्ध है और काछपीवीणाकी दो

र्यता सामान्य चारफुट होती है बजावनेवाले अपनी इच्छापूर्वक अन
अधिक भी करवा लेते हैं किन्तु राग बजावनेके वास्ते कछुक बडी डांटी हो
ॐ अर्थात् चौडी अधिक हो किंके जेकर अधिक नाहि तब गमक मूर्छन भली
प्रकार सें दिखाइ नही देते. क्युंके काछपीकी लंबाई चारफुट होनेसें
तिसकी खूंटी नीचीकी सें पांच इंच ऊई तंत्रासन अर्थात् सुरयडी. होती है
तिसतें तीन फुट पांच अंच आदि अर्थात् तारदान स्थापन करना
चाहिये. परिमाणमें चारफुट की न्यूनाधिक तासें इसके ही सम
न तंत्रासन आदि भी न्यूनाधिक होवेगी. शास्त्रकार इस काछ
पीवीणाको ही सरस्वती वाग्देवी की वीणा लिखते हैं यथा सरस्वत्यास्तु काछपी

अब काछपी बीणाको तीनवाचार पीतलकी तारें होतीहैं और चारवा पांच फ़ुलादकी होती हैं कैक गुणीलोग इसीवाद्यको दोहरा ब नवाते हैं वोह नव वा दश तरवें सुंदरीयोंके नीचेसें बांधते

वा हैं. यथा. चित्रम्

९

एक चिह्न विशिष्ट लोहेकीतारकोंनायकी अथवाप्रधान तार वोलतेहैं ना यकीतार पक्की लोहेकी होतीहै सो द्ध तर होतीहै बजावनेकेवक्त उसीकाही विशेषप्रयोजन है वही तार उदारा सप्तकके मध्यम स

र पर बांधीजातीहै दूसरी दो तारें पीतलकी उदारा सप्तक के षड्ज पर
बांधीजातीहैं और चतुर्थतार पंचम नाम उदारासप्तक के पंचम प
र होतीहै. अब पांचवीतार पीतलकी पंचम के अर्ध पर वा षड्ज
निम्नसप्तक के षड्ज पर होतीहै अर्थात् जोडेसे आई स्वरपेर
होतीहै सानीधपमगरेसा पिछलेसापर. दृढतंत्री. अवनेअपने
कांतक कीलक वाछिद्र सहित र सारिका पर मिलतीहैं ॥ इच्छासे कच्छपी वीणातंभी
इउरोप देशकि गिटार यंत्रकी न्याई दोतीन स्वर एकत्र ध्वनित कर सकते
हैं किंतु भारतीय संगीतमें इसरीतिका वडाव्यवहार नही काछपी वीणाके
काष्ठदंडके ऊपर सतारां पान लोहादि धातु निर्मित सारिका अर्थात्
सुंदरीयां होती हैं और तंत संवाधी होई होती हैं. तिनमें दाई सप्त.

क निकसते हैं. येह कच्छपी वीणा महती वीणा के तुल्य ही है प्रत्युत
जोजो यत्नसाध्य महतीका वादन है सो सो थोडे आयास सें सिद्ध होस
क्ते हैं और राग के ठाठ बदलनें के वक्त स्वरसारिका तीव्र कोमल
वा. करणे सें रागोंका व्यवहार भी अच्छा याद रहता है महती बजा
नेवालोंकों प्रायः तीव्र कोमल का भेद कम याद रहता है क्योंकि
१० सार का तो स्थिर है उनीपर सम व्यवहार होते हों प्रायः इसकी सारिका विन्या
स में निषाद मध्यम सप्तकका दोनो प्रकार का बांधा रहता है मध्य
10 म भी दोनो । कहीं गंधार भी दोनो इच्छापूर्वक बांधते हैं कैंक अच
ल ठाठ भी बांधते हैं परंतु सप्तदश तारका वा अष्टादश श्रेष्ठ है

काछपीवीणा बजावन के वक्त उसवीणाका पीछा बजावने वालेकी ओर होता है और अ-
गलाभाग सुननेवाले की तरफ होता है और दहिने हाथकी बाजू सें दबा रहि-
ता है और वाम हाथसें सारिकापर गति होती रहिती है और सितार भी घम्मार
हिती है जैसें गिरनेवर प्रायः कच्छप का आश्रय दक्षिण जंघाका भीतीया जाता है
वाम हाथकी तर्जिनी मध्यमा अनामिकासें सारीपर कामदेती हैं और दक्ष हाथकी
तर्जिनी वा मध्यमा और कनिष्टकाके नखसें चिकारी को छेड होता है कैंकजोडका
वा षड्ज का भी छेड करते हैं उस्ताद लोक इस काछपी महती वीणाको अनेक अं-
शोंमें बरोबर मानते हैं ग्रीक ओर रोमान् देशीय लोकोंमें पुरातत्व-
पकर्ता उइलियम् स्मिथ साहिब के मतमें · लायार · हेसटीज़ो · ओरक-
रकच्छपी यह तीन जातीके तत वाद्य है इससमयमें ईउरोपका गीटार
यंत्र कोभी सहित कच्छपीके अनेक प्रकारकी सदृशता प्रतीत होती है परन्तु

इसको विद्या प्रणेता रिज साहिब कहिते हैं कच्छपीसें गीटार की उत्पत्ति है कुल
ग्रव इउनिमर्षल मिउजिक ग्रंथकार डाक्तार वेडलक मार्कस साहिब केम
तमें गीटार कच्छपीका अवयव भेदमात्रहै जर्मनीमानू जातीजोहैं सोतिसको
जितार, कहिते हैं वस्तुतः कच्छपी वीणा सामान्य का नाम। सेतार नामग्र
वा° मीर खिस्रू ने भारतवर्ष मेंग्राकर धरा इसके पहिलेंभी और और देशों
११ मेंभी उक्तविध यंत्र यही नाम हो प्रचलत था इतिहासिका कर्त्ता कहिता
है जो ग्ररबदेश विषेभी कच्छपी अवयव भेद संभी गीटार नामकके विख्यात है ग्रति
प्राचीन कालमेंभी जबजब पारसिक लोक भारत खंड में व्यापारके
वास्ते ग्राने जाते थे तोउन्होंनें कच्छपी वीणा को ग्रच्छाजानकर ग्रप
नेदेशमें लेजाना योग्य माना. तो लेगये और सेतार नाम रखा: और
ग्रमीरखिस्रू सें पेहले भी कच्छपी वीणा का प्रचलत था परंतु कहीं कहीं

और नाम इसका काछपीया अब संगीतज्ञ मध्यम बोलते है क्युंके इसका
इसमें मध्यम स्वरयुक्त प्रथम तार मुख्य है और पारसी नाम सेतार है;
अब काछपी यंत्र जब अर्ब में गया तब किंचित् अवयव भेद से (गी
टार, होगया और एसरिया देशमें (एसोर, प्राचीन ग्रीशों में खितारा
विहूदियों के देशमें (किन्नोर, निउवियाय मे किशोर. अपरापर देशोंमें भि
न्न भिन्न नामों से प्रसिद्ध है सो आरब्य देशसे ही जो गीटार नाम यंत्र
की उत्पत्ति है इन्कार वार्ग साहिब भी एही बात स्पष्टतर से स्वीकार कर्त्ते
और रिजू साहिब की सत एन्साइक्लो के पीडया में लिखित है जो खृी:
नवम शताब्दीमें अरब देश के जो है जिस दाए स्पेन देशमें आवएे
वासे आधिपत्य स्थापन किया उसी समय तिनके द्वारा ही गीटार यंत्र उन्के
देशमें लेगये और स्थापित भया इसके अनंतर गीटार यंत्र इउरोपके

त भेदशमें अंग भेद करके अर्थात् आकृति भेद से भिन्न नाम से व्यवहृत हो
ता भया फलतः भारत वर्ष में जो कच्छपी वीणा है वोही समस्त तत वाद्यों का
मूल है इति कच्छपी प्रस्ताव: २ अथ त्रितंत्री वीणा. कच्छपी वीणा के प्रस्ता
वा. २२ व में कहा है जो त्रितंत्री के अवयव प्राय: कच्छपी के ही सदृश हैं केव
ल इसका खोल काष्ठ का होता है इसमें तीन ही तार होती है इतना मात्र
भेद है कच्छपी से जोजो कार्य्य संपादित होते हैं सोई सोई कार्य्य अनेकां
शसे सपन्न हो सक्ते हैं किंचित् न्यूनता निवंधन से राग रागिनी के
आलाप का उपयोगी जो मूर्छनादि कार्य्य है सो निष्पन्न करणे क
ष्ट साध्य होता है: कच्छपी की लोहे की तार ही नायक की तार
होती है जिसत रांउ दाके मध्यम में बांधे इसकी नायक की तार भी

केवल तितीतरां बांधी रहिती है तिसकी पित्तल निर्म्मित दूसरी तार जिस

तरां उदारा के सुरमें बांधने का समय रीति है सो इसकी दूसरी ता

र ठीक उसीतरां है केवल तीसरी तार से विलक्षणता प्रतीत होती

है कछपी की तो तीसरी तार दूसरी के सम स्वर होती है ग्रर इसी स

त्रितंत्री की तीसरी तार निम्न सप्तक की पंचम स्वर में बांधते

हैं इस त्रितंत्री की एक तार पक्कीलोह निर्म्मित होतीहै ग्रर दोवी

तलकी होती हैं और सारिका बंधमें त्रितंत्री का कछपी से कु

छ विशेष नहीं है भाई सप्तक इसमें भी उसीतरां संपन्न होते हैं और

ग्रीक देश के पासेका हारमनेर लाइयर यंत्र की तार के साथ को इवि

विषय

लक्षणता नहीदेवी केवल बंधन में किंचित् अनेकय प्रतीत होता है ॥ इ
तित्रितंत्री प्रलावस्तृतीय: ३ अथ किन्नरी प्रलाव: किन्नरी नाम अव
२ एक वीणा इस देशमें बहुत कालसे प्रचलित है किसी किसी ग्रंथ
वा. कारके मतमें इस यंत्र का खोल अलाबू वा काष्ठनिर्मित नहीथा
१२ पहिले समय में नारिकेल के खोल द्वारा तयार होताथा अब इस
13 समय के लोक संगीत कुतूहली जो हैं सो कोई तो हस्तपत्री के अं
डेका बनवाते हैं कोइ धनवान् रजितादि उत्कृष्ट धातुका बनवा
लेते है फलत: नारिकेल खोल निर्मित किन्नरी की ध्वनी
का अर धातु अंड निर्मित खोल किन्नरी की ध्वनी का विशेष
कुछ भी नही है इस वीणामें पांच तारं होती है जय

सें कछ्छपी वीणा में पांच तारकी स्वर होती है उसी तरां किन्नरीकी होती है एक दो
नो चिकारीयां कछ्छपी में अधिक है इसमें नहीं होतीयां येही विशेष है और
का इस अवयव कछ्छपी से अति तुच्छ है और तिसकी ध्वनि भी और की अपेक्षा करके
मन्द है एडओयार्ड एफ रिंबल एल एल डी साहिब हात पियानो
फोर्टी यंत्र की इति हास में ~~अभिधान~~ ग्रंथमें ~~[illegible]~~ लिखा है ~~आय~~
~~सात सहस्र वत्सर~~ व्यतीत होगये वर्धर, ग्राम निवासी संगीतज्ञ
~~फ्रली अबउल्ला~~ इसी यंत्र को निर्माण करके इसका रुबेब, नाम
~~रखा उउलाई साहिब कहिते है कि स्पेनिस गीतर के अवयव के~~
~~साथ अनेकांश में समता है~~ उउसे बीच ~~[illegible]~~ एड लिन् सम्मति

ओ किन्नरी जातीय वीणाही इन्द्रदियो के देशमें (किन्नर, और चीनदेश

देशमे (शम्बूका) नाम विख्यात थी किंतु देशभेद से भी नाम के भेद होयां

वा· २८ होयां किन्नरी का अवयवभेद संभव नहीहै येह यंत्र कोमलकंठी

स्त्रीजाती कर्तृक अधिक व्यवहृत होतीथी इतिकिन्नरीवीणाप्र

14 स्तावश्चतुर्थः ४ अथ रंजिनी वीणा॰ रंजिनीवीणा कितनेक अंश

में महती वीणा कीन्याई काठकी होती है कुछक महती से छोटी

होती है इसका सारिका न्यास कच्छपी वीणा की न्याई है और ता

रां सात ही होती हैं और तूंबे भी इसको दोइ होते हैं इससे येह महि

ती वीणा के सदृश ही होती है ॥ इतिरंजिनीप्रस्तावः पंचमः ५

२८

अथ रुद्रवीणा. अथवा रवाव. भारत खंडमें यवनाधिकार से पहिले येह वाद्य रुद्रवीणा करके प्रसिद्ध था तदनंतर विजयी यवनरा जगण कर्तृक रवाव नाम से विख्यात हुवा सो रवाव यंत्र भी सि तारादिकों की नाई इसमें भी एक हस्तीदंत का तंत्रासन होता है और एक ही खोल दंड वाला प्रस्तुत होता है इसका खोल अरद्ध एक ही अखंड काष्ट से बना होया होता है. और वोह खोल गो धाचर्म से अथवा छाग के बारीक चमडे से मढा होया होता है इस यंत्र में छे खूंटीयां में छे तंतीयां बंधी रहिती हैं इसमें लोह पित्तल की तंत्री नहीं होती और इसकी तन्त्री अंत्र चर्म की होती है रवाव यंत्र में सारिका

विन्यास नही होता उसको मोडे पर रखकर वामे हाथ की तर्जनी में
मछका एक मोटा सा छिलका तंती से बांधकर तार के ऊपर स्वर
स्थानों में चलाउते हैं और दक्षिण हाथकी तर्जनी वा वडीअंगुली
अंगुष्ठ से एक चंदन का वा वंशका वना ऊवा त्रिभुजाकृति
वा. नखून होता है जिसको पारसीमें जओया बोलते हैं तिसके आ
२५ घात योगसे वजावते हैं इसका आघात उलटा लिगाते हैं येही विशेष
15 है और इसमें भी सार्द्ध द्विसप्तक स्वर वीणावत् प्रतिपन्न होते हैं
रवाव की जिस जिस तंतू से जोजो स्वर निष्पन्न होते हैं सोसो
आगे नकशेमें दिखाये जावेंगे । इस रवाव को छै तंतु

पश्चिम में हिंदुस्थानकेश मथुर प्रभृतिदेशमें इसकाबहुतप्रचार देखतेहैं आफ़
गान पारस्यप्रभृतिदेशमेंभी येह यंत्र रबाब नामसेंही प्रसिद्ध है अ
रबदेशके इसको रुबेब बोलते हैं अर्बके शब्दशास्त्रजाननेवाले फिरो
जाबादी मजद अल्दीन तिसकों अभिधानग्रंथमें कामूस, नामलि
खाहै येह प्रायः शत सहस्र वत्सर व्यतीत होयेहै जो बसुदयाम
निवासी संगीत कुशली अबदुल्ला इसीयंत्रको पहिले निर्माणकरके रुबेब,
नामरखा उईलाई साहिब कहिते हैं कि, स्पेनिस् गीटार कें अ
वयवके साथ अनेकांशमें समता है प्रतीत होताहै जु रुद्रवीणा
ही. स्पेनिस गीटार और म्याण्डलिन् प्रभृति यंत्रका आदर्श जिएहै

है अर्थात् इसीको देखकर बनायाहै रुद्रवीणा ईउरोप देश उत्कर्षयं
समूहर त्रैंकी अपेक्षाकर्के अनेक प्राचीन है इति रुद्रवीणाप्रस्तावः ५४ः ६ अ
थ शारदीयवीणा वा शारद अथवा सरंदा शारदीय वीणाके दंडसे लेक
वा. र खोल पर्य्यंत प्रायः समुदाय अवयव एकही अखंड काष्ठद्वारा
२६ तियार होती है: खोलका मुख रबाव के सदृश गोधादिके चर्मद्वारा
मढाया जाता है इस यंत्रमें भी रुद्रवीणाकी न्याईं सारिकाविन्यास नहीं
है इसी तरह इसमें भी छे खूंटियां होती हैं छे तंदीयां होती हैं सो बजाउ
णेवाले लोक आपणी इच्छा अनुसार लोह पीतरकी तारें भी पा लेते
हैं और गुणीलोक यंत्रदंडके पासों तं सात से लेकर एकादशा पर्यंत

अपनी इच्छा से अपर भी कूटियां [strike] लिगाते हैं जिनको पारस्य भाषा
में तरफ कहिते हैं और संस्कृत में पार्श्व तंत्रिका कहिते हैं नियमित आघात द्वा
रा बजती नहीं केवल पूर्व प्रधान छेड़ी तारां बजाउने के समय तिनों के स्वर सादृश्य बोलने से सभी
प्रतिध्वनित होतीयां हैं शारदी की प्रधान छेड़ी तार है शारद यंत्र आपनी गोद में स्था
पन करके बजाया जाता है. इसका दंड भी सारिकारहित है और तंती उपर अंगुली
यां स्वर स्थानों में धरी जाती हैं और इस यंत्र का बंगदेश में सितारादि की न्याईं बहु
ता प्रचार नहीं है भारत वर्ष के उत्तर देश में और पश्चिम देश में इसका बहु
त व्यवहार है यवन राज्यों के राजत्व काल में यही यंत्र और पार्श्वत्रिक यंत्र
बोलते थे जब बादशाह बायुसेवनार्थ सैल करने जाते थे तब वोह
लोग हाथी ऊंट के ऊपर चढकर बजाते थे आगे आगे। परंतु इसक्षण

वा·
२८

में भी रुद्रवीणा के बदले सम्भगिणा गया है और कहीं कहीं इससे तरां भी आ
वा है जो इसके बजाउणेवाले हैं सो इसको समसुर के ठ मिलाकर स
भा में गान करते थे फिर भी महतीवीणा का ची ओर रुद्रवीणा के स
दृश नहीं हुए· इनसे शारद की ध्वनि कछ नीरस ओर कर्कश है
आफ गान स्थान ओर ओरव प्रभृति आसिया देश के रहिणेवाले
अनेक देशों में प्रचलित है और आरवीय शारद भारतवर्ष
की अपेक्षा कर्के आकार में छुद्र ओर दोनो पार्श्वों में भी तारतम्य
अवयव गत भेद है अर्थात् उत्कृष्टता है नाम में कोई विलक्षणता
नहीं येही शारद यंत्र किंचिन्मात्र अवयव भेद कर मिश्रर देश
में (गुम्या) नाम से प्रसिद्ध है ॥ इति शारदीय वीणा प्रस्तावः सप्तमः

अथ स्वरशृंगार वा सुरसिंगार इस यंत्र का खोल रवाब की न्याई एक
अखिल काष्ठ द्वारा निर्मित होता है और सितारादि की न्याई तूंबे से
बनता है तूंबे के ऊपर एक काष्ठ की पटडी लगी हुई होती है जिसको तबली
परस्पर में बोलते हैं अर पटडी ऊपर दंत निर्मित तंत्रासन होता है पार
ती में जिसको सिउआरी कहते हैं और एक का घत अलाबु में काष्ठ निर्मित
एक दंड योजित होता है इस दंड के ऊपर में एक समतल लोह निर्मित पट्टव
होता है हिंदी में इसको पटडी कहते हैं सो स्वर के आधिक्य करणे वाले
दंड के पार्श्वों में भी लगी रहती है और एक और तूंबा महती वीणा की न्या
ई जोड़ा हुआ होता है इस यंत्र को छे खूंटियां होती हैं तीन लोह की
अर तीन पित्तल की सुरसिंगार में तारि का विन्यास न ही है रवाब की न्या

ई येहयंत्र भी स्कंधके ऊपर धरकर वामे हाथकी तर्जनी और मध्यमा अं
गुली लोह पट के ऊपर मे जो तार तिस तार के ऊपर ऊपर घर्षण करते
हैं दक्षिण हस्तकी तर्जनी वा दक्षांगुली की टकोर से लोहनखून धार
वा· कर रबाव की न्याई बजाउते हैं इसते भी साद्ध चित्तमक निष्पन्न होते
१८ हैं महती, काछपी और रुद्रवीणा येह तीन जाती की वीणा को मिलाते
से शुरसंगार की उत्पत्ति हुये प्रसिद्ध वीणाकार पियार खां ने इस
यंत्र को निर्माण किया हुये इस यंत्र के नीचे का खोल तंबुका होता है.
ध्वनि· पटक और· तंत्रास्थान· येह तीन अंश काछपी के सदृश है
और दंड रुद्रवीणा के तुल्य हुये इसमें विशेष· रुद्रवीणा की पटडी

काष्ट निर्मित होती है और सुरश्रृंगार की पटडी की जगा लोहे निर्मित होती
है सो पहिले भी कहि दिया है और रुद्रवीणा में तंती होती है इसमें लोह पीतर की
तार होती है और स्वर पद्धती रुद्रवीणा के तुल्य है सुरसिंगार गुणगारे ता
अर्थात् वडयाई क्या है जो महती वीणा और कछपी रुद्रवीणा इन
तीनों के सदृशाकारी भी नहीं है सुरश्रृंगार की ध्वनि मधुर है परंच थोडा चि
२२ हिती है ॥ इति स्वरश्रृंगार प्रस्तावोऽष्टम: अथ सुरवहार सुर
वहार यंत्र कछपी वीणा का ही अवयव रूप है इन दोनों के मध्य में
भाव इसमें यही विशेष है कि सुरवहार की ध्वनि को सा काष्ट निर्मित
होता है और यह सा एप में भी कछपी से कुछ वडा होता है कछपी में
जैसे सात ब्रूदिया होती है वैसे ही सुरवहार में भी होती है और धातु निर्मि

तनार भी संवद्धकरी जाती हैं अधिक इसमें तरफ होती हैं दंडके पासमें काष्ट
निर्मित तरक पर खूंटियोंमें बांधी होई होती हैं तरवां पित्तलकी यां चाहिये
और प्रधान सात तार स्थापनके निमित्त ध्वनि पट्टक के ऊपरमें जयसे ८
क तंत्रासन होता है इसी प्रकार तंत्रिका स्थापनके वास्ते और और अ
वा° २८ तिरिक्त क्षुद्र तंत्रासन देते हैं यही तंत्रासन प्रधान तारके तंत्रासनसे लै
कर प्राय अर्द्ध हस्त पर्य्यन्त प्रधान तारोंके नीचे होते हैं इस यंत्र
कार कवर्णा और वजाना कोछपी वीणाके सदृश है इसकी स
रकरणी अथवा सारिका न्यास काछपी वीणाके सदृश हये
और क्षुद्र तंत्रिका वजानेवालेकी इच्छापूर्वक स्वर होती हैं और सप्त तार ही
प्रधान इसमें काछपीकी न्यांई वजती है कहीं पांच भी होती है ॥ इति कु.
२८

पार्श्वतंत्रिकातिनके मछिकार से हीवजती हैं· सुरवहार काछपीसेंअवयव मेंवडी
है इसकीध्वनिभी परिमाणकेअनुरूव होती है गंभीर ओर दीर्घ नाणस्थायी हो
वडी ३ तीहै काछवीभी उत्तम शिल्पीद्वारांवनवाई जावे तो सुरवहार सेंउसकीध्वनीभी
न्यून नही होती· वालवसें काछपीहि उसकामूल है काछपीसेंहीदेखकर
सुरवहारवनायागया आधुनिक यंत्रहै· प्रायः ५० वर्षहुएको वन्यांहुवेहैं ३२१ ४. तक
प्रसिद्धवीणकार पियारखांथा उसके शागिर्द गोलाम महम्मद खांने येहसाज
तियारकियाथा सोगुलाम महम्मद खां लखनौउवालेनवावकीसभामें
वीणकारथा· इतिसुरवहार प्रस्तावोनवमः· अथविपंचीवीणा सोवि
पंचीवीणा किन्नरीवीणाकीन्याई है इसकीध्वनि कोशाडिम्ब शुक्तिअथवा
धात्वादि अन्यकोई पदार्थ नाहोनेसें विभिन्न प्रकार अवयव वाशिष्ट एकजा
तीके तूंवेसें हीवनालेतेहैं इसजातीके तूंवेकों वंगालेकीवोलीमें तितलाउवोलते

है विपंचीका प्रमाण तार संख्या सारिका विन्यास स्वरबंधन ध्वनिमाधुर्य
धारण प्रकार बजाउना इत्यादिक नियम इस्का सम्पुदाय भी किन्नरी वीणा
के सदृश है पहले विपंची वीणामें सात ही तार बांधते थे इस समय
वा. में पांच तारों से अधिक व्यवहार नहीं है इति विपंची प्रस्तावो दशमः १०
२. अथ नादेश्वरी वीणा ० नादेश्वर वीणाका ध्वनिकोश ध्वनिपटक देखनेमें
केवल ईउरोप के वाऊलीन यंत्र के सदृश है और इसको देड अर तारस
ख्या स्वरबंधन प्रणाली सारिका विन्यास इत्यादिक सभी कछ्छपी के तु
ल्य है यह यंत्र अति आधुनिक है वाऊलीन अर कछ्छपी से बना इनको
है. इति नादेश्वर वीणा प्रस्ताव एकादशः ११ अथ भरत वीणा प्रस्ताव: यंत्रों
भरतवीणा के नाम श्रवण मात्र अनेक ही हैं भरत ऋषि प्रणीत वीणा प
होअर्थ ग्रहण करके इसका शास्त्रमत अति प्राचीन यंत्रों मन नहीं आवता है

किन्तु कालवसें सो नही है यह यंत्र अति आधुनिक है रुद्रवीणा और काछपी इन दोनेंको मिलावनेसें उसकी उत्पत्ति हये भरतवीणाका ध्वनि कोश केवल रुद्रवीणा के सदृश काष्ट निर्मित और चर्माछादित और दंड कीलक तार संख्या स्वरबंधन धारणा वादन प्रणाली यह सब भरतमुनायक कछपी के सदृश है अधिक इस यंत्र में पित्तलकी छ एक पार्श्वतंत्रिका होती है सोई पार्श्व तंत्रिका बजावनेमें नही आवती यां केवल प्रधान तार के आश्रय बोलती है और भरत वीणाकी तार नायकी लोहेकी है और कोई कोई धातु तार के अभाव सें तंती भी होती है परंतु इसकी ध्वनिकी मधुरता के सम रबाब कछपी इनके बीच कोई भी सदृश नही हये इसका अपभ्रंश सें अनेक नाम रहे हैं इति भरतवीणा प्रलावो द्वादश: २२
अथ तंबूरवीणा वा तम्बूरा तुंबरु वीणा एक अलाबु निर्मित

खपर वाद्यनिकोश, एककाष्ट निर्म्मित दंड और काष्टका ध्वनि पट्टक प्रभृति
द्वारा प्रस्तुत होता है तुंवरु गंधर्वने येह यंत्र रचाथा गीत वाद्य के समय सुर
विश्राम लाहनके निमित्त येह यंत्र वना. इसको दो तार लोहकी होती हैं और
वा दो. या पीतरकी होती है कहीं पंचम भी लोहेकी होती है. येह समचार तारां होती
२२ हैं प्रथम जोडकी स्वर. अर्थात् मध्यवाली दोनों तारोंकी स्वर मध्य सप्तकके
षड्जपर होती है और प्रथम सप्तकके खड्ज पर पिछली षड्ज सुर होती हय
२ अब गायक लोक गायन करनके समय में इस यंत्र की पेहली तारको निषाद
दसुर पर कर लेते हैं अथवा मध्यम स्वर पर मेलते हैं भारतवर्षकी
तुम्बरु वीणामें सारिका विन्यास नहीं है वजाउणे वाले इस यंत्रके दंड पर दक्षिण
हस्तकी अनामिकासे वजाउते हे कहीं मध्यमांगुलीसे वजाउने हैं तुम्बरु वीणा

तारांको

में नखून की भी जरूरत नहीं है केवल अंगुली के आघात से बाजता है और इसका
बजावणा अति सुगम है अर्थात् अल्पाभ्यास साध्य है • पारस्य देश में भी
तुंबरु वीणा का प्रचलन है तिस देश में इसी में छः तारा बांधते हैं और पंजी २५
सारिका का व्यवहार करते हैं तुरुष्क देश के कोई कोई आठ तार और पैंतीस ३५
सारिका बांधते हैं कोई कोई नौ तार और चुताली ४४ सारिका बांधते हैं और तुम्बु
रु वीणा की सारिका धातु निर्मित नहीं है किंतु तंती के चार चार पेचों से होती है
और सो ई सारिका अरब देश के स्वरग्राम अनुसार विन्यस्त है और अरब देश में प
ही यंत्र ही किंचित् अवयव भेद से (ओ३ऽ) नाम से प्रसिद्ध है स्यार गाई नर
३३लू किर शान् बोलते हैं ख: जन्म के २५७५ वर्ष पहिले मिसर दे
श में भी इसी यंत्र का प्रचार था हाईरोग्लिफिक् लिखन प्रणाली के चित्र से

अर्थात् मूर्त्ति देखने से स्पष्ट जानीत है किन्तु आधुनिक आदिम मिसर देश
के लोक इसी यंत्र का बड़ा व्यवहार करते नहि और ग्रीक, इऊदीया मेसियान तुर्की
प्रभृति जो सब देशों के भिन्न भिन्न लोक तथा पशिया वसति तिनके मध्य में इस
वी· का बहुत व्यवहार देखा गया। मिष्टार बनो भी बोलते हैं पारसिया देश में भी
२२ पहिले तुंबरु वीणा प्रचलित थी। किन्तु हमारे देश प्रचलित तुंबरु वी
णा में व्यवहृत कीलकों के निकट तारदान: अगर छिद्रयुत तंत्रासन होते हैं और पार
सिया देश के लोक मिजराब द्वारा इसको बजावते हैं इसलिए पर्यंत भी तुरुष्क
देश के अंतर्गत टाइग्रीस और इउफ्रेटिस नदी तीरस्थ पारसिया देश के म
ध्य में तंबूरा यंत्र का प्रचलन देखा जाता है दक्षिण के इटालीय खेती
करनेवाले भी इसी यंत्र को किंचित् अवयव भेद से केलेसियान नाम से
व्यवहार करते हैं तुम्बरु जाती के कलेसियान यंत्र में दो ही मात्र तंत्रियां

वांधीरहितीहैं सुविख्यात संगीतग्रंथकार वार्ली इस जातिकेयंत्रकोविषमग्रा
पनेकीयेहैयेग्रंथमें १९६ पृष्टमें यथोचित निर्देशकरदीयाहै येहीतुंबरुय
त्रहिकिंचित् अवयव भेदसे चीनदेशमें, सान् सीन्, कहितेहैं औरजापा
न, में साम सीन नामसें विख्यात है इनदेशोंमें तुम्बरुवीणाका ध्वनि पहत्व
भी तिसतिस देशके सर्पविशेष के चर्म्म द्वारा आच्छादित होताहै औरति
समें तीन मात्र तार योजित होतीहै सोलोक तिसको सजराव द्वारा वजावते
हैं मिश्तर होमेयार डिहेल साहिव बोलते हैं तातार देशमें कास्पियान,
हृदके तीरवासी कालमक जातीयोंके मध्यमें भी तुंवरु वीणासदृश यंत्र
प्रचलित है रूषियादेशमें भी यहीप्रकार यंत्र है उसको ब्लालालाइका
नामसें प्रसिद्ध है येह यंत्र पूर्वदेशसें आनयाहोयाहै हमको येह भासताहै

पहिले भारतवर्ष में वल्लरिका नामकी वीणा प्रचलित थी सो वल्लरिकाही
अपभ्रंश नाम सें येही यंत्र होगई तैसेंही व्यालालिका होगई होगी-
इति तुम्बरु वीणा प्रस्ताव स्त्रयोदशः १३ अथ कानून प्रस्ताव: येह का
बा. नून एक बहु तंत्री विशिष्ट यंत्र है इस यंत्र की उत्पत्ति स्थान से संगी
२२ तकारों ने नाना विधमत प्रकाश कीये हैं आबो पालू उस सोफा
नाम करके एक जन पारसिक देशी संगीत ग्रंथकार कहिते हैं येह
2 अरब देशमें ही इस यंत्रका उत्पत्ति स्थान है ख्रिष्ट के प्रथम शताब्दी
में अरब देशका (निकोमेकास) नामक ~~था उसने~~ संगीत वित् पंडित
था उसने उत्पति इस यंत्र की करी थी तिसके मत से मिसर देश में इस
की प्रथम सृष्टि भई अर्थात् बना और और संगीत कर्त्ता यों के म

ध्यमें भी इसी तरां विस्तर मतभेद लक्षित हुवा किन्तु उक्त पंडितगण ने किस कारण
में वा प्रमाण विशेष देखते कानूंन की उत्पत्तिस्थान मिसर देश कहा हम
कों येह प्रतीत होता हये इसी भारतवर्ष में कानूंन की प्रथम उत्पत्ति है ·
अति प्राचीन कालमें इस खंड में शततंत्री एक प्रकार की वीणा थी ऋगवेद
में लिखा है जो कात्यायन ऋषि इस वीणा का बजाया था उसी वीणा को कैं लोक
कात्यायिणी वीणा बोलते हैं इसतें भारतवर्ष ही उत्पत्तिस्थान है जब मिसर दे
शके लोक व्यापार निमित्त आते जाते थे तब कात्यायनी वीणा आप
ण देश में लाये प्रान्त देश का सुख्यातिहू पंडित माष्टार भलेविउ
मिसर के संगीत संबंध के इस वृत्तांत के लिखने के समय में स्पष्टाक्षर रो
सों स्वीकार कीया है जो भारतवर्ष से ही मिसर देशी लोक कात्यायि

ग्री वीणा आपने देशमें लेगये थे तिसके अनुसार आपणे देशमें कानु
न नामका यंत्र प्रसिद्ध कीया॰ तदनंतर अरब देशके लोक मिसर
देशके बने ऊवे कानुन यंत्रको लेजाकर कानून नाम रखा इहुदी
वा॰ जातीके लोग संगीत वेत्ता सलेमनके मतमें ख्रिष्ट जन्मके समें पां
२४ चसो ५०० वर्षपहिलें मिसरदेशमें ही कानुन उत्पन्न ऊवा है मि
सरके कानुनकी दीर्घता चालीस पर्व प्रस्तार षोडश पर्व वेध दो प
र्वमात्र होते हैं इसमें वऊत रूढ़ियां और तंतु आवद्ध होती हैं अर
एक संदुक में धरा रहता है माष्टार भलिदिउ साहिब के मतानुसार
से पहिले कथन किया गया है यह कानुन यंत्र मिसर देशसें आर्व
में लेगये थे और कानून नामधरा किंतु॰ माष्टार लेन साहिब वो

सता हये खृष्ट जन्म के समें तीन सो ३०० वर्षपहिले आरब देशमें ही
कानून प्रसुतकुवाथा · सो आरब देशके कानूनके चालीसकीलक हैं
और ४० तारांवांधि पर रहितेहैं और समुदाय यंत्र पूर्वकथित नियमके
अनुसार से एकही वाक्समें स्थापित रहिताहै तिसके पीछे पारिस
कदेशके लोक आरव देशसें उक्त यंत्रको ल्याकरके उसमें और दो तार
जुदाइई सो वितालीतारवाला यंत्र होगया · कालक्रमसें भार
रतवर्षके अतिगौरवकी साम्प्री सोई कात्यायनी वीणा ही देश
भेदसें नाम भेद और अवयव भेद प्राप्त होकर पारिस देशके
वाणिये द्वारा यही भारतवर्षमें लेआये हये · हायके वडे
आनेपका विषय हयें इस समयमें कहांवोह कात्यायनीवीणा

कहांउसमें शततंत्रीयां होयं कहांउसके निर्म्माणकर्ता महर्षि
कात्यायन ख्रिष्ट के तीनसो सताइ वर्षपहिलें ग्रीसके रहिणे
वाला मासिडोनियांका अधीश्वर अलेक जांडार के आक्रमणकरण
वा० मेंही यह स्वर्गभूमि भारतभूमीमें पदार्पणकिया सोउन महात्माकेपा
२५ दस्पर्शनाहोनेसें ही भारतकासौभाग्यसूर्य्य चिरकालका उदय हुवा
२५ होयाथा अस्त होगया। तिससमेंसें लयकरइस महाराज्यकी स्वाधीनता
लोप दर्शन विज्ञान शिल्प साहित्य की उरवस्था संगीत शास्त्रका
प्रभृति नाना लाप उसके संग संगही कात्यायिणी जाती की वीणा का विनाश पारसि
क अलेक् जांडारचटस्को साहिब बोलते हैं येह ख्रिष्ट के आठसो वर्ष
पीछे का नूनयंत्र कोई कोई अंशमें परिवर्त्तित होकर भारतवर्षमें स्था
२५

पित हुवा अब भारत वर्षके कानूनकी दीर्घता प्राय सोलाह होतीहै कहीं
एक हाथ भी होताहै इसमें बाईस से लेकर तीस पर्य्यंत तारां होती हैं स्लोह पीत
र की होती हैं आधुनिक भारत वर्षके कानूनकी तार मिसर अरब देशके कानू
नकी न्याईं एककाष्ठके संदूक मध्यमें दोनों पास्सों के कील्लक द्वारा बांधी रह
ती हैं ये ह यंत्र समस्थलमें स्थापन करके केरन खूनों से बजाते हैं कैक एक हाथ
का मध्येंकड लोहेका रखते हैं उससे मींड गमक देते हैं और कैक आठ अंगुली से ब
जाते हैं इसका प्रथम सप्तक ३ तारा स्वर होताहै द्वितीय मुदारा त्रितीय तारा
सप्तक होताहै एक तार ३ अ सप्तक का सा स्वर होताहै समवाई स होगई
द्वितीय पर्द में ३ दारा पंचम सें तारा के ३ अ सप्तक का पंचम पर्य्यंत स्वर
पाया जाताहै ॥ पडओ या ई एक रिंवलटू पल पल डी साहिब

बा.
२५
२६

कृतपियानायंत्रका इतिहासविषयकग्रंथमें दृष्टहै, उरहुदियोंके देशमें येह का
नून यंत्र (नावि, अथवा (सालटरी, नामसें प्रसिद्ध था रोमलिनिवोल
ते हुयें प्रसिद्ध मुसलमान भारतवर्षसें मेहकौनी जिसको संस्कृतमें नान्दिका ष्ट
कहिते हैं उसको लेकर सालटरी, हार्प, लार यार, पांचूक, प्रभृति यंत्रस
मुदाय ही प्रायः एकजातीके हैं तब निर्म्माण गैत अथवा उपादान
गत भेदमें ध्वनिका तारतम्य लक्षित होता है ख्रिष्टके ११८८ वर्षमें
नानाविध सालटरीका चित्र सप्रतिरूप (प्यारीहेर, नामक कौतुकागार
में देखे गये थे तिसकालमें स्पेन देशमें उक्त यंत्रको (कानून, बोल
ते थे अन्यान्यवीणाजातीकी न्याईं अंगुलित्र अथवा केवल मात्र अंगु
लीद्वारा सालटरीके बजाउणेकी रीति थी. ख्रिष्टके त्रयोदश शताब्दीमें गु
लाम नामक एकजन शिल्पीका किया हुया इटलीदेशमें कानू

३६

ननामक वाद्यके बदले ३ टोल नामक वाद्य रचा सो सिटोल, यंत्रताडिनी वा अंगुलीसेंभी नहीं बजता केवल अंगुलीसें बजताहै. मिष्टर फेटस् साहि ब बोलताहै कि येह साज सिटोल यंत्र सें त्रयोदश शताब्दीके मध्यमें इटा लीदेशमें हिंक्लाभिकर्ड नामक अपर एक प्रकारका यंत्र प्रस्तुत भयाथा सो क्रमसें क्लाभिकार्ड, वेलिडियम् और जारमेनि देशमें हिंजारंभेंऊवा त सोक्लाभिकार्ड यंत्रके अनुसार करके रवृष्ट कीषोडशशताब्दीमें क्लाभिसिथि रीयं अथवा सकुंजिक सेतार नाम सें एकप्रकारका यंत्र प्रस्तुत भया प्र सिद्ध लुति नियास् और मारसेन्से. बोलते हैं क्लाभिसिथिरीयमेका आदि उत्पत्ति सेतारसेंभई अनंतर क्लाभिकर्ड और क्लाभिसिथिलीयम् क्रमसें भार्जिनेल. स्पिनेहार्प सिकर्ड प्रभृति यंत्र प्रवर्त्त भया० हार्प्स सि

कई देखणे में अविकल अधुनातन अनुरूप सह पियान फोर्ट यंत्र
कीन्याई था हार्प यंत्र के अनुकरण से हार्प सिकर्ड की उत्पत्ति है वेल
जियम् का अंत:पाती ओंटर्प नगर वासी प्रसिद्ध रकर कर्त्तृक अर्थात्
२८ रकर कर्ता है हार्पी सिकर्ड का विशेष चमत्कारित्व और पूर्णत्व लाभ हुवा
१७१० खृष्टाब्द में इटालीदेश के अंत:पाती टस्कानी प्रदेश की राजधा
नी पाडुवा नगर वासी सिगनर वार्ति लोमियो क्रष्टफाली रोमे देश
की नाट्यशाला में ऐक्यवादन जन्य अर्थात् रकठे वजाउणे के निमित्त
फलोरेंस नगर में पियान फोर्ट यंत्र पहिले प्रस्तुत कीया था।
१७१६ ख:- वर्ष में सुविख्यात फ्रांस देश का हार्प सिकर्ड के नि
र्माण करिणे वाला मेरियस पियान यंत्र का निर्माण करके २८

अपणे देशमें प्रचलित किया इसी तरां स्वल्पकालके मध्यमें येही पियानो यंत्र इउ
रूपके सर्ववादित्रमंत ओर सर्वदेश प्रचलित होगया सो क्रमसें इसकानि
र्माण कौशल ध्वनिपारिपाट्य व ऊ विधिकी उन्नती के साधनवासे नानादे
शके शिल्पीगण . विशेष अपने व्यवसायके सहकारसें चेष्टाकरणल
गे उनके मध्यमें एब्रउ उड कालर प्रभृति क्या इत्यादि सभाशिल्पी
गण । पियानयंत्रके बारणेवाले उसके संबंधसें अत्यंत ख्याति लाभ
किया था क्या वडे प्रसिद्ध लोकोंमें भये प्रायः अगाठ वर्ष व्यतीत हि
येसें हमारे देशमें इसी कानून यंत्रका प्रतिरूप सुरपुरी, नाम एक
यंत्र प्रसिद्ध ऊवा· सो कुनपायो इसी तरहीं यंत्रनिर्माणमें वंगदेश
का कोई एक विशेष संगीतज्ञ·उसने निर्माण करणेकी विधि कोजा.

नलिया सोऊसने नामकरण भी किया कलकत्ते में भी एकस
सिद्धयंत्र निर्माता स्पाउस ने यंत्र रचा तो हमलोक भी उसी
तरां रचने लगे इससे और भी एक यंत्र नूतन तर चलिया जो
वा २८ अबभी हमारे देशमें स्थान स्थानमें प्रचलित हये।
एडओयार्ड रिवलडेर पियानफोर्ड नामक ग्रंथमें उल्लिखित अर
अध्यायमें तिस का एक चित्र प्रतिरूप जिसको मार लेनार
बोलते हये सो देखाए मैंजाउता हये इसको मिसर देशमें कानुन
कहिते हैं आर आरब पारस्य देशमें कानून कहिते हैं सोई प्रचलि

तहये जिसके अनुकरण में अवशेषमें ३३ रोवदेशका प्रसिद्ध यंत्र पियानस्र
सिद्ध होयाहै सोयंत्रनी भारतके सहस्राधिक वत्सर प्रचलित कात्यायनी वीणाभी
होईएकप्रकारसें प्रतिपन्न भई। इतिकात्यायनीवल्लकी चतुर्दश: १४ अ
थ अस्सारिणी वीणा। दो चिकारी परिलागअक्षर पांचखूंटी विशिष्ट एक
कच्छपीवीणाके दंडके पासमें और तीनकीलक युक्त एक क्षुद्रदंड सं
लग्नकरणेसे प्रसारिणी वीणा होतीहै इसीयंत्रके प्रधान दंडमें
१६ सोलां स्थान और अतिरिक्त क्षुद्रदंडतेंभी १६ स्थानसमेत मिलाके
३२ वतीस स्थान सारिका कच्छपीवत् विन्यस्तहै प्रधान दंड उपर
पांचही तार कियत् परिमाणसें रंजिनी वीणाके मतवं धतकीरी
तिहै और क्षुद्र दंडस्थित तीन तार प्रधान दंडके तार मध्य

सप्तक करिके बांधते हैं अर्थात् प्रधान दंडके दोई चिह्न विशि
ष्ट तार जिस सुर में बांधी रहिती हैं सोक्षुद्र दंड स्थ दोई चिह्न विशि
ष्ट तार हैं तिसकी अपेक्षा करके एक सप्तक उच्च करके बांधते हैं
बा॰ किंतु प्रधान दंडके दोई चिह्न विशिष्ट तार उदाराके निम्न सप्त
२९ कके षड्ज करिके बांधने की रीति है सुतरां क्षुद्र दंडके दोई चि
ह्न विशिष्ट तार ही उदारा के षड्ज स्वर में आवद्ध होती हैं अपरापर
तार जिस जिस स्वर में बांधते हैं सोई दिखाते हैं नपस्रोमें॰ ॰
सेतारादि अन्यान्य यंत्र जिस पद्धती से वजाउते हैं न इसकी
वादन प्रणाली यथार्थ तिसके अनुरूप नहीं है प्रसारणी समतल॰

म

२९

स्थानमें वा क्रोड में अर्थात् आवली गोद में ठीक समभाव से स्थापित करके
वंशवा काष्ठ निर्मित एक क्षुद्र शलाका दक्षिण हाथ के अङ्गुष्ठ संयोग सें
धारण करिके अनंतर तिसीके आघात सें बजावते हैं और वाम हा
थ की वृद्धांगुली तार के ऊपर में सारिकामें टीप और घर्षण के सहिका
र सें संचालन करते हैं किन्तु प्रत्येक आघात ही यंत्र के सारिका
शून्य स्थानमें होना उचित है वादक गण स्वेच्छानुसार सें शलाका
के बदलें कोण अर्थात् गुजराव भी व्यवहार कर सकते हैं प्रसा
रिणी वीणा में निम्नलिखित नियम सें दोनों दंड मिलाके षाड्ज त्रि
सप्तक स्वर हो जाते हैं ॥ व्यवस्था ।। प्रधान दंड । अपकृष्ट दंड का द
स यंत्र में दोनों दंड जोड़ने का तात्पर्य यह है जो प्रथमतः अन्या

न्ययंत्र की अपेक्षा करि के एकसप्तक अधिक स्वर ~~(बहीं पाया जाता)~~ अत्र
नायासहीं प्रतिपन्न होता हये जिस कारण अपरापर वीणादी से सार्द्ध
द्विसप्तकका आधिक स्वर नही पाया जाता किन्तु इसमें सार्द्धत्रिसप्तकप
वा· र्यन्त विनाक्लेश से प्रतिपन्न कर सकते हये ~~द्वितीयतः~~ दूसरे से प्रधा
३० न दंड स्वतार का सुर नीचे है अर ~~दुद~~ दंड स्वतार का सुर एकसप्तक उ
30 च्च करि के बांधते हये बजाउणे के समय मों दोनो दंड का उच्च अर नी
च स्वर योग देणे से बाजा विशेष करके अलंकृत होता हये और मधुर
भी होता हये यह प्रसारिणी वीणा आधुनिक यंत्र हये. इतिप्र
सारिणी प्रस्तावः पंचदशः १५ अथ स्वरवीणा स्वरवीणा संस्कृतग्रंथा
नुसार अतिप्राचीन यंत्र हये यह देषणे मों अनेक अंश में रबाब के

तुल्य हये इसकी ध्वनिकोश अलावू निर्मित होता हये और दंडादि अवयव
काष्ट के होते हैं स्वाव का कोश जिस तरां से चर्म छादित होता है इसका काष्ट
पटड़ी से वैसा ही आछादित होता हये स्वरवीणा की तारां चार ही हो
ती हैं ॥ इस यंत्र में तीन सप्तक ही पाये जाते हैं ॥ इति स्वरवीणाप्रस्ताव:
१६ षोडश: १६। अथ सारंगी · यंत्र भी अतिप्राचीन काल से लेकर भारतव
र्ष में प्रचलित है इसका ध्वनिकोश भी अर दंड भी दोनो एकथान अखंड का
१७ ष्ट द्वारा निर्मित होता है ध्वनिकोश भी पतले चर्म द्वारा आच्छादित हो
ता है और दंड काष्ट की पटड़ी से आवृत होता है और दंड के ऊर्द्ध भाग में
दोनों पासों में दो दो करके चार पुष्ट कीलक हैं और इन में चमत लगाते
हैं और दक्षपार्श्व में बजाने वाले की इच्छानुसार छुद्र कीलक होते हैं

उनमें पित्तलकी तारें होती हैं कुछ एककी तारें भी होती हैं उल्लिखित प्रथा न चारही
तन्तु हैं येह यंत्र क्रोड में अर्थात सद्भाव से उरुस्थल उत्संग में रखके वक्षस्थल
के सहिकार सें वजाते हैं अर वाम हाथकी चारही अंगुलीयों के नखों के स्पर्श घर्ष
बा· ण से स्वर गमक तानादि निकालते हैं अर नखों को एक पार्श्व में घर्षण करते हैं अर
३२ दक्षिण हाथ सें एक धनुषी· जिसको गज कहिते हैं उसके साथ वजाउते हैं इस
३ वाद्य में भी पूर्वोक्त सप्तक प्रतिपन्न होते हैं ॥ सारंगी कोमलकंठी है अर्थात्
सुंदर कोमलकंठवाली स्त्री के सदृश स्वर है· अर जहां नृत्य होती है उस शा
ला में इसका वहुत व्यवहार है सारंगी की ध्वनी अतिशय करके मधुर
है और कंठस्वर के सदृश है इसवाद्यको और अर स्त्री स्त्रीका कंठ एकही भासते
हैं ~~अर~~ कंठ अथवा वाद्य भिन्न भिन्न प्रतीति नहीं देते ॥ येहयंत्र·

भी वकुल प्राचीन कालसें भारतवर्षके प्रायः सर्वत्र यही वकुलभावसें प्रच
लित है और धनुर्सात यंत्र का आदी यंत्र है ये एजन विलाइ कर्तक अ
नुवादित है जि वेलियम राज्यके राजधानीमें ब्रुसेल नगरमें र
हिनेवाला: संगीत विद्यालय का अध्यापक एफ जे फेटीस
साहिव कृत सुविख्यात वाकुलीन निर्माता एतेछीभेरियो
सका जीवन वृत्तान्त और धनुर्यंत्र का आदि उत्पत्ति विषय
क इतिहास ग्रंथमें स्पष्टाकार लिखते हैं कहा है जो ख्रिष्ट जन्म
के ५००० पांचहजार वर्षपहिलें महावलपराक्रांत लंकाधि
पति रावणराजाने इस जातीके यंत्रकी उत्पत्ति करी थी।

पीछेसें नानादेशमें किंचित् किंचित् अवयव भेदसें नानानामसें
प्रसिद्ध भई इउरोपके देशमें भायलिन् चीनके आरहीन पार
सके कामांचा अवयव भेदसें नामहैं पसिरिया देशमें भीइसी
वा· कामकारथा· इतिसारंगीप्रस्तावः १८ अथ सेतार यंत्र अ
३२ तिआधुनिक हये· सेतार और सारंगी इनके मिलापसें बनाय हे ५
ह यंत्र खर्परसें लेकर दंडपर्य्यन्त काष्ठनिर्मित होता है औ
र खर्पर भी कितनेक अंशमें सारंगी सदृश होता है अर दंड भी
यथार्थ· सेतारके दंडवत् होता है दंडके ऊपर भागमें जोडहै इ
पांच कीलकमें पांचही तार होती हैं जयसें सितारमें हैं वैसेही पु
र होती हयें अधिक इसमें पित्तलकी पार्श्वतंत्रिका व्यवहृत होती है

किंतु तिनकी संख्या स्वर बंधन वादकगणकी इच्छानुसार इसकी पार्श्वतंत्रि
का प्रयोग रूप सें बजती नहीं हैं अर्थात् तार के कम्पन से प्रतिध्वनित
होती हैं वादकगणों के बामें हाथके तले पकडने के ~~अधीन नसे~~ आश्रय
सें यंत्र लंबभाव सें खडा करके दाहिणे हाथमें लेर ऊई धनुषीसें बजा
ते हैं सेतार वादनकी प्रणालीसें इसके बजाउणेमें बामें हाथकी
तर्जनी और मध्यमा सें बजाउते हैं एसरार की नायकी तार ही
केवल बजती रहिती है अपर तार सुर सहि योग्यता के निमित्त
व्यवहार करणेके योग्य हैं यह यंत्र भी कोमल कंठी स्त्रीजाती के गाने
की मधुरता योग्य है और तिसके गीतके गाउणेके अनुसार बाजते है

कभी कभी सेतारादि यंत्रकी न्याई स्वतसिद्ध भी वाजना देषणे में आता है
इति ॥ पसरार प्रकरणम् २९ अथ मायूरी वीणा-वा-ताऊस मायूरी
यंत्र पसरार का अवयव भेद मात्र यंत्र है केवल इसके एवमग्र मूल
वा· में एककाष्ठादि निर्मित मयूर की ग्रीवा पक्षादि चरण चिह्न हो
३२ तेहैं बोलते है येही यंत्र संस्कृत में मायूरी· अर पारस्य भाषा
३३ में ताऊस कहाजाता है इसका धारण स्वर बंधन सारिका· वादनादि
व्यवहार पसरार के तुल्य है· वा लव से ये ह यंत्र थोडे काल
का ही बना होया है- प्रतीत होता है जो किसी उ अर· पश्चिम देशवासी
ने इसकों पसरार कों मयूर का कंठ लिगादीया है ४· वर्ष· वा ५· वर्ष

शिल्पीर कहते हैं २

केमध्यमें एसराज् यंत्रहीमयूरी. बना कोई कोई वंगदेशस्थ विष्णुपु
रकेपासका सेवाराम नामक था सोप्रथम ताऊस को उत्पन्नकर
ताभया. और येबात स्वीकार भी है. इतिमयूरीअकर गाम् अघाला
बूसारंगी. प्रथमसारंगीका अवयव भेदमात्र है विशेषके मध्यमें
पहीजासारंगी दारुनिर्म्मित है इसके खर्पर सेलेकर प्रायदंड प्रांत
पर्य्यन्त समुदाय और पश्चाद्भाग भी एक अखंड काष्टका अलाबू
द्वारा प्रस्तुत होता है अति प्राचीन कालसे इसी यंत्रकी खर्पटीको
कोई कोई नारिकेल से निर्म्माण करते हुये अलाबूसारंगीका
अंगुली स्थान ध्वनिपेटक प्रभृति सब और और अंग सब काष्टके ही
होते हैं इसका प्रधान तंतु पार्श्व तंत्रिका सप्तकका स्वरबंधन

वा॰
३४

और इसका प्रयोग भी सारंगी की न्याई है किन्तु धारण और वादन प्रणाली हैं
सारंगी से कुछ आधिक प्रतीत होता है सारंगी की न्याई गोद में धरके
के इसको भी बजाते हैं खर्पर संज्ञक को वाम स्कन्ध में स्थापन क
रिके वामहस्त कुछक प्रमाण से आकुंचित करिके उक्त हस्त का ता
ल और अंगुली की सहिकारता से धारते हैं और वादन काल
में सारंगी से जिस तरह तंतु के नीचे नीचे वामक तन्तु के घर्ष
ण से स्वर निर्गत होता है तिसके बदले तार के ऊपर ऊपर अं
गुली के टोक योग से ३३ तक भी वाऊलीन यंत्र की रीति से संपूर्ण
स्वर दिखाते हैं वस्तुतः वाऊलीन और अलाबू सारंगी व

हृदोनो साज एकजातिके हैं इसवास्ते कोईकोई पुरुष इउरूप देशके इसी
कोभारतवर्षका वाद्यकुलीन वाद्यबोलते हैं अलाबू सारंगी बंगदेशमें प्रसि
द्ध है· इत्यलाबू सारंगी प्रकरणम् २६ अथमीन सारंगी· मीनसारंगी
एसरारका रूपांतर मात्र है दोनोके मध्यमें विभिन्नतायेही है जोमीन
सारंगीके ध्वनिकोशसे लेकर दंडप्रांत पर्य्यन्त समुदाय एकखाद्रु
गभी एक अखण्ड दीर्घाकार अलाबू निर्मित होता है इसकी
सारकाकी संख्या और विन्यास कीलक तारकी संख्या और यो
जना पार्श्वतन्त्रिकाका नियम स्वरबंधन धारण वादन अं
गुली विक्षेप इत्यादि सभ ज्ञितनाक विषय है सो एसरार

केश्रनुरूप है यंत्र के खपर के मूल में काष्ठादिनिर्मित एक मत्स्य मुखा
कृति होती है इसवास्ते इसवाद्यको मीनसारंगी बोलते हैं (देखनेमेंआ
वा० आता है) इति मीनसारंगीप्रस्तावः अथ सुरसंग वा सुरसो सुरसंगयं
३५ त्र देखनेमें एसराज की न्याई है एसराज का अंग जिस जिस वस्तु
35 का बनता है उसका भी अवयव उसी उसी वस्तु का होता है पे इसवा
दनादिका नियम भी सब एसराज की न्याई एसराज की न्याई पा
र्श्वतंत्रिका नहीं रहती यां सुरसंग एही नाम प्रसिद्ध है वंगदेशां
तर्गत अंचल देश में इस प्रकार के यंत्र का प्रचार बहुत
देखने में आउता है और तहां के निवासी सेवाराम^दास^ ने येह रचाया.

अवज़ो सकल तत यंत्र को प्रचलन अधिक से अधिक देखा जाता
है तिसके समुदाय का विस्तार विवरण देखाही है इससें भि
न्न बहुत यंत्रोंको नाम संगीत ग्रंथोंमें दृष्टिगोचर है किन्तु सो स
कल यंत्र का प्रचलन नहीं देखा. उनां यंत्रां का भी नाम परिशि
ष्ट यथास्थान मो लिखेंगे अर्थात् अकारादि क्रम तें प्रतिस्वर
संगप्रस्तावस्त्रयोविंशः २३ इति संगीत रत्नावीरमहोदधौ सम्प
ततयंत्राणि ।। अथ ग्राम्य तत यंत्राणि ।। सारदा. यंत्र. किसीसी सिंहद
सभामें भी बाजता है सो. शवानुयाई सभामें वा. सिखोंकी स कि४
भामें होता है और गृहस्थी जनोंके बहिर्द्वार प्रायः बाजता है
इसीसें विचार कर देखागया है जो येह वाद्य सम्प नहीं हो सका.

सारिन्दाका अंग समुदायभी काष्ठनिर्मित होता है इसका ध्वनिकोश कितनाक
चर्म्माच्छादित होता हये। अर कितने अंश खोली रहता है। इसवाद्यमें घोडे
की पुछके बाल निर्म्मित तार तीनही बांधे रहते हैं अर कहीं तनु चर्म्मम
वा. यभी अथवा तार धातुकोभी बांधते है ॥ . ॥ सारंगी यंत्रभी सारिन्दा यं
३६ त्रके अनुकृत है अथवा सारिन्दा सारंगी के अनुकृत है इसमेंभी
36 कुछ सन्देह नहीं है बल्कि यंत्रकी उन्नतीका विषय विचार करके देखिए तो प्रतीत
होता हये कि सारिन्दाही आदिम यंत्र हये कालसहकार से दे
शकी सभ्यताके संग संगसे संस्कृत होकर सारंगीके आकारमें परि
णत होके वर्त्तमान हये। किन्तु इसमें भी एक विषम संदेह उपस्थि
त होता हये। जिसकारण संस्कृत सङ्गीत ग्रंथसमूह में सारि

राकानामोल्लेखनहीं है अर्थात् कौनसा पहिले निर्म्माणकियागया। तब सारिन्धा नामदेखनेपायाजाता है प्रतीतहोताहै कि सारिन्धा काअपभ्रंश से सारिन्दा कहितेहुये सारंगीकानाम सकलग्रंथों में हिं लक्षित हुये होंगे पर दोनों यंत्र अतिप्राचीन हुये॥ इतिसारिन्धाप्रस्ताव: २४

एकतारा। वा एकतन्त्रिका। इसवाद्यकों एकअलाबु चौड़ासा चर्म्म छादित होता है और उस में एकदंडवंशकालगारहिता है अर एकमात्र खूटी होतीहुये उसमें पा लोहे की एकतार होतीहै इसी वास्ते नाम एकतारा प्रसिद्धहै वादकलोक इसीतारकों अपने कंठस्वरानुकूलस्वरकर्के गाते हैं। इसयंत्रकों। बाउल। विरागी। मार्गी। आदिकलोक दक्षिण हाथकी तर्ज्जनी से बजाकर भिक्षाटन द्वार द्वा

२ करते हैं तिनोंसे भिन्न किसीरागी पुरुषसज्जानें इसका प्रचलन नहीं दे
खा: इति एकतारिकाप्रस्ताव: २५ अथानंदलहरी यह ग्राम्ययंत्रोंके म
ध्यमें परिगणित है प्राय: अर्द्ध हस्तपरिमित एकशून्यगर्भका
पृकाष्ठखोल एक तंतु सहित होता है और चर्म्मकरिके आच्छादित हो
ता है एक मृण्मय वा काष्ठादि निर्मित भांड उपकरणसें आनं
दलहरी यंत्र प्रस्तुत होता है उक्तित खोलका एक ही मुखको अ
पेक्षा करिके किंचित्सूक्ष्म चर्म द्वारा आच्छादित कर राखियें
और उसी आच्छादिक चर्म्मको ठीक मध्यस्थल में एक ही छिद्र
करिके पूर्वकथित तंतुका एक प्रान्त उक्त मृत्तिकादि निर्मित भां
डके आच्छादक चर्म्मके मध्य स्थित छिद्र में संलग्न करते हुये ये

वा° ३८

आपण देश मो प्रचलित कीया । इसी तरह स्वल्पकाल के मध्य में यही पिना
कयंत्र इउरूप के सर्व वादि सम्मत और सर्व देश प्रचलित होगया । सो
क्रम से इस्का निर्माण कौशल ध्वनि पारिपाट्य प्रभृति बहुविध
की उन्नति के साधन वास्ते नाना देश के शिल्पीगण विशेष
अध्यवसाय के सहित कार से चेष्टा करणे लगे उनके मध्य में
यड्‌डु ऊडू वालर प्रभृति क्या इत्यादि सब शिल्पीगण । पिनाक
यंत्र का काष्ठ निर्म्मित खोल भी वामी कक्षा में दृढ रूप से पकड़कर बा
महल से बल सहित आकर्षण करते हैं और दक्षिण हाथ में धारण
करी हुई जो शलाका है तिसके द्वारा बजाते हैं वाम हाथ के आकर्ष
ण से सुर की उच्च नीचता सम्पन्न होती है इसी यंत्र को विकृतएण्व्य

वहार करते हैं ॥ इत्यानंदलहरीप्रस्तावः २६ अथ गोपीयंत्रम्
एकहीदूढहाथपरिमित ग्रंथीके सहित सद् वंशदंडका ग्रंथियु
क्त प्रांत के छैसात अंगुल अखंड भावसें रखकरिके अवशिष्टां
वी ३८ श चार ही समानभागसें चीर करके तिसके दो अंश त्याग करके
जो नसें दो अंश बाकी है तिन्हके प्रांतमें आनंदलहरी कूं खोलके
सदृश एकही अलाबु निर्मित खोल आबद्ध करिके तिसमें
आनंद लहरी की रीति सें एक लोहे की तार आवद्ध करके उसी तार
के अपर प्रांतमें उक्त वंशदंडके अविकृत भागमें प्रोथित ए
क कीलक में संबद्ध करैं यष्टिदंडके प्राय मध्यस्थल दक्षिण हस्तकी

तर्जनी परित्यागसे अवशिष्ट समुदाय अंगुलिकी सहायतासे पकडकर तर्जनी द्वारा ता
रोंकों बजावते हैं दंड धारक अंगुलि चतुष्टयसे आकुंचन और प्रसारणसे इसके स्वर
की नीचता और उच्चता प्रकाश पाती है एहे यंत्र भी बाउलेका भिक्षुक व्यवहार क
ते रहते हैं ॥ इति गोपीयंत्र प्रस्ताव ॥ २७ अथ तत यंत्रोत्पत्ती ॥ जो संपूर्ण ततयंत्रका
विषय है अर्थात वीणादिक जो बाजे हैं उन्हका विषय पहिले ही वर्णन हुआ है तिनके
मध्यमें जो अनेक ही एहि आलिया विशेषतः एहि भारतवर्षमें उत्पन्न होकर नाना देशोंमें ना
नाविध संज्ञा करके प्रचलित हुए हैं — अंग्रेज भेदसे विविधाचित्त भिन्न प्रदर्शन कर्के विख्यात
हैं सो एक प्रकार प्रतिपन्न भये हैं ॥ सो इ यंत्र उसी तरह्से रहे हैं बदले नहिं गए और किसी स्था
नमें आकारमें कितनेक बदल गए हैं ॥ कितनेक यंत्रकी पहिली संज्ञा देशभेदसे भाषाभेदसे
वर्णगत विकृति प्राप्त हो जाती है ॥ किन्तु पकडते हो यां सूत्र अनुसंधान करते हो यां जाण स
कते हैं जैसा ओही एकही यंत्र कोई एक देशविशेषसे उत्पन्न होकर विभिन्न देशमें विभि
न्न नाम वा आकार धारण किया है सो उन्ह सबका विस्तार विभिन्न भिन्न भिन्न हुआ है ॥ औ
र केतेही यंत्र इन्हींके वर्तमान समयके निर्माणकारे हुए प्रतिकृत तम विख्यात यंत्र सकल
के पन्नन मूर्ति स्वरूप नामके यंत्र हो गये हैं सो भाषाके तत्ववेत्ता जो हैं ओहि विभिन्न देशप्र
चलित भाषा समूहको परस्पर सदृश समालोचना करते गए इसी तरह कितना सम्पर्क का प्र

वा.

३८

39

अवशेषमे ऐसा दिन आवे जिन दिनमे हमारे लोकोंका एही वाक्य सत्य करीके प्रतिपन्न होवे जो प
श्चिममे परस्य वा मिश्रिया देशान्तर्गत ईरान [illegible] प्रदेश पूर्वमे मगध देश दक्षिणमे विंध्यागि
रि और उत्तरमे हिमाचल एहि चतुःसीमान्तर्वर्ती विस्तीर्ण भूमी भागके अधिवासियोंके
निकट युरोप और और अनेक देशोंकी न्यांई अधिकांश संगीत यंत्रका विशेषकर्के तत
यंत्रके निमित्त चिरकालके निमित्तसे अधमर्णरूपा कर्जदार रहे हैं हमलोकोंका एहि मत है
और जेकर इतिहास विचारकर्के जो ऐसा वे तव जाण सकते हो जो प्रायसमु युरोपके दे
शका संगीत इतिहास लेखकगण और हमारे लोक इसी मतको संपूर्ण अनुमोदन कर्ते
हैं सो तभ भी एहि कहिते हैं। हमारे देशमें जो सकल प्रसिद्ध तत संगीत यंत्र प्रचलित हैं
सो सभका ही आदिम स्थल पूर्वदेश सकलके ही मध्यमें कोई एक पूर्वाञ्चलके सकल यंत्रका अ
नुकृति है कोई वा उन्हीके आकारके परिवर्तन उन्हीके वदलने से होया होगा ॥ इतिहास जो
फिरिस्तनामक है तिसके मतमें भी पूर्वाञ्चलही युरोप देशका संगीत देवीका शैशव
दोलाका संगीत देवीके बाल्यावस्थाका पंघूजा है सो कहिते हैं एहि पश्चिमांचलमें इ
सतनहांकु छभी नहीं जो पूर्वांचलमें न हिमथा ॥

जो

दाय

३८

लेकर और इउरोप देशके सब पंडित पूर्व देशके जितने संगीत यंत्रका जन्म देश बोलक
र भिन्न कंठ से अंगीकार करते हैं" तदवी कोई इसी पूर्व प्रान्तके कोई एक देश विशेषके
आदिम जन्मभूमी बोलके सन्मान देऐको नहीं चाहते ॥ उक्त सबके मतमे सबयंत्रके
निमित्त इउरोप क्या मुख्य संबंधसें वा कि गोण संबंधसें प्रधानतः मिसर, आरब आसि
रिया और भारतवर्ष इन्हिके देशके निकट विशेष ऋणी हैं। किन्तु इक्त सबके मध्यमे कौ
न देश ये प्रकृत जन्मभूमि हो तिसको स्थिर नहीं कर सकते। सबका ही" इसदालमें" स्थान
मतभेद लक्षित होता है ॥ पहिले बुद्धिमान लोक कालनिर्णयमे उन्हकी आशा हत
होगई हैं ॥ वास्तवतासे उक्त सबका जन्मकाल इतना प्राचीन है जो इतिहासके अधिका
रके भी बाहर ही है और तिसका सेही बाहरका भाग एक घन विस्तीर्ण जवनिकासे
समाच्छादित है अर्थात बीचमे व्यवधानयुक्त होगया है ॥ उक्त सबके मध्यमे कोई कोई बो
लते हैं" कितनेक यंत्र मिसर देशसें, कितनेक आरब देशसें कितनेक वा आसिरिया
सें और सब देशोंसे बहुत भारतवर्षसे ही कितनेक यंत्र उसीतरहके रहे और कितनेक
रूपान्तरित होकर आसियाके और और देशोंमे भी और इउरोप देशमे उन्हसें लाए गए हैं ॥

जो,

४०
वा॰

इस प्रकारके धनुस्तत यंत्रका और अधिकांश और और तरहके तत यंत्रका जन्मभूमी जो भारत
वर्ष है तिसके विषयमें हमही एक अविसंवादी क्या मत प्रकाश कियागया है ॥ सुप्रसिद्ध मन्
सियर मल्लिहाट साहेब कहते हैं जो जितनेक धनुस्तत यंत्र पहिले समयमें असीरिया देश
के, कि हिब्रू कि मिसर देशके इह समके मध्यमें कितनेक के परिचित नहीं थे अकर और कोई कोई
इतिहास लेखक कर्के बोला गया है। जो, हिब्रू देशके उसी तरह कितनेक यंत्र थे किन्तु तिन्हें के मध्य
में समके अंगुलिगको धनुः बोलाकर समझा। सो वास्तवता में भी धनुस्तत यंत्र संपूर्ण भारतवर्ष
केही हैं ॥ वारस्लम तिनामे हिन्दु समका जो एक अतिशय करके पुरातन धनुस्तत यंत्र था सो प्राय
पंच सहस्र वर्ष व्यतीत हुए सो लङ्काधिपति रावण निर्माण करके आपने नामकर प्रसिद्ध करदि
ये ॥ चीनका उर्हीन, जापानका कोकिउ हिन्दुदेशका सारङ्गी और सारिंदा और आरब और
पारस्यका केमानचे और रवाब एह संपूर्ण ही उसी एक ही यंत्रके प्रतिरूपके सिवा और किछु
नहीं हम। इसी तरह प्रतिरूप यंत्र जो असीरिया और हिब्रू देशमें भी अवशेषमें उत्पन्न
होसकते हैं सो कितनेक सम्भवपर हैं ॥ ७ एफ्, जे, फिटस् तिन्हकों रेजुमे फिलसो
फिकुइ देला हिष्टोयेर देला मिउसिकुइ नामक ग्रन्थमें लिखा हुआ है कि जो सब धनु
स्तत यंत्र इउरोपमें पहिले उत्पन्न होकर असीरियाके और और देशमें लोग ये है ॥ सो

कहिते हैं। यनुस्तन यंत्र पहिले तें इटालीमें उत्पन्न होकर ग्रीसमें और तिससें होके ग्रासिया
माइनरमे और पीछेसें पारस्य और आरब देशमें के मानुगो एवं उसी नामसे प्रचलित हुआ है।
किन्तु युरोप देशके युद्ध यात्रावाले सभलोक जिस कालमें जेरुजेलमसें मुडकर्के आए तिस स
मयमें उन्हसभके साथ साथही ओह यंत्रको और लोकभी आपने देशमें लेगए। किन्तु भार
तवर्षके वारण्ण तु भी ऊपर कहेहुए समयं गकालु सोभी ओह और ही तिस्को तिसके पीछे
किये हुए ग्रंथमें स्पष्टा क्षरमें अंगीकार किया गया है। सो कहिते है "जिस समयमें हम इ
स तरह हैं लिखयाथा उस कालमे हम पूर्व देशके संगीत संबंधसे संपूर्ण अनभिज्ञथा
ओं कुछभी नही जानता था, जनसें प्राप्त अनुसंधान के पीछेसें अब शेषमे एहि सत्य
ही जानगया है जो पूर्व देशमें नहीथा सो इस तरहा कि छभी ओह पश्चिम देशमें नहीथा।
य इस समयमें हम निर्भय होकर बोल सकते हैं) जो भारतवर्ष सर्वाङ्ग संपन्न भाषाका,)
क्या संस्कृत भाषाकी) उन्नती पोठीमें चढकर सभकी मनुष्योंके मनकी अ
नेक प्रकारकी चिन्ता और भाव परंपराका प्रकाशक दर्शन शास्त्रको, सर्वाङ्ग सं

४१ वा

दर कविता के निमित्त और तांहां वालीलोकोंका प्रधानतम हर्षकों देखैं वाला सङ्गीत के
प्राचीन तम चिन्ह समूहकों प्रत्यक्ष करने वाला कियाहै और भारत वर्ष सम धनु स्तत
यंत्रका आदि जन्म स्थानहै और तिसीसे आसियाके और और स्थलमे सोई सम यंत्र प्र
चित हुए हैं ।। अनेक यंत्रहैं देखनेसे निश्चय एहि होताहै कि एसभ भारत वर्षके ही कल्पि
त प्रतीति होतीहै ।। इसमें किंचित्मात्र भी संदेह नहींहै ।। जेकर कोई धनुस्तत यंत्र पहिली
अवस्था देखनेकी इच्छाकरे तब तिसकी प्राचीन सरल भावका अनुसंधान करना जा
वे, क्या शिल्पताकी चतुराई जिसकी संपूर्णता संपादनमे नहीदेखी इसीतरहा यंत्रही
गहणकर्के भारत वर्षके वारणा सु इत्यादिकोंमे दृष्टिकरे ।। इतने दूर जानेके निमित्त
केहे आवश्यकताहै कि जो एकतंत्री वीणाका जितनेक इउरोप देशके पंडितगण स
मुदाय ततयंत्रको आदि कहिकर स्वीकार कियागयाहै सो एहि भारत वर्षमें ही
उत्पन्न हुए हैं ।। सोई एकतंत्री वीणा भारत वर्षका प्रसिद्ध पिनाक यंत्रहै ।। इसका प्रा
चीनत्व प्रतिपन्न क्या सिद्ध करनेके निमित्त भारत वर्षके पंडितगण इसीकों देवदेवमह

देवजीका निर्माण किया होया है और तीसीकों ही निरंतर प्रिय
वल्लभ कहते हैं ।।

वा ४१

सो जो हो वे सो होय, इस प्रकारके तत यंत्र ही जो पूर्व देशसें उत्पन्न हुए हैं तिन्हूमै किंचित मा
त्र भी संशय नहीं है । और जो इस्लाम के लोक धनु यंत्र संपूर्ण भारतवर्षसें ही उत्पन्न नहीं हो
कर पूर्व देशसें और और देशोंसें ही उत्पन्न हुए हैं ऐसें कहिते हैं उन्हू सभके मत जो भ्रान्ति संकुल
थे सो अनेक ही स्थानमै देख गए हैं । सुप्रसिद्ध फिटिस कहिते हैं "भारतवर्ष ही सभ जो धनुस्त
तयें हैं उन्हूका जन्म स्थान है — भारतवर्षसें ही प्रथम अग्रासियाके और और देशमै ही लेग
ए हैं । इस लोक जिस ताल रावण और अमृति एहि दोनो हिंदु यंत्रके साथ अर देशके के
मानमे आगुजके साथ तुल्य ना करैं तिस ताल ए बोक्त यंत्रको पूर्वोक्त यंत्रकी अनुहार ति
माग नहिं कहिकर ठहिर नहि सकते ॥ एकहि यंत्र जो कोई एक देश विशेषसें उत्पन्न हो
कर विभिन्न देशमै नामभेदसें प्रचलित हुए हैं सो अनेक ही स्वीकार करते हैं । सो एह युक्ति
भी अनुनमोदित नहीं है । हर्ष को दूर नहीं कर सकती है ॥ सो भाषाके तत्ववेत्ता महात्मा सो प्र
त्यक्ष देखवाय देते हैं । जो यंत्र इंगलैंडमे (पाइप) सोई यंत्र जर्मनीका (पिफे) फ्रान्सि
का (पिपिउ) गलदेशके (पिजोव) जोयेलर्सके (पिव) हइजेनके (पिपा) और डेनमार्कके

वा. "पिजुप" सो सब उपस्थापका देख सकते हो ॥ जो यंत्र इंग्लण्ड के "हार्प" सोई जर्मनीका "हार्फे"
फिन्लेंडका "हार्पु" ग्लाइसलेंडका "हर्पा" हंगेरीका "हार्फा" फ्रान्सका "हार्पे;" [illegible]
का "ग्नार्पा" ग्नांलोसाक्सन [illegible] नदके "ह्यार्पे" वा "ग्यार्पे" जो "एव उद्" यंत्र ग्नार
वका सोई ही स्पेनका "लद" स्वइडेनके "लुत," डेनमार्कके "ल्यत्;" जर्मनीके "ल
ते," इटालीके "ल्युतो," फ्रान्सके "लुत," और इंग्लिण्डके लोक "लिउट" और, जो यंत्र पूर्व
देशमें नरजातिका कियाहुआ पहिलें [illegible]तमे लोक जायकर "गिटार" नाम है क
ए. थन कियागया और यंत्रही पीछें जर्मनदेशके पर्वतके प्रदेशवाही लोकका "जितार,"
निउ रियाका "कितार" पुरातन ग्रीसका "किताना" हय और मूने पूर्वदेशमे सोई जो
पारस्य और भारत वर्षका सेतार" सोई इसतनयमो समई लोक खुदहै केंठहैं अंग्रेगीका
र करलिया है। भाषाके तत्वकों जानने वाले सम लोक जो हैं उन्हके पूछनेसें सो समलोक
ग्रीसके नियमानुसार सें कहतेहैं — सो उसदेशके व्याकरणसे कि सक गज इत्यादि शब्द एक
परिवारके परस्पर बदलजातेहैं के जैसें सितार, कितार, गिटार, किताना, जितार इत्यादि

पूर्वदेशके प्रचलित यंत्र समके सहित पश्चिम देशके यंत्र समूहका अनेक नामका सा
दृश्य है। कभी नहि हुआ क कभी ऐसा समय हुआ कि आवश्यक ही होगया जिसदाए
मै इह समकी आदिम् सि निर्णीत हो सकती है।। अथ सुषिर यंत्र प्रकार।। एहे समयं
मध्य द्र युक्त हैं।। के. बीचसे पोले और छिद्रों करकें भी युक्त जैसें वंशी है। इत्यादि इत्या
दि समको सुषिरख्य यंत्र कहिते हैं। सो एहे सम यंत्र मुख करकें फूंक मारने को सहायता से
वजते हैं।। इह समके मध्य मे जेठा समकी अपेक्षा करकें अधिक प्रचलित है सो इह के विषय
मे हि विवरण किया जावेगा।। एहि सम यंत्र प्रथमसेंहि दो प्रधान श्रेणी से विभक्त है;
एकनल और द्विनल जिहके मध्य मे जोभी और चार प्रधान जाति से विभाग कि
एगए हैं।। वंशी जाति, काहल जाति, शृंगजाति और शंख जाति। वंशी जाति के मध्य मे
मुरली, सरल वंशी वा लय वंशी और वेणु इत्यादि हैं।। काहल जाति के मध्य मे रोशनचो

वा०

43

५

शृंगजातिके मध्यमें शृङ्ग रण शृंग और तुरी इत्यादि हैं। शंखजातिके मध्यमें शंख, गोमुख
क्या. नसींगा इत्यादि हैं ॥ एह समुदाय एकं नलयंत्र भए हैं। इन सब यंत्रके मध्यमें केवल तुं
बजीही वर्तीजाती है। इन समके मध्यमें अनेकही पारस्यदेशके नामसें ही परिचित हैं। किन्तु
इन समका एक एक संस्कृत नाम भी है॥ सो प्रत्येकके विवरण स्थानमें लिखा जावेगा॥ सुविधा
के निमित्त तिन समका जो नाम साधारणसें वर्णन किये हैं सोई सकल नामसें ही व्यवहार
किया गया॥ इन सकल यंत्रके मध्यमें शंख और शृंग अति प्राचीन हैं सो सब यंत्रके फूत्
कार यंत्रके आदी हैं) जिस पाश्चके शिल्पकौ शलद्वारा संबंध किया जाता है इन समके ही
यंग हैं ॥८॥ सतरां इन समका प्रकृत पदमें एह कहा जे नाम प्राप्त हो नहीं सकता॥
इन समका दोनो ही प्रकृति प्रकृत पदार्थ सभ्यताके सभाके सामान्य नामसे के सेमे में
ही प्रथम व्यवहृत होवेंगे॥ एहु समुदाय यंत्रही ततयंत्रकी न्यांई बिभिन्न अवस्थामे
और बिभिन्न उपलक्षमें व्यवहृत हैं सो एह सब भिन्न भिन्न भागसें विभक्त हुए हैं। तिनके
मध्यमें कितनेक सभाके जोग यंग, कितनेक बाहरके द्वारके कितनेक युद्धके बजेनर ८३

[illegible]

५८

बा.

५५

कितनेक ग्राम्य, कितनेक वा मांगल्य क्या मंगलकार्य्यमे वजाए जाते हैं कितनेक इनके मध्यमे अनेकही दो वा तीन तिहाके भी होते हैं क्या तीन ही पंक्तिमें स्वीकार कियाजाताहै सो नीचेमे तिनके मध्यमें कितनेक का एक ही तालिका दीजाती है ॥

सभामें	बाहरद्वारमैं	युद्धमैं	ग्राममैं	मंगलविवाहादिमें
मुरली	रोशनचौकी	तुरी	गोमुख	शंख
तुक्का	करनाई	रणसिंग	शंख	गोमुख
	फलम	श्रृंग	तुबड़ी	रामसिंग
			बेरा	तुक

भरतवंशीके भरतवंशी

६५

वा·

45

वंशीजाती प्रकारः ॥ सामान्यता करके एक प्रकार जो यंत्र फूंकदेनेसे बजवाते हैं उन सब
की सामान्य संज्ञा वंशी हैं ॥ किस कारणसें कि अति पूर्वकाल क्या बहुत चिर कालसें प्र
थमें छिद्र सहित कोई फूंकसें बजने वाला यंत्र रचनेके समयमें वांसकाही यंत्र रच
नाकियाथा, पीछेसें और और कारणसेंभी इसकी निर्माण विधि संपादित होकर विश्व
प्रकारीभई और बजाउणेकी रीतिकी विचित्रता, और उपादान का· क्या· कारणका औ
र छिद्र संख्याका विशेष कर भिन्नताके अनुसारसें नाना प्रकारके आकार और
नाम हुए हैं ॥ जैसें तैसें, क्या तिलोत्पन्न स्नेहद्रव्यही प्रथम तैलहै, किन्तु इस समयमें ए
रंड सर्षपादि सें उत्पन्न जो द्रव· क्या स्नेहपदार्थभी तैल शब्दसें ही प्रसिद्ध होयाहै ॥
जो वंशी श्रीकृष्ण भगवान्‌जी व्यवहार कियाथा क्या बजाउते थे और वंशी
बोलते हैं उसीको मुरली बोलाजाता है ॥ ग्रीसके आमेना, रोमके फिस्चुला, मिसि
रके [illegible] और अबके लोक अंगरेजी फ्लुट और जर्मनी देशके एलि [illegible] इन सबके
साथ मिसका अनेक तरहका सादृश्य है। जो सरल भावसे बाजताहै [illegible] पार स्य भा

और संस्कृत भाषामें मुरली, और इंगरेजी भाषामें फ्लाजिउलेट और लाटीन भाषामें
ति फिस्टुला गिंगिना बोलतेहैं ॥ सोलमप्रकारकी वंशी ~~है नलाकार~~, वर्तुल क्या गोल हो
नाहि, सरल और पर्व दोष वर्जित क्या बीचमे कोई गंठ नहीं ॥ एह सम पहले तो बांस
के होथे किन्तु पीछेसें खदिर रक्त चंदन इत्यादि काष्ठका, सुवर्णका और ~~समय~~
~~समय क्या~~ और रौप्य, ताम्र और लोहा इत्यादि धातुके भी निर्माए गये हैं ।
कहीं कहीं हाथी के दंद के और स्फटिक के भी एह यंत्र बने है, इह सम यंत्रों का
गर्भ शून्य है के बीचसें पोले हैं इह सम की दो सीमा है शिरो देश और अधो देश,
सो शिरो देश बंद होता है और अधो देश खुल्ला रहिंदा है । इह की दीर्घता अ
ठ नौ अंगुलसें लेकर एक हाथ लंबे और तिनसें भी अधिक हो सकते हैं । जो
वंशी मुरली पदवाच्य है तिसका विषय पहले तो विवरण होगया है ॥ अथ
मुरलीप्रकार: एह नलाकार, वर्तुल और सरल क्या सधी होती है ॥ इसकी

वा·

46

दीर्घता अनेक प्रकार की (ही) होये, किन्तु नेर तर एक हाथ परिमाण की ही देख
ने में आउती है और शिरो भाग का तीन अंगुलि परिमित देश में क्या
नीचे एक छिद्र होता है जिस्का नाम फूत्कार क्या फूंक देनेवाला रंध्र उसी रंध्र
के प्राय चार अंगुलि कहीं कहीं तिस के ही नीचे छे छिद्र होने हैं, उन्हें सम का ता
धारण नाम तार रंध्र है। पहिले ही में फूट की न्याई इस्के दोनो पार्श्वों में बंद हो
ने है। किन्तु इस समय में जिस्का और बड़ा व्यवहार नहीं है, श्री कृष्ण जी की प्रति
माओं में जिस तरहा हाथों में मुरली दई जाती है उसी तरह यूं ही टेढे भाव से दोनो हा
(लिखले १) थों कर के ही धारी जाती है। सो पहिले वालों को सरल भाव से पकड़ा इ कर म
स्तक ऊंचा और वामे मोढे के पास थोड़ी झुकाइ कर और कोमल भाव से या
ख के वक्षस्थल विस्तीर्ण करके अध्याह करने की विधि देखी जाती है। मुरली
दोनो हाथ के अंगूठेयों के मध्य भाग में टेप देके पकड़ने से वामे हाथ की तर्जनी
मध्यमा और अनामिका (इन) तीन अंगुलि मुरली के शिरो देश के तीन छिद्र के

मुखमें और दक्षिण हस्तके एहि तीनही अंगुलि के नीचेमें स्थितजो तीन छि
द्रहैं उनके ऊपर बजाउनेके समयमें प्रयोजनके अनुसार विनियोजित कर
तेहैं ।। पहिले प्रकारके आयत्ता नुसार क्या प्रमाण के अनुसार से पकड क
र निम्न लिखित प्रकारसें एह बजाउन होतीहै इसके फूंक वाले छिद्रकों ए
कमालेके पासें हिलायकर तिसकों ऊपर अधरके क्या नीचेके ओठके ऊपर स्थि
र और हठ भावसें मुखके अधर क्या ओठकों एकत्र दबाइके दोनोंके
मध्यमें फूत्कार क्या फूंक देनेवाले छिद्रके निमित्त एकैं छोटा, परिसर छिद्र रा
खते हैं ।। अधर एक मुखके पासे रहे और फूत्कार रंध्रका आधाक भाग मुखके हठ
न रखे और ओठ एक बाहिरमें रहैं और उक्त रंध्रके खुलेहुए भागकों आ
वेष्टन करें ।। इस तरहसें जिस क्षण फूत्कार बाहिर होवे तिस क्षणमें प्रा
य समुदाय फूत्कार ही रंध्रमध्यमें प्रवेश कर जाता है ।। फूत्कार आरंभ

~~खोले छिद्रसे~~
छोड़िदेवें
वडा· ५

[illegible]

४८

वा.

तीव्र
तिहक प्रयोग कालके वलका न्यूनाधिक्यके वशातें स्वरकामी उच्चता और नीचता
संपन्न होतीहै। हमलोगोंका के देशमें जिस प्रकार मुरलीहै, उउरोपमें होई [illegible] पंक्रु
रहै॥ यह दोनोंही अति प्राचीन कालतैं प्रचलित हुए होए अबतक चले आउतेहैं॥ [illegible]
दोनोंकाही प्राचीनताके प्रतिपादनके निमित्त दोनों देशोंमेंही इहके संबंधमें नाना
प्रकारका प्रवादहै॥ भारतकी मुरली श्रीकृष्णजीकों अतिप्रिय [illegible] थी और ओही

युरोपका फ्लुट. पूर्वतन क्या पहिले यूनानका रोमका पिसूला और ग्रीसका आवलुस
मिनर्वा देवीका ग्रति प्रिय तम और तिसी करके हि निर्मित इसलिए कहिते हैं। पूर्व
समयमे फ्लूट स्पष्ट होनेके पीछे ही प्रथमसें इतर जन भी इसको व्यवहार करते थे
और उसी निमित्त यह तैसा आदर रमणीय नहिं था; किन्तु जबसें ग्लतदेशके लो
कोंने पारस्यादि देश जीत लिया, तबसें लेकर तैसेंही संगीतका विशेष करकें दे
खलेकाआरंभहुआ उसी समयमे फ्लूटका इतना आदर अधिक हुआ, कि जो सब
लोक इस यंत्रको वजाउने नहीं जानते थे सो उन लोकोंकी गणना अच्छे लोकों
मे नहीं थी ॥ प्लुटार्क कहिते हैं थिब्स नगीन देशका राजा पेरिक्लिस नामक
इस यंत्रका बड़ा उत्साह देनेवाला था और उसीने ग्रीसके नाट्यशालामे पर
रमें पहिले हि संगीत का स्थापन किया और हमारे पासके लोक पूर्वदे
शसें विशेष करकें आनिहार था और भितरमे मुरलीकी न्यांई यंत्र बहुतसे पहिले
काल प्रचलित था। अवयवमे काई भिन्नतालक्षण नहीं होती। सो कि हाहय कि ह

वा०

हर प्रसिद्ध जो कोइ स्थान वा नगर विशेष हैं उसके ध्वंस क्या नाश होनेके उपरं
त उसके बिचमें एक जगामें मृत्तमय प्रतिमा निकली तिसके हाथ एक यंत्र निक
ला, तिसका आकार निरंतर मुरलीकी न्याँईथा, सो किस समय मो और किस प्रका
रकी घटनामें जो इस प्रकारका यंत्र उस जगामें प्राप्त हुआथा सो किहा नहीं जाता।
और प्रतिमा आशिरिया देशका ही था। सो इस स्थलमें एह अवश्य ही स्वीकार कर
ना चाहिये जो सम प्रकारके फूक करके बजनेवाले यंत्रका आदि यंत्र शंख है ॥ संगी
त इतिहास लेखक जो प्रसिद्ध हैं चार्लस वर्णिनामक साहिब इस समयमें वर्तमान म
तकी साखी देते थे ॥ अथ सरलवंशी प्रारम्भः ॥ इसीको पारस्य भाषामें आलगोजा और
इंगरेजी भाषामें फ्लाजिउलेट कहिते हैं ॥ इसी तरहा इसको सरल भावमें क्या सुधी
फूकनेमें इसका नाम सरलवंशी भयाहै ॥ सो मुरलीकी न्याँई इसमें भी सात तार
छिद्र हैं और फूकदेनेवाले छिद्रके स्थानमें एक वायु छिद्र होता है उस स्थानमें
वायु निर्गत होता है क्या वायु निकसता है ॥ फूकवाले छिद्रमें फूक नहीं देना चाहिये,

क्योँ कि एह थिर देश इस्का खुल्ला रहिँदा है उसी स्थानसेँ ही फूक देतेहैं वा
मुख खुल्लारखनेकरके आवश्य क तम तार छिद्र हमनेहीँ अंगुलि रखने दा
रा वजाउनेले क्रिया संपादित होतीहै ।। किन्तु पकडनेकी रीती मुरलीसे सम ख
तंत्र है ।। प्रथमतः इस्कोँ सरल भावसेँ पकडना होताहै और ऊपरके चार छिद्रोँ
मै दहिने हाथकी चार अंगुलि और नीचेके तीन छिद्रोँमै वामे हाथकी ती
न अंगुलि उह छिद्रोँमै योजनी चाहिये इतनामात्र मुरलीका और अल
गोजेका भेद है, और और सभविषयमे एही सरल वंशी प्राय मुरलीकी न्याँई है ।।
अथ अलयवंशीप्रकारः ।। एह यंत्र केवल वाँसकाही होता है - अवयवमे पूर्वोक्तक्या
अलगोजाके समानही होताहै ।। लोकोमै इस्कोँभी प्राय सरल भावसेँ पक
डकर्के वजाउतेहैं ।। = तव वशेष एहि जो, इस्को मुखके एक कोनेपे एक
टेढे भावसेँ पकडतेसेँ इस्के दोनो मुख अतावड क्या- खुलेही रहितेहैं और
सरल वंशीमेँ जो एक वायु वाला छिद्र होताहै, सो इसमे नहीं होता। और और हे
पूर्ण विषयमे एह सरल वंशीकी न्याँई है ।।

४८

वा·

४

49

अथ काहलजातिय। इसी सकल यंत्र कों सरवा काना क्या होर किसी तरह विशे
षकों इसके मुखमें देकर वजाउते हैं। इस तहाका यंत्र कि पूर्व देशसें कि पश्चिम दे
शमें, एह दोनो देशोंमेंहि विभिन्न नामसें प्रचलित है। वंगदेशमें कलम, रोश
नचौकी, सरनाई और अंगरेजी क्लारि अनेट् ओव ए प्रभृति इसी पंक्तिके अंतर्ग
त हैं॥ अथ कलम प्रकारः॥ इसका आकार लिखनेवाली कलम की न्याँई है इ
सी निमित्त इसका नाम कलम है॥ एह यंत्र इस प्रकार के नामसें अनेक देशमें प्र
सिद्ध है॥ इसीकों हिंदुस्तानमें कलम और पारस्य अफगान क्या तुर्कस्थान, तातार
प्रभृति देशमेंभी कलम और ग्रीसके कलमस इसी निमित्त वोध होता है जो एह
भारतवर्षका यंत्र होवेगा। इसका एक मुख कलम की न्याँई काटा होया और अ
पर क्या दूसरा मुख और जोर वंशीकी न्याँई अनावड़ खुला होता है। इसका दै
र्घ्य अपेक्षा कुछेक थोरा है॥ इसकी तार छिद्र संख्या और जोर वंशीकी न्याँई हो
नही होते हैं एह सरल भावसें वजाया जाता है। किन्तु और जोर यंत्र जिस प्रकार
फूंकवाले छिद्रमें फूंक मारनेसें ही वजता है एह उसीतरहा नही। सत केके पाछे क्या·

जिसस्थानमें बजाउतेहैं उसस्थानमें देशी सरनाइके तरह एक छोटा नल
साथहीरहिताहै के उसके मुख वीच नल दिया रहिताहै ॥ और बजाउने
लगनेके पहिलें जिसको फुंफुं करके मिजाइ कर फेर बजाउनेलगते हैं ॥ अथ
रोशानचौकीप्रारम्भः ॥ एह यंत्र हमारे देशमें और पारस्य देशमें बहुत प्रचलित
है ॥ देखनेमें अनेक शेवाइ एके मत है ॥ कलमकी न्याइं इसके मुखमें एक न
ल देकर इसको बजाउते हैं ॥ इसका अग्राका ऊपरके भाग का ठका और निम्न
देश में पितलकी न्याइं धातुकर्के संयुक्त और धतूरे के पुष्पका आकार होता
है ॥ और किसी किसी का सम अवयव भी शुद्ध का ठका होताहै ॥ और लंबा
इ इसकी साधारणसें एक हाथ जितना होती है ॥ लखनौ इत्यादि देशमें
इसकी अपेक्षाकरके अनेकही बडे [illegible] यंत्रोंका व्यवहार है, तिसका स्वरभी
अपेक्षाकृत निम्नतर है क्या गंभीर है, हमारे देशोंमें नव क्या· नौबाजे नौबतमें
जो रोशन चौकी व्यवहारमें है, तिसका स्वर तीव्र है क्या· साधारण यंत्रकी

वा· अपेक्षा करकें तीन चार स्वर जईमें है पूर्वतन क्या पहिलेके समैमें मुसलमान लोकों
के राज्यके समयमें राजेयोंके पास उत्सव और मंगलकार्यकी खुशीकरकें इसका व्य
वहार बहुत था ॥ आजतक भी एही मुसलमान और हिंदु लोकोंके मध्यमें उक्त
50
विधकार्य्य क्या मंगलकार्य्यके खुशीकरकें व्यवहार होता है ॥ अथ स्वरस्थाई आरम्भः
एहयंत्रके अवयवमेंकि वादन प्रणाली क्या पंक्तिमें क्या दोनो पंक्तिके विषयमें
हो संपूर्ण पहिले कहे हुए यंत्रकी न्याईं है ॥ एह दोनो यंत्रका ही स्वरगत जो
विलक्षणता है सोई इस समका भेद ठीकठीक निश्चय स्वरोंको करा देता है।
एहियंत्र मुसलमान सम्राट् अकबर शाह जीकों अति प्यारा था। सो सदा हीनो
बतके मिलनेमें इसीका बजेना सुननेमें बड़ा प्रसन्न होता था ॥ इसका पा
रस्यनाम सारिन्दा है ॥

सके

अथ वेणु प्रारम्भः। एही हमलोकोंके देशमे वेणु क्या बांसद्वारा निर्मित होती है
इसी वास्ते इसका भी नाम वेणु होया है। एही वेणु मिसर देश यौंनै अंगरेज
लोक जिसकों दार्विं फ्लुट क्या· तिस दे[illegible]क लोक फकीर लोक वंशी बोलके व्य
वहार कर्ते हैं, इसीकों मिसर देशके धर्म संबंधवाले व्यापारमै जिकार नाम
क नृत्यके सहित फकीर लोक व्यवहार करते हैं।। इसकी दीर्घता वंशी जा
तीके और और समुदाय यंत्रकी अपेक्षा करकें अधिक है। इसी यंत्रकों सन्मुख छे
और पीछमे एक ही मात्र छिद्र होता है। इसकी बजाउने की रीति इस जाती के
और और यंत्रकी अपेक्षा करकें स्वतंत्र है क्या भिन्न है। मुख टेढा करकें और यं
त्रकों भी टेढा कर पकड़ कर अल्प क्या थोडी थोडी फूक दीया करते हैं।।
तब इस यंत्रकी बजाउने रीती सिद्ध करते हैं।। उसी फूकके देनेके समय मे
जो बल प्रयोग किया जाता है, तिसकी तारतम्यके अनुसार हैं अनेक प्रकार के

५१

स्वर प्रगट होते है ॥ सो प्राचीन समय में शिक्षा होय जो बजाने वाला है तिसके हाथ से
वा· इस यंत्र से अति सुंदर और सुनने में अति मधुर स्वर उत्पन्न हो सकता है ॥ किन्तु तिस
51 के बजाने में होय अनेक दिन पकड़ कर अभ्यास नहीं करने से अच्छी तरह बजाय
नहीं सकता ॥ अथ शृंगजाति प्रारम्भः ॥ एह सकल यंत्र महिष, मेष वा गो इत्यादि दी
र्घ शृंग धारी जन्तु सकल का शृंग को ब देके यंत्र से यार होता है इस जाती के सम यं
त्रों का आदि शृंग है। एह पहिले कि हागया है, शंख और शृंग एह अनेक प्रकार के
यंत्र ही स्वता सिद्ध है ॥ और सम प्रकार के फूंक देने वाले यंत्रों के आदी हैं ॥ एहि शृंग
जो शुद्ध भारत का कि एही पूर्व देश मै स्थित सम देश के है जो यंत्र हैं सो ऐसे ही
हैं जितने क पश्चिम देश के स्थित जो होर देश उन्ह मै हरल की न्याई अनेक
नाम से प्रसिद्ध हैं एहि यंत्र भारत का शृंग, पारस्य देश का कारना, हिब्रु देश
का केरन, ग्रीस का केरास, रोम देश का कर्नु, फ्रान्स का कर, जर्मनी
का हरन, जेपेलन का करण, हंगेरी का कुर्त, और इंग्लैण्ड का हरन। एहि ५२

शृंग जो हमारे देशमें कितनेक पूर्व कालसें प्रसिद्ध होयाहुआ है सो किहानहीता। परंतु किहाहै कि देवादिवमहादेव इसकों व्यवहार कियाहै॥ एह यंत्र समके नलक का आगेका भाग सूर्ई के तुल्य और मध्यकाभाग और ऊपरकी अपेक्षाकर्के बड़े वि स्तार वाला होताहै, और आकार इसका टेढा होताहै सो इसके आरके ऊपर एक कियाहुया छिद्र होताहै सोई फूकवाले छिद्रका कार्य्य करताहै॥ अपरन्तु शृंग सम देशोंमें ही रणके स्थलमें सेनापालके के लोकोंके उत्साह करणेकों वा उन्हकों बुलाउणे वाले वा कोई कार्य्यके निमित्त क्या संकेत करणे हीवाले एह यंत्र। व्यवहार कियाजाताहै सो बोलते हैं कि इसका नाम रण शृंग है॥ सो जेकर उक्त जो कार्य्य हैं सो समही देशोंमें इसका चलन है। तदबी पहिलें हम लोकोंके देशमें और ग्रीसमें इसका अत्यंत चलन आदर पूर्वक था॥ अब इस समयमें इंगर जोके निकट बुगुल नामक यंत्रद्वारा जो होता है पहिलें सोई कार्य्य इसद्वारा भी संपादित क्या कीयाजाताथा शृंगजातीके और और समयंत्रकी अपेक्षा क्या जाए कर्के

फूकसें बजने वाले जो होरयंत्र हैं उन्हसे वशेष इसमें स्वरकी चलाकी वा कोमलता करीजाती है॥

इस यंत्रका आकार अनेक प्रकार का निश्चय करके बना है॥
एह यंत्र पित्तलका वा तांबेका होता है

संगीत जाती

वा॰ ५२

३

अथ रामसृङ्ग प्रारम्भः ॥ एह मंगल कार्य्य मै व्यवहार होता है ॥ इसकी लंवाई पहिले यंत्रकी न्याँई है, किन्तु आकार मै और स्वर मै क्या आपँ वीच अनेक फरक है ॥ र मसृङ्ग की अपेक्षा करकै इसका व्यास क्या चौडा वडा है। और जेकर दोनो का ही स्वर तोलता है, तदवी रणसृंग का स्वर सूक्ष्म है और इसका स्वर मोटा है और वजाने ऐसे दोनो का एक ही रूप है ॥ अथ पनुरी प्रारम्भः ॥ एह ईंगरेजी ट्रम्पेट यंगके सामान्य है, अंगजानी के और और यंत्र सैं इसकी सुंदरता एह है जो, एह सरल है ॥ एह पित्तल का वणता है, रणसृङ्ग की न्याँई एह भी रण स्थान मै वर्त्तमान होता है, किन्तु इसके द्वारा आवाहन क्या किसीको वुलाउते नहीं ॥ इसकी लंवाई और व्यास रणसृङ्ग की अपेक्षा करकै थोडा है। एह हमलोकोंके नये वाजे वा नौवत मै वजाउते हैँ ॥ वजाउणे की प्रणाली रणसृङ्ग की न्याँई है ॥ अथ भेरी प्रारम्भः ॥ इसकोँ हमलोक "भऊ" ॥ वोलते हैँ ॥ एह दूरवीन यंत्रके आकार और उसीकी न्याँई एक नले के भीतर और उसी तरहाका उस नले के वीच और नला होता है, वजाउणे के समय मो एक एक

नही

५२

करके वाहिर निकाललेते हैं, एहि पहिलें युद्ध के समय व्यवहार होता था, किन्तु इसद
एमें केवल नौवतके वीच इसका व्यवहार देखऐमें आउता है ।। अथ शंखजाती प्रारंभः
एहि जातिके यंत्रोंके मध्यमे शंख और गोमुख तथा नरसिंगा एहि दोनो प्रसिद्ध हैं ।।
शंख इह समके मध्यमे वहुत चिर कालका है, ऐसे कि एही सम फूकवाले यंत्रका
हि आदी है कि केवल अस्त्रके संगही वरावर समेकाहै सो शंखका विषय पहिलें
एक प्रकार लिखा गया है ।। एह शंख सम यंत्रका आदी है सो प्रसिद्ध [illegible] संगीत इतिहा
सवेत्ता जो हैं सोभी इसी मतकी पुष्टि कौं कर गये हैं ।। अथ एकछिद्र दल यंत्र प्रारम्भः ।। एहि एकछि
दल यंत्र है । इस जातीका एही एक मात्र ही यंत्र है सो हमारे पासके वंग देशमें प्रसिद्ध है,
इसकों सब लोक तुवजी । वीण वोलते हैं ।। सामान्य ग्राम्य जन सर्पोंको पकड़नेवा
ले इसकों वर्त्तमान करते हैं वोलते हैं कि एहि ग्राम्य यंत्रके मध्यमे परिगणित
होगया है ।। सो सब इसकों साधारणसे तुवजी वा पूगी बोलते हैं और हमारे हिन्दुस्तान
देशमें वीण कहिते हैं ।। इसी यंत्रके नीचेके देशमें छिद्र वाले दो नल परस्पर का इक
ठे वरावर लत्र पातसे संयुत और ऊपरके भागमें एक कोउ तूंवेका तितलाउ एका क्या

तंत्री
वा
५२

53

उसी खोलको वायुकोश बोलते हैं॥ तिसका ऊपरका भाग नरा कीलत है। और कुछ कटेला
होता है, और उसी नलीकारके सिरके ऊपरमै एक छिद्र होता है, उसीको फूंकवाला
छिद्र कहते हैं॥ इसी यंत्रमै और नौ ८ छिद्र होते हैं इसके रचनेमै कटु तुंबी वा लेकु
अलाबू का तूंबा व्यवहार करता है बोलते हैं इसीका नाम तित्तिरी होया है। इसीको इ
उरोप देशके संगीत इतिहासके लेखक तिति बोलते हैं॥ इसके संग हो सम इउरोप दे
शके व्यागपाइयके तुल्य गणना करते हैं कि तु हम लोक तित्तिरी वा तुवजी के संग अब
के लोक व्यागपाइयके निर्माण विधिके अनेक प्रभेद देखनेमै आउता है। व्या
गपाइयका वायुकोश चर्मका और तित्तिरी का वायुकोव कटु तुंबेका सो निरंतर
इउरोप देशके जो हैं सो कितनयासैं इस प्रकारके सिद्धांतमै उपस्थित हुए हैं, सोकि
हानहीं जाता। कोई कोई स्थलमै अति पूर्व कालहैं मुनि ऋषियोंके समयमै अला
बूके अभावमै मृग चर्म व्यवहार होता था, सो निरंतर तदानीं तन का उससमेके
लोक तित्तिरी और अधुनातन का अब वर्त्तमान समेके लोक व्यागपाइप एह दोनो ५३

यूरोपदेशके पंडितगणके मध्यमें भी कोई कोई बोलतेहैं। जो, पूगी और तुब
जीएकहीहै। ऐसे तुवजी यंत्र कभी कभी नासिका द्वारभी वजाउतेथे सो इसकों ना
सा वंशी भी बोलतेथे सो यह वात पीछे सें चली आई है इस यंत्रके एक नलेमें
एक अंगुलीके अंतर नौ २ ही छिद्रहैं, और एक नलेमें पांच छिद्रहैं, और नौ छिद्र जो
हैं उनमें जो नीचेंके दो छिद्र हैं सो मोम द्वारा वंद होतेहैं और समसे ऊंचा जो छिद्र
है सो नलेके पीछेके पासे पर्य्यन्त विस्तृत होताहै और दूसरे नलेके पांच छिद्रों
के मध्यमें दूसरा और चौथा छिद्र खुला रहिताहै और तीन छिद्र मोमसेके वं
द किये होतेहैं और वाकीके नल सुर योगके निमित्त व्यवहार होतेहैं, और पैहिले
काकेहाहैयाजोनवहै [illegible] उक्त नलेमें जो सात व्यवहार करनेयोग छिद्रहैं सो वजाउ
एके समय निःसृत सबके ऊपर अवश्यही अंगुली विक्षेप करिके फूकवाले छिद्रमें
फूकदेलेसें वरवरे वरवरे स्वर निकसतेहैं॥ किन्तु साधारण वंशी में जिसतरहासें
फूक दई जातीहै तिसकी अपेक्षा करके इसमें फूक देलेकी रीति अनेक तरहाकी वरख
दी वरवदीहै इस यंत्रमें एकवारसें मुख परि पूर्ण वायु लेके [illegible] क्रमसें अवश्य ही

एहि छिद्रनल यंत्र शुद्ध भारत वर्षमे नवीन पृथिवीमे स्थित प्राय समही देशमे अती
पूर्वकालसे प्रसिद्ध होया होया आजतक है, स्त्री पुरुष एह दोनोही एह व्यवहार क
रते हैं क्या बजाउते हैं। पारस्य देशके नेपाम्बाना प्राचीन मिसर के जुकोयारा और
आधुनिक मिसर देशके आर्गुल और जुमारा यंत्रभी केवल इसी तरहका होता है,
तब इसका एक नल दूसरेकी अपेक्षा करिकै बड़ा होवा है। मिसर देशके मल्ला
ह लोक सम एहि छिद्रनल यंत्रही व्यवहार करते हैं जिस्का नाम जुमारा, होई और
लोक जुकोयारा एकही, इह समके दोनो नलही बराबर लंबे हे॥ दोनो नल
जिस कालमै बखरे बखरे और अलाबू के विना ही रहै, तिस कालमै मिसर देश
के तिसको थाम बोलते हैं। ग्रीसमै और रोममै एहि यंत्र पहिलेसे वर्तमानथा,
किन्तु तिसके स्वर नियमके निमित्त कीलक देकर नलेके छिद्रको बंदकरिके
रखते हैं॥ इस देशमै भी तिसके बदले मोम व्यवहार करते हैं। इसीको हिन्दूदके
वाद्यवेत्ताके दानियेल अध्यायमै साम फोनिया बोलते हैं, इसीको इटालके अधुना

अथ सुषिर यंत्रारम्भः ॥ जितनेक प्रधान प्रधान फूंकवाले बाजे यंत्र थे सो सम्भव बनगए
होचुके हैं। तत यंत्र की सृष्टि के पीछे इस सम यंत्रों की सृष्टि होई है सो वो लेते हैं क्योंकि सत्य
तके जितनेक तत यंत्र के पीछे जो भए सो समवर्तन में आइ गये हैं। संगीत के इतिहास
विचार करने से जान सकते हैं जो फूंकवाले यंत्र तत यंत्र के पीछे ही सृष्ट होए हैं।।
१८ तत यंत्र और फूंकवाले यंत्र को एहि दोनों का निर्माण क्या बनाउने की चतुराई ने
ध्यान करने से स्पष्ट प्रतीति होती है जो पहिले कुहेउए की फूंकवाले यंत्र की अपे
क्षा करिके पीछे के की निर्माण प्रणाली अधिक सूक्ष्म और श्रेष्ठ ही है ।। संगीत शास्त्र
मनुष्य को स्वाभाविक सिद्ध है। इसकी उन्नति भी मनुष्य की उन्नती की अनुसार सी होती
है मनुष्य की बुद्धि की वृत्ती और दर्शन शास्त्र शास्त्र के अवलोकन से जो शान्ति
सो जितनीक वृद्धि को प्राप्त होवेगी उतनी ही उसकी परिपुष्टि प्रतीत होवेगी ।।
सो निरंतर मनुष्यों का समाज जिस दशा में निरंतर पौरावावस्था में प्राप्त था

५५
वा·

55

जिस काल मनुष्यकी बुद्धि चातुरी अच्छीतरहसे वृद्धिको प्राप्त नहींथी, जिसकाल
मे तिस समयकी स्वभावबुद्धि क्या थोडी निरंतर संकीर्ण क्या स्वल्पज्ञान वा जो वस्तुकी लो
ड होवे उसके निमित्त उस वस्तुकी खोज रखणी और होना बढणी क्या [illegible] उन लोकोंको
पहिले कुछ ज्ञान न होथा, तिसकाल तिस समयको जोकुछ प्राकृतिक उपायसे प्राप्त हो
ताथा सोई तिन्हीको ही व्यवहार जानतेथे, तिसके विना और किसीकोंभी स्वभावबुद्धि
सो तिस समयकों नवीन कुछ बुद्धि बलसे नई युक्ति वा कोई यंत्र नवीन निर्माण का
रणेमे उसके प्रकाश करणेमे नहीं कर सकतेथे, सुतरां तिस कालमैभी अयासके
विनाही सम्पन्न योग्य जो प्राकृतिक उपाय क्या सुवाम कंठ संगीत [illegible] सो उस
समलोकोंको प्रथम देखणे जोग जो विषय होताथा, किन्तु जिसकालमै देखा
कि कंठ संगीत सबकोंही भाग्यसें होताहै किसीका कंठ अच्छा नहीं होता, तिस
काल और उपायसें इसके साधन करणेमे चेष्टा करनेलगे किंतु क्या करें त
व विचार करणेके पीछे जिसकाल उस समयकी उन्नती होणेलगी, तबबुद्धि की

दर्शन शक्ति और अभाव बुद्धि परि वर्द्धित और वश आयत न होनेलगा, तिसकाल
से सभलोक उपाय क्या प्रघट करनेमें समर्थ और कृतकार्य्य भी हुए। तिसकालसे
लेकर यंत्र संगीतका प्रथम समावर्त्तन हुआ — सो पहिलें तत यंत्र, उसके पीछें सु
षिर वा फूत्कार यंत्र भये॥ पहिले जो तत यंत्र सृष्ट हुआ सो एक तंत्री — सो हमलो
कके देशमेंभी एक तंत्री यंत्र सभ तत यंत्रका आदि बोलके अति पुरातनका
लसें प्रचलित होके अवतक स्थित है किन्तु एहि जो पृथिवीके सभ तत यंत्रकी
अपेक्षा करिके प्राचीन बहुत कालसें सो हमलोक बोल नहीं सकते। तब इत
ने पर्य्यन्त बोल सकते हैं कि जो जिसकाल इस सभके बुद्धिमान लोक जाति सभ
के मध्यमें अनेकोंके ही जन समाजमें अश्रुत नामा था किम्वा वनके पशुओं
की न्याईं बडे सघन वनमें निभृत दुर्भेद्य पर्वतकी गुफामें विचरण करिके स्व
च्छन्द आपनी इच्छा करके वनमें उत्पन्न हुए हुए जो फल मूल उन्हकर्के अथवा
सन्तालीका माया हुआ जो पशु मांस उससे उदर पूर्त्ति करिके निषादकी न्याईं जी

वन धारण करते थे जिस कारण से हम लोक अधिष्ठित सकल देशमें हुए समुद्र
के अगाध गर्भमें स्थित नहीं हुए विविध हिंस्र जन्तु समाकुल भीषण महा वनमें
परिव्याप्त थे, तिस कारण एहि यंत्र हम लोकके देशमें लब्ध प्रतिष्ठ हुए थे। कहा है कि
देवादिदेव महादेव एक तंत्र विशिष्ट पिनाक यंत्र निर्माण किया उसी निमित्त
तिसका एक नाम पिनाकी भया॥ खृष्ट शकके ये कितनक सहस्र वर्ष पहिलें
महादेवकी कीर्ती परंपारा संसाधित हुआ तिसकी इयत्ता क्या इतना चिर हुआ
सो कहा नहिं जाता॥ तदनन्तर सोई एक तंत्री पिनाकमें एकही मात्र तार स
मावेशित होती है और तिसमें कोई सारिका विन्यास नहीं है क्या स्वरोंके भिन्न
भिन्न करणेके वंद सो निरंतर इसके निर्माणमें कौशलका अति अल्प मात्र ही प्र
योजन होता था। किन्तु प्रथम फूक वाला यंत्र जिस कालमें निर्माण हुआ था,
तिस काल निश्चय ही मनुष्यकी इतनहा अवस्था नहीं था। इसी कारण तिसका नि
हमाधिक जटिल और कष्ट साध्य था। फूक वाले यंत्रमें जो सकल छिद्र विन्यास कि

तिहू समका परिमाण समान नहीहै — परस्पर का दूरत्व समान नहीहै तिहूस
मके प्रत्येक का चौड़ाई भी समान नहीहै, विभिन्न स्वरके निमित्त तिहूसमका वैचि
त्र्य संपादित होताहै, सो निरंतर सो सम जिसकालमें अच्छी तरहासै संपादित हुआ
19 था तिसकाल निश्चयसे मनुष्यकी बुद्धि हस्त सिद्धि को प्राप्त हुई और निर्मल
भी होगई और दर्शन शक्ति तथा शास्त्रके देखलेनेमें भी शक्ति अतिशय निश्चय
करकै उज्वल होईथी ॥ सो विशेषकरकै कहाहै, द्वापर युगमें कृष्णावतारसो वं
शीकी प्रथम सृष्टि हुई ॥ वंशी बजाउनेकी नियम वही द्वापर युगके पूर्वमें
जोकही जानताथा एह बात किसी ग्रंथमें लिखित नहीहै, किन्तु देवादिदेव
महादेव द्वापरके अनन्त काल पहिलें सत्ययुगमें पिनाक यंत्र व्यवहार
करतेथे, इसका प्रमाण नाना संस्कृत पुराणमें लिखितहै ॥ इसी तरहा उन्नति
कालसापेक्ष है, निरंतर जो तत यंत्र हैं सो फूकवाले यंत्रके पहिलें हुए हैं ॥

57

तिस्के विषयमे किञ्चिन्मात्र भी संदेह नहीं है ॥ कोई कोई इति हास लेखक उल्लेख
किया गया है जो तत यंत्रके पहिलेभी एक दो फूकवाले यंत्रका चलन था ॥
तिस् समकी एह बात किसी मतसेभी सत्य बोलके सिद्ध नहीं हो सकती है ॥
इस कारण से हम तिस पाछेके फूकवाले यंत्रको बोलते हैं कि से हम सह
त कालमें यंत्र नहीं है = बुद्धिमान लोकोंमे अणुमात्र भी विनियोजित नहीं है ॥ जि
स कारण से हम स्वाभाविक सिद्ध हैं जैसे शंख और शृंग हैं । तिस दोनो को ही उ
दाविद मल आदि फूकवालो यंत्र बोलकर वर्णन करते हैं ॥ तत यंत्र समूह की

५

संपूर्ण परि पुष्टि और संस्कृत प्रचार जिस कालमें नहीं भयाथा, तिसकालए इसीत
रहा दो एकका प्रचलन असंभव बोलके जानके नहि होनेसेंभी होसकतेथे, किंतु
जिसकाल सुषिर "यंत्र" एहि उक्त संज्ञा प्राप्त होकर यंत्र सकलके मध्यमें परि
गणित होनेका आरंभ हुआथा, जिसकालमें उन्हके निर्माणमें मनुष्यकी बुद्धि
वृत्ति परिचालनकी आवश्यकता भईथी, तिसकाल पहिलें फूत्कार प्रयोग वै
चित्र्यमें शंख और शृङ्ग भी दो चार मात्र स्वर निनादित हुए किंतु पीछेसें जि
सकालमें विविध स्वर विन्यास विविध राग विलक्षित प्रदर्शन करनेकी इच्छा
बलवती हुई, तिसकाल और स्वाभावसे सुगम शंख वा शृङ्गमें संगीत कुतूह
ली मनुष्यकी तृप्ति संसाधितता भई। तिस कालसेंही फूकवाले यंत्रकी प्रथम सृ
ष्टिका आरंभ हुआ।। पहिलें एक नल यंत्र सृष्ट भया, पीछेसे नलीके संगभेदसे, र
चनाभेदसे विविध अभिप्राय संसाधनके निमित्त भिन्न भिन्न देशमें भिन्न

भिन्न प्रकारसें और भिन्न भिन्न नामसें प्रघट हुए ॥ पश्चिम देशमें छ्रिनलाये
ग्रभी स्वच्छ हुए हैं ॥ एक नव यंत्रमें पहिलें दोई भाग छिद्र विन्यस्त करे गये, उसी
तहाएक कीचड़का कि मट्टीका यंत्र बणा प्रकर अग्निमे पकाय कर रखा था
सो क्या विलन नामक देश विशेष दग्ध होगयाथा उस देशसें एह यंत्र आल
कर कालेन उइलक् रएव आनलिया टिक् साहिवनें सो सालटी नामक स
भाविशेषमें अर्पण कियाथा। उसी यंत्रको ही इसकालमें हमलोकही फूक
वाला यंत्रको आदि बोलते हैं। किन्तु अति पूर्व कालसैंही हमलोकके देशमेंभी
उक्त विध यंत्र प्रचलित था। किन्तु इहु दोनोके मध्यमें कौनसा आगें है, सो हम
लोक तिसको निश्चय करनेमें समर्थ नहीं है। तव इसमें एहि सिद्धांत है जो पूर्व
देशसें हि जो पहिलें उत्पन्न भया है सोई सभ लोकोंमे एक वाक्य होकर स्वी
कार किया गया है, कि नल यंत्र जो है एभी पूर्व देशसें ही पहिलें प्रघट हुआ है ॥

कोई कहिते हैं कि एह मिसर देश का यंत्र है कोई कहिते हैं कि एह भारत का
यंत्र है मिसर देश मै इस्का नाम "आर्गल" भारत मै इस्का नाम "पूगी"। कि
न्तु एह दोनो के मध्य मै कोनसा पहिलेंका है और कौन सा पीछे निर्माण हुआ
है सो आज पर्यन्त भी उस्का कोई निर्णय नहीं कर सकता है॥ दोनो यंत्रों को ही
देवता के पूजन समय मो व्यवहृत और पुरोहित द्वारा वादित होता है। किन्तु इस
मे प्रभेद एहि जो भारत मै नासिका द्वारा वजाउते हैं, इस काल मैभी एही रीति
होती है, इसमें कारण एह है कि प्राचीन काल मै एह संस्कार था जो, जो यंत्र इत
र साधारण लोक मुख से वजाउते थे, सोई पूज्य पाद ब्राह्मण द्वारा इस तरह से
व्यवहार नही होता था, ब्राह्मण लोक इसी निमित्त सो नासिका से ही वजाउते थे,
मुख द्वारा उच्छिष्ट नहीं करते थे॥ किन्तु क्या आश्चर्य है। सो साइटी द्वीप मै और फि
जिआइलंड मै भी एहि यंत्र नासिका से वादित होता है भारत की एह रीती जो कि

इस प्रकार सें दूरके द्वीपमे प्रसिद्ध हुआ है सो वोला नहीं जाता। जो इस महल यंत्रमे एक
नव यंत्र, और छिनल और गिद्ध इसके भिन्न भिन्न प्रकार भेद इस पृथिवीमे प्रसि-
द्ध हैं प्राय गिद्धका समुदाय ही भारतसे अति प्राचीन कालसे ही उत्पन्न होकर वर्त्त-
मान है एह सकल संबंधसें सम्मान संपर्क और और देश प्रति इसी स्वरूप हुए हैं — व-
स्तुतः प्रकृत इतिहासके अभावसे इसे यांतरकर्के निरूपण नहीं है भया इस तरहा नाना
मतभेदसें उपस्थित हुए हैं — किन्तु इस देशके फूकवाले यंत्रके मध्यमे एक यंत्र
के निमित्त हमलोकके पासेका भारत खंड उन्नत इससे श्रेष्ठ और इसमेसें ऊपर गीला
गया है ॥ इस देशोंके मध्यमे भारतवर्ष बजा श्रेष्ठ प्रधान है। सो उसी भारतके चिरका-
लके बजाईका आपलेकोधन है ॥ सोई इस समयमैभी न्यासतरंग नामसें अवमान
रखा होया प्रसिद्ध है, किन्तु अति प्राचीन कालसें तिसका नाम उपांग था ॥८

मठेजुए यंत्र ॥ आनद्ध यंत्र ॥ ढोलक ॥ ढोल ॥ मृदङ्ग ॥ तलमृदङ्ग वा तपला ॥ खोल ॥ ठक्का ॥ काडा ॥ नगारा ॥ दमामा ॥ जगझंप ॥ डमरू ॥ डुकडुकी ॥ टिकारा ॥ तासा ॥ खंजरी ॥ डफले ॥ हुड्का ॥ घुंघरू ॥ घोषयंत्र ॥ खोर्द्दु ॥ मादल ॥ जोड़ घाई ॥ एह सभ इसी यंगतीके अन्तरगत हैं। और और यंत्रोंकी न्याईं भिन्न भिन्न चेहरे व्यवहृत हैं वोलते हैं इह सभ[illegible] वीचमैभी सभाकेवीच और ग्रामके वीच भिन्न भिन्न पंत्तीमें खेला गाकियेगयेहैं ॥ और प्रसिद्ध करणेके निमित्त नीचेमें तिह सभका एक नमूना दिखायागयाहै

सभ्य	वाहिर्द्देशिक	सामरिक	ग्राम्य	माङ्गल्य
मृदङ्ग	ठक्का	जगझंप	डुकडुकी	टिकारा
तपला	ढोल	ठक्का	खोर्द्दक	काडा
ढोलक	नौबत	तासा	मादल	नगारा
		काडा	जोड़घाई	डफ
		दमामा	खंजरी	खोल
			नमक	
			हुड्का	
			घुंघरू	

दुं
वा·
60

इन सभके मध्यमै प्राय सभही अनुगत सिद्ध हे वाजे हैं वाद्य गान और नृत्यके
संग संग वाजते हैं और कितनेक और वाजेभी पूजा और विवाह व्यवहारमै केवल
स्वतन्त्र वाजेही वजाउते हैं। जिस स्थानमै नृत्य वा गान किसीके साथभी योग
देनेके निमित्त नही वी वजाउते, अथवा वजाउनेके समय कोई कोई वजाउ
नेवाला वजाउता वजाउता हर्षसे इतना प्रसन्न होउठे है जो आपसें आपही नाचने
लगजाता है। एह सभ जंत्रोमै भिन्न भिन्न आकारका और भिन्न भिन्न उपादानका एक
एकही खोल है और तिसका एक अथवा दोनो मुखही चर्म्म द्वारा मढे हुये और
उसी मढे हुए चर्म्मकी रज्जू वा चर्म्म सूत्रसे कसा होता है॥ इसी पंक्तिमै स्थित अ
नेक यंत्र अति पूर्व कालमै युद्धस्थानमै व्यवहृत होतेथे॥ किन्तु तिन्हका अधिकांश
विलुप्त होगया है और कितनेक यंत्र वा वाजे नामभेदसें और कार्यके भेदसे अव भी
व्यवहृत होते हैं॥ तिन्ह सभके मध्यमै जो कोई आदी है तिसका निर्णय करना दुष्क
र है॥ तिसको एक अवरूप ही स्वीकार करना चाहीये कितनेक हजार वर्ष वीते गए जो

देवादिदेव महादेव उनकू यंत्र बजाया कर्नेथे इस कालमे समकाम्रादि सो होया इस कालमे
पहिलेकी वर्णनामे प्रवृत्त हुए हैं इसमें जैसे होवे सो होय ॥ इस यंत्र कोषके बनाउणेवाला क
हिता है कि इस का विषय हमारे बनाए हुए मृदंग मंजरी ग्रंथमे विशेषकर्के देखणे यो
ग्य है ॥ एहि यंत्र सभाकी पंगतीथे मध्यमे प्रधान रूपसें परिगणित है ॥ एह पहिलें मृत्ति
काका बणा हुआ होताथा, इसी निमित्त इसका नाम मृदङ्ग भया है ॥ ७ ॥ किन्तु पहिले एह
मृत्तिकाका बणा होताथा इस कालमे काष्ठके बनाएणेका आरंभ होया है और जो मिट्टीका
बणा हुआ है उसको इस कालमे साधारणसें खोल कहिते है ॥ इसी मृदंगका पारसिक ना
म क्या जोहरहै घोर गंभीर बड़ा शब्द निकलता है पुराणमे किहाहै, सत्ययुगमे देवा
दिदेव भगवान् महादेव महाबल पराक्रमवाले दुर्जन जो दैत्य तिनके साथ घोर संग्राममे
विनाश करके इंद्रादि देवगण परिवेष्ठित भावमे आनंदसें नृत्य कियाथा ॥ उसी नृ
त्यके अनुसार भगवान् ब्रह्माजी मृदंगकी सृष्टि पहिलें करी और गणोंके स्वामी
जो गणेशजी है तिसको प्रथम उक्त मृदंग यंत्रसें समरविजयी [illegible] व्योमकेश
कों नृत्यके संग ताल देणेके निमित्त अनुमति दियाथा ॥ तिस दिनसें लेकर मृदंग

कहाहै, उसी त्रिपुराविजयके समय त्रिपुरासुर वधके पीछे जिसके रुधिर से पृथ्वी मंडलभी
जकर कीचड़ युक्त होगया, भगवान् ब्रह्मा उसी रुधिरसें भीजी होई मृत्तिका लेकर मृदंग
निर्माण किया के बनाया और उसी असुरका चर्म लेकर मृदंग यंत्रको मढ़कर और नाड़ी उ
स्कीका ईड़जी बनायकर वेष्टन करके और ग्रैनी और रस्सी सें बनायकर तैयार किया था।।
एहि मृदंग यंत्र अनेक दिनसें हमारे देशमें प्रचलित होके वर्तमान है।। इसकाल यहाँ सब
लोक खदिर, रक्तचंदन, गांभार, कथा कठीर पनस इत्यादि वृक्षोंके काष्ठ द्वारा निर्मा
ण कियाजाता है।। इन सबके मध्यमें खदिरका बनाहुआ मृदंगही सबसें श्रेष्ठ है।। किन्तु
चंदन का बनाहुआ जो मृदंग है उसकी ध्वनी अतिशय करके गंभीर और मधुर होती है।। इ
स्की लंबाई डेढ़ हाथ और यंत्र निर्माण का उपयोगी काष्ठ का डेढ़ अंगुल मोटा
होताहै।। मृदंग का वामा मुख बारा १२ अथवा तेरा १३ अंगुलि चौड़ा और दक्षिण मु
ख वाम की अपेक्षा करकें एक वा आधा अंगुलि छोटा होता है। यंत्र मध्य भाग मोटा होताहै।
इसी यंत्रके मढ़ने वाली चर्म छत्र करके मढ़ेया होया और चार अंगुल परिमित गोला
कार आठ गुलम सोई चर्म रस्सीके संग बनाया होता है।। एह गुलम हाथीके दांतका

एहि इसके बंधनका प्रधान उपयोगीहोताहै। मृदंगके दक्षिण मुख के ऊपर स्याहीकर
के युक्त कियाहोताहै॥ और वाम मुख जो है सो मुख चर्मकर्के मढ़ाजाताहै वजाउणे
के समय वजाउणेवालेलोक उसी चर्म के ऊपर मैदा वा आटा लगाएलेते हैं॥
एह यंत्र वजाउनेहोएँ स्याहीवाला मुख दक्षिण हाथकेपास्से और आटे वाला मुख वा
मे हाथके पासे रखा जाताहै। कोई कोई वजाउणेवाला इसको और और तहांसेंभी रखते
हैं। किन्तु यंत्रको गोदमे रखके वजाउणेके समयमे दोनो मुखोमे दोनों हाथसें वजाउतेहैं॥
एहि मृदङ्ग जिस वखत पहिले सिर्हीकावन जाथा तिस समय श्रीकृष्ण भगवान्‌जीके ली
लासंकीर्त्तनके समय ही इसकी तहां व्यवहार होताथा॥ किन्तु इसवर्त्तमान समयका ठका
मृदंग सभा योग्य यंत्रके मध्यमैं परिगणित होताहै। एह ध्रुवपद गीतके संगही सभलोक
वजाउते रहिते हैं॥ किन्तु पूजाके समय विश्वेश्वर जीके मंदिरमैभी इसका चलन देख
नेमैआउताहै॥ अथ ढोलक प्रारम्भः॥ एहि यंत्र सभा और वाहिर दोनोमैं इह दोनो
मैंही परिगणित है। ढोलकका शब्द प्राकृत है। इसका कोश काष्ठकाही सभलोक वणा

और इस्का मध्यस्थान मृदङ्गकी न्याँईं ऊंचा और दोई मुख पतले और चर्मकर्के मढेहुए होतेहैं दोनो पास्से चर्मकी जोरीकर्के और और पास्से बांधेहुए होतेहैं ॥ स्वरकी गब स्थपता केलिअत आवश्यक मत एहीहै जो इस जोरीको कहीं घट कहीं वधीक दृढ कर्के रखैंचाजाताहैं ॥ कोई सकल जोरीमें लोह पित्तल और चांदीके छल्ले वा कजे उस जोरी पुरोए जातेहैं ॥ तिन्ह इसके अब स्थान भेदसैं जोरी डोरीका बंधन दृढ भाव अवस्य होताहै क्या कहाजाताहै ॥ इस्के दोनो मुख एकजैसे होतेहैं ॥ वामे मुखमै मसाला लेप किया होयाहोताहै ॥ इस्की वजाउलेसीनी गोदमे रखकर दोनो हाथोंसैंही वजाईजातीहै ॥ मृदंगकी न्याँईं वजाउलेके समय इस्के दूसरे मुखमै मैदेका लेपनहींकर्ते ॥ एह यंग कुछ पहिलें काई नृत्य विशेषमै और इसहमैसे यात्रा, क्या रासमंडल, और कविगायनमैव्यवहार होताहै ॥ क्या एह इत्यादि वंगदेशमै उत्सवहोत वशेष होतेहैं कवि क्या एक गान कर चुके उसके पीछें दूसरेने उसका उत्तर रचनाकर्के प्रत्युत्तरदेना इसीगानकों कविकाहितेहैं ग्रामके लोक बाउलीमें यंत्रके संग हरीयां इत्यादि समानमैभीव्यवहार करतेहैं ॥ ढोलकके अनुरूप यंत्र ग्लेजिया एसिरिया देशमै पहिलें व्यवहार होता थां

तवला वा॰ तल॰ मध्यङ्क प्रारम्भः ॥ एह यंत्र समाकेमध्यमै प्रधान है ॥ एह दोनो वामक और दक्षिण
क, आमलोक जिन्हकों वाँयाँ और दहिना बोलते हैं ॥ एह दोनो इकठे हि, कभीकभी वा के
वल वामेसें व्यवहार होजाताथा। उदारा स्वरमै वद्धरहिताहै बोलते हैं कि वामकको समय
समयमै ताल देनेका निमित्त लोक मै व्यवहार करते हैं ॥ दक्षिण एक कों पदमै उस तरहासें न
हीहोता॥ सो एक स्वरमै वाँधा रहिता है ॥ तवलेकों एक मुखमै केवल चर्मकर्के मढेआ हो
याहोताहै ॥ तवला एह यंत्र एक ही संज्ञामै आशियिया देशमैभी प्रधानथा ॥ अथ ढोलप्रारंभः
एह ग्राम्य और वाहिरहादिक यंत्र है ॥ इसका आकार केवल ढोलक की न्याँई है किन्तु ढोलक
की अपेक्षाकर्के ढोल कुछ वडा होताहै इसके भी वामे मुखमै मसाला लगा होताहै ॥ ~
किन्तु एक पासे हाथसे और दूसरे हाथमै डगा लेके इस यंत्र कों वजाउते हैं ॥ वजाउणेके
समय एहि यंत्रको डोरीकर्के गलेमै डालकर लटकाय लेते हैं ॥ एह यंत्र विवाह और पूजा इ
त्यादि कार्योंमै वजाया जाताहै ॥ इसके साथ वजाउणेवाला यंत्र कांस्यका विजाघंट होताहै ॥
प्रतीत होताहै कि ढोल यंत्र कालांतरमै परिणमन होकर ढोलक होकर स्थित रहेगा॰ ॥
अथ ढक्का ॥ एह यंत्र वाहरके वजाउणे योग्य है ॥ एह समकी अपेक्षा कर्के वहोत वडा है और वहो

वंग देशमें कोइ एह वि शेषपूजा है

63

नपुकारण यंत्र है ॥ ऐसा कि एहि यंत्र है त्रेता युगमें रामचंद्र रावणके घोर युद्धमें भी वजिता होता था॰
इसके दहाण मुखमें दोनो दंडों करके वजाउ लोकी खेधी होती है ॥ एह यंत्र इन लोकोंके दे
शमें चडक नामक पूजा के विषें और सम शक्तीकी पूजाके समय वजाउते होते हैं ॥ इसका अ
नुषंगिक क्या इसके साथका वाजा कांस्यका है ॥ ढक्का यंत्र पदीका पालक चूजामें ह शो भि
त होता है के॰ सम यंत्रोंका शिरोमणि ढक्का यंत्र है ॥ एह यंत्र भारत खंडका ही है वो सलने हैं इसमें
वजी अत्युक्ति नहीं है॰ क्या॰ यथार्थ है ॥ कि सकारण कि आज पर्यंत यंत्रके जितनेक चित्र है,
और जितनीक प्रति मूर्ति नाना देशोंमें प्रसिद्ध होई या है इसका प्रतिरूप क्या चित्र किसी
स्थानमें भी दृष्टि गोचर नहीं हुआ । केवल १८२६ स्व ष्टाब्दमें मिसर देशके ध्वंसके पीछे थि चि
न नामक कोई स्थल पुहकर्वे इस तरहाका एक यंत्र उहांसे मिलाया था ॥ अथ कोजयंत्र:
इस यंत्र केभी एक मुखमें खल्लाक रके मढी होई होती है ॥ इसको गलेमें लमकायकरके
डंडेकेसा वजाउते हैं इसका मुख पिछले पात्रकी अपेक्षा करके वजा विस्तार है ॥ एहि
एक वाहिरके द्वारमें वाला यंत्र है, इससे पैहेले राजादि लोकोंके वहिर गमन और युद्ध सम
यमें एह वजाओते थे ॥ अथवा पूजाके समय जग झंप कहते हैं क्या उपरले इत्यादि और

और मठे हुए श्रानद्ध यंत्र के सहित इसकी वाजाउले रीती करीजाती है ॥ अथ नागरा यंत्र ॥
एह यंत्र दो प्रकार का है एक क्षुद्रनागरा और दूसरा महानागरा एह दोनो ही वाहर दरवाजे वाले यंत्र हैं न दोनो हीं मिटी के वणाये जाते हैं ॥ क्षुद्रनागरा देखणे मै एक गोलाकार का श्राधा भाग है । इसके एक मुख मै चर्म के मजेश्रा होया होता है और चर्म की रस्सी के साथ कस्साजाता है ॥ सोई सकल चर्म की जोरी और पिछले पासे को एक चर्म की रस्सी करके और वीनी मै वांधा होता है ॥ और शोभा के निमित्त इस यंत्र मै पंछियों के पर और घोड़े के वाल चर्म की रस्सी के वीच वीच जोड़े हूये होते है इस यंत्र को भी गले मै पायकर दंड के साथ वजाउते हैं ॥ इसका व्यवहार सर्वदा काल काजा यंत्र के साथ साथ ही होता है ॥ इस यंत्र मै जिस दाए पक्षीयों के पंख देखणे मे श्राजेते हैं इससें जो एह यंत्र श्रति पुराना है तिससें श्रणु मात्र भी संशय नहीं है ॥ श्रति पूर्व समय सें एह युद्ध का यंत्र था ॥ किन्तु इस समय राजा लोकों के पूजा और विवाहादि कार्यों मै इसका श्रधिक व्यवहार होता चलता है ॥ महा नागरा यंत्र क्षुद्र नागरा की वनावट करके वुहोत वड़ा है ॥ और पिछले रागों से कस कर कोलाकार होया है ॥ एह दोनो ही हैं वाम और दक्षण श्राकार गत और और विषय मै एहि यंत्र ऊपर कहे हुए यंत्र की न्याईं हैं ॥

एह दिमहा नागरा टिकारा नामक और एक यंत्रके साथ नौबतमे वरतमान होता है ॥ इसकी
वजाउनेरीती भूमीमे राख करके ही दोनो डंडेयोंके साथ वजाया जाता है ॥ पहिले शत्रूकों जी
तके राजा लोकोंके अपने घरआजोनेके समयमे ऊंठ वा हाथीके पीठके ऊपर राखकरके
वजाउतेथे ॥ किन्तु इससमयमे विवाहादिकार्योमे ही एह वजाये जाते हैं ॥ अथ जगझंप ॥
एह यंत्र दर्वाजेके वाहिरका है एह पूजा और विवाहके समयमे वजाउने योग्य होता है ॥ पहिले
एह युद्धका यंत्र था ॥ इसकी चर्मकर्के मढेया होया और चर्मकी जोरी वा जोरी करके मढी होई
होती है ॥ इसका कोश मिट्टीका वा लोहेका होया होता है ॥ इस यंत्रको गलेमे और सन्मुख
मे राखकर सामान्यलोक वजाउते हैं ॥ एह यंत्र ताशा नामक एक यंत्रके संग व्यवहार हो
ता है ॥ अथ ताशा यंत्र ॥ एह यंत्र भी दरवाजेके वाहिरका है ॥ पहिले ही केहागया है जो एह
जगझंप यंत्रके संग वजवाईदा है ॥ हतंतर जोजो जात्रतेमे जगझंप उसी उसी उपलक्षमे
इस यंत्रको वजवाते हैं ॥ इसकी चर्मकर्के मढेया होया थोडा मोटा है ॥ इसके वीचका पु
लार पहिले की अपेक्षा करके वडा है ॥ अथ दामामा ॥ इसीका और एक नाम दगडा है ॥
एह देशलोमे टिकाराकी न्याईं है, किन्तु इसका मुख अतिसुंदर है, सो चर्मकर्के मढे

या होया है ॥ इसका खोल जो है सो भी मिट्टी का वना होता है ॥ एह यंत्र भी दोनो डंडेयों करके वजता है ॥
पहिले एहि यंत्र युद्ध का यंत्र था ॥ इस यंत्र के साथ भी टिकारा वजाउते थे ॥ किन्तु इस समय मै वहि
र्गमन क्या राजालोकों की जात्रा के समय उदवेग करके इसको वजायाजाता है ॥ जोड़ घाईंग्र
घरिकारा यंत्र ॥ एह यंत्र वाहर के हाका है ॥ इसके एक मुख मै चर्म करके मढे या होया और च
र्म की जोरी करके वद्धा होया होता है और दूसरा मुख कों ल वाला होता है ॥ उस मुख मै चर्म करके ल
पेटेया होया और जोरी वा चर्म जोरी सारी वांधी होती है ॥ एह यंत्र महा नागरा यंत्र के सहित
नौवत मै भूमी मो रख करके दोनो डंडेयों करके वजायाजाता है ॥ नागरा यंत्र की न्यांईं विवा
हादि कार्यों के समय मै हाथी वा ऊंठ की पीठ के ऊपर रख करके इसको वजाउते रहि
ते हैं ॥ इसका आकार महानागरा की न्यांईं वडा है ॥ और इसका खोल भी मिट्टी का वना या
होया होता है ॥ अथ जोज घाईयारम्भः ॥ एह यंत्र भी वाहिर हारिका है ॥ एह यंत्र ढोल के
ऊपर एक छोटा ढोल जोड़ा होया होता है ॥ दोनो ही वाजते हैं और छोटे मै छोटा स्वर और
वडे मै वडा स्वर और गम्भि वड़े मे गंभीर स्वर प्रकाशित होता है इसका भी दोनो मुख और दोनो
मुख ही चर्म करके मढे होते हैं और चर्म की जोरी के साथ वांधे हुए और वजा जोडेया होया होता है ॥ तासे

65

एह यंत्र गलेमें पायकर वाम मुखमें दंड करके और दक्षिण मुखमें हाथकर्के दामामा यंत्र
के संग बजाई दा है ॥ इसको वाम मुखकी अपेक्षाकर्के दक्षिण मुखमें बजायादने कहता है ॥ उच्च स्वर
यंत्रकोष अथ खोर्दक प्रारंभः ॥ एह यंत्र वाहि दहारका है ॥ और दोनोही वाम और दक्षिण है
वामेकी अपेक्षाकर्के दक्षिणका मुख बहोत छोटा और सुंदर है ॥ इसका मुख एकही मा
त्र और चर्मकर्के मढे या होयो होता है ॥ वाम मुखके मध्य स्थानमे किसी वृक्षका दूध घर्षण
करिके लागाया होता है ॥ दक्षिण मुखको अधिक तीव्र स्वर करनेके निमित्त जोरी थोड़ने
का एक अधिता होती है क्या कहांचाहते हैं एक केवल रोशन चौकी बाजेके साथ
ताल देनेके निमित्त व्यवहार होता है ॥ अथ डमरू ॥ एह यंत्र ग्राम्य यंत्र परनाली
के मध्यमें परिगणित है ॥ किन्तु अति पूर्वकालसे देवादि देव महादेवजीका अतिप्या
रा यंत्र होतामया ॥ एह आकारसें अति छोटा है और दोनो मुखमें ही चर्मकरके मढे या
होता है ॥ इस यंत्रका मध्य भाग संकीर्ण क्याजुडे या होया उस स्थान हाथका अंगूठा
और तर्जनीको मध्य स्थलमें रखकर इसके दोनो पासे जो दोई छोटे छोटे जो
रीकर्के बांधे हुए दोई गतके कि यां गोलियां होती हैं ॥ सो चर्मकर्के मढे या उसके ऊपर

तिह्नके आघात लागनेसें इसयंत्रकी वजाउनेकीरीति कहीजाती है ॥ इसयंत्रको
सनलोक जगजुगी कहिते हैं। सर्प और वानर लेके फिरने वाले लोक इसको
वहोतककें व्यवहारकर्ते हैं ॥ एह यंत्र प्राय आसियादेशमें और अफरीका दे
शमें और पुराने देशोंमेंही इसकालमेंभी समय समय में दो एक खाजाता है॥
आनद्धयंत्र प्रसंगः ॥ प्रस्तजोसब आनद्ध यंत्र हैं उन्हका विवरण होगया है इन्हसें भि
न्न औरभी अनेक यंत्र वंगाल देशमें वर्त्तमानथे, किन्तु सो सब उपेक्षा भाव वशसें
विलुप्त होईगये हैं। तिन्हके नाम मात्र अव शेष रहिगये हैं ॥ पहिलें और और प्रा
चीन देशकी न्यांईं हमारे देशमेंभी मनुष्यमंडलीके संग देवता और अप्सरा प्र
भृतिकी प्रीतिथी ॥ युद्धके जयके समय और तिन्हकी सहायता वा उनका मन प्र
सन्न करनेके निमित्त नाना प्रकारके वाजे वजवाते थे, सो सब वाजेयोंके मध्यमें
दुंदुभिही अधिकश्रेष्ठथी। पूर्वकालमें युद्धसमयमें नाना विधके वजाउनेके यंत्र

66

वाजता होता था, किन्तु इस दाल से सम युक्त का काल व्यतीत हो गया है, तिह समका
और आवश्यकता न ही है ॥ फेर तिह समके मध्य मै अनेक ही इस समय और और नाम मात्र
करके व्यवहार होते है ॥ फेर अब वर्त्तमान समय जो सम अनद्ध यंत्र क्या मढे हुए यंत्र
बंगाल देशोंमे प्रसिद्ध है, सोई सम थोडे रूप भेद से आसिरिया और मिसर देशमे भी
वर्त्तमान होते हैं ॥ और हमारे देशका मृदङ्ग, ढोलक और खोल इत्यादि वाजे जो
कीन्याँई सिंहल द्वीप का वेरी वा भेरी मिसर देशमै इहका व्यवहार होता है ॥
कोई कोई बोलते हैं, इसी तरहका यंत्र आसिरिया देशमै भी एक समेमे प्रधां
न था ॥ मिसर और आसिरिया देशके यंत्रोंमे मृदंगकी न्याँई गुल्मका व्यवहा
र था ॥ एक सम ही स्वीकार करते हैं ॥ जो मिसर देशके भी आसिरिया देशकी
न्याँई इहूदीयोंके भी अनेक प्राकार के अनद्ध मढे होये यंत्र प्रधान थे ॥ किन्तु ती
हके मध्यमे रूप ही अधिक प्रसिद्ध है ॥ मिसर जैफ अरब देशके दारा॰ बुरव

और हमारे पासके लोक ऊंफ एकही यंत्र है ।। हमारे पासके उनकी ग्वाँई और
जोफ यंत्र कोई वाहिहारिक उत्सव वा विहादि वा मेलेमे वा इहुदीयोंके न त्यादि
वजायाजाताहै और वाइवेल नाम जो एकक धर्म पुस्तक है उसमे देखिए है
पाया जाता है ८ प्रसिद्ध जो मिरियाम नामक है सो इसका वहुत व्यवहार कर्ते हैं =
करोया नामकका सेनाह मह जिसकालमे विनष्ट हुआथा तिसकाल होई और और
इस्त्रा एवु रमणी स्त्रीके सहित एहि यंत्र वजाउने वजाउते आनंद गानकियाक
र्तेथे ।। जेफ थार जुहिजा नामक एहि वजायकर पिताको अभिनंदनकर्तेथे ।।
सम देशमैही आनन्द क्या मढे हुए यंत्र का सृष्टि जो किस समय मे होई थी सो
कोई भी स्थिर करके बोलने नहिँ सकता ।। पृथिवीके मध्यमे इसकालमी इस
प्रकारके अनेक असभ्य जाति क्या मूर्ख है। तिहके निकट किसी तरहाका संगीत
यंत्र भी उन्हके पास नहीं था ।। जेकर तिहके कभी कभी कंठ संगीतके साथ ताल देनेके

निमित्त किसी सामग्री की सहायताका प्रयोजन होता है, सो जैसे ढोलमें करताली वा को
ई दोई काष्ठ खंडके परस्पर कीलीकतरा हैं ताका ध्वनि होता रहता है॥ और अबके इस प्र
कार अनेक असभ्य जाति है, जो डम ढोलक इत्यादि मढे होये यंत्र व्यवहार करते रह
ते हैं॥ इति आनद्धयंत्रपरिच्छेद समाप्त॥ अथ घनयंत्र प्रारम्भ॥ सप्त शराव, मंदीरा, पटताली
घटताल, करताली, घंटा, कांसर, घडी, झांझर ८ क्षुद्रघंटिका, घुंगरू, नूपुर॥
एहे हैं॥ एह सभही पहिलेके कहे होये यंत्र सभकी न्याईं भिन्न भिन्न जाननेसें का
र्य विशेषमे व्यवहार होते हैं॥ इह सभके मध्यमैभी साम्य, ग्राम्य इत्यादि भिन्न भिन्न
पंक्तीमे विभाग किये गये हैं॥ एह यंत्र सभही कोई धातुके वा स्वर्ण पित्तलके होता है॥
कोई कोई काष्ठकाव लेया और गुल स्वरकवें पत्र और वोलके इह के मध्यमै को
ई कोई काचकाभी होता है॥ एह सभ जो कि सत्ययुगमे व्यवहार होते थे और कबहें
कि काआरंभ हुआ है एह निश्चय नहीं किया जाता। तब इतना अवश्यही स्वीकार

करनाचाहिये जोधातुके वर्णेहुयेथे उनके पीछें एहि सम व्यवहार होते होवेंगे॥ सम्प्र
दाके इति हास पाठमें जाना जाता है कि सम धातुऔंके पैहिलें सो हाही प्रघट हुआ है॥
सो निरंतर पैहिलेसें जो सम घन यंत्रवर्णन कियाजाताथा सो सम लोहेका ही होताथा॥
इसी निमित्त इस सम्प्रदाय यंत्रका साधारण नाम घन लोह है। पीछें और और धातुके
प्रघट होणेके पीछें गिनदारण लोकोंनै भी सकल धातुके मेलादेखा उसी धातु
सकलके द्वारा जोही यंत्र वर्णन करनेमें आरंभ करलियाथा इह सम के मध्यमें
ब्याह म ही मंगल कार्य्यके निमित्त और और उपलक्षमें व्यवहार होते हैं) केवल
मंदीरा) घट ताली और करताली एह कितनेक उसके अनुसार गिने हुए हैं॥ सप्त
शराव इहके मध्यमें सम हैं श्रेष्ठ है और मैतंत्री इत्यादिककी न्यांईं स्वतःसि
द्धयंत्र है॥ इस पंक्तीमें अनेक परस्पर चोटकर्के वा कोई लकडी वा मुदगर
कीचोटसें वाजताहै सो होवे इससमयमें सम ही क्रम क्रमसे सबका विवरण
कियाजाताहै॥ इति घनयंत्रपरिच्छेदसमाप्तः॥ अथ आंजावांजर प्रारम्भः॥ ॥

एह यंत्र वीध होता है जो सम घन यंत्र का आदि एही यंत्र होवेगा ॥ इसमे कारण एह है कि
एह यंत्र भी पहिलें लोहे का ही होता था, इस समय भी इस प्रकार के लोहे के वर्णन कीये
हुए यंत्र अनेक देखने मे आउते हैं और भी जिस वास्ते इस यंत्र का और कोई विशेष नाम
नहीं था, केवल इसी द्वारा जो शब्द प्रगट होता था, उसी शब्द से हीं इसका नाम होया है ॥
तिस वास्ते एही जो प्राचीन तम है, तिस विषय मे अणु मात्र भी संशय नहीं है ॥
कारण क्या कि अति पूर्व समय मैं भाषा का इतनी पर्य वृद्धि नहीं हुआ था और
उसी निमित्त पहिले पृथक् पृथक् नाम होणा असंभव क्य आश्चर्य था, उस समय
इसतरहा के यंत्र की सृष्टि होती होवेगी ॥ जिसकारण झांजर इस शब्द की उत्पती
एही जो यंत्र झांझा इसतरहा का शब्द करे उसकौं चलित वार्ता मे झांजर बो
लते हैं ॥ इसका आकार वडा है और गोल आकार और समतल और मध्यभाग
थोजासा व्यंगा उसी स्थान मैं ही आघात की याजाता है ॥ पूर्व समय मैं दूर से बुलाउ
णे के निमित्त अथवा कोई संवाद जताउणे के निमित्त राजालोक व्यवहार कर्ते थे ॥

जिसवास्ते मंगल कार्य्यके निमित्तही अधिक व्यवहार होता था ॥ इसको अंगरेज लोक
घड़ बोलते हैं ॥ सो बड़ा आश्चर्य्यका विषय है कि पृथिवीके ऊपर सब देशोंमें एह यंत्र घ
ड़ नामसे प्रसिद्ध है ॥ इति कांजर परिच्छेदनाह ॥ अथ शाल्मशाराव प्रारम्भः ॥ एह बंगाला देश
का अति पुरातन यंत्र ॥ इउरोप देशके हार्मोनिका यंत्रके समान है ॥ पहिले सात थान
मिट्टीके ठूठेकों लेकर आपसे मनकी वृत्तीके भावसें जलके साथ सुर करके बजाउते हैं
एही पहिलें प्रसिद्ध था जौर सब सुरके अनुसार सें भी लेगाये हैं ॥ अब इस समयभी
इसीतरहका यंत्र देखनेमे पाया जाता है ॥ इसवास्ते अधिक गिनतीमेंभी व्यवहार होता
है ॥ एह यंत्रभी नाना देशोंमे नाना प्रकारका वृक्ष होता है के देखनेमे आउता है ॥ ८
इउरोपमें काचसे चीन देशमे जौर ब्रह्मदेशमे स्थिति स्थापक गुणोंकरके यन्त्र
काष्ठकावसे यौं होते हैं ॥ किन्तु एहि शेष जोके है सो आकार अनेकही नौका क्योंकि सी
कीन्याई है ॥ इसीतरहाके यंत्र कोष्ठ इत्यादि लेकर नाना प्रकार धातुकेभी हो सकते हैं ॥
एह यंत्र आसियाके जौर जौर देशमेंभी देखा जाता है ॥ ग्राम्य यंत्र ॥ घटताली, करताली

६८

बा०

69

अथ नूपुरयंत्र प्रारम्भः॥ एह एक घुंघरूओंका रखनू पहे॥ एह पांउंमै पहिर करके ताल तालमै वजा
ई जातहि॥ और नृत्यके समय हीं इसका व्यवहार देखलेमै आउता है इसेनूपुर परीछेदमाह॥
अथ घडी प्रारंभः॥ एह यंत्र पहिलें लोहेकाही होताथा, अब वर्त्तमान समयमो कांस्यका हो
ताहै॥ इस्का आकार गोल और समतल है। और दूरके बुलाउणे और समयके देखा
उणेके निमित्त और कालके निर्णय के निमित्त वा पूजाके समय वा मंगल कार्य औ
र राजा लोकोंके वाहर जाणेके समयमै इत्यादि उत्सव समयजो हैं इहूमे इसका व्य
वहार चलेआउता है॥ मुगर द्वारा इसकी वजाउणेकी रीती करीजाती है। किसी कि
सी स्थानमै प्राचीन राजालोकोंके वंशके गृहमै वालूकी वा जलकी घडी होतहि॥
पूर्वसमयमै जिस तरह ऐसी घडी होतीथी सो अब वर्त्तमानकालकी घडी नेर मालुम
हीहोती, जिस तरह कालदेखाउणेके निमित्त कोई एक निर्दिष्ट गृहकी कोठडीमै
रेतका अथवा जलका पात्र भरकरिके तिस घडीके तले रखकर एक सूक्ष्म छिद्र क
र्के उसजलके पात्रमो राखी होती है॥ उसी छिद्रके रस्तेसें उक्त जल वा रेतकारा पि

सम निपतित होनेमें जितना समय लगता है। उतना परिमित समयका नाम एक
दंड वा घड़ी और उसी जाणनेके निमित्त घडेयालमें मुद्गर द्वारा चोट कराई
जाती है इसी निमित्त एक दंडकों एक घटिका भी बोलते हैं॥ इस कालमें कोई को
धनवान्‌के बाहरके द्वारमें इस प्रकारकी जल घड़ी देखणेमें आउती है॥ हिंदु
लोकके बिना और और जातीके इस यंत्र कौं मांगल्य यंत्रके मध्यमें नहीं राखते।
केवल समय सिद्ध करणेके निमित्त ही व्यवहार करते रहिते हैं॥ इति घड़ी घरे छै
दमाहः॥ अथ एकतान वादन प्रारम्भः॥ हिंदु ऐकतान वादन। कितनेक भिन्न
जातीके यंत्र भिन्न भिन्न ग्रामके स्वर संयोग हैं एक कालमें बजाउणेकों ए
कतान वादन कहिते हैं॥ बंगाले देशमें "आरवजाई बाजा" "नौबत"॥ और
"रोशन चौकी॥ इत्यादि अनेक प्रकारके बाजे वर्तमान हैं॥ किन्तु भिन्न भिन्न
ग्रामके एक कालमें उनका स्वर संयोग नहिं रहणेसे। तिन्हका एक काल
मैं एक तान बाजणेके मध्यमें अभी तक मिलन नहीं जाता है॥ यव नोका

७०

वा०

७०

नौवत और रौशन चौकीका वाजा अछे उत्तम समयमै दूरसें सुनना और वहो प्यारा लग
ताहै। किंतु सोई वाजा क्या एक स्वर ग्राममैं ही वजता रहता है ॥ और प्राचीनकालसें प
द और भारतवर्षमै इस वर्त्तमान समयकी न्याई एकतान वादन नहीथा अथवा। किंतु
विशेषरूपमै इसको देखनेसें एकप्रकार अवगत होजाता है ॥ तिस समयमै हिंदू ए
कतान वादन असंपूर्ण वस्थामे था तव शास्त्रमै लिखते है देवादिदेव महादेवजी
चार हाथोंमे रुद्रवीणा अरु डमरू इत्यादि कितनेक यंत्र एकसमयमेही वजाउते है।
सो निरंतर तिन्हूको एकतान वादन वोलना असंगत वोध नही होता॥ रामायणमे
श्रीरामचंद्र रावणका युद्ध। महाभारतमै कुरु पांडवका संग्राम और अनेकरायर पुराण
और उपपुराणमे देवता जोहैंण और असुरजो हैन्द इनके जो सकल युद्ध वर्णन
कीयेगये हैं उन्हमै अनेक प्रकारके युद्धके वाजे एककालमै ही वजाउतेथे। सो
निरंतर तिन्हू समकामी एकप्रकार एकतान वादन वोलकर उन्हका कहि
कछु अयुक्त नहीहै॥ एकतान वादन वाहिर क्या जेजेढीका वाजा है और सभा
केवाजे और वाहरकेवजंतर हैं ॥ अनावृत स्थानमै वजाउणेहें वजे आकार

वाला यंत्र वा हरवजाउणेकर्के उच्चस्वर संयोगकी आवश्यकत्ता होती है। सो
इसीनिमित्त दूरदेशमें सुनाउणेके लिये वजवाते हैं सो नहीं होवे केतव॥ फा
कू श्रीनाय क्या और गृह के अभ्यंतरमें क्षुद्र क्षुद्र यंत्र क्या· वंशी। वीणा
वेहाला। एसरार इत्यादिके योगसे वजाउणे योग्य है। ऐसे वजा
उणेसें सुंदर मीठे लगते हैं॥ बाहिर द्वारके एकतान गृहके अंदरमें व
जाउणेसें अत्यंत श्रुतिकठोर होकर उठा है॥ वस्तुतः संगीत मात्रका ही
मुख्य प्रयोजन एही है जो जिसमें मधुरता होवे॥ ग्रंथकार कहता है कि
हमारे वंगदेशमें पिछले समय कालसें लिखते हैं कि दो प्रकार का एकता
न वादन ही स्थूल रूपसें होता भया। सो कभी कभी अनेक प्रकारकी जा
तीके युद्ध यंत्र समका एक कालमें वजाउणेकी रीती कि उत्सवके समयमें
और और सम यंत्रों का एक साथमें वजाउणेको दरवाजेके बाहिरमें एकतान

वा०

७)

वादन वोलना होसकता है। और राजालोकोंके भवनमे क्षुद्र जातीके भिन्नप्र
कारके यंत्र समूहको एकसमयके इकठे वाजेयोंको अन्तरगत एकतान वा
दन वोलकरके कथन किया गया है। विराट पर्वके वीच विराट राजाकी क
न्या उत्तराके संगीत शालाके अंतर का एकतान वादनका अंत श्रवणकर्वो
दृष्टांत स्थान है॥ भारत वर्षका प्राचीन वाम्हि रके द्वारके और अंतरगत
एकतान वादन दो भाग हैं क्या भिन्न भिन्न करना होसकता है॥ सभा
के एकतान और ग्राम्य एकतान। राजालोकोंके युद्ध संघटन कालमे यु
द्ध यंत्र समूहका वाजा और उत्तराके संगीत शालाका घरके वीच वजा
उनेवाला यंत्र समूहके वाजेको क्रम क्रमसे सभा और दरवाजेके वाम्हिर
और सम्पके अंतरगत एकतान वादन वोलाजाता है॥ और ग्राममे। वि
वाहादिकायोंमे नाना प्रकार की जाति यंत्र समूहके वाजे और

वैष्णवोंके जोहैं सो भिन्न भिन्न प्रकार धर्मात्मा लोक देवालयमें खोल।
मृंग करताला इदकों एकसमयके वाजेकों ग्रामहें ग्रामके बाहिरके द्वारिक
और ग्रामके भीतर एकतान वादन कहिते हैं॥ फेर वैष्णव पदोंके एकका
लीन यंत्रसमूहके बाजेयोंकों ग्राम्यके बाहिर द्वारिक और ग्रामके भीत
रवजानेके एकतान वादन बोलनेसेभी अति उक्ति नहीं होती है॥ प्राती
का कीर्तन और नगर कीर्तन जोही तिन्हका देखनेका स्थान है॥ पुरा
तीन हिन्दु लोकके एकतानवादन संबंधमें मिवर पिन्सेपू साहिवभी कि
तनेक अवगत कियेथे॥ सो कहितेथे कि "हिन्दु लोकोंका प्रातकाल
का एकतान बजाउ एम सारिंदा। चौतारा॥ सरत्॥ दारा इत्यादि
कितनेक तत यंत्रके संयोगसें वजते होतेथे॥ जिस समयसें लेकर मु
सलमान लोक क्या पातशाह भारतवर्ष शासन करनेका आरंभ किया॥

इसी समयसें ही भारत वर्षके प्राचीन संगीत शास्त्रकी चर्चा क्रमसें विलुप्त
होनेका आरंभ होया ।। यद उेह लोक तिन्हुका हिंदु संगीत शास्त्रके वि
षयमें हस्त प्रक्षालनकरनेलागे क्या दूरकरनेकी इच्छाकिया तदवी हिन्दु
लोकोंने उक्त संगीत शास्त्रकी सहायता आश्रयसें बाहिर हाटिक और ग्रं
दरके एह दो प्रकारका एकतान वादनके हि उत्कर्ष साधनमें यत्नवान
हुएथे मुसलमान पातशाहोंके समयमें एकतान वादन संबंधके बहु
त यंत्र हिंदु लोकोंके और थोडे यंत्र आरब, पारस्य इत्यादि देशवासी
लोकोंके निकटसें ल्यायकर नूतन रूप एकतान वादनकी सृष्टि किया
था ।। सोई नीचेमें विवरण कराजाता है, एच ब्रम्प्यान साहेब कहते
हैं कि आईन अकवरी ग्रंथमें लिखा है जो, सम्राट् अकवरके नगार खा
नेमें एकतान वादनके निमित्त निम्नलिखित यंत्र व्यवहारमें होतेथे ।।

१। करनाय इसका साधारण नाम दमामा यह यंत्र बराबर अठारां जो जाये और
इसकी धुनी अत्यंत गंभीर ॥ २। चालीस नगारे ३। दुहल ४। चारही ब
राबर करना यह यंत्र स्वर्ण ॥ रौप्य ॥ पित्तल वा और कोई धातुके बनेहु
येथे ॥ ५। भारतवर्षके और पारस देशके सर्व्व क्या सरनाई यह यं
त्र नौही इकठे बजाइदेथे ॥ ६। भारतवर्षके पारस देशके और इउरो
प देशके नफीर यंत्र है ॥ ७। गो शृङ्गके सदृश पित्तलका शृङ्ग यंत्र ॥ ८
। तीनजोडा बडे करनाय बडे छयले तो पहिलें चार घडीदिन शेष र
हते यां एक तान वादित होताथा और सूर्य्य भगवानजीके उदय होनेसें
पहिलें क्या चारघडी रात्रि शेष रहितेयां उसीतरहां बाजतेथे हिंदुस
तानोकोंके समयमो किन्तु अकबर पातशाहके समयमें इसतरहां
सें नहींबजायेगये। सो इस रीतीसें बजवाने लगे कि दो पहिर रात्रिमें वा
आधीरातमो फेर दूसरी बार प्रातःकालमें बजवाने लगेथे ॥ । ॥

73

सूर्योदयके एक घड़ी पहिलें बाजदार लोक सरनाई बजायकर सोए हुए लोकों
कों जगाउतेथे और सूर्योदयके एक घड़ी पीछें सोई लोक नगारे यंत्रके बिना।
(कुवर्गा) करना, नफीर और और यंत्र संयोगसें मंगला चरणमैं एकतान
वादन करतेथे ॥ फेर इसके उपरांत कुछकाल विश्राम करिके फेर पुनर्वार
सरनाईबजाउतेथे ॥ एक घंटाके पाछे नगारे बाजेका आरंभ होताथा॥
और उसीके साथ पादशाहके मंगलाचरणमें और और सब यंत्र उस सम
य बजाए जातेथे ॥ अकबर शाहके समय एकतान वादन मरसोन्हि) इखला
नी खोयारिज नाइन इत्यादि सात प्रकारकेथे । अकबर शाहको अत्यं
त संगीत प्रियथा। विशेषतः उन्हि लिखतहै कि ऐकतानवादनमें तिस्कों
आनरिक अनुराग दृढ होताथा ॥ सो आपही एकतानवादनके उन्न
तिके निमित्त खोयारि जनाइन सुरमें एकसें दो गत प्रस्तुत कियागया है ॥

74

अब ग्रंथकार कहिताहै के बंगदेशकी वर्त्तमान समयकी एकतान वादनकीरी
ती हमारे को पूज्यपाद अग्रज राजश्री यतीन्द्र मोहन ठाकुर बाहदुरके यत्नसें
हमारा पूजनीय संगीत गुरु अध्यापक श्रीयुक्त क्षेत्र मोहन गोस्वामी महाश
यके द्वारा प्रथम सृष्ट हुआ ॥ सो उक्त संगीत पारदर्शी गोस्वामी महाशय कित
नेक एकतानक गत् प्रचलितकया तैयारकरके "एकतानिक स्वरलिपि नामसें
एक संगीत ग्रंथ प्रणयन किया व निर्माण किया । सो बंगदेशके अबके एक
तान वादन संबंधमें ही ग्रंथ जो सबका आदि और एकतान बाजउनेवालामें
उन्नीका मार्ग दिखाउनेवाला) सो कहनेमात्र हीहै ॥ प्राय १८ वर्ष हुए एकता
न सो बीगये हैं ॥ पाठक पजाका सुविख्यात राजा प्रताप चंद्रसींह बहादुरके "
बेलगे छिपा मिला" नामक बागमें नाटकके तमासेमें एहि एकतान एक
वार वादन हुआ ॥ और एक समेमें बंगदेशके पहिलो लेफ्टेनेण्ट गवर्नर
हालिडे बहादुर उक्त नाटकके अभिनय दर्शनार्थे नाटकका तमाशादे

खलेके निमित्त आसिया उल्लिखित एकतानके लिपि वद्धका गत् वादन श्रवणक
रिके सविशेष आनंद उन्हूने प्रकाश कियाथा ॥ हमारे पासे वंगदेशके लोक ए
कतानमे इसदालमो टिनर, फ्लुट्, भायलिन् सिलो, क्लारिओनेट्, उवस्, वास
पियानो, हारमनियम् इत्यादि यंत्र एकवारमे परित्याग करके केवल वंगदेशके
यंत्रके द्वारा एकतान प्रस्तुत करनेसें वहोत अच्छा कार्य्य होसकता है ॥ इउरोप
के देशीयोंने जिसतरहा आपले देशके वजंत्रोंसेंही एकतान वादन तैयार कि
या हमारेपासेका कोई यंत्रभी व्यवहार नही किया, उसीतरहा उन्हूके यंत्र लेककें
हमारे देशीयोंकोंभी एकता वादनकी आपुष्टि कों कि आवश्यकता नहींहै = इसीदे
शके यंत्रसेंही एह देशके सुंदर एकतानका सृष्टि होसकती है ॥ जिसनिमित्त हमलोक
आपले देशके एकतानमे निम्न लिखित यंत्र व्यवहार करतेहैं ॥ यथा, —

एक जोडा तार स्वरी एस्र। ॥ एकजोडा मध्य स्वरी एक।
रार् रार्

हिंदु एकतानवादन॥

२। एक तार स्वरा चामार्चा।
एकही मध्य स्वरा कमर्चा।

३। एक तार स्वरा कच्छपी वीणा (कछुयासेतार)
एक मध्य स्वरा कच्छपी वीणा (रबाव)

४। एक तार स्वरा वंशी॥
एक मध्य स्वरा वंशी॥

५। एक तार स्वरी शारन्॥
एक मध्य स्वरी शारन्॥

६। एक तार स्वरी रबाव॥
एक मध्य स्वरी रबाव॥

७। एक तार स्वरा सारङ्गी॥
एक मध्य स्वरा सारङ्गी॥

८। एक जोड़ा खाद स्वरी नादेश्वर यंत्र॥

९। एकही तानपूरा॥

१०। एकही मृदङ्ग।

११। एक जोड़ा खञ्जताला।

१२। एक जोड़ा मंदीरा॥

१३। एक प्रस्थ सप्तस्वराव॥

१४। एकही मोचङ्ग॥

१५। एकही कलीम॥

आर्हिरीय एकतानवादन॥

आर्हिरीय और बाबिलीय जातियोंके द्वारा देव पूजा और मङ्गल कार्य्यमे विशेष तरहसें संगीत व्यवहार किया जाता भया॥ तिसदेशीयोंकी खोदित प्रतिमूर्त्ति और राजा ने बुकाड्ने जरका कियाहोया

प्रतिष्ठित और सुवर्ण करके वर्णियाँ होया वेल देवताके निकट संगीत सहित अर्चनादिका
अपूजन अनेक प्रमाण पाया जाताहै ।।८ तिस समयमे एक जमराज का दूत वडे ऊचे स्व
रसें कहिने लगा, कि हे मनुष्यगण जिससमे तुम लोकोंकी वंशी इत्यादि सुषिर यंत्र
का, वीणा प्रभृति ततयंत्रका, ढक्का वा आनद्ध यंत्रका, और घंटा इत्यादि घनयंत्र
का वाजणा श्रवण करेंगे तिसदाण महाराज ने वुकाउ नेजारका प्रतिष्ठित सुव
र्ण मूर्ति वेलनामक देवताके निकट समही तुम्ही प्रसन्न होंगे ।।८।। उपरि उक्त देशादो
नोके राजयोंके हर्षके निमित्त राजसभामेभी संगीत चर्चा करनेलगे ।। जैसे दाण तिसदा
ण रागरंग प्रतिदिन और दिनरात किंवा और किसी निर्द्धारित समयमा तिह समलोकों
का संगीत आलाप होनेलगा ।। इससै कारण जाणगेया कि जो सिंद वंशके राजा दश
पुस जिसकालमे भविष्य इकी दानियेलकों सिंह गह्वरमे निक्षेप करके राजगृहमे
गमनकरनेलगे, तिसदाण ओह अनाहारमे और एकतान वादनादीके सुणने विना
ही रात्री व्यतीत कर दियाथा ।। इससे स्पष्ट प्रतीति होती है, कि संध्याके समयमेही तिह
के निकट एकतानिक यंत्र सकल वादित होतेथे क्या वजाया करतेथे ।। ८ ।। ८ ।।

यहूदीय एकतानवादन ।। आसिरीय और बाबिलीय एकतान वादन की न्याँई जेरू-
सालम की राजसभा मे भी एकतानिक संगीत होता था ।। सो और और राजयों की अपे-
क्षा करकें दाऊद और सलमन भूपाल इन्ह दोनों के समय में एहि विशेष करकें वर्त्तमान
था ।। तिन्ह दोनों के हिमंदर के विचस्थित धर्म संबंधित बहुत संख्याक बा बहोत बाजनेवाले
और गायक के बिना राजकीय गुप्त एकतान था ।। दाऊद का पुत्र सलमन नामक राजा
पृथिवी के भोग विलासिता की आसार और स्थापिता संबंधसें तिसका गुप्त एकतानका
सिखा गया है; सो मन्त्र कंठसें उसने कहि दिया था, जो, हमने नाना प्रकार संगीत यंत्र
की न्याँई मनुष्य गायक, वा स्त्रीगायिका और उत्कृष्ट यंत्र व्यवसायीयों के द्वारा ना-
ना प्रकार का आनंद पाया है ।। क्या कि इसी संगीत विषयका आनंद विशेष करकें मान
लिया ।। अपपारस्य एकतानवादन ।। पूर्वकालसें अब इस वर्त्तमान समयमो पारस्य देश
मे हार्प यंत्र कहीं देखा जाता था सो अच्छा, किन्तु प्राचीन कालसें एह एकतानिक
यंत्र सत्तहके मध्यमें एक उच्च दरका यंत्र था ।। स्यार रबार्ट कार पोर्टार मानूशा
नगरी के निकट स्य ताक्ति बोस्ता नामक पर्वतमें इसके संबंधकी कितनीक पुरानी खोदि-
त मूर्त्ती प्राप्त हुआ । इहीतहा कि हाहै, छेमात खसाद के शेषमें पारस्य देशके

राजा खहरू पुरमिजनामक पातशाह जोही मूर्त्ति स्थापित किया गया था।। के लि
खी हूई मूर्त्तीके मध्यमें केतीक मूर्त्ति दोई उन्नत कपाके द्वारके ऊपर लिखी होई है
थी जैसें हमारे मंदिरोंमें श्री गणेशजीकी मूर्त्ती लिखी होई होती है सो बहुत सज
तीथी।। आसिरिआ देशीयोंकी खोदित प्रतिमूर्त्तिकी न्याईं और कितनेक स्त्रीलोक
नौकारोहणमें सार्प यंत्र बजाउतीथी।। वगिरं साहिब भी पारस्य देशके बीले क
तान वादन संबंधमें अनेक ही बोलेथे।। सो ऊपरमें किहा हुआ है। क्या खष्ठ की
छअतावदीसे पारस्य देशमें एक तान प्रबलथा।। फेर और एक खोदित मूर्त्ति-
व्याग पाइप नामक यंत्र एह और एह सम ऊपरमें कही हुई प्रतीमूर्त्तिके मध्य
मे पाया गया है।। कि भारतवर्षके प्राचीन संगीत शास्त्रमें व्याग पाइपको ना
गबद्ध यंत्र बोलकर्के लिखा गया है सोई आसिरिया देशीयों को हिब्रु रोमक
और ग्रीक जातियोंका भी एह यंत्र अनुभावित था किन्तु प्राचीन मिसर देशके म
ध्यमें एह था कि नहीं था, सो आजपर्यंत जाना न हि गया।। मिसर देशके तानवादन।। ८
हैरोदतस् ष्ट्रेबो दायोदरस् निकुलाह और स्त्राबो इत्यादि समपंडितोंनें मिसर देश

का दर्शन किया और उस देशके ऐकतान संबंधमें आपल्ला आपल्ला मत प्रकाश कि
याथा ॥ हिरोदतस नामक और स्त्रावोको मिसरदेश दर्शन कियेहुए के ५०० श
त वर्षके मध्यमे मिसदेशका धर्म संगीत और विलास संगीत वर्त्तमानथा ॥ हेरोद
तसका जन्म वर्ष ४२८ खृष्टक पूर्वाद्ध) बोलते हैं कि जो) मिसरदेशके देवतोंओं
के देशमे वर्षदिनोके पर्व समूहमे क्या मेलेयोंके मध्यमे ववस्तिस नामक नगरमें श
याना नामका देवीके पूजानिमित्त मेला होताथा ॥ उसमेलेमे पुरुष और स्त्री लोक
वेड़ियोंके ऊपर चढकर जलमार्गसे भ्रमण्ण कर्त्ते थे और उसीसमयमे कितनेक पु
रुष वंशी और कितनीयांक स्त्रीयां क्षुद्र ढक्का एकसमयमे इकट्ठे ही वजाउते थे ॥
अवशिष्ठ पुरुष और स्त्रीलोक सभ कर ताल देकरके आनंद सूचक भाव भक्ती प्र
काश कर्त्ते थे ॥ अधिकंतु इसके विना प्राचीन मिसर देशके यंत्र हार्प तंबूरा, वु
द् इत्यादि यंत्र संयोगसें एकतान वादन को जाल्ल्या होयाथा इसीसंवंधका ए
क खोदित मूर्त्ती खोदी होई देखनेयोग्य देखनेमें आई वार्लिन और लिडेन नगरकी
चित्र शालामें मूर्त्तीथा लेपसियस नामक साहेब कहिते हैं कि प्राचीन मिसर दे

शके केवल कितनेक लोक वंशीद्वारामी एकतान वादन कर्ते थे ॥ वंशी एकतान का ए
क खोदित वा खोदी होई मृत्ती गिलजा घरके पिरामिडके नीचे समाधीके मध्यमे पा
यागियाथा ॥ सेपसियस् के मतमे ओह खष्टाब्दके २००० वर्षकेभी पहिलेकी होवे
इति गी ॥ एकतानवादनसमाप्तः ॥ अथ परिशिष्ट प्रारम्भः ॥ भारत वर्षके जो सकल तत,
शुषिर, आनद्ध, और घन यंत्रोका प्रचलन देखाहे, सोसब यंत्र कोषके मूल
मध्यमे वशेष कर्के इसका वरणन होयाहै ॥ इसदशामे भारत वर्षके गुप्त वापुस
ले और कितनेक वर्त्तमान यंत्रका और पृथ्वीमे जो स्थित अपने जो दूसरे दे
शके वाजलेवाले यंत्र समूहका संक्षेप क्या योजना कर्के उसका विवरण जित
ने पर्य्यंत पूर्वापर विचार करके जो प्राप्त होया, सोई परिशिष्ट मै सन्निवेशि
त किया जाताहै ॥ अब आकारादि वर्णक्रमके अनुसार लिखा जाताहै ॥ आभि २८
धानिक वर्णानुसार से लिखित ॥१॥ अंलगुज ॥ एक एक प्रकारका ग्राम्य शुषिर
यंत्रहै, क्या, के फूक कर्के वजाउणेवाला और एही कितनेक वंश नलसे निर्मितहै।
से यावा द्वीपके पश्चिम मे स्थित जोपरवतके रहिणेवालेजातीके, महाउकेलोक

मा

एही यंत्र कौं व्यवहार कर्त्ते हैं ॥ ते यावा द्वीपके वासी गणके जितनेक वाजणेके यंत्र
केतहूं मध्यमें एहि यंत्र अधिक पुरातन है ॥ अक्को कई वा अकटाकई ॥ एह अंग्रेज ख
रतमन्त्रित न वाद्ययंत्रविशेष है ॥ अकटाकईम (पिथागोरस नामक पंडितका निर्मि
त वीणा यंत्र है ॥ अकटेमपुट (एह एक प्रकारका छुद्र सुषिर यंत्र है ॥ इसके मध्य
सप्तककौं ना वजाउ लेकर उच्च सप्तकमें वादित होता है । इसीकों पुट आवेक मीक
हेते हैं ॥ अकरुफियर्लि ॥० एह एक प्रकारका तत यंत्र है ॥ इसका अवयव क्या स्वरू
प पंजेलेकी न्याँई होता है किन्तु तिसकी अपेक्षा करकें एह छुद्र है कि छोटा है ॥
अगद ॥० एह मिसर देश और आविसिनियाँ देशके रहे वाल्योंका वंशी जातिका
सुषिर यंत्रविशेष है ॥० आगाधपत्त्र० एह हिन्दू लोकोंका प्राचीन आनद्ध यंत्र
विशेष है ॥० आजकाकस्ति० एह तैकिसको देशके प्राचीन नर्त्तके इसी यंत्रको व्य
वहार कर्त्तें थे ॥ इसका आकार इत्यादि प्राय वालकोंकी झाँजरीकी न्याँई होता
है ॥० अर्जेलिक० एह एक प्रकारका तत यंत्र है ॥ कच्च साहेवके मतसैं प्राचीन
कालसें ईंगलेंड देशमें एहि यंत्र सब लोकोंने देखे हैं ॥ जातीकी अपद्धन० एह

जातीका एह सुर वंशका ततयंत्र विशेष है और इसी यंत्रमे वीस तार योजि
त होतीहै १६७८ खृष्टाब्द वर्षमे एम प्रम्पट साहेवने इसी यंत्रकों प्रघट कियाथा।।
अपह्लनीयन् ० जो, एच् मलार साहेव के मतमे एक प्रसिद्ध वाजऐवाला यंत्र है।
अफेन् झोट् ० एह एक सुषिर यंत्र है।। अमति ० एह एक प्रकारका तत यंत्र है।।
सो अमति नामक एकजन वाऊलीन यंत्रका वनाउऐवाला तिसने आपसे ना
मसें एह यंत्र सृष्टि कियाथा।। इस्का अवयव भायोलिन् नामक यंत्रकी न्याईं है।।
अमत ० एह हिन्दु लोकोंका एक अति पुरातन वजाउऐका यंत्र है (रबाब)।।
आर्घान् ० एह एक सुविख्यात और अत्यन्त आहत वाद्य यंत्र विशेष है।। इसीको
सामान्य धर्म मन्दिरोंमे व्यवहार कर्ते हैं।। आर्घानेटो ०३ आर्घानो ०६ एह छोटे आर्घान
कोंकहिते हैं।। अर्चेष्ट्रियन् ० ड्रेसडेन नगरवासी एफ, एफ, कफ मान साहेवका
वनायाहोया एक प्रकारका वजाउऐवाला यंत्र। इसी यंत्रमे ऊचे और मधुर स्वर
करके एह दोनो हीउद्गत होते हैं के निकसते हैं।। वशेषकर्के इस यंत्रका गुन और
एक एह जो, पूर्न एक एकतानकी धुनी समैष्टि इसीके द्वारा अनुकृत होसकतीहै।।

79

अर्फि अरियन्० एह धातुकावलेंयों और आठ तार विशिष्ट ततयंत्र विशेष है।।अर्फिका०
एह कुंजीकेवैजन्त्र एक छोटा पुराना ततयंत्र है।।बालक लोक खेललेंके समयमें एह
यंत्रजोहै सोव्यवहार करतेंहैं।।अर्फियन्० एह एक प्रकारका तत यंत्र है।।अलम्० एह एक
प्रकारका शुषिर यंत्र है।।अल्ट जीज० एह मध्य स्वरी वाद्कुलीन यंत्र है।।अल्ट फ्लुट० ए
ह मध्यस्वरका शुषिर यंत्र है।।अल्ट स्वर० एह स्वागति पाउं जातिके ढक्का की न्यांई आन
द्धयंत्रविशेष है।।असत्स्न० एह तत यंत्र विशेष है।।अस्करम्० ओयाव्र या लों साहेबके मतमें
एह दीर्घ चतुरकोण विशिष्ट तत यंत्र विशेष है।।अस्करस्० एह तत यंत्र विशेष०वा०अ
स्करम्० अस्करस न्यारोल्० एह प्राचीन ग्रीक देशीयोंका आनद्धयंत्र विशेष है।।
अस्कोलस्० एह एक कुंजीकर्के युक्त यंत्र और देखलेंमें कितनाक छोटा अर्गान यं
त्रकीन्यांई एह यंत्रका इस्पात निर्मित स्प्रिं सकल वायु द्वारा स्पृष्ट होकर कंपित हो
लेंसें समधुर शब्द बहुत होता है सो प्राय चालीस वर्षकाल वतीत होलेंसें एह यंत्र
प्रघट होया है।।आजाल्जि॰के मान्० एह तुरस्क देसीयोंका यंत्र व्यवहार वाद्कुली
न जातियोंका तत यंत्र विशेष है।।आड़ियाफोनन० एह षष्ट अक्टेभ युक्त एक
प्रकारका पियानो फोर्टे यंत्र है। इस्का स्वरकभी बेसुर नहीं होता।।अियेनानगर

के रहिले वाला घटिका यंत्रका निमर्ग्न सरसरट नामकका किया होया एह यंत्र १८२० स्व
ष्ट के वर्षमे एह विख्यत कियागया है ॥ आयेना० एह ग्रीक देशियोंका शुषिर यंत्रविशेष
है ॥ इसतन्त्रा कि हा है जो, मिनार्भा देवीके निकट पियारे निको फेलास का किया होया ए
ह प्रथम व्यवहार मे हुआ है ॥ आदुफ० एह आनद्ध श्रेणीके अन्तर्गत एक आरब देशका
यंत्र है ॥ इसका आकार चतुष्कोण है वार्वरी राज्य मे इस समय मो इसका वहुत व्यवहा
र है ॥ एहि यंत्र यिहूदियोंके पटयंत्रका और पुराण मिसर देशवासियोंके चतुष्कोण
आनद्ध यंत्र के समान है ॥ अनावासा० वा आनाकरेष्टा० एह आनद्ध यंत्रविशेष है ॥
आनेनोकर्डवा आनिनाकर्ड० एह तत यंत्रविशेष है ॥ सो इसी यंत्रके तनुके ऊ
पर वायुसंचालन करनेसे शब्द निकसता है १७८९ स्वष्ट वर्षमे पारिस नगरमे
जन जेकब स्लेष्ठ साहिवक निर्माण किया होया उसी समयसे एही यंत्र साधा
रण विशेष करके आदृत होया था ॥ आपलो० निकन० एह आर्यान की न्याई ए
क वहत यंत्र है ॥ एह पूर्ण ऐकतान वादनकी धनीअ के अनुसार कर्त्ता है ॥ एहना
ली द्वारा आपही वजता होता है ॥ १८२८ स्वष्ट वर्षमे लण्डन नगरमे ह्वाइट और

रवसन साहेव इस्कों विख्यत कियाथा ।। आपलो० लाइरा० एक छोटा हार्पवाला
यारकी न्याँई एक प्रकारका प्राचीन तत यंत्र है। इससमयमें इसका प्रचलन नहीं है ।। ए
ह उचमाईमें एक फुट विस्तारमें आधा फुट और वारों कुंजीयों कर युक्त होता है ।। इस
यंत्रका मुख पिन्नलका वल्लेयाँ और एँगीस्रुंग यंत्रकी न्याँई वजाया जाता है ।। आववू०
वा आवमू० एह एक प्रकारका महेवूलोकोंका वजानेवाला यंत्र है ।। सो ओवूज चेपा मेरए
मैं इस्का विषय लिखित है ।। आमेना० एह प्राचीन ग्रीक देशीयोंका सुषिर यंत्र विशेष
है ।। एह और वृदतके नलेसे वनें या होता है ।। आम्बिरा० एह एक सुषिर यंत्रविशेष है ।।
आफ्रिका देशमें इस्का प्रचलन है ।। एहि आफ्रिका देशमें भिन्न भिन्न स्थानोंमें फ़ा
जि मारिम्बा, इवेका, विसान्दनी इत्यादि भिन्न भिन्न नामसें प्रसिद्ध है ।। विशेषतः
सेनिगाम्बिया और उत्तर और दक्षिण गिनिवामक देशवासी लोकोंको एहि अ
धिक प्रिय है ।। इसी यंत्रमें एक काष्ठका वलेयाँ होया संदूखके मध्यमें कितनेक स्वरकोद
नेवाला काष्ठ वा वैंतका खंड अथवा लोहे जिहा इसी तहासें संवंध होता है जो व
जे अंगूठेसें कोई दंड द्वारा दवाउलें है भीतेतसें स्वर कंपन उत्पन्न होता है किन्तु ति
सकी वंधन प्रनाली अनेक इच्छानुसार होती है ।। आर्गल० एह आधुनिक क्यार

सी हम य काव लेयाँ होया मिसर देशीयोंका एक द्विनल यंत्रविशेष है। इस्का एक नल दूसरे
नलकी अपेक्षाकर्के दीर्घ और निम्न स्वर उत्पादनके निमित्त होता है, और दूसरा नल व
अत छोटा होता है सो हंदर स्वरका उस्के अनुसार गान और गत वजाउनेके निमि
त व्यवहार होता है॥ इसी तरहसें यंत्र पृथिवीके और और देशमें भी वर्त्तमान होते हैं॥
आर्चलुट० एह ततयंत्रविशेष है (थिओर्बो) आर्चलुथ० ऐसी एक प्रकारका ततयं
त्र है। (थिओर्बो) यंत्रमे इस्का विवर्ण विशेष लिखा है॥० आर्जियान० एह सुषि
र यंत्रविशेष है॥ आर्पा० इंगरेजी हार्प यंत्रका स्पेनिश नाम है॥ आर्पाइ पुगिया०
एह ज्वल हार्प यंत्र है॥ आर्पानेटा० एह इतालीदेशका ततयंत्रविशेष है॥ आर
देश हार्प यंत्रकी न्याई वनेयाँ होया है॥ और इस्मे लोह और पित्तल निर्मित तार
व होत सारी इस्मे जोजी होई होती है॥ आर्मनिका० एह काँचका वनेयाँ होया वजाउने
वाला यंत्र है॥ आर्सिलिउटो० एह ततयंत्रविशेष है। कोई कोई कहते हैं कि एह यंत्र औ
र थिओर्बो यंत्र एक ही है॥ आर्सिकेम्बेलो० एह कुंजी कर्के वजाउनेवाला यंत्रविशेष है॥

ग्र्यालगोजा॰ एह भारतवर्ष इत्यादि देशमें व्यवहार है परंतु सुषिर यंत्र विशेष है।। ग्र्यालट
ह॰ एह वाकुलीन देश्रियोंका ततयंत्र विशेष है।। ग्र्यालटोवाता॰ एह मिनि मियोंका ततयं
त्र विशेष है किन्तु अव ही एह प्रसिद्ध भया है एक प्रकार धुनषी के द्वारा एह वजाई दा है।।८।।
ग्र्यालटो मायोला॰ वा मायोला८ एह वृहत जाती का ततयंत्र विशेष है क्या वजाते हाला
है।। साधारण वेहाला में ७ खादस्वर क्या॰ खरजस्वर उत्पन्न होता है।। ग्र्यालपेन॰ एह
गोमृंग यंत्र है।। ग्र्याला पिनी वीणा॰ एह हिन्दु लोकोंका एक प्राचीन तत यंत्र है।। ग्र्याल
फरएर॰ एह लइट जर्मणइ देशमें प्रचलित एक सुषिर यंत्र है सो कितने क काष्ठन
लके खंड इकठे करके संबंध होकर इकठे जोडकर एह यंत्र प्रस्तुत होता है।। ग्र्यासेया
ह॰ एह एक प्रकारका ततयंत्र है वुलंजर साहेव के मतमें तर्पन्दर का शिष्य पिपत्
नामकका कियाहोया एहि यंत्र पर्वह लोसें प्रघट हुआ है।। ग्र्यासोर॰ एह यिहुदीयों
का एक ततयंत्र विशेष है। इसी में दश तारां संयुक्त होतियां हैं, और एन्हे अंगुलि।
द्वारा वजाई दा है क्या वादित होता है। एही यिहुदियोंका वेनेवल नामक तानपूरा
यंत्र के सदृश है।। इउरोप देशके संगीतके करनेवाला पंडित गण एक ग्र्यासिरिया

देशके यंत्रको भी "अप्रातोर ॥ एही नाम देकर वर्नते हैं ॥ इउकिन् ० एह एक चीन दे
शका तत यंत्र है ॥ चीन देशियोंके इयान् केन नामक यंत्रके साथ साथ एह वजा
ईदा है ॥ इउरोप देशके पंडित लोक इसीको पूर्ण प्राग्वीवील कहते हैं ॥ इउफन् ० एह
एक प्रकारका वजाउलेंका यंत्र है लिखना धारकीन्याँई वसा मुसाजाल्लीकी तरहा इस
का आकार है ॥ इसीमें कितनेक काँचकी तराँ नलसन सूत्र पात हैं संयोग कया वराबर
जोडे हुये होते हैं ॥ काच यंत्र कीन्याँई इसका भी वजाउले की क्रिया संपादित होती है ॥
इंलिश भायोलेट ० (भायोला) अमोर यंत्रके आकार गत एक अती पुरातन तत
यंत्र है ॥ एह पित्तल इत्यादि धातुके पदार्थसें वनीयाँ होता है ॥ और इसका आकार
सरल नहीं होता टेढा होता है ॥ इदोघस ० एह एक प्रकारका ग्रीक देशियोंका
सुषिर यंत्र है ॥ इन्फालुटिलियो ० एह एक प्रकारका सुषिर यंत्र है ॥ इन्स्ट्रुमे
एटो एके स्पानेत्रू ० एह पियानो फोर्टीके न्याँई कुंजी करके वजानेवाला यंत्र विशे
ष है ॥ इसीमें १, २ वा इहूसें अधिक स्वर प्रकाश करणेंवाला छोटा छोटा घंटा जो

इयार कहिता है।। इवेका॰ एह आस्त्रिया यंत्र की न्यांई एक सुषिर यंत्र है। निग्रो जाती के
लोक एही व्यवहार करते है।। इयानकिन॰ एह एक चीन देश का पित्तल का और ता
रों कर के युक्त तत यंत्र है।। सो इउरोपदेशियों के डल्सिमार यंत्र की न्यांई। एह दो
नो छोटे मुद्गर कर के वजाउन्ते है एहि जापान देश के कोटो यंत्र की न्यांई है। इ
स यंत्र का स्वर ग्राम प्रायक कै हलने योग्य है।। इयाल्वाइस॰ एह एक तत यंत्र वि
शेष है।। पोलकस साहेब के मत में एह यंत्र त्रिकोण क्या तीन तुकर वाला विशा
ष लायार यंत्र की न्यांई है।। इयार्पी॰ एह हार्प यंत्र का एङ्गलो साकसन नाम है।
सो इसी भाषा में इसको हियार्पी भी कहिते हैं।। इयो॰ एह एक सुषिर यंत्र है।।
इयोलाइन॰ एह एक एक प्रकार का कुंजी युक्त यंत्र है।। इसका स्वर ग्राम र्गान यं
त्र की न्यांई है।। पाइप नाहीं कर इसी में इस्पात का कमाली है का स्प्रिंग होता है।।
और मसना क्या रबल्लु हारे वाली जैसी हलाउसे तें ओह कंपित होता है।। त
व उससे शब्द उत्पन्न होता है।। इयोलियन्ह॰ पियानो॰ एह इयोलोङ्किकन्

यंत्रकी न्याँईं है ॥ इसका सिं धातुका नहीं होता का वका वलैयाँ होया होता है ॥ इयो।
लियन हार्प० एह एक तंत यंत्र विशेष है ॥ सो किसी वजाउने वाले के हाथ कर्के एह
यंत्र नहीं वजता, किन्तु आपसे आप वायू कर्के ही वजता रहता है, इसी निमित्त इसका
ऐसा नाम होया है ॥ एह यंत्र विख्यात है और इसकी धुनी चमत्कार और वहुत मीठी
के आनंद देने वाली है ॥ इसी निमित्त संगीत के जानने वाले पंडित लोक इसीकौं स्व
र्गकी वीणा कहते हैं ॥ सु प्रसिद्ध विस्तार पूर्वक ईंगरेजी डाक्टर जो ये
वेप्पर साहेव मूर साहेव के मत में कहते हैं जो, ग्रीक देश के वायु को अधिष्ठा
ता देवता इयोलस से इस यंत्र का नाम कर्ला गया है ॥ एह एक लंवे चार कोणवा
ले वाक्स के मध्य में वा ऊपर के भाग में तीन वा तिसते अधिक चर्म की जोरी उ
च्च नीच अनुसार सें वाँधकर्के एह यंत्र वणाया जाता है ॥ और वायू का प्रवाह
जिस स्थान में होवे ऐसे खुले मकान में एह यंत्र लटकाय कर के राख लेते हैं उच्च नी
च स्वर सम मिल कर के सुंदर और मीठा सुणने में आउता है ॥ तो वायू का वे

वा.

सो समग्राद्याजित होवें सो कहते हैं ।। किं
या होया आवद्ध क्या बाँधिया होया जो तंतू है
इस्का तन्तु वाला स्थान भाग जो है और नीचे का भाग जो बिना मत छे राखले ते हैं हीम धूर
ध्वनी होता है ।। इउरोप देश के पंडित गण जो हैं ल्से इसी यंत्र को वरुन पुरातन कहते
ते हैं ।। किन्तु इस्के वर्त्तमान होणे के पहिले भारत वर्ष में इसी तन्त्रा वायु करके वजणे वा
ली वीणा यंत्र की सृष्टि हो गई थी जेकर इसके साथ तिसका अवयवगत विभिन्नता स्वी
कार किया जावे, किन्तु गुण में इसकी अपेक्षा करके उत्तम बोलना होवेगा ।। देवऋषी
नारद देव ने यौं का गमन जो है उसको करके प्रेरया होया वह देव के घर मै वास
करणे वाले श्री कृष्ण महाराज जी के पास शिशुपाल वध के प्रेरणा करणे के निमित्त
जिस समय में देवलोक से आगमन किया था, तिस काल में तिस की वीणा जिस प्र
कार गान किया था, सो माघ कवि नय तिसका वर्णन उसी तरह से किया है ।।८।।
रणद्भिराघट्टनया नभस्वतः ।। पृथग्विभिन्नश्रुतिमण्डलैः स्वरैः ।। स्फुटीभव
द्ग्रामविशेषमूर्छना ।। मवेक्षमाणं महतीं मुहुर्मुहुः ।१।। नारद जी की वीणा का

नाममहती है॥ सो उसी वीणामें वायुका आघात लगकर्के षड्जादी स्वर और।
ग्राम और आरोह और अवरोह क्रमसें इसीतरहा सुध भावसें सुननेमें आते
थे: जो स्वरका भावजो है जो श्रुतियाँ हैं उन्हके पर्यन्त एक एक कर्के ग
णियाँ जातीयाँ थियाँ॥ सो इसी प्रकार नारदजीकी वीणाका स्वर सुननेकर्के वडे आ
श्चर्यकर्के वशवर्त्त होयकर वारंवार उसी वीणाकों देखने लगे थे॥ सो माघकवी १५
वा १६ सौ वर्षके समयमें भयेथे तिन्हके समयमें संगीत शास्त्रकी वडी उन्नती हो
ई थी जो, यंत्र वाँधनेके कौशलमें स्वर जो है सो यंत्रसें आपसें आपही वजता
था॥ तिस वर्णनसे वहुत काल पहिलेसें जो उसकी चर्चाका आरंभ हुआथा, सो
उसका सहजसेंहि अनुमान होता है॥ सो फेर अब भारतवर्षमें जिसतरहा मह
तीवीणाका चलन देखनेमें आयाकर्ता है, जो ह प्राचीन कालकी महतीवी।
णासें कितनाक वदलेया होया होवेगा। क्योंकि पहिले समेकी महती वीणा
हाथ और वायु इन्ह दोनोंके घातसेही वाजती होतीथी॥ अब इस कालकी महती

८५

नामा वीरत्ल हाथ के विना नहीं वाजती। मेलान नामक नगर के आविगाटनि नामक
नै और एक प्रकार का वजा इयोलियन हार्प नामक यंत्र व नाया हो याथा।। इस यंत्र का
नाम मिरिय रलजिकाल हार्प गीका नाम रखाथा सो तिसनै कोई एक गिर्जा घ
र की चोटी के क्या उसके शिखर से और एक दूसरे शिखर पर्य्यंत १२ ही लोहे के
याँ तारेँ एको जैसी याथोडे फासले पर करके और बांधकर्के पहेला यंत्र निर्मील के
याथा।। सोई तारें आपसें आपही सातों ही स्वरों के अनुसार से सदैव काल ही बांधि
या रहिति यांथियां और वायु के वगलें से कंपित होयकर आर्पीन पाइप यंत्र की
न्याँई वाजत्ते थांरहिती यां थियां।। इयोलोडिकन् वा इयोलोडीयन् ० एह कुंजी
कर्के नुजनेका यंत्र विशेष है।। इयोलायन यंत्र के सदृश है।। इयोलोपाए टालन्० एह
एक प्रकार पियानो फोर्टि यंत्र है।। सो इयोलोडिकन के साथ इसका आकार और अवयवग
नकर्के संबंध है।। इयोलोमेलोडिकन् ० एह इयोलोडिकन् जातियों के वजाउने
वाला यंत्र विशेष है।। इसी यंत्र का और भी एक नाम कोरोलियन् है।। इसिटालि० एह
एक प्रकार का ततयंत्र है।। इसमें दो ही अस्सपात लोहे की वल्लाई हुई तारकर के वल्ल

ऊगाव० एहयिहूदीयोंका एक सुषिर यंत्र है सो किहा है कि जुवाल नामक इस यंत्रके
बनाउनेवाला भेया है। अंगरेजलोक इसको ओरगेन-वा- पानिस् पाइप कहितेहै।।
उद० एह अरब देशका ततयंत्रविशेष है।। इसका आकार हिंदुस्तानके तानपूराकी
न्याई और उक्त यंत्रकी न्याई इसमें और सारिका बन्धान नहीं है।।उदकी० एहएक
छोटा मठेया होया आनद्ध यंत्र है।।कहार जातीके हुडुका यंत्रकी न्याई इसका आ
कार है।।सेंहगल देशके लोक एहि यंत्र व्यवहार करते हैं।। ओम्वाद्र० एह अफ्रीका
देशका सेनिगाम्बिया और गिनि देशियोंका हार्प जातीका यंत्रविशेष है।।सोलो
वेलौं कलंता और हृदयके मूलकियाँ तन्तुने मोल्ल करके बनाते हैं।। इसका और एकनाम
बोलते हैं मिसर देशके हार्प यंत्रके साथही इस यंत्रका अनेक अंश देखने में आ
अता है।। ओयालुइ हर्न० (एह एक शृंगयंत्र है।।साधारण है इसीको फरासी शृंगक
हिते हैं।। ओसीट्रिविया० एह प्राचीन ग्रीक देशियोंका एक प्रथम गिलने योग्य सु
षिर यंत्र है।। औ०(चीन देशके पाल्लेका धुनकीके बजाने वाला तत यंत्रविशेष है।।

85

कः हरण ० ८ एह एक लइउशा वा अ्नाल पाइन श्रृंग यंत्र है ॥ कच्छुपी वीणा ० ८ एह
हिंदुलोकोंका नत यंत्र विशेष है ॥ कम्बु ० ८ एह शंख यंत्रका अंगरेजी नाम है ॥ काउ
ली ० एह हिंदुलोकोंका पुराण महेश्रा होया यंत्र विशेष है ॥ कट्टापयागटो ० एह
एक वडा शुषिर यंत्र है ॥ सो साधारण वाहन नामक यंत्रकी अपेक्षा करके इसमें औ
र भी निम्न स्वर और ग्राम वाजणेमें आजाता है । सो इस समय मो एह वर्त्तमान नहीं
है ॥ करा ढ्डा वाहा ० एह वाद्युलीन जातीके यंत्र समूहके मध्यमें एही सभकी अ
पेक्षा करके वडा और खड्ज स्वर उत्तम है एह यंत्र दो प्रकारका है ॥ एक प्रकार ती
न तंत्रू युचित हैं और दूसरा प्रकार चार तंत्रूक करके युक्त है ॥ इलंड मैं तीन तंत्रू प्रसि
द्ध है कट्टावाहा नामक यंत्र प्रसिद्ध है ॥ किंतु जर्मण देशके विना और किसी देशमैं
देखा नहीं जाता ॥ फेर और प्रकार यंत्रकी अपेक्षा करके चार ही निम्न स्वर उत्तम है ॥
कए ड्राबासि ० ८ एह डबल बासका ० कए ड्राभायोलन ० इसकी भिन्न संज्ञा है ॥ क
न्सार्टिना ० ८ एह छे कोंणे वाला एक ही वाजणे वाला यंत्र है । सो इसको हाथमें पकड

इस यंत्रके दोनो पार्श्वोंमै कितनीक कुंजियाँ होती यां हैं ॥ एह यंत्र अंगुस्तिकर्के द-
बाउले हैं यंत्रके मध्यमै स्थित धातुकि जिह्वाके समूह हे शब्द बाहिर निकलता है। सो
इस्की धुनीकि सनहाइ मिलनेमें आयोति है कि जिसमें कि सीनहाष्छिद्र नहीं हैं जिस्के नि-
मित्त इस्कौ खहाधो लेकर्के वायूका संग्रह कर्ते हैं ॥ उरहीन० एह एक चीन देशियों
का बाजा लीन यंत्र है ॥ इसीको हमारे हिंदस्थानके लोक सारिंदा० वा सारंगीके तु-
ल्य, जापान देशके कोटु यंत्रके और आरव और पारस्य देशके रवाव और के-
मानूग नामक यंत्रकी न्याँई है ॥ ऊम्पूचुवा० एह एक प्रकारका नत यंत्र है। इस्का
आकार संदूखकी न्याँई है किन्तु एक पार्श्व पोला है ॥ आफ्रिका देशके लोक एह
यंत्र कौं बजाणेके व्यवहार कौ कर्ते हैं ॥ ९ ॥ एकतारा कर्जवा हे कुसा कर्ज० ॥ एह
एक घट यंत्र विशिष्ट वाद्य यंत्र है। इस्से छेही स्वर उत्पन्न होते हैं ॥ एम्बान्वी०
एह आफ्रिकाका आशाण्टा और फाण्टी एह जाती दोनोंका एक प्रकारका त

86

तयंत्र है ॥ इसमें नारवृक्ष के सूत्रसे उत्पन्न हुए हुए पांच सूत्र जो जिन होकर इसके
शिरमें स्थित और वाँसकर्के वलयेहुए ये पांच हीकीलक के साथ वांधे रहते हैं ॥
यह यंत्र क्या वाजा दोनों हाथों से वजता है और जेकर वो सब स्वर भिन्न भिन्न प्रकारका प्रती
त नहीं कराजावे तदवी विशेष कर्के मधुर होता है ॥ इसी निमित्त पहले जो केहा है की दोनो जाति
यों के समयंत्रोंकी अपेक्षा कर्के यह श्रेष्ठ कहिकर गिरोयों गयाहै ॥ एपिगोनिअम ॥ यह
ग्रीक देशियोंका पुराहण एक प्रकार ततयंत्र है इसमें सब कुछ चालीस तारोंकर्के संयुक्त र
हतीहैं ॥ एपिनेट । यह स्पिनेट यंत्र है ॥ एएटाकर्ड ॥ यह एकही सात तारका वेशिषयं
त्र है ॥ एरवेब् यह रवाव यंत्रका मरक्त देशका नाम है ॥ एलिफाण्टाइन
यह एक सुषिर यंत्र है सो जाना जाता है कि हाथी के दांतका वणाया हुआ
है। सो फिन साथ जाता इसी यंत्रकी स्वीकरो थी ॥ एलिमस । यह अफ्री
की यफ्रुट का नामांतर है । यह वी काष्ठ का वणा हुवा अरु फूंकसें वजनेवा
ला यंत्र विशेष है ॥ ओ ॥ ओफिकिड । यह युद्धसंबंधी फूंकसे वजानेवाला वि
शेष यंत्र है ॥ ओबयो । यह एक नेहे फूंकका यंत्र है ॥ ओबोयि डामोर ०।

वा रो वो पिल्लु याङ्गो । एह एक प्रकारका सुखिर क्या फूंक सें वजानेवाला यंत्र है ।। ओम्वाड ०। ए
ह आफ्रिका देशका सेनिगाम्बिया और गोनि देशियोंका हार्प जातीका यंत्र विशेष है ।। सोलोक
ताल ० बेली और वृदनके मूलनिवासियों तार्यौल गायक करके वरण्तें हैं ।। इसका और एक नाम वोलो है । मि
सर देशके हार्प यंत्रके साथही इस यंत्रका अनेक तरहाका सादृश्य है ।। ओयाल्डज हर्ण एह ए
क शृंग यंत्र है । साधारणमें इसीको फरासी शृंग कहते हैं ।। ओसीटिवियाः ० एह प्राचीन ग्रीक
देशियोंका एक प्रथम गिल्नने योग्य सुखिर यंत्र है ।। ओ ० चीनदेशकी तरफका और धलखाक कें
वजानेवाला तत यंत्र विशेष है ।। कः हरण ० एह एक छड़ डिम्बा वा ग्रारस पा इन सृजु
यंत्र है ।। कच्छपीवीणा ०, एह हिंदूलोकोंका तत यंत्र विशेष है । कंब ० एह शंख का
अंगरेजी नाम है ०२ कडली ० ।। एह हिंदूलोकों प्राचीन चर्म कर के मड़ाहुया यंत्र विशेष है ।।
कड्रा फ्यागटो ० । एह एक वड़ा फूंक सें वजानेवाला यंत्र है सो साधारण वाशून वासून ना
मक यंत्रकी तरासें इसे और भी नरम ग्राम की तरासें होता है क्याकी वजता है सो इस समय मो
एह प्रसिद्ध नहीं है ।। कराड्रा वासो ० एह वाइलीन जातीके यंत्र समूहके मध्यमें एही सबकी
अपेक्षा करके वड़ा और षड्ज स्वर विशिष्ट है एह यंत्र दो प्रकारका है । एक प्रकार ती
न तंतु विशिष्ट है और दूसरा प्रकार चार तंतु युक्त है । इंलंडमे तीन तंतु वि शिष्ट है
कड्रावासो नामक यंत्र प्रसिद्ध है ।। किंतु जरमण देशके विना और किसी दे शमें दे

का शेषोक्त प्रकार यंत्रकी अपेक्षाकर्के चारही भिन्न स्वर विशिष्ट है ॥ कराइना वासी० (
एह यंत्र जवला वाँसका होता है । कराम्बामायोलन (अन्यतर संज्ञा क्याके भिन्न हो॰ ता है
कन्सार्टिना । एह छ कोंणे वाला एकही वाद्य यंत्र है । सो इसको हाथ सें पकड़ कर वजा
ऊते है । इस यंत्रके दोनो पार्श्वोंमे कितनीक कुंजियाँ होती हैं । और एह यंत्र अंगुलीके साथ द
वाउणेंसे यंत्रके मध्य मे स्थित धावत जिह्वाके समूहसें शब्द वहिर्गत क्या वाहर निकसता है ॥
सो इसकी ध्वनि अविछिन्न नतराहें सवलम्ब करने निमित्त इसकी खल्ल धोंणेकर्के वायुका इकठा हो
ता है ॥ कपलजोन० । एह एक प्रकारका पुराणे फूंक सें वजाने वाला यंत्र है ॥ कापल फ्लोट० ॥
एह एक फूक सें वजाणेका यंत्र है इसका और एक नाम जेमसहर्ली है ॥ कम्यनस० । एह प्राचीन
ग्रीकदेशका घंटा जातीका सुषिर यंत्र विशेष है ॥ कम्पस० । एह यावा नामक द्वीपके वासी
ओंका एक प्रकारका चर्म्म कर्के वजणेया यंत्र है ॥ कन्चोन० । एह संगुत द्वीपवासीयोंका सु
षिर यंत्र विशेष है ॥ कयार अरगयान० । एह एक मृदु स्वर वाला अरगयान है । एंद्दिसलो
उयेट इत्यादि गीतके संग प्रसिद्ध होता है ॥ कर० । एह अंग यंत्र विशेष है ॥ कर० । एह स्ल
नेट की न्याईं एक प्रकारका ततयंत्र है ॥ कर अग्निटोनिक० । एह एक सुषिर यंत्र है ॥ किन्तु
इसका सुर विकृत है । इस यंत्रको कुंजीद्वारा खोला फेर सुरकी न्याईं विकृत सुर परिष्कार
रूपसें प्रकाश पाता है ॥ कर अंगलाइस० । एह एक सुषिर यंत्र है ॥ इसका स्वर सिठे माव

कर्डिंगनाल०(एह एक प्रकारका सुषिर यंत्र है। कि विगुल यंत्र की न्याँई होता है॥ करना वा
कार्ना०(एह एक प्रकारका तूर्य जाती का सुषिर यंत्र है। भारतवर्ष और पारस देशमे इसका प्रचलन
देखा है। इसकी लंबाई ११ फुट है और धुनी इसकी अत्यंत तीव्र होती है॥ करताल वा करताली०(
एह भारतवर्ष मे प्रचलित घन यंत्र विशेष है। करिक०(एह एक प्रकारका सुषिर यंत्र है॥ कर्ड
मेटार०(एह एक स्वर संबंधी और मात्रा हिसाब जानने वाला यंत्र विशेष है॥ कर्ड मेलोडियन०
वा कर्डलोडियन०(बजाव्या रेल श्रायान यंत्रका नाम है॥ एह आप से आप बजे है॥ कर्डिचास्ती०(
कार्डि मार्सी(और एह दोनो मिकासी और भेड़ बकरी पालक जो हैं उनका एह शृंग यंत्र है॥ कर्नी०(
एह फरांसी देशका शृंग यंत्र है॥ कार्नो इंग्लिस०(एह अंग्रेजी शृंग यंत्र है॥ कार्नोडि कानिया०(
एह मिकासी मनुष्यका शृंग यंत्र है॥ कार्नोडि बासेट०(एह एक सुषिर यंत्र है। वाल्क्लारिनेट
यंत्रमे जितने सुर निरगत होते हैं सो इस मे भी उतने ही होते हैं॥ अन्तयबीऊ योपालन मे मोजार्ट
कार्नो मुसा०(एह एक सुषिर यंत्र है॥ एह यंत्र केवल स्काटलैण्ड मे वर्त्तमान नहीं इटाली दे
शमे भी इसका व्यवहार देखा जाता है॥ कर्निो०(एह शृंग यंत्रका इटाली का बहुवचनांत
नाम है॥ कर्नु०(एह रूमीयोंका शृंग यंत्र है(केरेन मे देखो॥ कर्नेट० पोस्ट हार्न वा
काबाह का शृंग यंत्र है॥ कर्नेट आपिस्टन०(एह युद्ध के बजाने का सुषिर यंत्र विशेष है॥
कर्नेट ग्राबौकइन०(एह एक प्रकारका सुषिर यंत्र है॥ कर्नेटिनो०(एह सुषिर यंत्र

वा.

कर्लेटो ० (एह ट्रम्पेट नामक यंत्रकी न्याँई पित्तलकाबनाहुवा ओर फूँकसैं बजानेका यंत्रविशेष
है । किन्तु तिसकी अपेक्षा करकें कुछ छोटा है । यो सुतराँ इसकी ध्वनी भी तिसकी अपेक्षा करकें मीठी है । इ
सीसैं कोशल करकें अर्धसुर पर्यंत प्रकाश कर सकते हैं ॥ कर्लेटो टर्टो ० (एह वक्राकार अर्थात्
टेढे कर्नेट यंत्रका एक और नाम है ॥ कर्लेटो मुटो ० (एह एक प्रकारका बहोत पुरातन कोम
ल स्वरवाला कर्नेट यंत्र है ॥ कलाम्नेन ० (एह इटाली देशके कृषकोंका एक प्रकारका शुषिर
यंत्र है ॥ कलामहरू ० (कलामल पाचोरालिस ० (कलमौलस ० (एक प्रकारका बहुत प्राचीन शुषि
र यंत्र है ॥ ओर मेजबकरे पालनेवाले लोक इसी यंत्रका व्यवहार करते हैं ॥ कलनेट ० (एह यंत्रका व्य
वहार फुराजिलेट शब्दमें देखना चाहिये ॥ कलिन्तिकस ० (एह तुरुष्क देशका बाहुलीन यंत्र है ॥
काउहर्न ० (एह एक गोसृंगाकार शुषिर यंत्र है ॥ ओर स्वीसयोंके देशके निकट एहि प्रसिद्ध है ।
ओर इसकी लंबाई एक फुटसैं लेकर चारफुट पर्यंत होती है । काव कि म्याहृदकोत चाहेए हातसेल
कियाजाता है ॥ कानून ० (एह एक भारतवर्षका सुप्रसिद्ध तत यंत्र है ॥ कान्तेलि ० (एह एक पूर्वदे
का हार्प यंत्र है । किन्तु लराइ देशमें भी इसी नामसैं प्रसिद्ध है । किहा है कि एह । फिन्लराइ देशके
रहिनेवाले लोकोंका ओयेनेन मोइनेन नामक देवताकों अतिशय करके प्यारा यंत्र है ॥
सो लोक तिसनै ग्रीस देशके आर्फियस देशकी न्याँई इसकी बजानेकी रीती इसीने हाचमत्कारी
ताके साथ संपादन कीते है यो मनुष्योंका क्या ओर जीवोंका एह समकही मनहरण कर सकते हैं ॥

ऊनविंशका ऊनीसोवर्षकी प्रारंभमेभी एस्थोनियाँ देशमें रहनेवाले लोक एहीयंत्रव्यव
हारकर्त्ते थे उस देशके संन्यासीलोक इसी यंत्रको हाथमें लेकर गान करिके घूमते रहिते हैं उ
सी देशका जो प्रसिद्ध परिव्राजक १८१२ वर्षमें मृत भयाथा, सो तिनोके सङ्ग संग उक्त यंत्रका
व्यवहारभी गुप्त होगयाहै ॥ फेर इससे भिन्न फिनूद देशका उक्त नामसे और एक जातीका यंत्र है ॥
उस यंत्रमें काठकी वकसेके मध्यमे पाँच ही तार वंधाहुई रहिती हैं ॥ इसी तरहका यंत्र फिनल
एड देशमें इस दानमीं वर्त्तमान नहीं है ॥ जाकूत रस्लार्क साहेव ने ल्लापलेंड वासी उग्नी वंशध
रके हाथमे इसी तरहका यंत्र देखयाथा। सो पहिले सें केसा जो यंत्र उसके साथ इस तरहके यंत्र
का कोई सादृश्य नहीं सो ग्रन्थ देखनेसे मैं उक्त सिंहर यंत्रकी न्याई है ॥ कावाजरना० (एह तुरु
ष्क देशका युद्धके समेका वाजा एक सुषिर यंत्र विशेष है ॥ कावारो० (एह एक छोटा ढ
क्का है ॥ एह मिसर देश और आविसिनिया देशमे वर्त्तमान और हाथ करिके वजता है ॥ का
रनिक्स० (एह प्राचीन ग्रीस देशियोंका एक प्रकारका सुषिर यंत्र है ॥ उसकी ध्वनी
उच्च और तीव्र होतीहै। पूर्वमें प्रांस देशमें भी एही यंत्र व्यवहार होता था॥ का
रिलान्स० (घंटासवक ॥ एह इउरोप देशका घन यंत्र विशेष है हमारे देशका

वा०

89

घंटा सलवक। एह इउरोप देशका घनयंत्रविशेष है। हमारे हिंदुस्थान देशमे भी इ
सीतरहका यंत्र ब्राह्मण और पूजाकरने वाले लोकोंके धर्मममंदिरमें वजाके जाते होते हैं॥
कारनेट २०(एह एक पारस्य देशका शृंगयंत्र है॥ यहूदी देश के रेम्, और ग्रीक
देशका केरास्, रोम देशका कार्नू, फरासीस देशका कर्, जर्मन और इं
गरेज देशका हर्न्, ओयेल्स वाली देशका कर्न्, हंगेरी वालीयोंका कुर्त
और हिंदुलोकोंका शृंग जिसतरहा है उसीतरहा यंत्र है॥ कालाशिओन(एह एक इ
तालीदेशका ततयंत्र है॥ एह देखनेमे हमारे देशके तानपूरा यंत्रकी न्याई है किंतु
इसमे परदोंका वंदलगा होताहै इस यंत्रमे दोई तंतुकी तार जोजी होई रहती है॥ और ए
ह ताडनीका धुनसी हिं वजाया जाता है। आसिरिया और मिसर देशमेभी यथार्थ इसीतरहा
यंत्र था॥ इसतत्कालमे, इतालीदेशके कृषिजीवीलोक एही व्यवहार करते हैं॥ कालीचन २०(
एह नुट यंत्रकी न्याई एक प्राचीन ततमत ततयंत्र है। इसमे पांच ही तारां लगाइ रहती हैं।
कालिहननहिलि०। एह वाकलवीगईनका विशिष्ठ ततयंत्रविशेष है॥ काष्टानेट २०(
एह काठका वनाहुआ मांगल्य यंत्रविशेष है॥ सो पूर्व तनकिसी किसीजातीद्वारा ए
ह वर्तमान होताथा। वर्तमानसमैमेभी खृष्ट धर्मावलंवीलोकोंके धर्ममंदिरमे इसीका प्रचलन देखी जाता है॥

करनाय ०(यह एक फारस्य देशका श्रृंगयंत्र है ॥ और ग्येहदीदे केरेना, और ग्रीक देशका केराल, रूम देशका करना, फरासीस देशका कर, जर्मन और अंगरेजी देशका हर्न, और युरुपवाले देशका कर्न इंगरेजी वालायों का कर्न्त और हिंदुलोकों का श्रृंग जिस तरहा है उसी तरहा यंत्र है ॥ कालासिजोन् ०(यह एक इतालीदेशका ततयंत्र है। यह देखने मे हमारे देशके तानपुरा यंत्र की न्याँई है, किंतु पर्दाका वंदलगा होता है। इस यंत्र मे दो ई दो ई तंतुकी तार जोडीहूई रहती है और यंत्र धनुषीकर के वजाया जाता है। ग्रासिरिया और मिसर देशमें भी यथार्थ इसी तरहा यंत्र था इस समेमे इताली देशके कृषिजीवी लोक एही यंत्रका वजाना करते हैं ॥ कालिचन् ०(यह ल्युट यंत्र की न्याँई एक पुराना तत यंत्र है। इसमे पांच ही तार लगाई हुई रहती हैं ॥ कालिमननिति ०(यह एक लंदीगर्दनका वंशिष्ठ यंत्र विशेष है ॥ कावनेट ०(यह काठका वनायाहुवा मंगल्यका विवाहआदिक मंगलका पेमे व शेष है। सो पहिले किसी किसी जाती द्वारा एह व्यवहार होता था। वर्त्तमान समैमे भी सब धर्मो विलेवी लोकोंको धर्म मन्दिर मे इसीका प्रचलन देखा जाता है ॥ कासन ०(यह एक प्रकार का मसकाहुवा यंत्र है ॥ यह आफ्रिकाके अंतरगत अंगोला देशवासीयोंका एक मात्र वजानेका यंत्र है ॥ कासा ०(यह एक वृहत ढक्का है। इसका और एक नाम

का साग्ना राजी ०(एह भी एक बृहत् ढक्का है ॥ कासटो ० (एह कंक देशियों का ए
क प्रकार का बजाने का यंत्र है ॥ किंज ० (एह एक चीन देश का संगीत यंत्र है । सो भिन्न भिन्न का
रण के और आकार के अनेक प्रस्तर खण्डों का द्वारा एह निर्मित होता है । सो इन सब पत्थरों के पर
स्पर इसको लकडी के डंडे से चोट लगाउने से इसके बजाउने की तनतवी होती है ॥ किट ० (एह
एक प्रकार का बहुत छोटा ततयंत्र है ॥ जो एक दास्तिल्ल साँव के मतमें एह इतना छोटा है
कि इसको जॉमे की थैली में रखा के वों आपनी इच्छापूर्वक जहां तहां लेजाते हैं किन्तु इस
विषय में हाकिन्स न साहेब का स्वतंत्र मत है । सो कहते हैं कि, एह एक छोटा वायुलीन और
नृत्य के पढाने वाले लोकों द्वारा बजाया जाता है ॥ कितारा ० (एह एक ग्रीक देश का
ततयंत्र विशेष है कितारा, जर्मन देश के पर्वत के रहने वाले लोक "जितार" पारस्य,
हिंदु और आसिया के लोक और और देश के लोक "सितार" वा "गितंगी" स्तेउवी दे
श के "कितार" एह सब एक ही यंत्र है । सितारा भी इसी को कहते हैं इसी यंत्र के ब
हुत हैं नाम हैं ॥ किन ० (एह एक चीन शका प्रसिद्ध ततयंत्र है ॥ नील, लाल, हरित,
श्वेत और काला इन पांच रंग की पांच ही कन्द्र के समसमेत इनका पच्चीस तार होते हैं । म
हात्मा कनफिउसस इत्यादि चीन देश के प्रवीन ज्ञानियों ने इस यंत्र व्यवहार के थे ॥

इसी तिभिन्न चीन देशमें इसतन्त्री के यंत्र का अधीन हुआ व जो अब्रादर था। इसकी समता देशमें कीलगी हो
ती हैं॥ किन्नर २०। एह जिहूदीयों का एक अती पुराण तत यंत्र है। सो एह बहोत छोटा है और स
हज से ले जाने योग्य है और इसके बतीस तारों लगाई जाती यों हैं। एह बाईबेल में दाऊद
राजा को बहुत प्यारा यंत्र है। सो प्रति रात्रि में इसको अपनी शय्या के समीप ही दाऊद देश
के रखते थे। एह यंत्र देखने में अनेक ही इंगरेजी लायार यंत्र की न्याईं है। सो जेबूद
योंमें एक किताब में लिखित है जो, जुबाल नामक इसके बनाने वाला है। ग्रीक देशि
यों का "किताया" और निउबीय देशियों के "किनार" यंत्र के साथ इसका अनेक तरह
का सादृश्य है॥ किताया इसी तरह का है जो दाऊद राजा और साल नामक राजा
के सामने में एही यंत्र बजाया करते थे। कानून में एक के मत में एह यंत्र अविकल अयीत
जथार्थ प्राचीन देशियों के लायार यंत्र के समान है। किंतु और २ और संगीत शास्त्र के जा
नने वाले लोक इसीको सेरतन्त्री का प्रकार का कहते हैं। सो जे कर जेह लोक उसी के स
ध्य में कोई एक इसी में तीन २० और कोई एक दोसो २०० तंतु योजने के विषय में मत भेद का
प्रकाश करते हैं। किंतु सब में ही एक वाक्य में इसको एही कूपत्रिकोणाकार वाला कहि
ते हैं॥ इतीहास लेखक जो जेफस नामक कहते हैं। एही यंत्र दश तंतु संयुक्त और अंगुली

५.

वा. सो जो कुछ टेव्ल मे राट के अंतरगत जोतिसिन्धु नामक पुस्तक के चौवीसमे अध्याय के एकावें
श २१ श्लोक मै इसका सन्निवेष लिखा हुवा है॥ किंनरी वीणा ०(यह हिंदुलोकों का ए
90 कततयंत्र है॥ कियस ०(यह तुरुष्क देशियों का युद्ध का यंत्र मढा हुया यंत्र विशेष है। इ
स का खोल जांनेका वल्ला या होया होता है॥ कि सार ०(यह नेउविया देश का एक वी
ण जाती का प्रसिद्ध तत यंत्र है। इंगरेज लोक इस कों नेउवि देश की वीणा कैहते हैं।
यह चर्म और काष्ट को वल्ला ई हुई होती हैं॥ एक स्थान उदराकार उदर के समान का ख
खंड और बकरे की खाल्ह वांधी हुवा और उस चर्माछादनी मै तीन ही और कहीं क
ही तिससें अधिक स्वर निकलने का वरावर छेद से छिद्र करिके यह यंत्र व्यवहार करते हैं।
इस मै उठ की अंदर सें वल्ला ई हुई पांच तंदी की तार लगाई हुई होती हैं॥ सो काष्ठ खं
ड के साथ तिन्हका कोई संबंध नहीं होता सो कहते हैं कि यंत्र के एक मुख मै अथवा वहु ए
क काष्ट के सेतु सें सो सम वांधी होती हैं। दहिले हाथ मै कठिन चर्म अथवा शृंग का वल्ला
या होया अंगुली मै लगाने वाला मुजराव अंगुली मै लगाय कर इसकों वजाउते हैं। इस
यंत्र के काष्ठ अवयव का गठन चतुर्कोण और तिस मै छे अथवा तीन सें अधिक तार

५.

आविसिनिया देशमें बांधी होई इसका प्रवाद है, (याव अथवा हार्मिल कर्जीन का किया हो
या मिसर देशमें इथिओपिया देशमें एह यंत्र आलया होया और सीसी देशमें निउगिया देश
में प्रचलित भया है। आधुनिक मिसर देशके लोक इस प्रकेयंत्र को "गितारा वार्वारिया"
कहते हैं। कियारा, सितारा प्रभृति यंत्र भी प्राय इसी की न्याई है ।। कीटक० (एह यावा
द्वीप का एक प्रकार का मछाकृया यंत्र है। सो एक जगा काष्ठ के आधार में स्थापन करके इसयं
त्र कों वजाउते हैं ।। कीउन्युगल० (एह एक प्रकार का युद्ध का सुषिर यंत्र है ।। कुइरएट० (
एह एक मध्य स्वरी वाद्य लीन यंत्र है ।। कुइरएट फ्यागट० (एह एक उबल वासन वा कड़ा
फ्यागटो नामक यंत्र है। अब वर्तमान समय में प्राय इसका व्यवहार देखा नहीं जाता। इसी
इसी कों साधारण वासन नामक यंत्र की देखकर एक सनक नीचें बांधते हैं। फ्यागट तो
वा छोटा वासन कों कहीं कहीं इसी नाम सें कथन किया जाता है ।। कुइरएट वासन० (एह ए
कतत यंत्र विशेष है ।। कुइरटाल० (एक एक प्रसिद्ध इतासी देश का तत यंत्र विशेष है ए
ह देखने में ल्युट यंत्र की न्याई है ।। कुना० (एह एक प्रकार का भारतवर्ष का सुषिर यंत्र है ।।
कुयेटज वाग्गद० (एह मिसर और आविसिनिया देश का वंशी जाती का सुषिर यंत्र विशेष है ।।

कर्नु० एह एक हंगेरी देशका शृंगयंत्र है। देखने मे इंगरेजी हर्न और हिंदुलोकों के यंत्र की
न्याई है॥ कुमिरन० एह एक तुरुष्क देशका तत यंत्र विशेष है। एक मध्य इसका खोल काठ
का बना हुया और चर्मक कैं मढा हुया तिस के ऊपर पांच ही तार बांधकर के एह यंत्र बजाया
जाता है॥ केटलड्रम० एह एक प्रसिद्ध डंका वा [illegible] ढोल की जाती का मढा हुया यंत्र है। पित
ल अथवा तांबे का बना हुया खोल के दो मुखों में बकरा इत्यादीयों के चर्म हैं अछी तरह ठाम
ठाक कैं एह यंत्र बजाया करते हैं। १८ अध्द वर्ष में जर्मन देश के अंतरगत फ्रांक फोर्ट नेवासी
इमेंजार नामक एक मनुष्य जिसने अपने हाथ से निर्माण किया केटलड्रम बादन विषय
मे नवीन विध प्रणाली में दखाया गया था। इसी ने निज अनेक प्रसिद्ध संगीत के जानने वाले लो
क इसी को विशेष कर के उपमा करते थे। ता पहिले इउरोप देश के एकतान वाद्य मे इसी तरह दो
ई मात्र यंत्र व्यवहार हुए थे। इस समय मे मीउजक एकतान मे केटलड्रम का व्यवहार देखा जाता
है। एह यंत्र बजाउने के समय में निम्न लिखित अनेक प्रकार का बजाउना करते हैं। यथा स्टर
ला घात) फ्लिगन्ल घात (पूर्ण घात) करते हैं मग्न घात इत्यादी करते हैं॥ केनेट० एह मिसर
देश का और प्राविसिनिया देश का एक प्रकार का सुषिर यंत्र है। इसी का और एक नाम मिलिके
ट भी है॥ केमकेम० एह एक मिसर देश का संगीत सबेधी काल के मिलने वाला यंत्र है॥ ॥॥

केमानच० ८ एह एक कुरुक्ष देश का तीन तन्तु वाला तत यंत्र है ।। केमानगे० ९ अरबी व और पारस्य देश का एक तत यंत्र है । एही चीन देश का "उरहीन" जापान देश का "कोकिउ" और हिन्दु देश का "सारंग" यंत्र के समान होता है ।। केमानगे अरबज० १० एह अरब देश के प्राचीन वर्तमान एक तत यंत्र है । विद्वान् पिण्टिस कहते हैं जो, हिन्दुओं का अमृत यंत्र है एही यंत्र इसी का मूल है । अमृत के मानगे एही है ।। केमान के फार्क० ११ एह एक अरब देश का तत यंत्र है ।। केमानगे यौमी० १२ एह एक मिसर देश का वाद्य हसीन यंत्र है । किन्तु ग्रीस देश में भी उक्त यंत्र इसी नाम से प्रचलित था । एही यंत्र पहिले मिसर देश का था, पीछे ग्रीस देश में इसी को ले आये थे ।। केमानगे सोघ्रारत० १३ एह एक तत यंत्र विशेष है ।। केरेल० १४ एह यिहूदीयों का एक शृंग यंत्र है । उक्त देशों के ये तीन ही शृंग यंत्र हैं "केरेल" "शोफार" "काटजोजेरा" ।। इन के मध्य में पहिले दोनों बैल वा बकरा शृंग निर्मित हैं और बड़े टेढे हैं और तेसरा सीधा और डेढ हाथ लंबा होता है ।। केरेल यंत्र कोई कोई चांदी इत्यादी धातु का भी बनाया होता है । एह यंत्र जेरको ध्वंस के बनाया होता था, एह वृत्तांत बाइबेल के अंतरगत जशुया ग्रन्थ के छठे अध्याय में लिखित है । इसी निमित्त संगीत शास्त्र के जानने वाले इसी को बहुत चिर काल से प्रचलित

बा.

92

वीत्लकरके निर्दिष्ट शाकतेहैं ।। केस्तटिक ०(शृंग यंत्र है । कार्तिकत भी एरही है ।। केरा ह ०(
एह एक शृंग यंत्र ग्रीस देशका है इसको कालैभी कहते हैं ।। कोकिउ ०(एह एक जापान
देशका तत यंत्र है । सो अंगुलीमें मुजराव लगायकके इसको बजाओते हैं एह देखनेमें कतकटा ।।
उल्लिमार ।। और चीन देशके ।। किन्नू ।। यंत्रकी न्याई होता है ।। क्याट ०(एह ब्रह्म देशका एक
तत यंत्र विशेष है । एह यंत्र बिल्लीकी न्याई आकार विशिष्ट है संकोचित पद होकर जैसे बिल्ली कि
सीकि सीस मयबैठा होता है, एह यंत्र भी उसी तरासे गठित है और बिजालकी पूछ जैसे धनुष
के आकारसे सम्मुखके पासे हलाउतो है इसमें भी उसी तरा एक पूछल है । एह पूछलके उचाई से
पीठके ऊपर बारा १२ तार लगाई होती हैं और इसी तरा बजाई दा है ।। क्यारुड ल०(एह फि
जलएउमें वर्तमान है एक तत यंत्र है ।। क्याम्यानेटा ०(एह एक प्रसस्त्रुद्र घंटा । प्रकृतसप्त
रमें बद्ध होता है और कुंजीसे बजाया जाता है ।। क्रकच ०(एह प्राचीन हिंदुलोकोंका एक युद्ध
यंत्र है । महाभारतके अनेक स्थानमें इसका उल्लेख देखा जाता है । किंतु एह किस जातीका यंत्र
है, सो इसका ठउ नाव जी दूर रहे है ।। क्रमो ०(एह यावा द्वीपके रहे लोकास्योंका एक प्रकार
का मठारुका यंत्र है ।। क्रामोर्ली ०(एह प्यागटोवा वारुन यंत्रका पुराणा नाम है ।। कान्तरहर्ली ०(
एह एक अति पुराणा सुषिर यंत्रका फेकसे बजाने यंत्रका नाम है ।। क्राव ०(एह एक प्रकार

काकरताली यंत्र विशेष है। क्रिमोना ०(एह इताली के बीच मे एक नगर का नाम है। उसमे वजा
श्रेष्ठ वायुलीन यंत्र वनाने वाले का वास था कि उहां रहता था। निक्कोला [illegible] या वायुलीन यंत्र क
हि कहीं। क्रिमोना।। नाम से कहते हैं। एही क्रिमोना नगर मे ही विख्यात [illegible] वाले [illegible]
अमति और [illegible] एही तीन मनुष्य वायुलीन यंत्र को निर्माण करने वाले वास करते थे।। क्रिम
वल ०(एह एक प्राचीन संगीत यंत्र है।। क्रिम्बलम ०(एह यिहूदियों का वीणा यंत्र विशेष है।।
क्रिसएट ०(एह एक तुरुष्क देशियों का युद्ध का यंत्र है। इसमे छोटी छोटी घंटे लगाई हुई होती हैं।।
क्रुज ०(एह जो येल्स देशियों का एक तत यंत्र है।। क्रुथ वा क्रोथ ०(एह जो येल्स प्रदेश मे प्र
चलित वायुलीन यंत्र की न्याईं एक प्रकार का तत यंत्र है, किन्तु इसमे छे ही तन्तु लगाई हु
ई होती हैं। सो प्राचीन काल से लेकर उक्त प्रदेश मे एह व्यवहार होकर वर्तमान है। इसका आका
र चतुष्कोण और अंगुलि स्थान के साथ धनुषी करके एह यंत्र वजाईदा है। इंगलंड मे इसको और
और वायुलीन जाती के यंत्र का आदि बोल सकते हैं।। क्रोटा ०(एह क्रुथ यंत्र के नाम का
अपभ्रंश है।। क्रोज ०(एह एक प्रकार का तत यंत्र है।। क्रोतालम ०(एह एक प्रकार का घ
न यंत्र है। सो साइविर देवता के पुरोहित लोकों के हाथों मे एह यंत्र सदैव काल देखीदा था।
क्रोतालम के क्रोतेल वा क्रोतालिस्त्रि यंत्र भी कहते हैं।। क्रोताला ०(एह ग्रीक देशियों का

र्न

वा·

93

इंगरेजलोक काष्टानेट और हिंदुस्थान के लोक करताल वा करताली यंत्र के साथ इस यंत्र का वित
नाक का अंहासमान करे हैं। झोताला यंत्र दो ईखंड से बिनता है। सो बजाउने वाला मनुष्य एक एक खं
ड एक एक हाथ में पकड कर, वाद्य अथवा नृत्य काल में ताल देने के निमित्त एक के ऊपर और दू
सरी का आघात करके बजाउते रहते हैं इस यंत्र का आकार वर्तुल की न्याईं और कभी कभी मनुष्य
के माथे के समान आकार से भी गठित होता है। एह शून्यगर्भ अर्थात् बीच से पोला धातु का और
दोनो ही खंड द्वारा धरा[illegible]या होता है। किंतु हिंदुस्थान देश के करताल यंत्र इस तरह का नहीं है।
एह दोनो खंड गोलाकार और धातु पदार्थ से बनाया होता है। करताल वा करताली मिसर देश
के लोक इस तरह के यंत्र को भी झोताला कहते हैं॥ झोतालो०(एह झोतालम यंत्र की न्याईं
एक प्रकार का घनयंत्र है। तुरुष्क, फ्रांस इत्यादि देश[illegible] में वर्तमान हैं। इस यंत्र में केवल
एक स्वर निकालने वाला शब्द उत्पन्न होता है, किंतु इसके द्वारा गीत वा बाजे की मात्रा निका
लि जाती है॥ इस यंत्र की स्वर इतनी ऊंची है जो चालीस कोश ताई दूर बैठे बजाने से भी तिस के मध्य में से
इसका शब्द अगृ ष्टीन हो से सुनने में आय जाता है॥ कोलि०(एह एक प्राचीन इंगरेजी सु
षिर यंत्र है॥ कानि०(एह एक श्याम देश का सुषिर यंत्रविशेष है। इसका आकार फ्राजिओले
ट की न्याईं है॥ कानिकऊ०(चियानो फोर्टे यंत्र की न्याईं है॥ कानियार अर्थात न०(एह
एक कुंजीयुक्त यंत्रविशेष है॥ कानियार इलेक् ट्रिक, एह जिला वोर्ड नामक एक जैसुइट न जन।

र्न

का क्रिया होया आविष्कृत एक ही कुंजी युक्त यंत्र है ॥ क्लावियारगान्नि० एह एक प्रकार का संगी
त यंत्र है। १७०९ वर्षाब्द मै हौलहेन नामक का क्रिया होया एह प्रघट भया है॥ क्लाविसिथेरियम०(
एह स्पिनेट यंत्र है। इसी को क्लावियार हार्प और क्लावियार सिथार भी कहते हैं॥ क्लाविसिन्०(
एह एक प्रकार का फ्रांस देश का स्पिनेट यंत्र है और इसी को हार्पसिकर्ड यंत्र भी कहते हैं सो प्रतीत हो
ता है कि वर्ष संबंधी १५ शताब्दी के पहिले एह क्लाविसिन यंत्र की उत्पती होई होवेगी॥ एह जर्म
ए देश के क्लाविसिंबेल(इसस्पैयन मे और तिस का व्यवहार नहीं है और इताली देश के निवासी कह
ते हैं॥ क्लाविसिन् इसको कि क और क्लाविसिन् और हार्मोनिउ एह दोनो ततयंत्र हैं॥ तिन्हके मध्य
मे पहिला १७७९ और वर्षाब्द मै प्रगट हुया है॥ क्लाविसिन् ए पिउ जि वफल(एह एक प्रकार का त
त यंत्र है। इस्से चर्म की गज्हू का बन्ना हुया तार नीसन होती है। १७६८ वर्षाब्द मे इस यंत्र की उ
त्पत्ती होई है॥ क्लाविसिन रयेल० एह एक प्रकार का ततयंत्र है। इस्से बे ही भिन्न भिन्न संगीत
यंत्र के सुर लगाये हुये होते हैं। १७७४ वर्षाब्दी मे वाटलव् औया गन्ना का क्रिया होया बन्नाया
होया है॥ क्लाविसिम्बलम० एह एक प्राचीन ततयंत्र है इस्से बराबर होई के कैतीस तार गं
गंदे हुई होतीयाँ हैं॥ क्लाविसिम्बालो० एह हार्पसिकर्ड यंत्र है॥ क्लाविसिम्बेल० एह एक
ततयंत्र है। क्लाविसिन् शब्द मै देखो॥ क्लायरन(एह शृंगयंत्र है(क्लारिनो भी क
हते हैं। इसी को क्लारिनो शब्द विशेष देखो॥ क्लारिकर्ड वा मणिकर्ड०(एह स्पिनेट यंत्र के आ
कार जैसा एक संगीत यंत्र है। स्पिनेट॥ क्लारिओनेट(क्लारिओनेट(क्लारिओनेटि(क्लारि

क्लारिनू ०८ क्लारिनेट ०८) क्लारिनेटो ०८) क्लारिनो ०८ एह सम समुदाय यंत्र प्रायः एक
विध के सुषिर यंत्र हैं) केवल शब्द और स्वरूप के एक से एक अधिक एह सम पर स्पर भिन्न भि
न्न नाम हुए हैं ।। एही यंत्र अंगरेजा के सुषिर यंत्रों के मध्य में परिगणित हैं । क्लारिओनेट अथवा क्ला
रिनट में रोकर और जाती के साधारण यंत्रों की अपेक्षा के अधिकतर तीव्र स्वर प्रघट होता है । क्ला
ब्र५ रिनेट में एक ही होता है । एह तीन प्रकार का है ;- सि अथवा षड्ज, ए अथवा धैवत और वि
फ्लाट अथवा कोमल निषाद । अर्थात एह एक एक ही स्वर देने से ओह सम एक एक का स्व
रग्राम संबंध होता है इन से भिन्न और एक प्रकार का क्लारिओनेट होता है।) जिसका नाम
बास क्लारिओनेट । क्लारिनो और और एक ही आर्गेन यंत्र का वंशनी विशेष है । जिसकी लं
बाई चार फुट और ओह कांस्य के द्वारा निर्मित किया जाता है । क्लारो ०८ एह क्लारिनो यंत्र का
छोटा सा नाम है । क्लार्टो ०८ एह क्लारिनेटो यंत्र का छोटा नाम है ।। क्लेपसिड्रा ०८ एह एक
प्रकार का काल माप यंत्र विशेष है । इसमें कितनेक परिमित जल जाने कर रखने से ओही जल के
क्रम क्रम से पतित होकर पूर्व काल में समय का कथन किया जाता है । कोई कोई कहते हैं ।
कि मिसर देश में रहने वाले लोक इसके विषय को जानते हैं) अर्थात उन्होंने प्रघट किया है ;-
और फिर हो कि हो के मत में ग्रीक देशियों के द्वारा इस के विषय को जानते हैं । किंतु हम लोकों
को बोध होता है कि) भारतवर्ष ही इसकी उत्पत्ती भूमी है । इसमें कारण एह है कि बहुत काल से

पहिले से हमारे पास के देश के लोक इसी तरह का कालमापक "जल घटिका" वा जल
घड़ी रखते होईथी। इससे भिन्न एक छिद्रवाले निर्दिष्ट पात्र में रेत रखकर के भी हिंद देश में
कालविभाजन क्रिया संपादित होती है। इस तरह का कोई कोई स्थान में देखा जाता है। सो इ
सिद्ध के साथ हमारे लोकों के पूर्वोक्त यंत्र का जे कर जो हम आकारगत विभिन्नता अनुमान
से प्रतीत होती है। किंतु मूल संबंध से एक प्रकार ही है॥ छोटा चेट०० छोपेन झुजेन हस्ले००
एह केंजी के सहित व्युगल यंत्र है। व्युगल शब्द में इसका विशेष देखो। खंज. नज०० एह
एक प्राकार का स्थान देश का घन यंत्र है। एके बांस के बल्ला ये हर फ्रेम में कितने क घंटि
का लगाय करिके एह यंत्र गठित होता है और राल नाने नाम कतिस के देश का और
एक यंत्र के साथ एह व जाईदा है॥ खंजनी वा खंजरी०० एह एक भारतवर्ष का छोटा
सहाऊ या यंत्र विशेष है। एह एक इसत में काम का होया यंत्र है। एक आखंडत चक्राका
र काष्ठ खंड के एक मुख में छागादि का चर्म आच्छादन पूर्वक एह यंत्र बल्ला होता है।
सो दे खने में सुंदर होवे सा वो लते हैं कि इस काष्ठ के आवरण का बहिर्भाग भिन्न
भिन्न प्रकार वर्ण से रंगदेते हैं। सो इ खंजनी तीन चार प्रकार की होती है। सो बजाउने के
समय में सुंदर सुनने योग्य होती है का हते हैं किसी में छोटी करताली के ही में घुंघरू

सो सामान्य मिटलोक ही एहयंत्र वजायकर गान करते हैं। खंजनी के वजाउने मैं वंगदेश के एक एक जन इस तरहा का वुद्धिमान लोक हैं जो उह के वजाउने की चतुराई देखने सें विशेष प्रशंसा करते हैं। सो नाना प्रकार की अनेक खंजरी हो यों हैं अरु पांउ सें और ग्रीवा में और मस्तक मैं धारण करि के और विविध ताल सें युगपत् (कि इकठे ही वजाय सकते हैं) और कभी अंगुलि के आघात सें, कहीं आपस मैं खंजनी के आघात सें भिन्न प्रकार का वोल वाजाउते रहते हैं। और "अगद्वीप के गोपीनाथ" "मेट की मठी का छोटा कांटा" इत्यादि कितनेक छोटे छोटे मुख सें उच्चारण करि के उती खंजरी हैं भली प्रकार उच्चारण नहीं होता परंतु अनेक शामैं निरगत कर सके हैं। इसी तरहा खंजरी वजाउने वाले लोकों का खंजरी तपेवर्म सें ही आच्छादित देखी जाती है॥ (खटताल वा खहताली॥) एह भारवर्ष मैं प्रचलित घन यंत्र विशेष है॥ खमक॥ एह हिंद के पाह्निका एक आधुनिक आनद्ध यंत्र है। इसकी सामान्य यंत्र की श्रेणी मैं गणना है॥॥ खरताली॥ एह हिंद के पाह्निका घन यंत्र विशेष है। एह सभ यंत्र के मध्य मैं गणना करने योग्य है। लोह, इस्पात वा कांस्य द्वारा एह यंत्र निरमित होता है। सो खरताली वजाउने वाले लोक दोनो हाथों मे दोनो यंत्रों का दोनो जोजा लेकर इहकों वजाउते हैं। तिह के मध्य में हाथों की नाजी संचालन सें इहसें जो एक प्रकार का अनुरणन उत्पन्न होता है, सो अतिशय करके मधुर और वड़ी चतुराई सें होता है। एह यंत्र परेपारा सें चले आउता सिद्ध है,॥

इसी निमित्त समय एकतानादि मिलाके बजाउने के समय में व्यवहार होता है। इसका ब
जाउना सुनने में अनेक युरोप देशके लोक अधीन हो प्रसन्न होते देखे जाते हैं।। खितारा ० (
एह प्राचीन ग्रीक देशका एक ततयंत्र है इसी को कितारा भी कहते हैं। खोरदक ० (भारतव एर २
र्षमें प्रचलित मढाहुया यंत्र विशेष है।। खोलु ० (एह हिंदु देशका एक प्रकार का मढाहुवा यंत्र
यंत्र विशेष है। इसका आकार मृदंग की न्याईं है। किंतु इसकी न्याईं इस का खोल काठ का न
हीं होता और मिट्टी का बना होता है। और इसे मृदंग की न्याईं खरव घन का उपयोगी सुना
भी नहीं होता। एह यंत्र मांगल्य यंत्र समझ के मध्य में परिगणित है। सो विशेष करके वंग
देश में वैष्णव संप्रदाय के मध्य में ही इस यंत्र का बजाना आदर है।।ग।। गङ्ग ० (एह भार
तवर्ष का प्रसिद्ध घनयंत्र विशेष है। इसका पीछे से फेर धुनी होती और बहुत देर रहता है
और शब्द बहुत दूर सुना जाता है। सामान्य लोक इसको घड़ी कहते हैं और एही युरोप दे
श में घंटा बोलकर पुकारते है। कारलाएल जोल लाहे बताते थे कि प्राचीन मिसर देश के पा
स भी इसी न्याईं का यंत्र था। और हाथी के दांत के अथवा काठ के मुद्गर द्वारा वादित होता है।
गङ्ग गङ्ग ० (एह अफ्रिका देश का घन यंत्र विशेष है। एह लोहे का बना हुया और लो
हे के दंडे के साथ बजाया जाता है। हमारे देश की घड़ी के साथ इसका अनेक सादृश्य है।

गउ झांजरको भी कहते हैं ॥ गजल्ला ०(एह घोडे के [illegible] के क्या पडे याउ लोंतंत कातत
यंत्रविशेष है ॥ गामंबं वा गामवंकाप ०(एह एक प्रकार का स्वतः सिद्ध घ्रानद्ध यंत्र है। मा
लवदेशमे और भारतवर्षके द्वीपपुंजमे इस यंत्रका विशेष प्रचलन देखते हैं ॥ गामवं
गम ०(एह यंत्र देखने मे अनेक टापु और यउरोप देशके हारमोनियम यंत्रकी न्याईं है।
इस मे धातु कि यों कुंजियों वा सारिका आवद्ध होती यों हैं। इसमे पांच स्वर मे ग्राम बद्ध
होता है ॥ गाम्बा ०(एह एक पुरातन तत यंत्र है। और इस समय मे इसके बदले मे भायो लि
न से लो व दैया जाता है। सो बजाउने वाले के दोनो भुजों के मध्य मे रख कर बजाया जाता है।
बोलते हैं कि इसकी इसी तरह संज्ञा है। इसी यंत्रका और एक नाम भायो ल जा गाम्बा है ॥
गालोवेट ०(एह एक त्रिंवंधनिविशिष्ट सुषिर यंत्र है। इस समय मे एह प्रचलित नहीं है,
केवल कभी कभी फ्रांस देश मैं लक्षित होता है ॥ गिंगास ०(एह एक प्रकार का सुषिर यंत्र है।
एह केरिया और सारङ्गासद्वीप मे प्रचलित है। तिसतिस देशके ग्रामदेव नामक देव
ताके उद्देश मैं करुण रसात्मक करुण स्वरूप सङ्गीत गाउने के निमित्त व्यवहार हो
ता है ॥ गिंग्लारस ०(एह एक मिसर देशका छोटा सा सुषिर यंत्र है ॥ गिंगा ०(एह एक
ग्र प्रचलित तत यंत्र है ॥ गिटिय ०(एक यिहूदियों का एक प्रकार का तत यंत्र है। कि हो है

कि बाद्यवेलाथ नगीताव ह्लीके साथ उक्त यंत्र बजता होताथा। किंतु कोई कोई कहते हैं
कि उक्त नामसें यिहूदी लोक कोई एक बाघक यंत्र विशेष को बुझावे हैं। गितार वा गीतारा ०(
एह एक प्रकार का ततयंत्र है। पहिले समे मैं इसी को सितर्न कहते थे। एह यंत्र बारा तारों करके
भली प्रकार सें बांधा होया है।। मिनयू ०(एह प्राचीन यिहूदीयों के पास के समय यंत्रों का
साधारण नाम है।। गुत्रम्बावार्डि ०(एह यिहूदियों का बीणा यंत्र है।। गुउक ०(एह रूस दे
श का एक वा कुलीन जाती का यंत्र है, किंतु श्रेष्ठ नहीं है इस्मे तीन ही तार लगाई हुई
होतियां हैं।। गुसलि ०(एह रूस देश दे वासियों का अति प्राचीन जाती का ततयंत्र विशेष है।
इस्का आकार केवल फिन्लेंड देशवासियों के कांतेल्लि यंत्र की न्याईं है। सो कांतेल्लि यंत्र का
इस्तेमाल मै इस्की उन्नति पूर्ण तह साधित होई है सो अब ता यासे सें दोतीन सप्रक बजाउले
आजाता हैं किंतु पहिलें कांतेल्ली न्याईं इसमे पांच ही नागा तार जोडे होए होती थी।।
गुस्लि ०(एह रूस देशियों का हार्प जाती का यंत्र विशेष है। गुसल्लि भी कहते हैं।। गोन्डु
ख ०(एह हिंद देश का एक अति प्राचीन युद्ध यंत्र है।। एह कुटि लाकार बाजे का भाजा
विशेष है। महारामायण और महाभारत के अनेक स्थल मे इस्का उल्लेख है।। गोरा ०(
एह हटेंटट जातियों का एक प्रकार का ततयंत्र है।। इस्का आकार का प्रकार देखले

९७

सैं प्राचीन काल सैं प्रचलित बोध होता है ।। गोशृंग ०(एह हिंदु देश का एक अति प्राची
न शुषिर यंत्र है । गोशृंग सैं निर्मित बोल के इस्को इस्लीनहा की संज्ञा है । महादेव जी पिनाका
दि यंत्र की न्याई इस्को भी प्रिय मानते थे । महाभारतादि प्रसिद्ध प्राचीन ग्रंथ मै इस्के अनेक
उल्लेख हैं । पहिले समर संघटन क्या युद्ध के समय मै एह यंत्र वर्त्तमान होता था । इस्से समय
मै भारतवर्ष मै इसका प्रचलन देखा जाता है ।। गोदक ०(एह रूस देश का ततयंत्र विशे
ष है । गुजक भी इसी कों कहिते हैं । इसका विशेष वर्णन गुजक शब्द मै देखो ।। गलस्टा
व्योर ०(एह एक प्रकार का वृहत् जयढक्का है ।। गलासिकैसि ०(एह वजीठक्का का एक
वरवरा नाम है ।। गालम्कासा ०(एह वजीठक्का जय विशेष है ।। गिलट ०(एह फ्रां
स देश का एक प्रकार का घनयंत्र है और देखने मै हम लोकों के छोटी घंटीका की न्याई है
छोटा घंटा) भी उसी कों कहिते हैं । जर्मन देश मै इसको घैलेनि कहिते हैं । होघोउयों की म
हेल के साथ निकट वर्ती दुरघटना निवारण के निमित्त एह व्यवहार होता है ।। उतोउ देश
मै इस्लीनहा यंत्र और हमारे देश मै गौ के गला मै और पश्चिम देश मै पक्का गाजी के ग्र
श्व के हमेल के संग वंधा ऊया होता है । एह यंत्र जापान देश के सिरासिरु नामक यंत्र
की न्याई निकसि को और सिहरदेशवासियों के धर्म मंदिर मै एहवऊ न व्यवहृत होता है ।।

गेम् सिम्बलम् ०८ एह हार्प सिकई यंत्र का प्राचीन नाम है ॥ ग्लास्स्कर्ड ०८ एह एक कुं
जी के साथ वजाने का यंत्र है। इसमे तारों के वदले काच की सारिका लगाई होती है १७८५
वर्ष की अवधी मे जरमनदेश का एक मनुष्य जिसने एह यंत्र वनाकर तियार किया था
सो अेह प्रघट होया है ॥ घड़ि वा घड़ी ०८ एह कांस्यादि धातु का वना हुया चक्रा का
र यंत्र विशेष है ॥ एह छोटा और वड़ा इत्यादि अनेक तरहा का होता है ॥ गङ्. ७ उत्तर
और पश्चिम देश मे इसी यंत्र को थाला कहते हैं। थाला ७ थाल शब्द मे देखो। घण्टा ०८
एह भारतखंड का घन यंत्र विशेष है। सो एह यंत्र कांस्य और पित्तल का वना होता है।
एह भारतवर्ष मे अति प्राचीन काल से वर्तमान होकर आज तक वर्तमान है। सो घंटा
यंत्र दो प्रकार का है एक छोटा घंटा वा कर घंटा और वड़ा घंटा वा जय घंटा। सो देव
पूजा मे अथवा मांगल्य कार्य मे हिंदु लोक कर घंटा वहोत वजाया करते हैं। और रा
जा के घर की डेओढ़ी मे ईन जगो मे घंटा लमकाया होया होता है। पहिले युद्ध के समय
मे भारतवर्ष के वीर राजगण हाथी पेट के नीचे यय घंटा बांधकर सामरिक वाद्य
के अथवा युद्ध के वाजेयों मे अंग पूरण करते थे। और धर्मयज्ञ करने वाले लोक

बा०

२८

98

देवमंदिरमें भी जयघंटा स्थापन करके रखते हैं। इससे भिन्न और कार्य्यमें भी जयघंटा—
व्यवहृत होता है। जयघंटा, भारतवर्षके पहिले समसे ऋषिगण सामान्य लोक घंटाव्य
वहारकी विधि निर्देश करदिये गये हैं॥ तो घंटावाजेके विना तो सब लोक पूजादि विधा
नमें कार्य्य जातिके मांगल्य कार्य्यमें कोई भी फल यथावसे संपादित नहीं होसकता।
यदि देवपूजादिके समयमें और बाजे नहिं होवें तब घंटा शब्द अवश्य ही करणे चाहिये।
इसी निमित्त स्मृतिके एक स्थानमें सुद्धाक्षरमें लिखित है जो "सर्व्ववाद्यमयी घंटा
वाद्याभावे प्रयोजयेत्"। इस श्लोकार्द्धसें ए ही प्रतीति होती है जो हिंदु मात्रके ही
गृहमें घंटा यंत्र रखना और बजाउना ही योग्य है॥ पद्मपुराण, स्कंधपुराण इत्यादि
आर्य्य जातिके प्राचीन धर्म्मशास्त्रमें भी घंटा माहात्म्य बहुत विस्तार करके लि
खित है। स्कंदपुराणमें श्री ब्रह्मानारद संवादमें लिखा हुआ है। जो स्नानार्चनके स
मय कालमें घंटानाद करोति यः॥ पुरतो वासुदेवस्य तस्य पुण्यफलं शृणु॥ वर्षको
टिसहस्त्राणि वर्षकोटि सतानि च॥ रमते देवलोके तु अप्सरोगणसेवितः॥ सर्व
वाद्यमयी घंटा केशवस्य सदा प्रिया॥ वादनाल्लभते पुण्यं यज्ञकोटि समुद्भवं॥१॥

२८

वादित्रनिनदैस्तूर्य्यगीतमंगलनिस्वनैः । यः स्नापयति गोविन्दं जीवन्मुक्तो भवेद्धि सः ॥
वादित्राणां भवेद्भावेनु पूजाकाले हि सर्वदा ॥ घंटाशब्दो नरैः कार्य्यः सर्ववाद्यात्मकी यतः ॥
सर्ववाद्यमयी घंटा देवदेवस्य वल्लभा ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन घंटानादं तु कारयेत् ॥
मन्वंतरसहस्राणि मन्वन्तरशतानि च ॥ घंटानादेन देवेशः प्रीतो भवति सर्वशः ॥ इ
ससें क्या बोध होता है कि प्राचीन वृद्धदर्शी पंडित लोक एक ही यंत्र से वे पहिं इस तत्वका वा
लक की विज्ञप्ता है कि या था सो एह कभी नहीं कि हो जाता । अब इसके मध्य में एक व
जागरूक ग्रन्थि प्रायः रखा हुआ होवेगा । हम लोगों कों एह बोध होता है कि सर्प इत्या
दि खल जीव समूह की भीती जो होती है उन जीवों के दूर हटाउने के निमित्त ही वारंवार
घंटे की धुनी कों करते हैं इस तत्वातें इस विषय का उहै रव है । घंटा जंत्र का शब्द जैसें उच्च
और तीव्र होता है तिससें ऐसी विवेचना गई यों कि काक हि लोक कें बोध नहीं होता ॥
और सर्प शत्रु गरुड़ है तिसकी मूर्त्ति वाला जो घंटा है तिसका विषय भी ग्रहणीय जैसे गरु
ड़ कों देख के सर्प भाग जाते हैं तैसें पूजादि के विघ्नकारी भूतादिक भी हैं सो घंटा शब्द
के सुनने सें चले जाते हैं एह उल्लेख शास्त्रादि सें लक्षित होता है) तैसे तौ इस

वा:

५६

यंत्रके बजाउनेका इस प्रकार अर्थ बोध प्रतीत वोसीके रचन ना ग्रन्थ लक नहीं है अर्वाचीन।
शास्त्रमें सब प्रतिपादित करा हुवा है॥ मांगल्य कार्यमें संख बजाकर, क्या कांसियां, घड़ी
आंजर इत्यादि यंत्रका भी व्यवहार है। इसीतरहा के अभिप्रायमें प्रचलित हुये हैं। सो ह
99 मारे देशमें भी कुंडे वाले छोटे छोटे घंटे घरकी गौवें और इतर पशु जो हैं उन्हके कंठ
में मांगल्य हस्यी लोक बांध देते हैं॥ घंटिका०(एह एक छोटा घन यंत्र विशेष है। सो
इसको पशुवोंके गलेमें और अन्यान्य मांगल्य कार्यमें व्यवहार होता है। घंटा वा द्रघंटा)
घघंटा०(एह प्राचीन हिंदु देशका एक प्रकारका वीणा यंत्र है॥ घर्घरा वा घर्घ
रिका०(एह वंग देशका और हमारे देशका भी बालकों के कटीमें जो मेखला का हु
ऊशाल नाम है एह यंत्र वर्तमान होता है। और सोन्नेकी वा चांदीसे एह बनाई हुई होती है॥
इसीका और एक नाम किंकिणी है और घर्घरा शब्दका अपभ्रंश घाघर है॥ ॥ ॥
घर्घरिका वा घर्घरी०(एह हिंदु देशका एक प्रकारका वाद्य यंत्र है॥ पिपि प०(
एह एक तुरुष्क देशका सुषिर यंत्र विशेष है॥ घुंगुरु वा घुंगुरु०(एह एक प्रकार
का भारतवर्षका घन यंत्र है। नर्तक वा नर्तकी इसको स्वत्र संकेतने कगुच्छे बनवा

५५

यकरऔरपैरोंमेंबांधकरकेंनृत्यकेसमयमेंव्यवहारकरतेहैं।घुंगरू यंत्रसाधारणमेंदोप्रका
रकाहुवाहय।एकप्रकारछोटीजातीकाहै,जोहमारेनृत्यकदलमेंव्यवहृतहोताहै,औरति
सकोगृहपालककेवजाजोहैसोमेढ़॥कुत्ते,बकरे,बिल्लाइत्यादिग्राम्यपशुवोंकेग
लेमेंसूत्रसेंबांधदेतेहैं॥औरकरताल टि,टि,प्रोफेसरसाहेबकहतेहैं।किभारतवर्षके
पादचारीपत्रवाहकलोक ग्रामोंमें डाककेकागदपुजालेवालेआपलेआपलेका
गदोंकोगुच्छिकेवालाठीकेसाथबांधकरग्राओ जातालकमेंरखतेहैं॥सोहिंता
वीवेगसेंचलनेकेसमयमेंघुंगरूवोंकेगुच्छोंसेंजोशब्दनिकसताहय,सोउसकोंसु
नकरशृगालादिरात्रिमेविचरणेवालेश्वापदहैंसोनसजातेहैं,औरएकलेनुर
लेवालेजोहलकारेपत्रवाहकजोहैंसोभीजेहीशब्दकरकेकुहरमेप्रविष्टहोकरके
तनोकुपरिश्रमदूरकरतेहैं॥घुरिटकावाघुण्टी०एहभारतवर्षकाघनयंत्र
विशेषहै।सोघुंटशब्दसेंपादग्रंथिसोईतिसमेंबांधकरकेएहयंत्रव्यवहृतहोताहै।
बोलतेहैंकिघुंटिकावाघुंटाइसनसूाकानामहोयाहै।घुंगरूवाघुंघुरभीनामहै॥
चटकी०एहएककाष्ठकावण्डूवाभारतवर्षकायंत्रहै।सोछोटेछोटेबालकवाकन्या
एहोइसकोंवजायाकरतेहैं॥चवरी०एहहिंदुदेशकाएककाष्ठानद्धवाद्यनकाइवायंत्रहै॥

वा.

चन्नतनूसरय ० यह प्राचीन हिन्दु देशका एक शुषिर यंत्रविशेष है। धर्मपराय ल
म्बता एपे व्यवहार करते हैं ॥ चञ्चुमित ० यह एक काठ और लोहे की चादर का बना
हुवा और सीसे का बना हुवा प्राचीन सुषिर यंत्रविशेष है। चमरा ० यह एक पिहु
दी जातियों का सुषिर यंत्र है ॥ चाटजोजेरा ० यह एक अहदी देशियों का शृंग यंत्र
है। केरेला भी इसी को कहते हैं ॥ चालेम्वङ ० यह यावा द्वीप में प्रसिद्ध है एक प्रकार का
ततयंत्र है। इसमें १० दशा से लेकर १५ पंद्रह तारें लगाई हुई होती थी हैं और हार्प यंत्र
की न्याईं बजाया करते हैं ॥ चि ० यह चीन देश का पश्चीमदेसम के लंग की तारों वाला
यंत्रविशेष है ॥ चिं ० यह चीन देश के चें यंत्र का एक नाम है ॥ चिकारा ० यह एक भा
रतवर्ष का ततयंत्र है ॥ चित्रवीणा ० यह हिन्दु देश का एक पुरातन ततयंत्रविशेष है।
सुप्रसिद्ध संगीतदर्पण में इसका उल्लेख है ॥ चिन्नर ० यह एक हिन्दु देश का ततयंत्र है।
इसी का और एक नाम किन्नर भी है ॥ चें ० यह एक चीन देश का वायुयंत्र है। इसका आ
कार एक संदूख की न्याईं होता है। तिसके मध्य भाग में कितनेक नल जोड़े हुए
होते हैं। सो प्रत्येक नल में युरोप देश के आर्गन अथवा आकार्डियन यंत्र की न्याईं
एक एक धातु की जिह्वा की न्याईं संबद्ध करी हो रहती है। सो यह यंत्र मुख करके बजा

और वल्लसम्मह के गात्र मैं जो सम छिद्र होते हैं सो वजाउने वाले वजाउने के समय अंगुष्ठ क
मत हैं तिन मैं अंगुलियाँ राखते रहते हैं ॥ चेल्लिस १० प्राचीन ग्रीक देश का एक वीणजाती
का यंत्र है ॥ चौतारा १० एह भारतवर्ष का तानपूरा जाती का एक तत यंत्र है। इसमे चार
ही तारो बाँधि जाती हैं। एह अति प्राचीन और ग्राम्य यंत्र है। इसका दंड सामान्य बांस
का ही होता है और पश्चिम देश के और दक्षण देश के ग्राम्य वाले भिक्षाजीवी लोक इसी
यंत्र का बहोत व्यवहार करते हैं। एकतंजी अथवा एकतारा के बदले मैं ही इस यंत्र उत्प
ती होते हैं ॥ चंग १० एह पारस्य देश का एक प्रकार का सार्पजाती का तत यंत्र विशेष है ॥
आरब देश के इसलामू के यंत्र का नाम जुङ्क है। (जुङ्क) किन्तु इस देश के यंत्र का इ
स समय मै और व्यवहार नहीं है। लेनहा है व इस प्रकार के यंत्र को दो इस्थान छवि संग्र
ह किया गया है। तिसके अनुमान करें सिद्धांत मैं एह दोनों ही यंत्र चार सौ ८०० वरस के हो
वेंगे। इसका आकार पूर्व देश के सार्पजाती के और और यंत्रों की न्याई है ॥ चयालिस १०
एह हिन्दु देश के चतुस्त्रिउ जाती का सुषिर यंत्र विशेष है ॥ ज ॥ जगझम्प १० एह भार
तवर्ष मैं प्रचलित एक आनद्ध क्या मदाडयायंत्र विशेष है ॥ जयघण्टा १० एह
हिंदु देश का प्राचीन घन जात बजाये का यंत्र है। देवमंदिर मैं और तोरण मैं एह बंधा होता है।

घंटा। एह सउ शेष देशा के लोक गोऽग्री इत्यादि उनके स्थान मै बड़े बड़े घटिका यंत्र का ब
जाउले का शब्द बहुत दूर सैं श्रवण करते थे। भिन्न घटिका यंत्र के साथ इसील हा
यंत्र संलग्न कर दिये जाते थे। सुतरां यंत्र बजाउने वाले मुद्गर के सा घड़ह वादित हो
कर समय को वे धन करती हैं॥ जयपत्र का ० एह हिंदु देश का बहुत मन और पु
स्तन मठाद्या यंत्र है॥ एह यंत्र पहिले युद्ध के समय मे व्यव
हृत होता था। ० इस समय मे शान्ति पूजा और गोवजा के स्थान मे बजाया
जाता था॥

जयमङ्गल ०(एह हिंदुदेश के सब से बड़ा शृंग यंत्र है। पहिले समे में एह युद्ध का यंत्र था। इस समय में और और मांगल्य कार्यों में व्यवहार होता है। इसी का और एक नाम रणशृंग है।। जरनाय ०(एह तुरुष्क देशियों का एक पुराने समे का सुषिर यंत्र है। इसका अवयव प्रायः इंगरेजी ओबय की न्याई का । बाजा जरनाय ओबय भी जो ही है ओबय शब्द में देखो।। जलनाएड़ वा भुड़भुड़ी ०(एह एक भारतवर्ष का बाल यंत्र है। सो छोटे छोटे बालक लोक इसी यंत्र को लेके खेलते हैं। और मुसलमान लोक बदनार की न्याई इंग्रा कार विशिष्ट एक मट्टी का [illegible] नल सहित छोटे भांडे में कितनाक जल राख के उसी नल में फूंक मारने से उसके मध्य से एक प्रकार का शब्द निर्गत होता है।। जाङ्गि वा जाङ्गी ०(एह तिगोदेश का एक सुषिर यंत्र है।। आस्विरा शब्द में इसकी व्या[illegible]ख्या देखो।। जानरफिका ०(एह एक प्रकार का सारिन्दा की न्याई का यंत्र और धनुखी से बजाई दा है।। जाम्बोगरना ०(एह एक इतालीदेश का प्राचीन सुषिर यंत्र है। अब इसका प्रचलन देखने में नहीं आउता इसी यंत्र को सानुनवा सा[illegible] बा[illegible]। एही संज्ञा से भी कथन करते हैं।। इसकी धुनी कितने क्लारिनेट की न्याई होती है।

वा.
५८२
१०२
102

किंतु जिस्की आपेक्षाकर्के छोटी है। इतालीदेश वा हीक रहनेवाले लोक इसीकों व्यवहार
करते हैं ॥ ग्यिहूदी देश के लोक मागेपा वा मागेफा नामक यंत्र अनेक ही इस्कीन्याई
जिंरि ०(एह एक फिनस देशियों का सुषिर यंत्र है इस्की लंबाई एक फुट होती है।
फिनिसी लोक जिस समय उनका मनुष्य मर जाता है उसके दफन करने के समय पर
गाइन इसमें बजाउते हैं ॥ जिंलेया स्र ०(एह एक मिसर देश का छोटा सुषिर यंत्र है ॥
जिउकस जानचेस्र ०(एह एक चनउ का बनाया हुआ सुषिर यंत्र है ॥ जिउ्रेन ०(एक
एक काठ का बना हुआ प्राचीन सुषिर यंत्र विशेष है। सो इस समय में एह वर्त
मान नहीं है ॥ जिंगलास ०(एह घण्टा यंत्र में लगाउ ले के तीन छोटी घंटि का
होती है ॥ जिस्त्र ०(एह एक तुरुष्क देश का पुरुष का करताल यंत्र है ॥ जिह्या ०(
एह एक भारतवर्ष का ग्राम के का बना हुआ साधारण मठ्या यंत्र है ग्राम के लो
क एहि यंत्र बजाया करते हैं ॥ जिस्त्र हार्मोनिका ०(एह एक प्रकार का का
ठ का बना था होया हार्मोनिका नामक यंत्र है ॥ जीज ०(एह एक प्रकार का
तत यंत्र है। द्वादश, १२ त्रयोदश, १३ और चतुर्दश वर्ष की शताब्दी में एह यंत्र

५८२

फ्रान्स देशमें प्रचलित था। किन्तु उक्त पंचदश शताब्दीमें रीगिरेवेक नामक यंत्र
में परिगलित होया है कहते हैं कि एह बोध होता है, कि वे एक ही हैं।। जुरु० ८
एह एक अरब देशका हार्प जातीका यंत्र विशेष है। इसीको विशेष व्याख्या चंग
शब्दमें देखो और चंगभी इसको कहते हैं।। जुफेल्गो० ८ एह चेम्बार्स साहेबके म
तमें एक शिरलाक इतालीदेशका क्रुट वा क्राजिओलेट यंत्र है। इसका स्वर तीव्र और
क्षुद्र पक्षीगणके बच्चोंकी न्याई है।। जुमारा० ८ एह मिसर देशका दोनलका
यंत्रविशेष है। इसी यंत्रको उस देशके मल्लाह लोक अति प्यारा मानते हैं। इसके दो
नो नल लंबे बराबर ही होते हैं। मिसर देशमें और एक अर्गुल नामक यंत्र है, तिसका
एक नल दूसरेकी अपेक्षा करके बड़ा लंबा होता है।। युसहार्प० ८ एह एक लोहेका बना
या होया वाद्य यंत्र विशेष है। इसमें एक खंड स्थितिस्थापक गुणोपेत बस्तु कि जो
कके समान स्वत्व विशेष जैसे खैंचनेसे बढ जाता और छोड़ देनेसे घट जाता उसको स्थि
तिस्थापक गुणोपेत कहते हैं और लोहेकी जिह्वा संयुक्त होता है। बजाउनेवाला

बा॰

१०३

103

अंगुलीके साथ इस्तैमाल करके इसका स्वर निकालनेके वास्ते संपादन करते रहते
हैं। हमारे देशमें वर्तमानकालमें मोचङ्ग नामक इसी तरहका एक यंत्र व्यवहृत होकर
वर्तमान है। बोध होता है कि, ओहि यंत्र देशविशेषमें भिन्न भिन्न नाम प्राप्त होके हो
वेगा॥ जेलजेलिम ०(एह यिहूदी देशका एक प्रकारका घनयंत्र है। एही दूसरो
प देशके सिंबल और हिंद देशके झल्लक यंत्रकी न्यांई हैं। यिहूदी देशके इस्त
नहाके और दो मेंजिलोथ और मेंजिलथिम नामक यंत्र हैं, किंतु गेहूका आका
र भिन्न भिन्न और गेहूका भिन्न तरहका शब्द उत्पादन करते हैं॥ जोवेल ०(एह
कोई कोई संगीत जानने वाल्यों के मतमें एही शृंग जातीका सुषिर यंत्र विशेष और
ओ यहूदी देशियोंका किया हो या व्यवहृत होता है॥ ऊ॥ ऊग्गा वा ऊगेज ०(एह
हिंदू देशका एक प्रकारका प्रसिद्ध घनयंत्र है। इसीको झांझर भी कहैं हैं॥ झांझर ०(
एह हिंदू देशके एक काठ खंडमें चर्म करके मढ़ा हुआ आनद्ध यंत्र है। इसीको
कंजर वा कांजा कहिते हैं॥ झर्झरी ०(एह झर्झर यंत्र है और हिंदू देशका एक प्रकार

झलरी, झल्लरी और झल्ली० — एह हिंददेश का हुडुक्का वा झर्झर यंत्र है ॥ झल्लक० —
एह हिंदुदेश का कांस्य का बना हुया करताल यंत्र है । इसी यंत्र के साथ कांस्य वा
कांस्योर यंत्र का अनेक सामान है ॥ झांजर — झंझा झांज एह एक ही है । फकत नाम
भेद है । झंझरी० — एह छोटा झांजर यंत्र है ॥ झिल्लि० — एह हिंदु देश का एक घन
यंत्र विशेष है । शंख घंटादि की न्याई एह भी बहुत प्राचीन है शास्त्र देखने से
सो सब प्रतीत होता है, ॥ घंटा शंखस्था भेरी मृदंगो झिल्लिरेव च । पंचानां शब्दतो
वाद्यं देवताराधनेषु च ॥ इति गरुडार्थदीपिकायाम् ॥ झुनझुनी वा झुनझुनी० —
एह हिंदु जाती का एक प्रकार का वाद्य यंत्र है । एह काष्ठ का बना किंवा पित्तल
इत्यादि धातव पदार्थ से बनाउते हैं । इसको कोश मध्य में गुंजा कणा किंवा रत्तियों के
सह शर्करा तथा अनेक धातु के पदार्थ वा कंकर पूर्ण होता है । छोटे बालक एह यंत्र लेक
र खेलते हैं । एह यंत्र कागद का भी होता है ॥ ट ॥ टकु के० — एह एक तत यंत्र
विशेष है । टिक टिकी की न्याईं बना या होता है कहते हैं इस यंत्र का ऐसा नाम है । ट

बा०
५५

१.४

104

एक खंड काष्ठ सें एह गठित होता है। इसमें दो रेशम की तारें और एक पित्तल की तार जोड़ि
त होती है। श्याम देश में एह यंत्र प्रचलित है॥ कटतंत्री। एह हिंदुदेश का एक प्राचीन
तत यंत्र है। संगीत दर्पण में कहा है॥ टफ्‌० एह जिहूदीयों का आनद्ध मढ़ाया यंत्र वि
शेष है। अंगरेज लोक इसकौं टिम्बेलग्र अथवा टाबरेट कहिते हैं। इसीकों हमारे देश के
लोक "डफ" और आरव देश के "डफ" "वा" "आदुफ" यंत्र की न्याईं है और उपले
भी उसीकौं कहिते हैं॥ टम्‌टम्‌० एह एक प्रकार का ढक्का यंत्र है॥ टमिटम० एह
एक प्रकार का आनद्ध यंत्र है। हमारे बंग देश के ढक्का यंत्र की न्याईं है इसका आकार होता
है सिंहल वासी लोक काठि थोट नामक काष्ठिका द्वारा एह बजाईदा है॥ टरबोडियन०
एक वकमान नामक जर्मन जातिय का निर्माण किया होया हारमनियम की न्याईं एक अद्भुत
वाद्य यंत्र है। किंतु हारमोनियम यंत्र की अपेक्षा करके इसकी धुनी सुंदर मधुर और कल
कौशलपूर्ण है। हाम्बर्ग नगर में उपरोक्त हेतु एयंत्र वारम्वार उनेकाहिका पियानो फो
र्टि के सौलगर हमे एह यंत्र देखने आउता है। म.त महात्मा ऐड्कअव साकस को

वर्गनामने इस यंत्रकी इसीन हा गुआरवा प्रदान किया था ॥ टावरेट ०८ एह एक अं-
गरेजी ग्रानक यंत्र है (टावोर टावोरेट) एह हमारे देश के "उमरु" आरवे देश के
उफ) वा "आदुफ" और यिहूदी लोक "टफ यंत्र की न्याई है। (उमरु, उफ टफ) ए-
क एक ही है ॥ टावोर वा टावोरेट (एह एक छोटा ढक्का विशेष है। तो इसको छोटी
लाठी के साथ बजाउते हैं ॥ टाली ०८ एह मिंहल देश का एक पित्तल का बनाया हो-
या घन यंत्र विशेष है। इसको मुद्गरक से बजाउते हैं। हमारे देश के घड़ी यंत्र के साथ इ-
सका सादृश्य है। घड़ी शब्द में इसका विशेष व्याख्या है ॥ टाओवी वा ग्वाओवी ०८ एह एक प्र-
कार का तत यंत्र है। इसी को वामस्पुट कहते हैं १६८० वर्ष की पूर्व भी मे वाईला ना-
मक एक जन निर्मित का बनाया होया एह यंत्र है ॥ टिंपर नक्युला मू ०८ एह एक घोटा घं-
टा है ॥ टिपोनाजलि ०८ एह मेक्सिक देश का एक ढक्का जाति का यंत्र है। इसका आकार
गोल और उसके अंतर भाग का बीच से फूला होया होता है ॥ इसके मध्य स्थान में दो तो ही
बराबर छिद्र के विना और कोई छिद्र नहीं है। उह दोनो छिद्रों में शलाका के आघात करके ए-
ह यंत्र बजाउता है ॥ एह यंत्र अनेक तरह का था, तिह के मध्य में स्वंध देश में किसाडे पुर

वा० २६५

जिसका आकार छोटा है जिसकी गुपेलाकके इसकी लंबाई और चौडाई पांच फुट है ॥
हिविएस्वटर० एह प्राचीन ग्रीक देशका एक सुषिर यंत्र है। एह गाने के समै पर अधि
कतर व्यवहार होता है। हिविया एस्कटरिया इसीको कहते हैं ॥ हैवेमोनिस० वा
हैवेपारिस० एह मिस्र देशका और प्राचीन रोमक देशका एक प्रकार का सुषिर यंत्र है ॥
हैवेवाइफोनिस, वा हैवेविरन जडूरि। एह एक प्राचीन यंत्र का नाम है। सोई यंत्र एक
जगे दो ईफुट बढ होकर इसी तरहा से निर्मित होता है जो बजाउने को निमित्त एक मुख
होता है। सो एक जने के द्वारा इसकी बजाउने की रीति सिद्ध होती है ॥ हैविमल
हिसोनकस० एह एक मिस्र देशका तीव्र स्वरवाला सुषिर यंत्र विशेष है ॥ हिविया०
एह प्राचीन ग्रीक देशका एक सुषिर यंत्र है। इउलियम गे ब्काफोर्ड साहेब कहते हैं
कि पहिले एह यंत्र पशुकी अस्थी से बना हुआ होता था। तिसके उपरांत प्राचीन लो
क काठ और धातु पदार्थ से बनाउने लगे हैं। किंतु प्रसिद्ध संगीत कोशकार जो एफ
दानिलिसा साहेब के मत में "हिविया" एहि शब्द सुषिर यंत्र समूह का प्राचीन भी

टिंबिया एस्कटरिया ० (एह लातिनि दिसान देशियों का एक शुषिर यंत्र है। सो शा
गुणा के साथ युक्त संघटित न होने के पहिले जो एकला पाया जाता है, तिस के साथ
एह यंत्र वादित न होता है॥ टिंबिया मिलिटेरिनम् ० (एह प्राचीन देश का एक प्रका
र का सुषिर यंत्र है॥ सो एह संग्रामों के समय में व्यवहृत होता है॥ टिम्पानम् ० (
एह प्राचीन गनीक देश का एक आनद्ध यंत्र विशेष है टिम्पानोलम् भी कहैं। टिम्पा
नम् वेलिकम् ० (टिम्पानम् ० (द्रष्टव्य। टिम्पानो ० (एह केटल ड्रम यंत्र है। केटल ड्रम भी
इसी को कहते हैं। टिम्पानोन म् ० (एह प्राचीन गनीक देश का एक आनद्ध यंत्र ~~कोनों~~ है।
इस का आकार जय ढक्का नामक यंत्र की न्याईं होता है॥ टिम्बेल ० (एह एक ड्रम यं
त्र का नाम है॥ टिम्ब्रेल ० (एह एक गीक, रोमन देश का, यिहूदी इत्यादि देश का
एक प्रकार का आनद्ध यंत्र है॥ टुम्बुरी ० (एह हिंदु जाती का एक प्रकार का प्राचीन
आनद्ध यंत्र है। टुम्बुरी यंत्र भी गन्धर्व टिकारा संज्ञा में प्रसिद्ध हुआ है। पर्यन्त इसी की
टिकारा संज्ञा भी है। टुजु ० (एह ब्रह्म देश का एक प्रकार का बाद्य लीन जाती का

वा॰

[illegible]

१०६

106

यंत्र और भली प्रकार रखो गंदत और गरते हुए नहीं होता है ।। टुएल्टु नी० एह एक मंतुवा
ला एक प्रकार का यंत्र है। एक तंत्रि का इसी नाम सें और एक जाति का यंत्र है। एह सी सी को ट
आकार सें कांच सें बना हुया और इसी का नीचे का भाग बहेत पतला और बाल सलों कर
ही यंत्र का नल ओठों सें दबा एक कें धीरे धीरे मुख जान श्वास प्रश्वास के द्वारा जो हव
जाउते हैं ।। टुवा० एह बड़ा फोर्ज साहेब के मत मैं एह यंत्र शृंग यंत्र की न्याईं इंग्लाका
रविशिप और रिच हृदियों के पास्रेबद्ध मान बहेत नहीं होता है। इसी का और एक नाम ट्रम्पे
ट श्रव जुबेन्ली भी है। किंतु दानिलसाहेब कहिते हैं कि एह मिसर देश का
एक शृंग यंत्र और बोध होता है ये जैसा इसी सदेवता का किया होया प्रघट भया है ।।
टेनारमायल० एह एक प्रकार का तत यंत्र है ।। टेबुजो० एह प्राचीन ग्रीक दे
शकी एक प्रकार की वीणा जाती का यंत्र है ।। ट्राबालो० एह एक ग्रानन्द्र्य ये
त्रविशेष है ।। ट्राम्ट्राम० एह चीन देशका पेटा पजी। — पजी का विस्तार पूर्व
कविवरण १०८ बर्मै और पजी और गङ शब्द मैं देखणा चाहिये ।। ट्रामट्राम०

एह हिंदुदेश का एक छोटा मजीरा या यंत्र है ॥ ड्रम, ट्रम्पेट वा ट्रम्पेट नं० ८ एह एक प्र
कार का सुषिर यंत्र है। इसका आकार हमारे देश की तुरी की न्याईं होता है। (फ्रेंच) ट्रम्पेट नं० ९
एह यूरोप देश का प्रसिद्ध शृंग यंत्र विशेष है। हर्ल बगु की अपेक्षा करके इसमें एक सप्तक
अधिक बजा सकते हैं। एक अंगरेजी एक तान्नि बजा जले मैं व्यवहार होता है और पित्तल
का भी बना होता है। इस जाती का यंत्र प्रायः आफ्रिका के समन्देश मैं वर्तमान होता है ॥
ट्रम्पेट गैलेफन नं० एह कुंजी युक्त तुरी विशेष है ॥ ट्रम्पेट आफ्रिकन नं० ८ एह एक प्र
कार का सुषिर यंत्र है ॥ ट्रम्बोन ट्राम्बोनि वा ट्रम्बोन नं० ८ एह यूरोप देश के एक तान वाद्य
मैं बजाया जाता है और पित्तल का बना हुआ सुषिर यंत्र विशेष है। एह यंत्र सामान्य ती
न प्रकार का होता है:— इसका व्यास, टेनेर की न्याईं और आल्टो इसका व्यास ट्रम्बो
न की न्याईं स्वर नाम अर्थात पंचम, एक अर्थात मध्यम, इस्ट्राट (अर्थात कोमल
गंधार वह होता है बोलते हैं एह यंत्र और तीन प्रकार का है। पंचम मैं बांधा व्यास हुं
लंड मैं विशेष प्रचलित है। इसी तानिका बजाने और निषाद कोमल मैं बांधा होता है और
आल्टो एक अर्थात मध्यम, इस्ट्राट अर्थात कोमल गंधार मैं बांधा रहता है ॥ ट्रम्बो नं० ८
एह इतालि देश का शृंग यंत्र है ॥ ट्रम्बा मेरिना वा ट्रम्बा मेरिना नं० एह एक प्रका

वा

१८

नाय दो सौ वर्ष से भी अधिक इसके बनाये हुये बीते हैं एह लोप हो गया हुआ था प्रकट म
या है कदाचित वर्ष की कुमारी के आश्रम में हूबहू हुआ है॥ कुमेल ०८ एह एक युद्ध का
जयढक्का है। इसी तरह बजी जाती के जयढक्का को "गोमडुमेल" कहते हैं॥ कुयफुल ०९
एह एक लोहे का बलाहुआ युद्ध का यंत्र है। एह तो लविशेष और बजाउ ले के तमेला
लदेले के निमित बजाया जाता है॥ ३॥ उफवाजेफ ०८ एह ग्यारव और वार्वे रि देश मे
वर्तमान एक आनन्द यंत्र है। एह चार कोनाकार और बक्र रेखी रवल जीकवे मढाहुआ
होता है। एह यंत्र प्राचीन मिसर देश के स्कोयार ताम्बोरिन और यिहूदी देश के टफ
यंत्र को न्याई और हमारे देश के उफले यंत्र के साथ इसका संताआकार और कार्यगत
अनेक सादृश्य है। उस्मा भी इसी को कहते हैं। उफले भी॥ उफदे ०८ एह एक प्रकार का
भारतवर्ष का आनन्द यंत्र है॥ उवलगाएड पियानोफोर्टि ०८ एह प्रसिद्ध कुंजीयुक्त
यंत्र है। निउइयर्क नगर का जेमस पिरसर नामक जनेक व्यक्ति का मैरमाल
किया हुआ है इस यंत्र के प्रत्येक पार्श्व मे एक पूर्ण सप्तक करके कुंजी रहती है, दोनो
पार्श्वो मे दोई तर्फ कुंजी होती है॥ उवसडुम ०८ एह युद्ध का बजाने वाला इउरोपदेश

५८

एह दोनो पार्श्वों से ही बजाया जाता है ॥ उदाहरण ८० एह एक छिद्र नल यंत्र है। दोनो ही
नल पार्श्वों पर समस्थान पर हैं एक के कहे एह स्वर मान होता है। सो कारण एह साहेब क-
हते हैं कि हिंदु लोक इस यंत्र को पुंगी कहते हैं। किंतु हम लोक जानते हैं कि एह पुंगी की
न्याई दो नल वाला हो ले हैं भी जिसके साथ इस का संपूर्ण सादृश्य नहीं है। उदाहरण ८०
एह एक मुख वाला एक छिद्र नल यंत्र है। इस तरह का है जो, हार्मोनिक नामक इस को
प्रघट करने वाला है। १२०६ पूर्व वर्ष में सो जीउता था ॥ उदाहरण ८० बांस यंत्र के
मध्य में एह बहुत बजा और इस में बजा गंभीर स्वर निकलता है। इस में दो २ तीन, चार
और पांच पर यंत्र भी तारों से जोजित रहती है। किंतु साधारण चार ही तारों देखी जा-
ती है। और इस में र, ए, उ, जो जिस कल स्वर वादित होते हैं। उदाहरण ८० एह हिं-
दु देश का एक प्राचीन यंत्र है एक हहह चक्राकृति का बहु स्वर के एक पार्श्व चर्म आच्छाद-
न पूर्वक एह यंत्र निर्मित होता है ॥ एह यंत्र उत्तर पश्चिम देश में समधिक व्यवहृ-
त होता है। एहि अंगरेज लोक टाबरेट आरब देश के उप और यिहूदी देश के एक
यंत्र की न्याई है ॥ उदाहरण ८० एह हिंदु देश का एक प्राचीन और छोटा प्राचीन यंत्र में से
है। इसी यंत्र को ... हिंदुक लोक ... सर्प को पकड़ के खेल करने वाले लोक

वा

१८

108

व्यवहार करते हैं। इसमें निम्नमह्लक गट और वॉनरक्रीजक जो लोक हैं सो भी इस ही यंत्र को व
जाउते रहते हैं। कहा है कि एह महादेव जी को बहुत प्रिय यंत्र है॥ उओल — एह गि
हल देश का एक प्रकार का ग्रानक यंत्र विशेष है। एह ले वा दीर्घ आकार में गठित क्या
वल्ला या फुवा हमारे देश के ढोल के साथ इसका कितना क संज्ञा और कार्यगत सं
बंध है। सो जाओलिक जाति के लोक उओल का जिपोन नामक एक चित्रित लाठी के
द्वारा इसको वजाउने की रीती संपन्न करते हैं॥ उलो — एह एक प्रकार का तुरुष्क देश
का ग्रानक यंत्र है। इसका आकार वजी जाती ढोल की न्याईं है और युद्ध के समय इस यंत्र
को वजाया करते हैं। उद्गकान — एह वंशजाती का यंत्रविशेष है। उदसितो वा उ
दसितयानो एह छोटा वासन यंत्र है। एहि पैहि लैं अधिक व्यवहृत होता था। उद्व सि
मार — एह एक इउरोप देश का तत यंत्र विशेष है। त्रिकोण वा गून्य प्रकार का
काठ का वल्ला ज्या में दूरव के ऊपर मैं तारों वा तार बांधने के पीछे से एह यंत्र तैया
र होता है। और शालाई के बैठे इसको वजाने के वास्ते उद्दित होते हैं। और पारस्य, हि
न्दुस्तान, फिरंग इत्यादि देशों के इतिहास के यंत्र ये॥ उडकउ — एह एक दो तनु

ॐ नि वि शि वि

जाक ०। एह एक छोटा आनद्ध यंत्र है। भारतवर्ष इसका प्रचलन है॥ जकाकजेन ०।
एह एक कदशा तेज वाला अप्रचलित वाद्य यंत्र है॥ जिंजिम ०। एह हिंदु देशका एक प्राचीन
आनद्ध यंत्र है॥ जि....जीज ०। एह वाउलीन यंत्र का अप्रचलित नाम है॥ जुगजुगा वा
जुगजुगी ०। एह हिंदु देशका एक छोटा आनद्ध यंत्र है। एह जमरू शब्द का अपभ्रंश है॥
जुट्का ०। एह एक प्रकारका सुषिर यंत्र है। दोनो नल इकठे करके एह यंत्र बजाया जाता है और
तिसके एक एक नल मैं तीन छिद्र करे हुए होते हैं एक बजाउने के समय वोध हय जो दोनो म
नुष्य बजाउते होवेंगे। रूसी लोक इसीको बजाया करते हैं॥ जुट्सिफ्लोट ०। एह एक जर्मन
का सुषिर यंत्र है। जेकूरी ०। एह जिंजिम यंत्र का अन्यतर नाम है॥ जेनिसजर ०। एह पियानो फो
र्टे की न्याईं एक प्रकार का वाद्य यंत्र है॥ जेमिजहार्प ०। एह यिहूदी देशियों का एक प्रकार का
तत यंत्र है॥ किन्नर शब्द मे देखो॥ जेयार ०। एह एक प्रकार का मजेहोया यंत्र है॥ जेलिन ०। या १०
एह हार्प यंत्र का जेयेलस देश का नाम है॥ जोला ०। एह एक मजेयाहोया यंत्र विशेष है। एह प्रा
य देखने मे वे जिगोंदिया यंत्र की न्याईं है। वे जिगोंदिया गैंजु हमारे देश का अन्यतर ग्राम्य
यंत्र ढोलके साथ इसका आकार नाम और कार्यगत अनेक तहा का सादृश्य है। इससे एह बोध हो
ता है जो ढोल के बदले मैं ही एह निरमाण किया होवेगा सो सिंहल देश के लोक एही यंत्र बजाया

ड्रम०एह एक सुप्रसिद्ध युद्धकायंत्र है और इउरोपेप देशोमे इसका विशेषकर्के प्रचलन है। इस
से भिन्न पृथ्वीके और और देशोमेभी एह देखा जाता है। भारतवर्षका ढक्का और जेयढक्का और इउरो
प देशका ड्रम एह एक पर[illegible]के सामग्रीकयंत्र है। ढक्का और जयढक्का।। त्रिकोणेग०एह एक
वजायियानी फोर्टियंत्र है इस्के वदले स्वरमे तीन तक्र्कें तन्तु हैं।।ढ।।ढक्का०एह हिंदुदेशका
एक सुप्रसिद्ध और अति प्राचीन मजेया होयायंत्र है।।ढोल०एह हिंदुदेशका एक साधारण
और सामान्य मजेया होयायंत्र है।।ढोलक०एह हिंदुदेशका मजेया होयायंत्रविशेष है।।ढोलकी०
एह हिंदुदेशका एक छोटा ढोलकयंत्र है।।त।।तवलशामि०एह आधुनिक मिसर देशका एक
प्रकारका मजेया होयायंत्रविशेष है। सो आधुनिक मिसर देशके लोक इसीको विवाहआदि का
र्योंमे और संन्यासी लोक मेलामे इसीको वजायाकर्ते हैं। इस्का खोल रांग जेकाव स्वायाहो
या और मुखमे चर्मकर्के मढाहुया होता है। इसको वजाउनेकी रीती वगलमे रखकर्के वजा
ई दा है।।तवला०एह भारतखंडमे प्रचलित मढाहुया यंत्र है।। तम्वली०एह तुरुष्कजा
तियोंका एक प्रकारका युद्धका मढाहोयायंत्र है। इस्का आकार नेका शमे तवलाकी न्यों
ई होता है।।तायूस वा मायूरी०एह हिंदुदेशका एक ततयंत्रविशेष है।।तानपूर वुजर्क०
एह पारस्य देशका अति प्रसिद्ध ततयंत्रविशेष है। इसमे पांच ही तार जोयित और पांच ही
सारेका सेवद्ध होतेथे हैं कहीं कहीं इस्का गलावर्वै. लेवाकरके भागवीग्रमे[illegible]दर और

[illegible]

तानपूरा वा ताम्बूरा ०। एह हिंदु देश का एक प्राचीन तत यंत्र विशेष है। इसी को तुम्बु
रु वीणा तम्बूरा कहिते हैं॥ तायन ०। एह हाथ कर के बजाई दा है भारत वर्ष का मशहूर होया
यंत्र विशेष है॥ ताम्बोर ०। एह एक सामरिक युद्ध का आनद्ध यंत्र विशेष है॥ ताम्बोर आफूरेन ०।
एह एक प्रकार का ढक्का यंत्र है इसका खोल धातु का बना हुआ और केवल एक पासे चर्म करके मढ़ा हो
या होता है। सो दोनो तरफ से डंके कर के एह बजाया जाता है॥ ताम्बोर डि बास्क ०। एह एक छोटा
ढक्का विशेष है। इसका अरज चार इंची को अपेक्षा करके बेशी नहीं है, और एह कितनी क छो
टी घंटिका कर के युक्त हो कर केवल एक खंड चर्म से मढ़ा हुआ होता है॥ ताम्बोर डि हालगेस ०।
एह एक आनद्ध यंत्र विशेष और ढ़ल के बीच में खोदया होया तिसके एक मुख में एक पा
तला बकरे के अथवा भेड की खाल से एह यंत्र बना या जाता है। एह यंत्र अनेक प्रकार का है, इसके
मध्य मे कितना क दीर्घ पांच फुट और चौड़ा बीस वा तीस २: इंची होता है॥ ताम्बोर डि तला
पन स ०। एह एक आनद्ध यंत्र है। एक खंड काष्ठ का बीच में खोद कर के डिम्बाकार सें काम्बु
डे की न्यॊई इसका खोल बना या होता है और तिसके मुख में एक खंड पतले चर्म से बना
या होता है। इसका खोल और मढ़ने वाला चर्म लाल रंग का रंगया होया होता है। सो एक
छोटे डंके का बाग स्थिर कर के एह बजाई दा है॥ ताम्बोरिन ०। एह एक प्रकार का आनद्ध यंत्र है।
प्राचीन मिसर देश के आरब्य गिरया देश के, और यिहूदी इत्यादि देश के एह व्यवहार

११.

एह यंत्र वर्तमान समय मे इउरोप और आमेरिका मे जैसे गोलाकार निर्माण होया है या वर्तमा
न होता है, पहिले भी इसी प्रकार का था। अधिक तर इस समे के पहिली जाती के चार कोण वा
ले और लम्ब चतुष्कोण नाम्बोरिन यंत्र भी व्यवहार करते थे। कभी कभी ध्वनी की मधुरता के
निमित्त चार कोण वाला नाम्बोरिन यंत्र है जिसको आच्छादित चर्मपट मै एक का विभाजिका वं
ध्वनी संयुक्त करिके सम दोनो भागों से विभक्त किया होता है। एह यंत्र पुरुष जाती की अपेक्षा
करके स्त्री लोकों के पास ही अधिक तर व्यवहार होता है॥ नाम्बोरिन डि ब्रोमेनस॥ एह एक ढक्का
यंत्र विशेष है। साधारण ढक्का की अपेक्षा करके इसका खोल अधिक तर लंबा और सूधा होता है।
एह केवल डंके का कैं बजाइदा है॥ तिन्क्रेरी वा तेन्निरी॥ एह हिंदु देश का एक प्राचीन
ढ्वनल यंत्र है। एह देखलेने कि तना क इउरोप के व्यागपाइप यंत्र की न्याइं है। किन्तु पूर्वतन
ऋषियों के समय में कोइ कोइ तिन्निरी यंत्र व्यागपाइप के साथ अनेक अंशों मे मिलित है
इस समय का तिन्त्रीरी उसन हा कोन ही है; सुतरां व्यागपाइप के साथ इसका उतना सा
दृश्य नहीं है। इंगरेज लोक इसी को "तोन्ति" एही नाम दे रखा है। कोइ स्वाट र सनेरो
टेर नये जेस अक स इण्डिअस और ए एटो स्लिस नामक पुस्तक मे "तोन्त्रि" बोल क
र इस यंत्र का उल्लेख है। मिष्टार हैल साहेब मक्को लियार पर यन्त्र भाग मै मा मे विन

नामक प्रसिद्ध वाल्मीज प्रधान नगर मै चीन देश के संगीत कुशली के हाथ मे एह यंत्र देख
या था। स्वरउद्द्योयम आर हरी साहेब ने पारस्य देश मै इसी नमूना का यंत्र देखा था। उस देश
मै इसका नाम ॥ नेगामचाना ॥ मिसर देश के ॥ क्रोयास ॥ नामक यंत्र के साथ इस यंत्र का
विशेष सादृश्य है ॥ तुतुरी ०८ एह हिंदु देश का एक छोटा सा गयंत्र है। मंगल संवंधी कार्य मे अ
थवा देवमंदिर मे एह यंत्र वजाया जाता है ॥ नवजी ०८ एह तित्तिरी के समान होता है ॥ तुम्ब
की ०८ एह हिंदु देश का एक प्राचीन मउया होया यंत्र है। इसका आकार ठक्का यंत्र की न्याई है ॥
तुरी ०८ एह हिंदु देश का एक सुषिर क्या फूंक से वजाने वाला यंत्र है ॥ गयोश वया सितार ०८
एह सितार यंत्र की न्याई ईयावादेशवासीयों का एक तत यंत्र है। अधि किंतु इसका आकार भार
तवर्ष की कच्छपी वीणा की न्याई है ॥ त्रिगोतन ०८ एह प्राचीन मिसर देश का लापार जा
ती का तत यंत्र विशेष है। किंतु इसका आकार त्रिकोण है। ग्रीक देश के पंडित सफोलि
स इसाकी प्राय जियान यंत्र विशेष बोलते हैं। पूर्व काल मै आलेक जाण्ड्रिया निवासी आ
लेक जान्द्रार आलेक जान्द्रिनस नामक प्रसिद्ध वादक रोमनगर मे एही यंत्र को वजा र
कर्के विशेष सरोंकाता सकिया था अर्थात् वजा प्रसिद्ध होया था। एह यंत्र सोलह और पार
स्य देश मे प्रचलित था। इस प्रकार का एक यंत्र १८२९ वर्षाब्द मे पिविह नगर मे वस्तलाया होया
था। केवल तिसका आकार अर्ध गोलाकार और तिस मै वीस २० तारों जोड़े यांहे येया ॥

१११ गितंगीवीणा ० ९ एह हिंदु देशका एक पुरातन तत यंत्र विशेष है ॥ त्रिपदियन्त्र ० सायार ० ९ ए
ह एक प्राचीन तत यंत्र पै है। इसीको त्रिपदीवीणा कहते हैं। इस सृष्टि किया है जे, जनिमिथियाने
पिथागोरस नामकने इसी यंत्र का सृष्टि किया था ॥ गोवली ० ९ एह हिंदु देशका एक प्रका प्राची
न आनद्ध यंत्र है ॥ घ ॥ घाला ० ९ एह एक भारतवर्ष का घन यंत्र विशेष है इसकी विशेष व्याख्या
घडी शब्द मे देखो ॥ घिजोवी ० ९ एह एक तत यंत्र है। सो पहिले नाट्य गीत और धर्म मंदिर मे
एह यंत्र बजता होता है। इसका आकार वजी जाती के ल्युट यंत्र की न्याई होता है, केवल दोनो स्कं
ध होते हैं। तिन्हके मध्य मे दूसरे स्कंध मे चार ही बजै जस्वर विशिष्ट तंतु योजित होते हैं ॥ घुवल
वा घुवलघुट ० ९ एह एक प्रकार का प्राचीन सुषिर यंत्र है ॥ घु ० ९ एह एक प्रकार का प्रा
स देशका वा फ्लीन जाती का तत यंत्र विशेष है ॥ दगड वा दगडा ० ९ एह हिंदु देशका एक
आनद्ध यंत्र है ॥ दामामा ० ९ एह दगड यंत्र ही है ॥ दायरा ० ९ एह ताम्बोरिन वाद्य की न्याई
एक प्रकार का पुर्मी देशका आनद्ध यंत्र है ताम्बोरिन वाक्स एह यंत्र तात दर्लोके नेमि
न व्यवहृत होता रहता है ॥ दायापुल ० ९ एह एक हिंदु नल यंत्र विशेष है ॥ दायोवि ० ९
एह एक दो छिद्र वाला सुषिर यंत्र विशेष है ॥ दारा ० ९ एह ताम्बोरिन यंत्र की न्याई हिंदु
देशका एक आनद्ध यंत्र विशेष है। सो एक तान वादन के समय मे हिंदु लोक एहे व्यवहृत
करते हैं ॥ दारबुक ० ९ एह एक नया अरब का मिसर देशका आनद्ध यंत्र है ॥ ॥ ॥

दिन्तनञ्जलिमृ वा दिन्तलिखेन्जोग ०। एह १२०० वर्षोद्धमें भियानानिवासी मुलार साहेब
कानिमोलर्ड याहेया प्रसिद्ध एक वाद्य यंत्र है ॥ दुंदुभि० ॥ एह प्राचीन हिंदु देशका एक प्र
प्रसिद्ध प्रान यंत्र है। देवता इसी यंत्र कौं व्यवहार करते थे। तिसके भिन्न रामायण महाभारता
दि सब प्रसिद्ध ग्रंथोंमें युद्ध के समय एहि यंत्र व्यवहृत होनेके अनेक स्थलोंमें लिखित हैं। पहि
लें मांगल्य कार्योंमें भी दुंदुभी यंत्र बजवाते थे ॥ दोदकक ०। एह बारातंत बाला एक ततयंत्र वि
शेष है ॥ नकार (नन्द०। एह प्राचीन हिंदु देशका एक प्रकारका सुषिर यंत्र है। एह लं
बाईमें बारांगुल होता है। इसीतरह "महानन्द" नामसें और एक प्राचीन सुषिर यंत्र था।
जो लंबाईमें दशांगुल था ॥ प्राचीन हिंदु लोक "जय" और "विजय" नामसें और दो
नौवंशीथी। "महानन्दस्तथानन्दो विजयोऽथजयस्तथा। चत्वार उत्तमा वंशा मातङ्गमुने
सम्मताः ॥ दशांगुलो महानन्दो नंद एकादशांगुलः इती संगीतदामोदरे ॥ नववनल ०।
एह एक फिनस देशका वाद्य यंत्र विशेष है। वेकस नामक देवताके महाभोजके समय
एह यंत्र व्यवहृत होताथा। नरसिङ्गा वा तुरंग ०। एह संपूर्णरूपसें गानेका बाजा याहे
या नेपालदेका श्रृंग यंत्र है ॥ नल ०। एभारतवर्षका आनद्ध यंत्र विशेष है युद्ध के समय
घोडेकी पीठ ऊपर राखकर के इसकों बजाउते हैं ॥ नाकारा ०। एह एक प्रकारका आनद्ध यंत्र है।

श्री.

वा·

११२ पहिले तुरुष्क देशमे इसका प्रचलन था। एह स्पेन देशके काष्ठनेट यंत्रके आकार से तैसि
तहै किंतु ओयाल्ड पली साहेबके मतमें एह चीन देशका एक त्रिकोणलवेलेप्याहोया यंत्रविशे
षहै॥ नाकाराल० एहकाष्ठनेट् कीन्याई एक प्रकारका यंत्र है। किंतु ते स्कीरूपेदानाकवेवजा
है॥ नाकचेर० करताल यंत्र है॥ नाकचेरा० एह सामरिक उ मयुद्धके यंत्रोका समूहका
112 वरुवचनांत नामहै॥ नाकचेरोल० एहवड्डतवजाघका यंत्र है॥ नाकोस० एह एक प्रका
रकामिसरदेशका वाद्ययंत्रविशेष है। इसके दोई खड़ विमलके पात्रमे एह यंत्रते रखित हो
ताहै। सो मिसरदेशके कफटिक धर्ममंदिरसमूहहैं एह व्यवहृत होता रहिता है॥ नागफ
लि० एह तुरी कीन्याई एक प्रकारका सुषिर यंत्र है। तुरी एह नेपाल देशमे व्यवहृत हो
तारहिता है। एह यंत्र साधारण नाममें सेवल्लयाहोताहै। इउरोप देशके पंडितलोकइसीको प्र
चहर्णीकीन्याई कहिते हैं॥ नागरा० एह भारतवर्षका सुप्रसिद्ध आनद्ध यंत्र है। एह यंत्र दो
प्रकारका है; — एक छोटा नागरा ओर महानागरा॥ नागरीट० एह आविसिनिया देश
मे प्रचलित एक प्रकारका आनद्ध यंत्र है॥ नाचपर्ल० एह आर्गयान यंत्रका एक बंधनी
विशेष है॥ नाजार्ड० एह भी आर्गयान यंत्रकी एक बंधनी है॥ नाफारि० एह एक भारतव
र्षका सुरगयंत्रविशेष है॥ नावला० एह प्राचीन मिसरदेशका एक प्रकारका वाद्य यंत्र है।
यिहूदीजातीके इसीकोनेवेलकहिते हैं॥ नावूलियम० नावला यंत्रका होर दूसरा नाम है॥

नासाट ०८ एह धातु का बना हुआ एक सुषिर यंत्र विशेष है॥ नाफिरि ०८ एह मालाई देश मे प्रचलित एक सुषिर यंत्र है। भारतवर्ष के नागस्वर यंत्र मालव देश से आगमन करके इसी नफ्री का नाम प्राप्त होया है॥ नेकलो ०८ एह ओबय यंत्र की न्याईं एक प्रकार का प्राचीन यंत्र है॥ नेसान ०८ एह प्राचीन मिहदु देश का एक प्रकार का शानइ यंत्र है॥ नुड़ ०८ एह एक भारतवर्ष का सुषिर यंत्र है॥ ने ०८ एह एक मिसर देश का हिनल जाती का सुषिर यंत्र है। इसे दोनो नलो का ही लंबाई बराबर है, किंतु किसी किसी का और एक बजा लंबा होता है। अंगरेज लोक इसी को साधारण में दाविल फ्लुट कहते हैं॥ पहिले धर्म मंदिर मे जिकार नामक नृत्य काल के समेइ इसी यंत्र की बाद नेकया संपादित हो॥ नेआम्बाना ०८ एह पारस्य देश का हिनल यंत्र विशेष है। ने – नल और आम्बाना – स्थली। नेकाफिर ०८ एह यिहूदीयों का एक प्रकार का सुषिर यंत्र है। इसका स्वर मनोहर है॥ नेकेब ०८ एह यिहूदीयों का एक सुषिर यंत्र है। नेचिलय ०८ एह यिहूदी देश का एक प्रकार का सुषिर यंत्र है॥ नेबेल ०८ यिहूद देश का सितार जाती का तत यंत्र विशेष है। इसी का और एक नाम नफर है। इउरोप देश के पंडित लोक कहते हैं जो, एह यंत्र मिसर देश से यिहूदी लोक ले आए थे। यिहूदीयों को आसोर नामक और एक यंत्र सो इसके ही न्याईं, किंतु तिसमे दश

113

तार जोजी होई होती है। और इसका गल्प देशावहे तमिलाहुआ होताहै। सोकहिते हैं कि
इसी सेवजो अधिकतार बाधनहीं सकते॥ मौवत०८ एह भारतवर्षका हाम सेवड़ा नागरा यंत्र
है। इसीकों हीमहानागरा कहिते हैं॥ पा॥ पकि०८ एह कैटेलडुम यंत्र है। तिपानी शब्द मैंव
शेष देखो॥ पबिन्त्र स्मिवेलस०८ एह यिहुदी और गीक देशका एहि एक प्रकारका घनयंत्र
था। सो जानिजारेद नामक द्वारासमर संगीत मे इसी तन्हाका यंत्र व्यवहृत होता है॥ पटपटी०
एह छोटे बालुकोंका एक प्रकारका वजाओ लेवाला यंत्र है। इसीकों एक प्रकारकी डुकडुकीभी
बोलसकते हैं॥ पएटलनवा पएटलियन०८ एह हार्पसिकर्ड यंत्रका एक नाम है॥ पप्रु
गोलियान्द्रस्थि०८ एह प्राचीन गीकदेश एक शुषिर यंत्र विशेष है॥ पमार०८ एह
एक प्राचीन शुषिर यंत्र है॥ परिवादिनी वीणा०८ एह हैं दुलोकोंका सात तंतुवाला एक
प्राचीन ततयंत्र है। अमरकोश अभिधान मे इसका उल्लेख है॥ पवक०८ एह प्राचीन गीक
देशका एक तत यंत्र है॥ पलिकर्ड०८ एह एक प्रकारका तत यंत्र है और धुतबीकरके वजाई
दा है १७५९ वर्षाव्द मै एह यंत्र प्रसिद्ध हो याहै सो भारतवर्षके एसवार यंत्रके साथ कि
तनाक यथार्थ संबंध है॥ पलिप्थङ्ग०८ एह प्राचीन देशका एक प्रकारका ततयंत्र है॥

परिशिष्टक दृष्ट०८ एह प्राचीन देशका एक प्रकारका संगीत संबंधी वाला ततयंत्र विशेष है॥

इससे पैहले ५ ८ पलिप्लेकट्र०८ एह एक बहुत तंतुवाला ततयंत्र है। सो पहिले समय मो हमारे देशमे
भी इसी तन्हाका यंत्र प्रचलित था। शास्त्रकार तिसको "शततंत्री" "वीणा" एहि नाम

पमिरिदिक ०८ एह एक छोटा अग्रयान यंत्र है । यमे मंदिर मै व जैगत्र यान यंत्र के साथ इसको
भी बजाई दा है ॥ पारखेमाज ०८ एह हिंदुदेश का हमरी सिद्ध मृदंग यंत्र का पारस्य नाम है । अ
रब और पारस्य देश मै भी इस यंत्र का प्रचलन है ॥ पाटकज ०८ एह श्याम देशियों का एक
प्रकार का वाद्य यंत्र है । इसका आकार कारिलन्त यंत्र की न्याई होता है कारिलन्त शब्द मे इसकी
व्याख्या हय ॥ पाटल ०८ एह एक ब्रह्म देश का कुंभीर की आकृति के सदृश तत यंत्र विशेष है
जलजीव वशेष है ॥ पाटा ०८ एह मेरे जो मिट्टी से बने माल का यलिक देपा सिका काष्ठ नि
र्मित करताल यंत्र ॥ पाणिग्रा येराहार ०८ एह एक गामे का वलान्त हुआ छोटा वाद्य यंत्र है ॥
पाणिइ यान पार पुत ०८ एह यकृत प्राचीन और आयाम के विना होता हुआ वाद्य यंत्र है । कित
ने का भिन्न भिन्न व जैसे लेन लत्र कठु कके एह यंत्र निर्माण कहे हैं । इसी नल का तिन्न भाग अ
वह) के वल ऊपर का भाग आच्छादित रारव के और फूक मार के इसको बजाउ दे है । इस यंत्र
की बजाने से तीसंपादित होती है । सोई नल भिन्न आकार को होले से हर की उच नीचता का
प्रघटता होता है । सो प्राचीन काल मे गणिक देश मे इसका प्रचलन था ॥ पाराइरा ०८ एह एक
तत यंत्र विशेष है ॥ पाराइरिला ०८ एह एक चार तंतु वाला छोटा तत यंत्र विशेष है ॥
पाराइरि कोम्ब ०८ एह बाजली न यंत्र की न्याई एक तत यंत्र है ॥ पाराइजारा ०८ एह पोलराइ देश
मै प्रचलित एक छोटा तत यंत्र है ॥ पानिव ०८ एह एक मार त वर्ष का छोट एक ढक्का यंत्र है ॥

७५.

बा

११८ पुलायिजोमागादिस्तू ०(ऐरीक देशकाव जानेवाला यंत्र विशेष है। साधारणलोगोंके इसे ती
कोंमागादिस्तू यंत्र कहितेहैं ॥ पानस पाइप्स ०(एह एक अति प्राचीन सुषिर यंत्र है। पान्सेड बी
न पाइप्स एही है॥ पानसक्रोट ०(एह एक प्राचीन सुषिर यंत्र है॥ पिच पाइप ०(एह
एक छुद्र सुषिर यंत्र है विशेष॥ पिजवु, पिपा, पिपिज और पिबु एसे [illegible] ने पसें पा
114 इप यंत्रके देशी, हुडूदेशी, फराशी और अयेलश नाम है॥ पियागोपि पानलायार ०(
एह एक तत यंत्र विशेष है। अकदा कई सूएही है॥ पिनरकम ०(एह गितारजातीका प्राची
न तत यंत्र विशेष है। इसमें नौरूप हीतंतु जोडी होइ होती हैं और अंगुलीके आघातसें वजा
इते हैं॥ पिनाक ०(एह हिंदुदेशका वहुत पुराणा चिरकालका एक तत यंत्र विशेष है।
केहाहै, कि महादेवजीने इसीयंत्रकी सृष्टि करी है॥ पिनाकीवीणा ०(एह एक वहुत प्रा
चीन हिंदका तत यंत्र है। इसीका और एक नाम पिनाक है॥ पिपेरील वा फिफेरो ०(पाइ
प किम्वा व्यागपाइप यंत्र एही है॥ पिवुकार्ण ०(एह हर्ण पाइपकी न्याइं एक प्रकारका
सुषिर यंत्र है। अयेलस देशमें एह साधारण देखा है॥ पित्ता ०(एह एक व्यागपाइप यंत्र है।
पिपाटि ०(एह पित्तलका वनाया फुआकर नाल यंत्र है। इस यंत्रके दोनो पान दोनो हाथों
में लेकर्के आपसमे टकराउ ले हैं अत्यंत ज्नज्न शब्द निकसता होता है। केन्तु वजा

जयढक्का के साथ बजाए जाते हैं कहते हैं कि इसका शब्द कितना क उनके साथ मिल जाता है। सो
दो दूध्यान करताल एक यंत्र बोलकर गणना कर लेने योग्य है ॥ पियानिनो ०८ एह छोटा पिया
नो फोर्टि यंत्र है ॥ पियानो ग्रुप ०८ एह सदृश पियानो फोर्टि यंत्र है ॥ पियानो फोर्टि गोटोर ०८
एह एक अंग्रेजी ततयंत्र है। इसमें छोटी कुंजी और तन्तु के अनुसार धातु की तार बांधी होई
होती है ॥ पियानो फोर्टि ०८ एह एक बड़ा प्रसिद्ध बजाने का यंत्र है। इसी को पियानो फोर्टी भी क
हते हैं ॥ पुंगी ०८ एह हिंदुलोक का एक प्राचीन शुषिर यंत्र विशेष है। प्राचीन काल में एह यं
त्र मुख से नहीं बजाए लेकर के नासिका से बजाए जाते थे बोलते हैं इसी को नासयंत्र भी कहते हैं।
सो पहिले से हिंदुलोक के धर्ममंदिर में एही यंत्र व्यवहृत होता था। अब इस समय में उपलक्ष
नेद घटने में मांगल्य कार्य के बदले सर्प को खेलाने वाले लोक इसी को व्यवहार करते रह
हैं। सो साइबेरी और फिजिद्वीप में भी इस प्रकार के यंत्र का बहुत प्रचलन देखा जाता है ॥
पेकहिन ०८ एह एक गीतदेश का प्राचीन ततयंत्र विशेष है। एशियाटिक के मत में साफोना
मक का किया होया बहुगुणे बदलते होया था ॥ पेटिट टाम्बोर ०८ एह छोटे ड्रम यंत्र का ए
क नाम है ॥ पेंटिकर्डिकेटन ०८ एह पचास ५० तन्तु वाला एक प्रकार का ततयंत्र है। सो
इटाली के अन्तर्गत नेपल्स वासी फेवेजो कलम्ब नामक एक जन तन्त्रा न व्यक्ति के आशा से ए
ह यंत्र निर्माण किया गया है ॥ पेपा ०८ एह चीन देश का शुषिर यंत्र विशेष है। इसका

बा.
११५

स्वरग्रन्थन्नती प्र है। एहीस्वर तीव्रताकमाउ लेके निमित्त सामरहन नामक और एक सुषिर
यंत्र इसके साथ बजता रहता है ॥ पूजिऊेला०(एह एक प्राचीन रोम देश का सुषिर यंत्र विशेष
है ॥ प्रेक्ट्रम०(एह तंतु सम्बन्ह मे अंगुलि वा धनुषो के परिवर्त्त मे इसी द्वारा आघात करके
बजाउते है। संस्कृत भाषा मे इस प्रकार के यंत्र के मजराप ताउ नी और शलाका कहते है।
पारस्य भाषा मै इसका नाम मिज़्राव है ॥ पोच०(पोचेट०(वा पोचेटा०(एह छोटा वाद्य लीन
यंत्र है ॥ पोरेटेबल रवाव (अर्थात् कवि रवाव०(एह हिंदु देश का एक प्रकार का एक तंतु वाला
यंत्र विशेष है। इसके साथ एक तंत्रिका का विशेष भिन्नता नही है ॥ पोष्ठ हर्न०(एह एक साधा
रण शृंग यंत्र है। साजा का काम करने वाले जो हलकारे होते है उन्हको एह व्यवहार कर
ने योग्य होता है ॥ फट्टिक्स०(एह प्राचीन मिसर देश का एक सुषिर यंत्र विशेष है। इस का आ
कार वेल मृदंग की न्याई है ॥ फर्मिटक्स०(एह रोमक देश के पूजिऊेलार यंत्र की न्याई ए
क प्रकार का प्राचीन मिसर देश का सुषिर यंत्र है ॥ फर्मिक्स०(एह लायार जाती का एक
अति प्राचीन ततयंत्र है ॥ इस प्रकार का यंत्र आसिया देश मे समधिक प्रचलित था गंघ मे इस
का उल्लेख है ॥ फार्कुन०(एह फेच्छ के मत मे इसी तरह का लायार यंत्र है ॥ फाइफ०(एह
जो जिल अथ इगिउ पान देश का एक प्रकार का सुषिर यंत्र है। इसी से तीव्र स्वर उत्पन्न होता है ॥ फा ट
फाइफर०(एहि इसी को फाइफ भी कहते है ॥ फागट०(फागट वा फागटो यंत्र का संक्षिप्त

115

फागट वा फागटो०८ एह वासुन यंत्र है देखो इसकी व्याख्या है॥ फागोट्टिनो०८ एह एक छोटा वासुन यंत्र है॥ फागटोन०८ एह डबल वासुन यंत्र है॥ फुमोन०८ एह यिहूदी देशके धर्म मंदिर मै पूजा उपासना के समय जो छोटा घंटा बजाया करते हैं एह तिसका नाम है॥ फिजलू०८ एह एक प्रकारका वाऊलीन जातीका ततयंत्र विशेष है एह धनुषी करके बजाइदा है। भारतवर्ष आरब, पारस्य, चीन, जापान, ब्रम्हदेश इत्यादि मे इस यंत्रका प्रचलन है। तब क्यो नहि देशविशेष मै अवयव का प्रभेद लक्षित होता है। हिंदु देशका सारिंदा, साउङ् प्रभृति ततयंत्र इसी जातीका होता है॥ फिडिकिउला०८ फाइजल्ह' वा 'लायारकी' न्याई एक प्रकारका ततयंत्र विशेष है॥ फिथेलि०८ एह फिजलू यंत्रका प्राचीन नाम है॥ फिनेसि०८ एह प्राचीन फिनसिदेशियो का एक प्रकारका वाद्य यंत्र है। तिस जातीके नामानुसार सेरस यंत्रका नाम करण किया गया है। फिफे०८ एह जर्मन की भाषामे अंगरेजी पाइप यंत्रका एहि नाम है॥ फिस्त्रिउला०८ एह अवका फ्लाजिओलेट किम्बा फ्लुट आवेक यंत्रकी न्याई एक प्रकारका प्राचीन सुषिर यंत्र है॥ फिस्त्रिउला जेमीनिका०८ एह जर्मन देशका सुषिर यंत्र विशेष है॥ फिस्त्रिउला उलिक्स्०८ एह एक प्रकारका सुषिर यंत्र है। इसीको ट्रैवियाङ्गगुल "वा" फ्लुट आवेक "कहिते हैं॥ फिस्त्रिउला पानिस०८ एह प्राचीन ग्रीकदेशका एक बहुतन्त्र रकाल का सुषिर यंत्र है। इसी को "सिरंगा पानस" और "पा

सोई यासिंह यान् पाइप्स हमारे लोक अंग शब्द के साथ सर्विंगा शब्द का अनेक उच्चार
लगते हाव हृदयलवत होता है ॥ इससे एक बोध होता है जो अति प्राचीन काल से भार
तवर्ष का अंग यंत्र सो प्राचीन गोल देश में नाम माय मेशक से आलेपाया था। हम लोक के
महादेव जी को जिस तरह अंग यंत्र प्रिय है, सो प्राचीन गोल देश के पान नामक देवता भी
उसी तरह सिंगा यंत्र को प्यारा मानते हैं। इसी निमित्त इस यंत्र का हेरव खरनाम "सि
गा पनेस" भया है एह अनुमित होता है ॥ फिस्चुला पाष्टोरालिस् ०८ एह प्राचीन गो
ल देश के बकरी भेजों के चारने वाले लोकों का एक सुषिर यंत्र विशेष है ॥ फिस्चुला म
लगारिस् ०८ एह एक प्रकार का सुषिर यंत्र है ॥ फिस्चुला मिलिटारिस् ०८ एह काष्ठ काव
ल्लदु या आरयोन् यंत्र का वंधनी विशेष है ॥ फिस्चुला हेल् मेटिका ०८ एह जरमन देश का
सुषिर यंत्र विशेष है ॥ फिस् हार्मोनिका ०८ एह एक प्रकार का प्रसिद्ध वाद्य यंत्र है। एह हे
याकेल नामक कारीगर ने लन्दन किया हो या और हाम्बर्ग नगर के बक मान महाराज अन्ताल त
सो पतली धातु की जिह्वा के कंपने से आर्गोन यंत्र के रीड पाइप की न्याई इसकी धनी प्र
घट होती है। फरासी और अंगरेजी "आर्गुएका प्रेसिफ" नामक हारमोनियम यंत्र इसी
तरह सें निर्मि होता है। वकमान द्वारा यो सम फिस हार्मोनिका निर्मित है तिसकी अपेक्षा

करके सेज और जिसकी मस्ता संचालन क्रिया के अधीन हामे रखा धौनी और आश्चर्य्य को
शालमहकार से बजी चतुराई की सहायता से संपादित होता है॥ फुगारा ० एह एक प्राचीन सु
षिर यंत्र है॥ फुफ्रा ० एह एक ग्राम का व्यवहृत्या नेपाल का सुषिर यंत्र है। इसकी लंबाई साढे
तीन फुट होती है। नेपाल देश के नेवार जाती एह यंत्र व्यवहार करते हैं॥ फुलिया ० एह
नेपाल देशियों का करताल जाती का ग्राम का व्यवहृत्या घन यंत्र विशेष है। एह यंत्र नेपा
ल का नेवार और परवत देशी व्यवहार करते हैं॥ फोर्टवीरला ० एह एक प्रकार का पियानो
फोर्टे यंत्र का नाम है॥ फ्लुटाएंटा ० फ्लाटारेंडा ० वा फ्लाटिनो ० फ्लटोपिकलो "अर्थात छोटा
फ्लुट यंत्र "पिकलो" शब्द का अर्थ छोटा। इतालीय भाषा में लिनो पिकलो "अर्थात छोटा बांसु
री न यंत्र इत्यादि जानने॥ फ्लुटो ० एह एक प्रकार का फ्लुट यंत्र है। एह साधारणतः काष्ठ से बना
हुआ होता है। किन्तु कोई कोई काच वा हाथी के दांत से भी बनाया होता है। इस यंत्र में जो सब
पर्वत बजाय करते हैं। फ्लुट। इताली देश के लोक प्रायः "फुट" मात्र को ही "फ्लुटो" कहते हैं
फ्लुटो ग्रामानीको ० एह जरमनी देश का सुषिर यंत्र विशेष है॥ फ्लुटोजोवासि ० एह फ्लुट ग्रावे
क है॥ फ्लटोपिकलो ० एह छोटा फ्लुट यंत्र है। इसका स्वर अन्यतिशय के तीव्र है॥ फ्लुटोन ०
एह एक प्रचलित स्वाद का बजानेवाला फ्लुट यंत्र है॥ फ्लाजिओलेट ० एह एक फूं
क देने वाले नल का सुषिर यंत्र है। सो हमारे देश में सरनाई इत्यादि सुषिर यंत्र में इसप्र

वा.
११७

कारका "माउथपीस" अर्थात् फूंक मारने वाले नलीमे लगाते हैं। फ्लाजिओलेट यंत्र
काष्ठ के नली से बना होता है और इसका स्वर मधुर अर्थात् मनोहर होता है। कारण एकोलेसा
हैं व कहते हैं कि प्राचीन मे वैदिक के लोक रामीए ह यंत्र व्यवहार करते हैं॥ फ्लाजिमेट ०८८ ह
फ्लाजिओलेट यंत्र का एक और नाम है। इसकी व्याख्या फ्लाजिओलेट शब्द मे देखो॥ फ्लूजोलेट ०८
एह हार्मोनिक ई यंत्र है। उसीमे इसकी व्याख्या देखो॥ फ्लूट ०८८ एह एक वंश प्रतिकृति सुषिर फ्लू ५
यंत्र है। एह यूरोप देश के ऐकतानिक मे व्यवहृत होता है। सोन्चिर कारस्व र रखे हुले के
मात्रे इसका व्यवहार है। और एकतान वाद्य के स्वर संधान की सुनीकदु नाग्र पनोदन
करिके सुति माधुर्य के निमित्त क्या दूर करके सुनते
मैं स्वच्छ होवे और इसी मे कंपन ग्राही दो उनामी उभरते हैं और लम प्रकार का विदोष
रूपे हाइत्यादि विशेष बक के भा समान हो सकता है। एही यंत्र ग्राफिरे याद देश, प्राचीन
मिसर देश और य्येहदियों के देश मे था॥ केरिया, ताई प्रव, आमिया नाहनर प्रभृति
देश मे भी एही व्यवहृत होता था। एह यंत्र बहोत तरहका होता है, किंतु स्ट धारलना: वि
श्राट और इफाट एह दो तरहका यंत्र देखने मे आउता है॥ फ्लूट आवेकू ०८ एह साधार
ण फ्लूट यंत्र है॥ फ्लूट आलेमगिउ ०८ एह जर्मन देश का फ्लूट यंत्र है॥ ॥ ॥ ॥

फ्लुट एचोमिनी ०(एह एक सुषिर यंत्र एक प्रकार का यंत्र है ॥ फ्लुट गिगुज ०(एह ए
क सुषिर यंत्र विशेष है ॥ फ्लुट ज'मोर ०(एह एक प्रकार का सुषिर यंत्र है ॥ फ्लुट गु
फरेट ०(एह एक प्रकार का सुषिर यंत्र है ॥ फ्लुट डिरेसिउ ०(एह एक नलाकार मित
फ्लुट यंत्र है ॥ फ्लुट जिलोसि ०(एह उत्सव मन्दे सुनकें खुलाउ लेवाल्यों का एक प्रकार
का सुषिर यंत्र है ॥ फ्लुट एक सुरसि ०(एह एक सुषिर यंत्र विशेष है ॥ फ्लुट एक चाम्पत ०(
एह एक अग्रानि वेधनी विशेष ॥ फ्लुट औसि ०(एह एक सुषिर यंत्र विशेष का नाम है । फ्लुट
वेरे ०(एह धातु का बना हुआ सुषिर यंत्र विशेष है ॥ फ्लुट सामिटर ०(एह एक सुषि
र यंत्र विशेष है ॥ वं ॥ वंसी ०(एह हिन्दुदेश का एक प्रसिद्ध सुषिर यंत्र है । एह बांस
की पोरी से बनाया जाता है । इसका नाम वंश-दण्ड, वंशी हो गया है । मुरली, मुरल वंशी
वेणु इत्यादि सुषिर यंत्र वंशी जाती के हैं ॥ वक ०(एह एक प्रकार का सुषिर यंत्र है ।
वन्दोर ०(एह फ्लुट यंत्र की न्याई एक प्रकार का तत यंत्र है । लाएज नर्गेवाली जन जोस
त नाम कला हे वहि तिसका वर्णन पाया है राजा एलिजेवेथ के राज्य काल में एह यंत्र प्रसि
द्ध हो गया था ॥ वम्बिवल ०(एह दिल्ली तथा के मत में एह ग्रीक जाती का एक प्रकार का सुषि
र यंत्र है सो बजानेवाले लेकर उपनी कमर में एह बजाया जाता है ॥ वरु ०(एह एक
तुरुक देश का लोहे का बना हुआ सामग्री के रूप में का सुषिर यंत्र विशेष कहते हैं ॥

३३५ ब्र.

वलेका ०। एह एक प्रकार का ततयंत्र है। इस्मे दो ईं तारें लगाई होई होती है। तिवर
साहेब कहिते हैं, कि एह यंत्र अति प्राचीन और यहूदियों का, तातार, आरव देश के
और मिसर देश के पास व्यवहृत होता है॥ वल्लकी वीणा ०। एह प्राचीन हिंदु दे
श का एक प्रकार का तत यंत्र विशेष है। अमर का श मे इसका उल्लेख है॥
वसनेत्रि ०। एह एक प्राचीन सुषिर यंत्र है। सोला वर्ष की
अवधी के शेष भाग मे हुवरीस जिओ भन्ते वसिन्ते नाम क का कियाहोया
अवटमया है॥ वंशी ०। एह वंशी यंत्र के नामका अपभ्रंश वंशी है॥ ॥
वालिकेओकलो ०। एह एक प्रकार का वाद्य यंत्र है। दक्षिण प्रदेश के किसी किसी स्था
न मे एही यंत्र साधारण देखा जाता है॥ वागाना ०। एह अबीसिनिया देश मे प्रच
लित लायार जाति का यंत्र विशेष है। इस मे दश तार जोजित होती है। निउवियादेश
की किसार के साथ इसका अनेक तरह का सादृश्य है॥ वाजोर ०। एह एक आफ्रि
का देश का गितार के सदृश ततयंत्र है। सो उक्त देश के कोई कोई जाति एहि यंत्र व्य
वहार करते हैं॥ वाटिस्टन ०। एह एक प्रकार का घन यंत्र विशेष है। आर्मिणीय जा
ति का कियाहोया धर्म मंदिर मे एह यंत्र बजाया करते हैं॥ वान्दोरा ०। एह सो रे

का वल्लो होया वातों नारोसनगाँई यो होयाँ इसमे एक प्रकार का प्राचीन तन्त्र यंत्र है ।। वाईग्र
र्यान् ०(एह एक प्रकार का वाद्य यंत्र है । इसे पछीको न्याई सुंदर मधुर स्वर निकलता है सो
कहते हैं इससे इसका ए ता नाम होया है । फरासी लोक इसीको ... कहते हैं । एह यंत्र जर्मनि
देशमें बहोत प्रचलित है ।। वागिटन ०(एह एक सुंदर स्वर वाले वाद्ययंत्र का नाम है । मायो
लीउ वोर दोमें देखो ।। वाल्विटन वा वाल्विटम् ०(एह एक ग्रीक देश का तत यंत्र विशे
ष है । प्राशकीयन नामक का किया होया एह प्रघट भया है) किंतु केसी कि सम्प्रदाय
के मत मैं प्राना क्रियन ने इस यंत्र का प्रघट किया है वे कस नामक देवता के नाम से ए
ह उत्पन्न हुआ है ।। वाला फो ०(एह आफ्रिका देश के अंतर्गत सेनि गांबिया प्रदेश
मैं रहिने वाला मांदिंगो सजाति का और हार्मनिकन् जाती क तत यंत्र विशेष है । इसमें
इंगरेज लोकोंके ज्या याट निक स्केल अर्थात् शुद्ध स्वर ग्राम व्यवहृत होता है ।। वालाला
इका ०(एह रूसिया देशमें बहुत मानता तत यंत्र विशेष है । चीन देश के सानहेन और जापा
न देश के सामसीन यंत्र के साथ इसका साहश्य प्राय एक ही स्वरूप है । एह यंत्र अति
प्राचीन और पूर्व देश से इस को उत्पत्ती है ।। वासुन ०(एह एक सुंदर उत्तम स्वर और बहुत
प्रसिद्ध सुषिर यंत्र विशेष है । और अंगरेजी इकट्ठे सब बाजे बजाने मैं व्यवहृत होता है इ
समैं पहिले कोई कुंजी नहीं थी ; सो उस समय में इससे जो सकल स्वर बजाए जावें

६६५

७।

कष्ट कर बोध होता था, सो इस समैय में सहज में ही प्रतीत होता है। इसी को सर्वदा बार
ऊंप से बांध रखते हैं। किन्तु वो कोई न वादक लोक तीन चार स्वर ऊपर से बजाउते हैं न करे
ते हैं कि इसका स्वर ग्राम लि ऊंप में अथवा टेनर ऊंफ से बांधा हो या होता है।। एह यंत्र ऐकता
न वाद्य में भायोलिन सेलो की न्याईं समान सुर में बांधा होता है।। और जो है दो बोझा यंत्र के
स्वर को द्विगुणक लेने के निमित्त सुषिर यंत्र समूह में बजाउने के समै षड्ज स्वर प्रदान करने
होता है। सो वास्तन यंत्र काठ का बना या हो या होता है।। बासेट वा बासेटो ०। एह एक चा
र तंतु वाला अप्रचलित यंत्र है।। बासेट हर्न ०। एह एक अप्रचलित, किन्तु सुचारु सुषिर
यंत्र विशेष है। एह काठ का बना या हो या होता है और इस में पूर्ण तीन सप्तक बोधी होते
होते हैं। इसके देखने में एक बजाग्राकार क्लारिओनेट यंत्र की न्याईं है और इस का अग्र भा
ग कुछ एक छोटा है। इससे जो स्वर निकलता रहता है सो बजाने वा और पुष्ट और मधुर हो
ता है। इस यंत्र का स्वर "सलापासेजेते" अर्थात केवल इसी के बजाउने में अधिकतर बजी
प्रीति को प्रघट करने वाला होता है। और इसकी मनोहरता शक्ति अतिशय करके चमत
कार वाली है। किन्तु दुर्भाग्य वश से इंगरेजी एकतान वाद्य में इसका बजा प्रचलन नहीं
देखने में आउता है।। बासो ०। एह डबल बास यंत्र है।। बासजीज ०। एह एक बेंजी
आनी भायोलिन सेलो यंत्र है।। बास डबल ०। एह एक बजीजानी का डबल बास यंत्र है।।

वाल्व ट्रियोवय ०(वा ॥ वाल्व ट्रिक्रिमोन ०(एह फागटोवा वाल्वनयंत्रका फरासीनाम है ॥
वाल्वट्रिम्प्राबेक ०(— एह एक प्रकारका प्राचीन सुषिरयंत्र है ॥ वाल्वट्रम्पेट ट्रम्पा
रसीट ०(— एह एक सुषिरयंत्रविशेष है । वाल्वट्रिम्बोलन ०(एह ट्रवलवाल्व वा गाद्र्वा
ले यंत्र है । वाल्वट्रि माफोलिन ०(— एह माफोलिन सिलो यंत्र है ॥ वाल्वट्रि हार्मनी ०(सुषि
रयंत्रविशेष है । एह पितलका बना हूया बंड्ग आकारवाला युद्धका बाजा और युद्धके बी
चमें पूर्णवाजेओं के साथ बजाया जाता है ॥ वाल्वड्रम ०(एह एक बजीजातीका ड्रम यंत्र यु
द्धका बाजा है ॥ वाल्वफ्लोट ०(एह एक प्राचीन सुषिर यंत्र विशेष है ॥ वाहया ०(ए
ह भारतवर्षके ग्राम्य लोकोंका एक चर्मकर के मढाडुया यंत्रविशेष है ॥ विजघ ०(एह
एक नेपालदेशका सुषिर यंत्र विशेष है । नेवार जातीका किया होया एह बन्न मान है ।
इसकी लंबाई नो ९ इंचि और आठ ८ छिद्र संयुक्त होता है ॥ विजन ट्रिवाल्क ०(एह
करतालयुक्त छोटा मढाडुया यंत्रविशेष है । अंगुलीके आघातसे एह बजाई जाती है ।
तो हमारे देशके करतालवाले खंजनी यंत्रके साथ इसका अनेक तरहका सादृश्य है ॥
विपंचीवीणा ०(एह हिंदु देशका एक प्राचीन ततयंत्र है ॥ वैसरा ०(एह टीन

२२. और सीसधातुकाबनाहुआ सुषिरयंत्रविशेषहै॥ विसेकस० एहबारांतेमुं बाजाजाता
रजातीकायंत्रविशेषहै॥ विसेन० एहएकचीनदेशकाग्रेडेकेसमान बजानेवालायं
त्रविशेषहै। सो इसके ऊर्द्ध भागमें दो और नीचे के भागमें तीन छिद्र होते हैं। पीर साहेब कह
ते हैं कि तीन हजार वर्षपहिलें रवृष्टाब्द से इस यंत्रका सृष्टि होई थी॥ वीणा० वा
वीणा० एह हिंदुदेशका अति प्रसिद्ध और सुंदर स्वरवाला अतीपुरातन तत यंत्रवि
शेषहै॥ वीणा ना० एह वीणा यंत्रका हिंदुस्तान देशका नामहै॥ बुकिनम० एह प्रा
चीन रोमक देशका एक प्रकार का युद्ध यंत्र है॥ बुकिना० एह गंभीर जाती का एक
सुषिर यंत्रविशेषहै। सोनकरेके वाओर और पशुशृंग से एह निरमित होताहै। ये हुदि
यों को एह ये यंत्र मिसर देशसें प्राप्त होयाहै॥ बुनि० एह एक हार्पजानेका मिसर देश
का यंत्रविशेषहै। इसीको "वेणा" वा वेणीकाहतेहैं। किसी किसी पुस्तकमें इसयं
त्रका नाम "नेबुने" इसीतरहा लिखतहै, किंतु "ने" अव्यय शब्द मात्र है॥ बुहर्डुम०
एहएक प्रसिद्ध युरोपदेशका आनद्ध यंत्रविशेषहै। इसतरहा का यंत्र हमारे देश
का गजझंप, ढिंढिम। इसी तरहा का यंत्र मिसर देशमें और आसीरिया व आसियाके और जोर

वेः।एह एक नलेका वर्णन् इस्मा नेपाल देशका सुषिर यंत्र विशेष है। इसमें सात नहीं छिद्र होते
है॥ वेकेन०।एह प्राचीन ग्रीक और रोहि देशका एक मकरूसा यंत्र विशेष है॥ वेको पाला
की०।एह वड़े व्याग पाइप यंत्र का इताली देशका नाम है। इतालीके कि सीकि सजगा में व्य
वहृत होता है॥ वेडिगोन्दिया०।एह सिंहल देशका एक प्रकार का मढ़ा होया यंत्र विशेष है।
इसका खोल काठका वना होया होता है। और उस खोल के दोनो मुख हरिनीके चर्म के वेस
ढ़े हुये होते हैं। सो उंगलियों व्याल्का के द्वारा वाद्य के एह यंत्र को नाना ओ कर के वजाई दा है॥=
वेरट वा०।एह स्पष्ठ तत यंत्र विशेष है।एक स्थितिस्थापक गुणलो पेनकि पहिलीत हो
से होय महाकके फेर छोड़ने से पहिले जैसे ही होजावना उसकों स्थितिस्थापक गुणलो पेत
कहैं यष्ठि कों धनुषाकार में टेढीकर के तिसकों एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त पर्यन्त एक खंड वें
तकी तुचा से खेंचकर बांधते हैं और औषामें दवाइकर एक हीराशाका द्वारा इसको व
जाउनेकी क्रिया संपादित हैनी है। क्या वजाउने सकते हैं॥ वेरि।एह वेडिगोन्दिया =
है। हमारे पास्ते "भेरी" यंत्र मेहल मैं इसी नाम सैं कहैं॥ वेस०।एह एक धातुनिर्मित व
जाम्रित्तु घनयंत्र है। एह पूर्व कालसे लेकर इस समय पर्यंत सर्वत्र वर्तमान होके वरत

124

विशेषता क्या है कि शुभकार्य्य में संपादन के निमित्त इसका व्यवहार होता है कहते हैं कि इ
स्को मांगल्य यंत्र के मध्य में परिगणित किया हुआ होता है। हिंदू लोक इसीको घंटा कहते हैं।
लादाक देश के बौद्ध पुरोहितों के निकट एह त्रिशुक कहकर अभिहित और पुरोहितों के का
नमें इसका व्यवहार होते होता है। इसी तरह बड़े बड़े घंटा खृष्ट धर्मावलंबी लोकों के मंदिर
में व्यवहार होता है। तिन्हका नाम "चर्च बेल्" जयघंटा एही है। चीन इत्यादि देशमें
भी इसीका विशेष प्रकार के प्रचलन देखा जाता है॥ वोकीन०(एह एक प्रकार का गात्र
यंत्र है। गोपालक लोकों के द्वारा एह व्यवहृत है। पहिले एही यंत्र एकतान वादन
में प्रचलित था॥ वोजेन फ्रुजेल्०(एह एक प्रकार का कुंजी के सहित बजाने वाला यं
त्र है। एह पुनर्मी द्वारा बजाई दा है। १८५७ वर्षाब्द में इस यंत्र की सृष्टि हुई॥ वोन्दा०(
एह एक प्रकार का ब्रह्मदेश का मकरुया यंत्र है। इसी में भिन्न आकार के कितने काठ को
संलग्न होते हैं। बारक लोक समुज्रमको बजाउते हैं॥ वोनाङ्ग०(एह यावा वासी लोकों का
एक प्रकार का मकरुया यंत्र है॥ वोम्बार्डन०(एह एक प्रकार का बांसुरी यंत्र है "ओफिक्लेड"
वा "वास हिहार्मनिया" और एह यंत्र भी एक विहृत रूप है॥ वोम्बार्ड(वो०(वोम्बार्डो०(एह
जोबवयजाती का एक प्रकार का प्राचीन शुषिर यंत्र है॥ वोलो०(एह एक हार्प जाती का

आफ्रिका के अन्तर्गत गोनि उपकूल और सेनेगंबिया वासी का फ्रिरा एहि व्यवहार
करते हैं। इसका और एक नाम ओम्बाइ भी है। लुता: — वेल अथवा मूल द्वारा इसकी तार प्रस्तुत
होती है।। ब्या ८— एहू एक प्रकार का भारतवर्ष का वाद्य यंत्र है। एक छोटा पतला सिठौका
भाड़े का मुख भाग टैं पा मच्छ के चर्म करके मढ़ा करके तिसके मध्य भाग मे एक सूक्ष्म छिद्र
करते हैं एक गाछि एक प्रान्त मे छोटी सलाई से वांधे हुए घोड़े की पुछ के वाल तिसके
मध्य मे प्रवेश करवाइ के एक चिक्कन वेंत खंड से उसका दूसरा प्रांत आवद्ध करते हैं
और घुरका उलो मे इस पेंच से एक प्रकार का शब्द उत्पन्न होता है। सो घुरका उलो के समय
वेंत के साथ घोड़े की पुछ के वाल प्रांत भाग कैंचित शिथिल राख करके जल करके भिगो
इ लेते हैं।। ब्या सपाव ५०— एहू एक प्रकार का प्राचीन शुषिर यंत्र है। जो कर एह इस स
मय मे बहुत व्यवहृत नहीं है तदवी अछो, किंतु प्राचीन काल मे आसीरिया के समदेश
मे और मिसर देश मे विशेष करके प्रचलित था। अच्छी तरह अनुसंधान द्वारा जाना
गया है। जो एह यंत्र वर्ष के जन्म काल के पहिले भी व्यवहृत होता था। टार्गस और मे
सलिया के ध्वंसावशेष के मध्य मे इस प्रकार के कितनेक यंत्र प्राप्त हुए थे; सो पुत्तलत इ
सके प्राचीनत्व संबंध मे किंचित्मात्र संदेह नहीं कर सकते हैं। हिंदू मनुष्य इसी यंत्र

को "तित्ति" वा "तौत्ते" कहते हैं। तित्तिरी और
तित्तिरी। एहि यंत्र पारस्य देश मे "नेआम्बना" और
मिसर देश मे "उक्कोयारा" वा लकर अभिहित है।।

ब्युगल्० एहएक तीव्रस्वरविशिष्ट प्रसिद्ध अंग्रेजदेशका युद्धका सुषिरयंत्रविशेष है। ए
ह पित्तलधातुका बनता है। सेनाके पास्से वा शोषकुरके अस्वारोंको सेनाको दूरसे बुलाउलेके नि
मित्त अथवा युद्धकी तियारीके बास्ते इसको बजाते है। इसीसे सि, जि, सि, इ, जि, इ, अर्थात् सा, प,
सा, ग, प, ग, एह सब बोलस्वर ही निकसते हैं। एह इसको अपेक्ष्या करके अधिक उत्तम ब्युगल
यंत्रमे सात ही कुंजियां होतियां है। ईलगड मेतिसको "कीउब्युगल" कहते हैं। एहि कीउब्यु
गल, फ्रांसदेशमै एही यंत्र "कर ग्रा क्रो फ्स" वा "टम्पे ट ग्राक्रो फ्स" नामसे प्रसिद्ध है।
हमारे देशमै रणशृंग यंत्रके साथ ब्युगलयंत्रका काथ्यकरे ता संबंध है॥ ब्राटसि० भायोला
वा टेनर भायोला यंत्रका जर्मण देशी नाम है॥ बुकफुट० एहएक प्रकारका सुषिरयंत्र है।
ब्याजारएएज क्षी० एह गाम्यलोकोंका एक प्रकारका ततयंत्र है। इससे अधिक बजउज स्व
रही निर्गत होता है॥ भ॥ भलगा० एहएक प्रकारका सुषिरयंत्र है॥ भायिलि० एह हार्डि
गार्डि यंत्र है॥ भायोल्जा मोर० एहएक वाद्यलीनजातीका यंत्रविशेष है॥ भायोलन् वा
कएड्रा भायोलन्० एह उबलवाद्य वा कएड्रावा होयंत्र है॥ भायोलनो० एह उबलवा
द्ययंत्र है॥ भायोलम्नितलि० वा भायोलनिसेलो० एहएक प्रसिद्ध ततयंत्र है। टारड नाम
क एकमनुष्य फरासीयाजकका एह यंत्र बनाया होया है। सोइगत शताब्दीके प्रथम भा
गमे टारास्कन प्रदेशमै रहिनेवाला था। उस समय मैं इस यंत्रकी पांच ही मात्रतंतू थी

किन्तु प्रतीत होता है जो पचीस वर्ष पीछे बर उट द्वारा इसी मे और चार ही तारां जोड़ियां-
होइयां है। जर्मनी देश मे इसीको मायोलन्सेलन कहते हैं। इंग्लैंड की अपभाषा मे इसका नाम वा
स है॥ मायोला (वा मायोला जाम्ब्रासिडो) (— टेनर मायोलिन अर्थात् मध्यस्वरी वा झुली
न यंत्र है॥ मायोला डि आमोर ०(एह एक सुंदर तत यंत्र विशेष है। रह साधारण मायो
ला यंत्र की न्याई लंवा है। इसमे छे ही तारां और चार ही चांदी की तार बांधी रहती है। इस समय
मे इसका वजा प्रचलन नहीं है॥ मायोला डि गाम्बा ०(— एह एक अप्रचलित तत यंत्र विशे
ष है। इसका आकार मायोलन्सेलो की न्याई है) किन्तु इसको अपेक्षा करके सं पूर्ण, अधि अ ७
क सानुनासिक और दीर्घ स्वर है। इसमे छे अथवा सात ही तारां जोड़ियां होईयां होती हैं।
एह यंत्र सब होकर समसे पहले इंग्लैंड देश मे वर्तमान हुया है और हर संवत् तदेन तक
प्रचलित था। मि) एवेल नामक एक मनुष्य था सो इस यंत्र के वजाउने मे विशेष करके
चतुर था। १७८७ वर्ष की अवधी से इसका व्यवहार कम हो गया है। फरासी भाषा मे इ
सका नाम "वासडि माल है"॥ मायोला डि बोरदों ०(एह एक तत यंत्र विशेष है॥ =
मायोलिन ०(एह एक सुप्रसिद्ध तत यंत्र है। एही ऐक तान इत्यादि वजाउने मे व्यवहृत हाता है॥

इसमें चार ही मात्रा तारें जोडियाँ होती हैं। सो उक्त चार ही तारों से चार ही मुक्त स्वर निकल
ते रहते हैं। और उक्त तंतु चारों में से भिन्न भिन्न स्थान में अंगुली के साथ दबाए होए से जो सक
ल स्वर निर्गत होते हैं, तिन्हू के उक्त स्वर चतुष्टय के विरुद्ध से बद्ध स्वर कहिते हैं। अंगुलि
से दबाउ लेके बजी चतुराई के साथ इस यंत्र से दो स्वर, अथवा तीन स्वर, चार स्वर प
र्यंत भी निःसारित हो सकते हैं। तिन्हूको इंगरेजी में "कर्ड" और हमारे देश में स्वर समष्टी
वा स्वर संयोग बोलते हैं। पिटिस सतेराट इत्यादि प्रसिद्ध इउरोप के संगीत के जानने वाले समझो
क कहिते हैं जो, पांच हजार बरष व्यतीत हुए हैं जो लंकाधिपति राजा रावण था "रावणास्त्र"
नाम से जो एक भारतवर्ष का ततयंत्र पहले नाम से बजता था, और इउरोप का "भायोलिन"
यंत्र है तिसके ही अनुकरण में निर्मित होया है। इउरोप देश के मध्य में प्रथम इतालि देश का
ल्लाडि भेरी एह यंत्र निरमाण किया था। किंतु एह तिसके अनेक पहिले से भारतवर्ष और आ
सिया के और और देश में प्रचलित था॥ भारतवर्ष के "रबाब" चीन देश के "उरहीन" और
जापान देश के "कोकिउ" होए इस मत एक जाति के यंत्र हैं॥ भायोलिनो० एह एक प्रकार
का ततयंत्र है॥ भायोलिनोपिकलो० एह छोटा वायुलीन यंत्र है॥ भायोलिन्सेलो० भा
योलिन सिलो ही है॥ भायोलेटा० एह एक ततयंत्र विशेष है। इसमें तीन से लेकर छे पर्यं
न्त तंतु योजित होती हैं। इसीका और एक नाम "सप्तरेयो" कहिते हैं॥

भोजिनेल० एह एक प्रकार का ततयंत्र है इसका और एक नाम 'प्रिपिनेट' है। प्रिपिनेट शब्द
मे देखो॥ मिसाफ्रु० एह तिब्बत देश के पास का एक प्रकार का सुषिर यंत्र है॥ मेंपु०
एह एक प्रकार का हिंदु देश का सुषिर यंत्र है। एह ताल पत्र इत्यादि से बनाया होता है। बा
लक इसको लेकर खेलते हैं॥ मेरी० एह हिंदु देश का एक प्रकार का आनद्ध किंवा ताड्या
यंत्र है। अधिकन्तु एक प्रकार का सुषिर यंत्र का नाम भी मेरी है॥ म॥ मञ्जिरा० एह मंदीरा
यंत्र का अपर नाम है। मंदीरा शब्द मे विशेष देखो॥ मजु० एह हिंदु देश का एक प्रकार का
प्राचीन मृत्ताड्या यंत्र है। अमरकोश मे इसका उल्लेख है॥ मधुकरी० एह एक प्रकार का
प्राचीन हिंदु देश का सुषिर यंत्र विशेष है॥ मनुएरु वा मोनलस० एह प्राचीन मिसर
देश का बैल के शृंग जैसा सुषिर यंत्र विशेष है॥ मनोकर्ड० एह तारों वाला एक प्रकार का
ततयंत्र और स्वर की उच्च नीचता के नियम परिकार रूप के बुझाउणे के निमित्त एह व्यव
हृत होता है॥ मन्दर० एह एक स्पुट जाती का ततयंत्र विशेष है। इसकी लंबाई १२ इं
च और इस मै चार सूत्र तार जोड़े होते हैं॥ मन्दिरा० एह हिंदु देश का घन यंत्र विशे
ष है संगीत के ताल प्रसिद्ध करने और देवालयों मे नित्य व्यवहृत होता है। एह यंत्र करता
ल जाती का है। करताल शब्द मे देखो। किन्तु एह मध्य यंग के अंतरगत है॥ मरवा० एह

वा·

१२८

124

अरब देश का प्रकार का तत यंत्र विशेष है। इसकी तुंबी पर मे चर्म करके आच्छादन पूर्वक और
घोड़े की पुच्छ के बालों से बांधा करते हैं॥ मर्दल०। एह हिंदु देश का एक प्रकार का गान्य मछाउ
पा यंत्र है। एह साओताल अर्थात् भील लोक पर्वतों मे रहने वाले इसका व्यवहार करते हैं। एह
यंत्र प्राचीन और मृदंग के बदले से किया होया है॥ महती वीणा०। एह हिंदु देश का अति प्रा
चीन तम और अति प्रसिद्ध तत यंत्र विशेष है॥ माकालापू०। एह यिहुदियों का वंशी
जाती का सुषिर यंत्र विशेष है। बाइबेल धर्म ग्रंथ के मध्य मे इसका उल्लेख है। किंतु
कोई कोई कहते हैं कि एह भिन्न भिन्न वाद्य विशेष का नाम मात्र है। यिहुदियों के॥ मीन्टेयु॥ यं
त्र संबंध से भी इस का प्रमाण है। मिन्टियु मे ले ख देखो॥ माकोल०। एह यिहुदी
देश का वंशी जाती का एक सुषिर यंत्र है। उसी देश के नृत्य समय मे इसकी वादन क्रिया
संपादित होती है। किंतु केसी किसी के मत मे एह यिहुदी देश का नृत्य विशेष है॥
मागादिस०। एह प्राचीन मिसर देश का एक प्रकार का तत यंत्र विशेष है। कोई
कोई कहते हैं कि एह सुषिर यंत्र है। मागादिस, नाबूला, सम्बुका, कार्थिटन इत्या
दि मिसर देश के यंत्र का समूह लेकर और मिसर का है तदवी एह सन के वि के देश
नाम धारी है। एह सम और ग्रामिया स्व और और यंत्र विशेष मे मिला करने के
निमित्त पिथागोरस इत्यादि प्राचीन ग्रीक देश के पंडित लोक मिसर देश के

१२८

अभ्युदयकालमें उसी देशमें गये थे। कहते हैं कि, ईउरोप देशके संगीतका अधिकांश आशि
यास्थ भारतवर्ष प्रभृति देशसे नीत हो गया है। ईउरोप देशके संगीतज्ञ इटली पंडितगण एहवा
तो स्वयाचार सें स्वीकार करके स्थित हैं॥ आगास्त ०(एह एक प्राचीन मिसर देशका संगीत यंत्र है
आगाद्दिस भी कहते हैं॥ आगोपा वा आग्गेफा एह ग्रीहूदियोंका व्याग पाइपजातीका ढिनलयं
त्र विशेष है॥ आघुल ०(एह एक प्रकारका यिहूदियोंका ततयंत्र है॥ आचला ०(एह एक यिहू
दी जातियोंका अच्छ तन्तुवाला ततयंत्रविशेष है॥ आटालान ०(आमेरिकाके इण्डीयके पा
सेका एक प्रकारका छोटा ढुड यंत्र है। वे याड़ियर नामक नृत्यमें एह यंत्र वजाया जाता है॥
आरप्रेमेल ०(एह एक आजरमगा देशका ततयंत्रविशेष है। किन्तु नाम गत सादृश्य उ
सेरवाव आग या है। एह आनद्ध जातीके यंत्र जो विशेष हैं तिनकों बोध करता है॥ आरगेन ०(
एह कोमलस्वरवाला गिटार यंत्र है। आरगेलिन वा आरगेलिनो ०(एगिटार यंत्रकी
न्याईं तारोंका युक्त ततयंत्र है। हमारे देशकी रुद्रवीणाके साथ इसका कितना क सुंदर वरा
वर होता है। इस यंत्रकों वेहालायंत्रकी न्याईं ह रवब्दक कहते हैं॥ आफ्राकियो ०(एह एक
प्रकारका यिहूदियोंका सुषिर यंत्रविशेष है। आहो। कियो वा आगोकितो एही है॥
आदाउये ०(एह एक प्रकारका घन यंत्र है। एक रौप्य निर्मित चक्रमें ताम्र निर्मित छोटा

छोटा घंटा जोड कर के एह वल्लग याहो याहोता है। मिसर देश का कपूट नामक रवष धर्मावलम्बी
लोक सुभ कार्म मे एहि यंत्र को बजाया करते हैं ॥ मादिग्या ० मारोक (ग्रामिवरा ॥ न्याम ॥ मालीइन ०
एह एक प्रकार का झुनझुना वल्ले पन्दिगल का स्वर संयोग विधायक यंत्र ॥ मास्त्रोकिया वा मास्त्राकि
ना ० एह प्राचीन मिसर देश का मैगिरूस और आधुनिक पार्शियान पादरी यंत्र की न्याई ए
क प्राचीन यिहूदीयों का सुषिर यंत्र है। सातनल एक संदूख के मध्य मे पास पास रखकरके एह
यंत्र निर्मित होता है किन्तु इसकी एक ही मुख उस मुख मे फुत्कार देकर इसकी वादन क्रिया संपादि
त होती है अर्थात बजाई दा है ॥ मिग्रिम ० एह यिहूदियों का एक तत यंत्र विशेष है। कार्चोर सा
हेब के मत मे वा फुलीन यंत्र की न्याई धार लंदेउ विशिष्ठ एक खंड काष्ठ मे कितना कतान्त
और काष्ठ गुटि का संस्थापन पूर्वक लाल रज्जु और लोहे की तारों के साथ बांधकर के एह यंत्र नि
र्मित करते हैं। बजाउने के समय मे जो हे सभ गुटि का संघर्ष प्रकार और उच्च स्वर समुत्पन्न होता है ॥
मितिम ० इसकी व्याख्या नाकालाथ। राव मे देखो ॥ मिर ० एह ड्रम्पेट यंत्र की न्याई एक प्र
कार का सुषिर यंत्र है। एह कहीं कहीं चार गज पर्यन्त लंबा होता है और इससे उच्च और तीव्र स्वर
निकलता रहता है। यद्द एहवन के जीवों को भय दर्शाउने के निमित्त इसका व्यवहार होता है त
दवी इसका स्वर बड़ा मधुर और अनेक तरह का है। नुबिया नामक देश के ग्वालों की याँ
हूं दरसियाँ एही यंत्र को व्यवहार करतीयां हैं ॥ मिस्त्रोकिया ० मास्त्रोकिया वा मास्त्राकिना।

मुरज०(एह हिन्दु लोकोंका एक प्रकारका प्राचीन मृदङ्गया यंत्र है। मृदंगके साथ इसका अनेक
तरहका सादृश्य है। वस्तुतः इसीको मृदंगका भेद सकते हैं।। मुरली०(एह हिंदुयोंके पासका एक अ
ति प्राचीन और निखिल लोकके प्रसिद्ध सुषिर यंत्रविशेष है। एक सौर एक अग्र रंध्र युत वंश निर्मित वंशी या ह
या और आठ ही छिद्रोंकके युक्त। एह यंत्र श्रीकृष्णजीको अत्यन्त प्रीतिवाला है।। मुसेट०(एह छोटे व्या
गपाइप यंत्रकी न्याईं सुषिर यंत्रविशेष है।। मृदंग०(एह हिंदुयोंके पासका एक वड़ा प्रसिद्ध
और अति प्राचीन आनद्ध या मदाड़ या यंत्र है। अमरकोशमें अंकः, आलिङ्ग, ऊर्ध्वक प्रभृति
और कितनेक प्रकारका मृदंगका उल्लेख है।। मेन जोलीप,(एह यिहूदियोंका सुषिर जाती
का यंत्रविशेष है। जेल् जेलिम में देखो।। मेञ्जोफोर्टि०(एह एक प्रकारका सुषिर यंत्र है।। मेटसा
हू यंत्र है।(एह एक पारस्य देशका दोतन्त्रवाला यंत्र है।। मेन जेल् षिम०(एह यिहूदियोंका ए
क प्रकारका वाद्य यंत्र है। जेल् जेलिम भी एही है।। मेनागनिम०(एह यिहूदियोंका सितार म
जातीका वाद्ययंत्रविशेष है। बाइबेल ध न दूसरा साम येल् नामक पर्व छेदके छठे अध्या
यके पंचमी पंक्तीमें इस यंत्रका उल्लेख है।। मेसिकाई(एह एक ततयंत्रविशेष है।। मेरिनू ट्रू
म्पेट(एह एक ताम्र ततयंत्रविशेष है। इसका धारण दंड दीर्घ और इसमें एकही मात्र तंतु
योजित होतीहैं।। मेलोडिकन्०(एह एक प्रकारका वाद्ययंत्रविशेष है। सो कोपनहेगन ना
मक नगर निवासी रिफेल् नामक एक मनुष्य
द्वारा निर्मित इसमें एक प्रकार कितनेक धातुका
आकुंचित रेखा होती है जिसके द्वारा ही शब्द अनेक शता
होता है।।

मेलोडिका० (एह एक कुंजीयुक्त वाद्य यंत्र विशेष है। १९२० वर्षाब्द मे जे, ए, ब्लीन प्रसिद्ध एक
किया हो गया है ॥ मेशेक० (एह हिंदु देश का एक सुषिर यंत्र विशेष है। युरोप देश को लोक केतल
टिक जाति का त्याग पात्र पू यंत्र की न्याँई इसका आकार है। राजपूलोक एह यंत्र व्यवहार करते हैं ॥
मेस्कल० (एह एक तुरुष्क देश का सुषिर यंत्र विशेष है तेईस मुसलमान कि वडुवट और वैतवैन
लहाया एहमें मिंत और फूंक लगाने की चतुराई से इसमे तीन प्रकार के भिन्न भिन्न स्वर निकलते
होते हैं ॥ मोनलो० (एह प्राचीन नग्रीक देश का एक सुषिर यंत्र विशेष है। कोई कोई कहिते हैं
फ्रिजिया देश में का दोमस की स्त्री हारमनिया एह यंत्र ध्यान पन किया था। कितनेक अन्य पं
डित लोक कहिते हैं, मिनार्भी देवी ने क्या सरस्वती देवी ने किया था ॥ नाम्नी इस यंत्र को लेखा है थी ॥
मोहाली० (एह नेपाल देश का नेवार जाती का सुषिर यंत्र विशेष है ॥ म्याम० (एह प्राचीन
मिसर देश का व्याग पात्र प जाती का नल यंत्र विशेष है। एह मिसर देश की रमणियों का स्त्री
लोक को अत्यंत प्रयवस्तु था। विलायती जादूघर मे मिउजियम एक ऐसा यंत्र वादक की मूर्ती
रक्खी होई थी ॥ य ॥ यशःपटह (एह हिंदू देश का एक प्रकार का प्राचीन मढाइया यंत्र है। तो
युद्ध मे जय लाभ के पीछे जयी पदाते एह यंत्र वादित होता है। अमरकोश मे इसका उल्लेख है ॥
योड्घाड्डू (एह हिंदू देश का एक प्रकार का आनद्ध क्या मढाइया यंत्र है ॥ र ॥ रुद्र वालुयन्त्र (एह

रबाब० एह हिन्दुदेशका अति प्राचीन ततयंत्र विशेष है। एह भी सावरणान्त की न्याईं धनुषी के
योगसे बजाईदा है। सावरणान्त वा सावरणान्त्रम। एह यंत्र जो पीछे पारस्य देशका प्रसिद्ध "र
बाब" और पारशीमे "रेबेब" और "रेबेक" होया है, तिसके विषयमे किञ्चिन्मात्र भी संश
य नहीं है। एह हिंदु के पासका "अमृत" नामक और एक प्राचीन ततयंत्र की न्याईं है। "
अमृत" एह दोनो यंत्र और "सावरणान्त" आरब देशका प्रसिद्ध "केमानगे आगुज" और
"रेबाब" यंत्र के सदृश है। इन्हके आकार सादृश्य देखनेसे स्पष्ट ही प्रतीत होती है जो
केमानगे आगुज यंत्र उन्हके आकार देखनेसे ही निर्मित होया है।। रेबली० (एह ए
क प्रकार का ततयंत्र है।। रबाब० एह हिंद देशका एक प्राचीन और सुप्रसिद्ध तत यंत्र है।
इसका और एक नाम रुद्रवीणा है। कोई कोई कहिते हैं कि एह यंत्र पारस्य देशका है, किंतु
हमलोकोंके विचारमे एह युक्ति संगत बोलाकर बोध नहीं होता। इसमे कारण एह है कि रबाब श
ब्द से 'रब' जो शब्द है तिस्कों करे सो कहिये रबाब, इस व्युत्पत्ति करके रबाब शब्द सिद्ध
होता है। सो इस यंत्र के आकार का सादृश्य रबाब यंत्र की न्याईं है। हिंदु रबाब पहिले धनुषी
के योगसे बजाता था। किंतु इस समयमे पारस्य देशके लोक और गन्धव देशके लोक अंगुली
वा मजराब करके बजाते हैं। सो एह धनुषी करके बजाया नहीं जाता इसते इसका नहीं है। कोई

साहेब कहते हैं, भारतवर्ष के महासागरस्थ द्वीपमालावासी लोक पुनवीन इस यंत्र
को वादन किया करते हैं। स्वरवीणा के साथ रबाब यंत्र का अनेकता का सादृश्य है। रबुला
गिट नामक रोः एक छोटा सा मगरेक ढक्का युक्त का यंत्र विशेष है॥ रबीनान नल ०ः पादिविस
ष के स्वरके अनुकरण के निमित्त एक प्रकार का छोटा यंत्र विशेष है॥ राकेट वा राजेटू ः यह अ
ति प्राचीन काल का एक काष्ठ कवलम्बुया सुषिर यंत्र विशेष है॥ करमुपेट ०ः यह ए
क सुषिर यंत्र विशेष है॥ रानुनान ०ः यह श्याम देशियों का एक प्रकार का घन यंत्र
रावेल ०ः यह हवशीदक्का की न्याई एक प्रकार का मिसर देश का वाद्य यंत्र है॥ रावणा ०ः
यह भारतवर्ष में प्रचलित एक प्रकार का तानपूर्ण धनुषाकार वा यंत्र है॥ रावणा स्त्र
वा रावणास्त्रम ०ः यह हिन्दु देशियों का एक अति प्राचीन ततयंत्र विशेष है। धुन
बीकार केबजाया जाता है। कहा है कि यह यंत्र सिंहलाधिपति प्रबल प्रतापवान् रावण
ण का किया होया यह निर्मित भयो है। तेही नीति मित्र यह तेहके नाम से रव्यात हो या है।
प्रसिद्ध "रेवाव के" यंत्र के साथ इसका अनेक सादृश्य है। हिंदुओं का "रावणा"
और "रवाब" यह दोनों ही प्राचीन यंत्र एक विध के और एक ही व्युत्पत्ति करके प्रसिद्ध हैं॥
सुप्रसिद्ध एन. फिटस साहेब कहिते हैं जो युरोप में भायोलिन जाती का यंत्र इसी यंत्र
(कि नकलवणा याने गया है॥ रावानिण ०ः यह सिंहल देशवासियों का एक प्रकार का मक्का
ड़ुया यंत्र है। उसके कोई कोई यंत्र तन्त्र है में चाँदि का लगी हुई होती है, किन्तु इसमें

सोनगीह हैं ॥ वजाउले वाले लोक वा ने हाथ में धारण करके दहिने हाथ से इस यंत्रको वजा
उते हैं। वरोपक के सिंहल द्वीप के तीन चार मनुष्य और स्त्री लोक इसीको जमीन में रखकर के व
जाउते थे। किसके गीके कोई जोड़ होता है कि लंकावासी लोक रावण पुत्र (रावण + इमि =
रावणि) अर्थात् मेघनाद के नाम से इस यंत्रका नामकरण कीया है। कोई कोई युउ
रोप के संगीत के जानने वाले पंडित कहते हैं जो आफ्रिका देश के निग्रो के पास से का मो र
सी नाम से एक प्रकार का मकाइया यंत्र है॥ रिगल् वा रिगेल् ०. एह एक प्रकार का
प्राचीन वजाउले वाला यंत्र है॥ कितने क भिन्नाकार के काष्ठ खंड से एह वलन कर
के हाथी के दांत की एक गोल सिरे वाली छड़ी लेकर एक वजी घात से वजाउते हैं॥ रेगावि
लन ०. एह एक वहुत पुरातन वजाउले वला यंत्र है। उके अके मत मे एह यंत्र आर्य ज्ञान की
सोलो के पेहले वर्तमान होया था और धर्मास्थान में कंठ स्वर के साथ इस को वर्तमान की
या है॥ रिलचं ०. एह एक प्रकार का ह्लन्द देश का ल्युट यंत्र है॥ गेलेक ०. एह एक प्रकार का ह
लन्द देशी तत यंत्र है। रीसेनहार्पि ०. एह एक प्राकार तत यंत्र॥ रुजा ०. एह हिंदु देश का
एक प्रकार का पुरातन मकाइया यंत्र है॥ रवेवू ०. एह एक रवाव यंत्र की न्याई तत यंत्र

रुयाना ० ए ह रबाब यंत्र के नाम का अपभ्रंश है ॥ रेबेक ० पूर्व के पास्से कारबाब यंत्र था
पूर्व काल मे यूरोप देश के धर्मार्थ युद्धक के बगदाद शहर से जेरूसालम से के बाद साह उक्त यंत्र यू
उरोप देश मे ले गये हैं। सो ले जाए ऐसे पहिले इसका नाम "रेबेब" था। किन्तु पीछे से इसी तन्तु से
रबाब का और अन्यान्य विषय का अनेक तरह से बदलेया गया है, इस समय मे ग्राम्य लोक का
बाउलीन जाती का यंत्र विशेष होकर "रेबेक" नाम प्रसिद्ध होया है ॥ रोट वा रोटो ० ए ह
एक प्रकार का युरोप देश का तत यंत्र है ॥ रोशन चौकी ० ए ह भारतवर्ष और पारस्य दे
श मे प्रचलित एक सानिन्ध्य सुषिर यंत्र विशेष है ॥ रोशनचौकी सरणी ० ए ह रोशन
चौकी और सरनाई वी कहिते हैं ॥ ल्याटल ० ए ह एक आफ्रिका देश का बजाने वाला
यंत्र है। एक तुंबी के भीतर कितने क छोटे छोटे पत्थर के खंड पूर के एह निरमित होता
है। एह हमलोक के देश की झुनझुनी की न्याई है। कि बुंगरू के सद्दश्य होता है ॥ ल ॥
लङ्गो वा एम्यास्त्रि ० ए ह एक प्रकार का घन यंत्र है। एह एक खंड धनुषाकार पि
त्तल की तार मे दो छोटे लोहे के घंटे बांधकर के एह यंत्र निरमित होता है। सो कङ्गो देश
के उच्चवंश के लोक दोई छोटी चोब इसकी बजाए ले की रीती से संपादन करते हैं ॥

लटि० एह ल्युट यंत्र का जर्म्मन देशी नाम है ॥ लापा० एह हताना देश के पास्से का गामे
का वल्ला होया एक सुषिर यंत्र विशेष है । इसकी लंबाई नौ फुट है ॥ लायरा वियागोरी० एह
एक तत यंत्र विशेष है । इसका विषय लायार गितारी आकट कर्ड मै देखो ॥ लायरा वव
मेरा० एह एक प्रकार का तत यंत्र है । खृष्ट के सम्म दश अर्थात् १७०० वर्षा व्हीमे जिऊ
वापट) दोनो नामक कोई एक मनुष्य ने हने पे हलोए ही यंत्र निर्माण किया था ॥ इस यं
त्र का और एक नाम "आर्न्कि कडेन" है ॥ लायरा लेमव्हिया० एह एक तत यंत्र विशेष है ।
परियन लिसवस दीप मे एहा बजाउते हैं ॥ लायार० एह ग्रीक और रोमक देश का ए
क प्रसिद्ध तत यंत्र विशेष है । तिह समके मत मे मार्करि नामक देवता का किया होया एह
स्थ है । एह यंत्र अति प्राचीन मत काल का और इसी निमित्त क्रम से इसका आकार और
तनु संख्या के संबंध से अनेक तरह्रा वदलाया गया है और बढिया है । मिसर देश के, ने
उब्विया, आबिसिनियां देश के और यिहूदी जाति के हार्प यंत्र की न्यांई इस यंत्र को
आपणी आपणी मर्जी के अनुसार हे अगृ और तनुगत परिवर्तन करिके व्यवहार क
ते हैं ॥ लायार अव माकारि०— एह एक चार तनु वाला प्राचीन तत यंत्र विशेष है ॥

वा॰
१२५

129

लायार गितारि० एह एक छ तन्नु वाला आधुनिक ततयंत्र है॥ लायार द्धि मायोल० ए
एह एक प्राचीन ततयंत्र है। एह एक स्वरीलायार यंत्रविशेष है॥ लायार वर्बेरीना० एह
एक ततयंत्रविशेष है। इसमें पंचदश १५ पर्यन्त तारां जोडियां होइयां होतीयां हैं॥ और एह
यंत्र धुनषीके साथ वजाइदा है। एह तार यंत्र के साथ इस मनका अंकेतनानुसोसाहस्यु है॥ लारि
गर० एक वकरी चारने वाले लोक पाइप वा आर्जिओलेट यंत्र है। लिउ टो० एह ल्यु
ट यंत्र है॥ लिग्नियम मर्मारि गियम्॥० एह एक प्रकार का ततयंत्र विशेष है। एह काठका
वणाहुआ और देखणे मैं जल्द सितार यंत्र की न्याई होता है। १८ २६ वर्षांमें पोलण्ड निवासी
जोसिको नानक एक मनुष्य थिह दी एक वार एह यंत्र इसी तरहा चतुराई के साथ वजाउता था
जो तिसके सुणने से ही श्रोता मात्र ही तिरस्कार शय आनंद लाभ कर वाया था। जर्मनी दे
श मै इसी यंत्र को "[illegible] थ्रूफिडल" और फ्रान्सदेशमें ऊंर्कीवयक कहते हैं॥ लिचाक० एह
एक नलकाबणाहुआ सुषिर यंत्रविशेष है। आफ्रिका वासी काफ्री जाती का वाचाप्रिन
नामक जाती एह व्यवहार करते हैं॥ लिटुयस० अगार जाती का पूतयधी की न्याई अ
पान दंडीके दंड की न्याई आकारं विशिष्ट एक सुषिर यंत्र है। इसी निमित्त इसकी ऐसी संज्ञा
होइ है। प्राचीन देश के पाहिका अंग यंत्र ग्यान कर्णियावाटिउवारके साथ इसका सने
कतन्हा का साहस्य है। इसका आकार प्राय सलधो यंत्र है। केवल सीरो भाग के छिद्र टेका

लिट यो० एह प्राचीन ह्यारिओन यंत्र है॥ लिन्हिया० एह एक तत यंत्र विशेष है। ये
लिट क एटाक उत्र एही है॥ लिरा० एह प्राचीन ग्रीक और मिसर देश का लायार यंत्र है॥
लिराटेडेस्का० एह जर्मन देश का लायार यंत्र है॥ लिरा डा गाम्बा० एह एक प्र-का
र का तत यंत्र विशेष है। इसमे बारों से लेकर सोलां तन्तु पर्य्यन्त जोजे नहोते थे है॥ =॥
लिरा डा ब्राकियो० एह एक प्राचीन इतालीदेश का तत यंत्र विष है। अंग्रेज लिप हसे पांच
और नेसके पासे मे दोनो हैं, एह हम मिलकर सा न हीतार इसे जोजे न होते था है। इ
स का और एक नाम "इतालीय लायार" है॥ लिरा पगना० एह भी लायार ही है॥ =॥
लीरा वर्ब्बेरिना० लायार वर्ब्बेरिना॥ लिरा यवि का० एह इतालीदेश का प्राचीन मेष
पाल क लोक का एक प्रकार का लायार यंत्र॥ लिरा हे क्साकर्डन० एह एक छै तन्तुवा
ला लायार यंत्र है॥ लिर सा० एह एकादश वा द्वादश तन्तुवाला प्रचलित तत यंत्र है॥ =
सोलां वर्षो से एह यंत्र इतालीदेश मे व्यवहृत होता था। इसका और एक नाम "लायो
ला डि बोर्दों" है॥ लिरो निपा दू फेटो० - लिरा डा गाम्बा है॥ लुइट० एह ल्युट
यंत्र का फरासी नाम है। हार्प यंत्र उत्पत्ती होने पर्य्यन्त इस यंत्र का व्यवहार बहुत होता है॥
लोरिन्द्र० एह एक प्रकार का सुषिर यंत्र है। एषियतिय सके मतमे एह अलिक जाद्रिया

वा·
१२
130

से आरो नामक कहते हैं जो आफ्रिका के लट स हूदल की तमा से इस का नेर्मल कार्य्य स
माधान होता है॥ स्युट०(एह एक संगीत संबंधीन तय त्र है॥ स्युट आर्चि०(— आर्हि लिउदो)
स्युट् म्यिजा बो०(— म्यिजोर्वी सेदे खो॥ स्युट्(एह एक ग्राम्य शुषिर यंत्र विशेष है। एह
पशु श्रृंग अथवा काष्ठ नल सें निर्मित होता है। कहीं कहीं हाथी के दांत से भी निर्मित होता है। ए
ह स्कन्दा ने भी बजाते का किया हो या व्यवहृत है॥ शं॥ शंख०(एह हिंदु लोकों युद्ध का एक
अति प्राचीन तम सुषिर यंत्र विशेष है। एह पहिले सामरिक और मांगल्य कार्य्य इन दोनो
विषयों मैं भी व्यवहृत होता था। अब इस समय मैं केवल मांगल्य कार्य्य मे ही इसका प्रचलन है। रा
मायण, महाभारत इत्यादि वीर रस प्रधान महाकाव्य के जिस जिस स्थान मैं युद्ध का व
र्णन है, उसी उसी स्थान मे ही इस यंत्र का उल्लेख देखते हैं। महाभारत मे श्री कृष्ण जी के
शंख का नाम "पांचजन्य शंख" और अर्जुन के शंख का नाम "देवदत्त शंख" वो
लकर लिखते है। तिन्हके विना उक्त ग्रंथ मैं आरो कितने क प्रकार के शंखों का नाम दे
खा जाता है। हनुमान व जी जा के शंख कों "महा शंख" कहिते है। शंख के समुदाय
शुषिर यंत्र का आदि बोल मे से भी अन्य न्यूनतम नहीं होती। एह हिंदु धर्म्मावलम्बी लोक की
त्योंर्हे वो हूलों कों के मंदिर मैं भी बजाउते हैं॥ इंगरेज लोक इसको कञ्च स्मैट्॥

शुषिर

शाम॰। एह प्राचीन यिहूदियोंका एक प्रकारका शुषिर यंत्र विशेष है। एहदे खलेमे "
जोवय" वा "कर्नेट" यंत्रकी न्याँई होता है॥ शारद॰। भारतवर्ष प्रभृति देश प्रचलित
तत यंत्र विशेष है॥ शाकारफीफ॰। एह एक प्रकारका व्याग पाइप अर्थात् वेनलयंत्र
है॥ शामाइ। एह आरव देशका एक प्रकारका शुषिर यंत्र है। इसीको और एक नाम "
नामाइ" है। शारदीयवीणा। शालिशिम्। एह यिहूदी लोकका एक प्रकारका तत
यंत्र विशेष है। इसका आकार त्रिकोण है॥ शुक्तिपद्द। एह प्राचीन हिन्दु लोकका ए
क प्रकारका वाद्य यंत्र विशेष है॥ शृङ्ग। एह हिन्दु लोकका प्रसिद्ध शुषिर यंत्र है। एह
नाना प्रकारका होता है॥ शोफार। यिहूदी लोकोंका शृंगजातीका शुषिर यंत्र विशे
ष है॥ शोफारघ॰। एह यिहूदीयोंका एक प्राचीन तत यंत्र है। सलमन एही यंत्र व्यव
हार करते थे॥ श्रुतिवीणा। एह प्राचीन हिन्दु लोकका एक तत यंत्र विशेष है। सङ्गीत
दर्पणमे इसका उल्लेख है॥ श्यारी। एह एक प्रकारका शुषिर यंत्र है। सप्तदश ख
ष्ट शताब्दीमे इसका प्रचलन था॥ ष॥ षट्ताली॰। एह हिन्दु देशका एक प्रकार
का घन यंत्र है॥ षिकाजो॰। एह एक वाद्य यंत्र विशेष है। जवलिज, मि, घ्वाफोर्ड
साहेव कहिते हैं जो फरासी लोक इसीको "लाकेवय" कहिते हैं और भिन्नविधका

और इसमें केवल शुद्धस्वरग्राम वादित होता है। जिस शलाका द्वारा इसकी वादन क्रिया संपादित होती है, तिसका अग्रभाग एक प्रकार के कोमल पदार्थ से मंडित होता है क्या सूचित है॥ वीरवक० एह हार्पसीकर्ड यंत्र का प्राचीन नाम है॥ स्टेटर् फनिकटिजवू० एह चेम्बर्स साहेब के मत में एक प्रकार का वायुभावी अंगयंत्र है। सो महाकवि होमर प्रणीत इलियड के मध्य में स्टेण्टर नामक जो एक जन वीरपुरुष का विषय वर्णित है, सो इस तरह का भयंकर चीत्कार करता रहता था जो, पचास जने इकट्ठे होकर बड़े उच्चस्वर सें चीत्कार करणे सें भी तिसके शब्द के तुल्य नहीं होता था। अर्थात् ओह बड़ी ही चीक मारता था। सो उसी भीमरवी व्यक्ति के नाम सें इस यंत्र का नामकरण होया है। महावीर सेकेन्दर सा इसी यंत्र वादन द्वारा छे क्रोश दूर सें आपणे सेनागण कों बुलाय सकते थे॥ स॥ सक्रो० एह एक प्रकार का ततयंत्र है। एक अग्र प्रशस्त बांस के संदूख के ऊपर के भाग में कुंभीर चर्म आच्छादन पूर्वक, तिसमें आठ हीज तन्तु योजित करके एह यंत्र निर्माण किया जाता है। सो एक छोटी लाठी द्वारा इसकी वादन क्रिया संपादित होती है। आफ्रिका वासी आषण्टी और फाण्टा नामक जाती के लोक

वाद्यप्रकाशः

सन्तू० (एह एक प्रकार का अरब देश का तत यंत्र विशेष है। इसमें तेरां ही तंतु जो जि न होतियां हैं। और जो ह तन्तूर देश मकी व एगन्न होइ होतियां हैं। और इन सन तंतू के शेष भाग में रस्सी की गोली जैसी बांधी होइ होती है। सो ई सकल गुष्टि का यंत्र के टेढ़े भाग में ऐसे भाव सें संधान होतियां हैं जो, तन्तु को अपनी इच्छानुसार दबाकर रखने के निमित, तिन्ह सन के ऊपर में और नीचे सों चालन कर सकते हैं। अशिरिया देश में भी इस तन्तू का यंत्र प्रचलित था॥ सनोमिटर ० (एह स्वर मात्रा मापक यंत्र विशेष है। मनोकर्ड) में विशेष देखो॥ सरना ० (एह एक प्रकार का शुषिर यंत्र है। दोनों ही छोटा बड़ा नल सें एह बना होता है। इसके छोटे नल के योग सें गीत गाया जाता है और इसकी अपेक्षा कर के बड़े नल द्वारा सुर दिया जाता है॥ सम्फोनिया (एह ग्ये हुदियों के व्यागपार रूप जातियों का द्विनल यंत्र विशेष है। और बाइबेला न्तर्गत दानियेल अध्याय में इसका विशेष उल्लेख है। इतालीदेश के कृषिजीवी लोक इसी को "जाम्पोगना" कहते हैं। सम्बल ० (एह हिन्दु के पास्ते का एक मद्दहोया यंत्र विशेष है। इसका आकार सदृश की न्यांई है। किन्तु स्वर इसका बड़ा मीठा नहीं है॥ सम्बूकस ० (एह

ल्युट यंत्र की न्याँई एक प्रकार का प्राचीन बजाँणेवाला यंत्र है॥ सम्बूका०। एह एक जती
ह देशका तत यंत्रविशेष है॥ सराव०। एह एक प्रकार का मढा हुवा यंत्र है॥ एक ठूठे को
पतले चर्म से आच्छादन करके एह बणाया होया होता है वालक लोक इस को लेकर
खेला करते हैं भारतवर्ष में इस का प्रचलन है॥ सरन्दा०। एह सारद यंत्र के नाम का
अपभ्रंश है॥ सर्णा०। एह एक भारतवर्ष और पारस्य देश में प्रचलित सुषिर यंत्रवि
शेष है। नववाद वा नौवत वाद्य में एह व्यवहृत होता है॥ सर्णाइ। सर्णा यंत्र का
नामान्तर नाम है। सर्दना०। एक अति प्राचीन सुषिर यंत्रविशेष है। एह देखणे में वा
स्सन यंत्र की न्याँई है॥ सर्दनि०। एह वास्सन यंत्र की न्याँई एक प्राचीन सुषिर यंत्रवि
शेष का इताली देश का नाम है॥ सर्मालेट। एह एक प्राचीन सुषिर यंत्र है। इस का
स्वर वास्सन यंत्र की न्याँई है॥ सल्टिरिओ ट चैस्को०। एह वोनाग्नि साहेव के मत में
एक प्राचीन हार्प यंत्रविशेष है। तुरुष्क देश की धनवाली स्त्री लोक के गृह में एह
साधारण रीति से रखा रहता है॥ सल्टिरिओ टे डेस्को। एह हाक ब्रेट् अथवा
सिम्बल नामक घन यंत्र का इताली देश का नाम है॥ सल्टेरिओ टे डे स्को(— एह

एक इतालीदेशका उत्लसिमार जातीका यंत्रविशेष है। किन्तु तिस देशके लोक इ
सीकों जर्मणदेशोत्पन्न कहिते हैं। सो अति प्राचीन कालसें पारस्य देशमै भी इसीन
हाके यंत्रका व्यवहार था। तिसका नाम सान्त्रिर सान्त्रिर) सल्टिरिएम (यिहू
दियोंका उत्ल सिमार जातीका यंत्रविशेष। दानियेल नामक पुस्तकमै इसका उल्लेख है। ग्री
कमै "सल्टिरियन" यंत्र सें इसकी उत्पत्ती है। बोधक्या प्रतीत होता है कि इसीसें अव
का पूर्वदेशका उत्लसिमार जातीका "सान्त्रिर" नामक यंत्र उत्पन्न होया है॥ सल्टि
रियन पार्सियानम् (एह पारस्य देशका हार्प जातीका त्रिकोणिक ततन यंत्रविशेष है॥
सल्टिरियम् (एह ड्रायङ्गल जातीका घन यंत्रविशेष है। किन्तु तिसकी अपेक्षा कर्केर
स्का स्वर मदु है। कोई कोई कहिते हैं जो दोई हस्तिदन्त की वर्णाई होई सलाका कि
म्वा चर्माच्छादित काष्ठ शलाकाके आघातसें इस यंत्र की वजाणेरीती संपन्न करते हैं॥
सल्टिज़ो० (एह एक प्रकारका शुषिर यंत्रविशेष है॥ साइउजम० (एह एक साम
रिक मचाङ्गवा यंत्रविशेष है॥ साकबट (एह ट्रम्पेट जातीका शुषिर यंत्रविशेष है॥
साक्स हर्ण० (एह सामरिक शुषिर यंत्रविशेष है॥ साक्सोफोन् ० (एह एक साम

[illegible] यंत्रे

साम्बु ०(एह एक ततयंत्र है। पश्चिम आफ्रिका में इसका प्रचलन देखा जाता है। वि
शेषकर्के। गिनि० उपकूलवासी लोक एही व्यवहार करते हैं। इसका आकार छोटा
होता है। सानासेल०(एक आविसिनिया देशका सिम्सम् जातीका यंत्रविशेष है।
तिस देशके रवद् व की मंज्जली के मध्य में इसका प्रचन् है तिसे पुरोहित लोक कहि
ते हैं जो) इसके वजाउले हैं उपदेवतान सजाते हैं। प्राचीन मिसर देश मैं भी पु
रोहित लोक उक्त उद्देश मैं अर्थात् उपदेवता को नसाउले वास्ते एही यंत्र वजाया
कर्ते हैं। इसका मिसर देशका नाम "सेशेश है॥ सान्तर०(सिम्बल यंत्र की
न्याई एक प्रकार तुरष्क देशका यंत्रविशेष है॥ सान्तिर०(एह पारस्य देशका
एक ततयंत्रविशेष है। एह आकार मैं और निर्माण मै केवल जरमणके "हाकब्रे
ड" यंत्र की न्याई है। इउरोप देशके पंडित लोक कहिते हैं जे) प्राचीन उल्ल सि
मार यंत्रके साथ इसका अनेक तन्हाका सादृश्य है॥ सान् सिन् वा सान् सिन्०(
एह एक जापान देशका गितार जातीका ततयंत्रविशेष है। इसमें तीन ही मात्र
तार योजित है। चीन देशके "सान् हिन्" यंत्र भी केवल इसी तन्हाका है॥

सान् हिन् ० (एह एक चीन देश का ततयंत्र विशेष है। इसके साथ जापान देश का सान् सिन् वा साम का अनेक सादृश्य है। दोनों के ही शब्द निर्गमन छिद्र नहीं है — दोनों के ही गलादि दीर्घ — दोनों को ही तीन तीन ही तारें और तीन ही दीर्घकोण योजित होते हैं, और दोनों ही अंगुलियों में मजराब लगाय कर इनको बजाया करते हैं। और विशेष करके इनके मध्य में एहि जे, सान् हिन् का आकार गोल और उदर देश नाट नामक एक प्रकार के सर्प के चर्म से बांधा होया होता है, किन्तु सान् सिन् वा साम सिन का आकार चार कोण और धनिपट्टक और तहां के चर्मकटेके आछादित होता है। रूस देश का "वालालाइका" नामक यंत्र का भी आकार प्राय इसी तरहां का है।) सापुलिनय ० (एह एक तुरस्क देश का सामरिक घनयंत्र है। एक अर्ध चन्द्राकार धातव खंड में कितनेक छोटे छोटे घंटे इस्में जोड़ कर दिके एह बणाया होता है॥ साबेका ० (एह काल्दीय जाती का एक ततयंत्र विशेष है। ग्रीक शम्बूका के साथ इसका अनेक तरहां का सादृश्य है॥ सापटेन सार्मेनिका ० (एह एक कुंजीकर्वे युक्त यंत्र विशेष है। १८८८ वर्षाब्द में आन्द्रियास्त श्टीन नामक ने इस यंत्र का आविष्कार किया था॥

सारङ्गी०(एह हिंदुदेशका एक तत यंत्र विशेष है। सारिन्दा०(एह हिन्दु देशका एक
तत यंत्र है॥ सारपेण्ट०(वा सार्पेण्टो०(एह एक सामरीक शुषिर यंत्र विशेष है। इ
सका स्वर कर्कश और गंभीर और एह देखने में कितने क सर्प की न्याई है॥ सालूनि
कूल०(एह एक प्राचीन ग्रीसी और तुरी यंत्र विशेष है। सालम्बूट०(एह मालव
देशोंमें प्रचलित एक शुषिर यंत्र विशेष है॥ सालुमु०(एह एक प्रकार का प्राचीन
ग्राम्य शुषिर यंत्र है॥ सिजदी(एह एक तत यंत्र विशेष है। इसमें चार ही इस्पात की
बनी हुई और एक पीतल की तार योजित होती है॥ सिङ्गारसरबाब०(प्रधान गायक
रबाब है। एह हिन्दु देशका एक ही दो तन्तु वाला तत यंत्र विशेष है॥ सिटोल०(
जल सितार यंत्र है॥ सिरजा(पिप वा सिरजा प्राह०(एह एक लोहेका व ... वा चार
तन्तु वाला प्राचीन तत यंत्र विशेष है॥ सितार०(एह त्रितार यंत्र है॥ सिथारि०(
एह यिहूदियोंका एक तत यंत्र विशेष है। इसमें सात किम्बा नौ तन्तु जोजित होती हैं।
सिथारिस्टीन(एह प्राचीन ग्रीक देशका एक प्रकार विशिष्ट रूप शुषिर यंत्र है॥
सिनिकेमान्त०(एह नुरष्क देशका एक वाद्यलीन जाती का तत यंत्र विशेष है॥ =॥
सितुरा०(एह मुसोनियमके मतमें एक प्रकार का लायार यंत्र है॥ सिनेलेन(एह

३३८

सिम्नस् ०। एह गये हूदियों का एक तत यंत्र विशेष है। इसमें छः तन्त्र से लेकर नौ तन्त्र पर्य्य
न्त जो जित होती हैं। इसमें तुम्बी हीउँ धी गंभीर हो[illegible] तिसे स्वर भी गंभीर होता है। पुन
श्री कि म्वाङ्गगुली द्वारा एह यंत्र बजाई दा है। सिफलेट ०। एह एक ही छोटा सुषिर यंत्र
विशेष है। इंगरेज लोक इसी को "फुटलू" कहते हैं॥ सिफलेट डिपासन् ०।
एह पाशिउ यान् पात्र का यंत्र है। सिवि ०। एह एक मिसर देश का प्राचीन सुषिर यंत्र
विशेष है। पहिले एह नरस्थि द्वारा निर्मित होता था किवल लाया जाता था। किन्तु नलय
छि वा काष्ठ द्वारा भी इसका निर्माण विधि संपन्न हो सकती थी॥ सिमिकन ०। एह
प्राचीन ग्रीक देश का पैंतीस तंतु वाला एक तत यंत्र विशेष है॥ सिमेरिटीयन ०।
एक प्राचीन आनद्ध यंत्र विशेष है। एक खंज काष्ठ से एह निर्मित होता था। प्राचीन ग्री
क धर्म याजक लोक मन्त्र गण लोकों को इकट्ठे हो लेवा ले एक जन्ती द्वारा इसको बजा
उते थे॥ सिम्फोनियन् ०। एफ, एफ कुफ मान का प्रघट किया होया एक वाद्य
यंत्र विशेष है। एह इस प्रकार की शैल से निर्मित जो, इसमें पियानो फुट क्लारिओ
नेट इत्यादि यंत्र का स्वर उत्पन्न हो सकता है॥ सिम्बल वा सिम्बलम् ०।

प्राचीन ग्रीक और यिहूदि देशका एक आनद्ध वा म[illegible]वा यंत्र विशेष है। जे ए
फ. दानिलि साहेब कहते हैं जो, एह मिट्टीका बना हुआ और देखनेमें अंगरेजी के
टेलस्क[illegible]मकी न्यांई होता था॥ सिम्बलजामोर०(हार्पसिकर्ड वा आर्गन यंत्र की
न्यांई एक कुंजीयुक्त यंत्र विशेष है॥ सिम्बलम् ग्रबू सेराट गेजरोन(एह एक वाद्य
यंत्र विशेष है॥ सिम्बलूम०(एह धातु निर्मित सामरिक घन यंत्र विशेष है। एह यंत्र
देखनेमें हमारे देशके करताल यंत्र की न्यांई होता है॥ सिम्बलो आवि कर्जे०(
एह एक तत यंत्र विशेष है। इसीको "प्रटियम" यंत्र भी कहते हैं॥ फ्लोरेन्स नि
वासी फ्रान्सिस्का मिजेटि नामकने एह आविष्कार किया था॥ सिम्बलो एञ्जे
लिका०(– एक प्रकारका हार्पसिकर्ड यंत्र है॥ सिम् हार्मणीकन०(एह काच
निर्मित हार्मणीका यंत्र है। १८१० वर्षाब्द में साझे रहामेन देशका आर्गन यंत्र
का बणाउनेवाला निर्माता॥ सिशोल(प्राचीन मेकस्की देशका एक शु
षिर यंत्र विशेष हैं। इसका प्रकृत अर्थ न जानने से शंखही प्रतीत होता है॥=॥
सितार०(एह प्राचीन और आधुनिक देशका एक प्रकारका वाद्य यंत्र है।=

प्राचीन लोक एक धातव या गिथ्रकोँ ड्रिम्ब की न्याँई टेढा करिके इसको निर्माण करते हैं इ
सनद्दा किंवदन्ती का इसीनद्दा सें परंपराश्रवण करते आए हैं जे, ऐशी नामक देवी का
२ प्र कियाहोया एह यंत्र प्रसिद्ध होयाथा। आधुनिक लोक का एही यंत्र गितार की न्याँई है॥ =
सिस्त्रि ड्रम नितेस (छोटे छोटे घंटा जोडे हुए एक लोहे का वणाया होया घनयंत्र है॥
सिस्त्रुम्॰ (एक प्राचीन वाद्ययंत्र है। ऐशी और ओसिरिस देवता के पुरोहित लोक
एही व्यवहार करते थे। और सिस्त्र शब्द मे देखो॥ सिस्त्रा॰ (एह एक प्राचीन वाद्ययं
त्र विशेष है। और सिस्त्रुम भी एही है॥ सुओबाचूल वा सुयेम (एह इंगरेजी कुट
यंत्र विशेष है॥ सुज॰ (एह जापान देश का घंटा जाति का घनयंत्र विशेष है। फ्रांस
देश का "गिलट्" और जर्मन देश के "ग्लोकेन" यंत्र के साथ इसका वहुत सादृ
श्य लक्षित होता है। इसमे कितनीक छोटी छोटी घंटिका एक ही दंड मे संलग्न
होतियाँ हैं। एह मिसर देश का कप्ट नाम करके संवंधी धर्मावलम्बी लोकों के नि
कट "सासाउरो" नाम से प्रसिद्ध है। सासाउये" नेकसिको देश मे भी इसका प्रच
लन वहुत है। इस प्रकार के दू घंटिका ददताल आमेरिकास्थ पेरू देश मे, तेवान

देशस्थ किलदारव प्रदेशके बौद्ध धर्मीहित लोकके निकट "द्रिलवु" नामसें व्यवहृत
होताहै॥ सुरवाहार०(भारतवर्ष प्रचलित एक प्रसिद्ध आधुनिक कैग्रवका ततयंत्र
विशेष है॥ सुरमंडल वा स्वरमण्डल(एह एक प्रकारका भारतवर्षका ततयंत्र है॥
सुरशृंगार वा स्वरशृंगार(एह हिंदु लोकका एक ततयंत्र विशेष है॥ सुरसोटा०(
एह हिंदुके पासका ततयंत्र विशेष है॥ सुलामाइ(एह आरव देशके पासका
सुषिर यंत्र विशेष है॥ सुलिझ(मलाह जातियोंका एक प्रकारका सुषिर यंत्र है। ए
ह स्वतः सिद्ध, सुतरां और और यंत्रके साथ नहीं वजाउते॥ सेतार०(एह भार
तवर्ष प्रमत्ति देश प्रचलित एक सुप्रसिद्ध आधुनिक पूर्व देशका ततयंत्र है॥ =॥=
भारतवर्षके अति पुरातन और अति प्रसिद्ध कच्छपी वीणाके अनुकरणसें अमीर खुसरू
एही निर्माण कियाथा॥ सेनिकान०(एह प्राचीन ग्रीक देशका एक पैंतीस
तंतूवाला यंत्र विशेष है॥— सेमेनुगो०(एह एक प्रकारका आरव देशका ततयंत्र
विशेष है। एह देखनेमें छोटे तम्बूरे की न्यांई, किंतु इसका तवली तूंवेकी ना होकर
नारिकेलके खोलमें निर्मित होता है और इसमें तारों घोड़ेकी पुच्छके वालका पड़याव

वा:
१२८

137

सो ग्आर व देश के लोक धुनषी करके इसकों वजाउते हैं। सो उक्त देश के फिरनेवाले ग्आर
व देश मे लोक वा भिखारी लोक नर्त्तकी गण को साथ लेकर भ्रमण करने वाले
लोक इसी यंत्र कों वजायकरके गान कर्त्ते और हाडियों कीतन्त्रा से नाचते और कूदते और म
मता ते हैं॥ हेरिनिटू (वा देल्लू आग्र्यानयंत्र है। कानारी पक्षीगण कों इसी यंत्रद्वारा शि
खादते हैं॥ हेलिस ०(एह लुट यंत्र का ग्नीक देशी नाम है॥ हेरोशर ०(एह एक मिसर दे
श का मिस्नुम जाती का यंत्र है। माना सेल मे देखो॥ हेस्कुरयाल्टेरा वा टीर्सिकुरगेर
एह दोनो ही घुट भिन्न एक शुषिर यंत्र विशेष है। इसके एक खूट में पंचम और दूस
रे में गंधारस्वर निकलता है॥ होलामानी ०(एह नल वा काठका वना हुया तुर्क देश
का शुषिर यंत्र विशेष है। सो उक्त देश का माली भि नामक संन्यासी सम्प्रदाय वाले ए
हि व्यवहार कर्त्ते हैं॥ होम ०(एह ब्रह्म देश के पाल्हे का हार्प जाती का यंत्र विशेष है॥
हकलिसिम (एह एक प्रकार का द्विनल यंत्र विशेष है॥ ह्मास ताप्तेन्सीर ०(एह जुस
हार्प यंत्र है। इसी मे देखो॥ ह्यिनेट' वा ह्यिनोटो, (एह एक प्रकार का प्राचीन काल
का सारिका वा कुंजीयुक्त यंत्र विशेष है। इस समय मे इसका प्रचलन नहीं है। इसी
यंत्र का और एक नाम "काउचेड हार्प" है हारदमु ०(एह मलाह जातियों

का एक सुषिर यंत्र विशेष है॥ खरवील्ल० यह हिंदु लोक का एक प्राचीन तत
यंत्र विशेष है॥ह॥ हपट्ट जो येक० यह हवह ताम्राग्र्धान यंत्र है॥ हरणाव० यह
सिंहल देश का एक सुषिर यंत्र विशेष है। सरङ्गाइ यंत्र की न्याई इसका भी पूर्वार्द्ध भा
ग काष्ठ से और अपरार्द्ध भाग पित्तल प्रभृति धातव पदार्थ से निर्मित होता है॥—
हर्डिगर्डि० यह प्राचीन एक देश का साम्बुका वा वार्बिटन यंत्र की न्याई एक प्र
सिद्ध तत यंत्र विशेष है। रजन द्वारा इसका तार मार्जित कि मौज करिके वजाउ
ने से एक प्रकार का वजाने दपीछे से शब्द होता रहता है॥ हर्ण० यह एक प्र
सिद्ध सुषिर यंत्र विशेष है। हिंदु लोक इसी को ही साधारण से शृंग यंत्र कहते
है॥ यह ओवय यंत्र की अपेक्षा कर्के बहुत वजा है, किंतु इसकी न्याई सरल नहीं है।
यह यंत्र देखने मै टेढ़ा है और ओवय की अपेक्षा कर्के घोरतर है, असंपूर्णतर और
कोमलतर स्वर निःसारण कर सकता है। वजाउने के समय मै अंगुलि के प्रक्षेप प्र
णाली केवल ओवय यंत्र की न्याई है। सुतरां यह उससे वजाउणा कठिन, सो इस
मैं भी कठिन वोध होता है॥ हर्णपाइप० जो येलूस प्रदेश प्रचलित एक ही सुषि

र यंत्र विशेष है। एह एक काठ के नल सें बनाया जाता है। सो उसी नल के मध्य दूर-
त्व सें एक एक करके कितने क छिद्र होते हैं और उसके दोनों पार्श्वों में दोनों ही शृं-
ग संलग्न होते हैं। बजाउने वाला फूत्कार योग सें एक शृंग में वायु संचालन करता है
दूसरे में एही वायु बजाउने वाले के इच्छाधीन अंगुलि प्रक्षेप के बजी चतुराई से
अनेक तरह के स्वर मिलकर बाहर निकसते हैं। स्काच देश के एक जाती के नृत्य का भी
नाम हर्णपाइप है॥ हर्पो०। एह हार्प यंत्र का आरबस लरजीय नाम है॥ हलविया०।
एह हिंदु देश का एक मकाजुया यंत्र विशेष है॥ हाइड्रलिकन०। एह प्राचीन मि-
सर देश का एक प्रकार का बाजा होने वाला यंत्र विशेष है। एह केवल वंग देश के पा-
से के सम्प्रशसाव यंत्र की न्याईं है। सुनते हैं इसका भी स्वर पात्र जल से पूर्ण करि-
के बजाउते हैं न। एष्टिनियस नामक कहिते हैं जो द्वितीय टलेमि राजा पर
किति ग्रहर रज्वन काल में आलेक या जान्द्रिया निवासी तेसिवियस का के
या हाया प्रसिद्ध होया है॥ या॥ हाजर०। एह यिहूदि देश का दश तन्नु वाला
त्रिकोणाकार तत यंत्र विशेष है॥ हाटामो०। एह कावारो शब्द के सदृश है उसी

हामारक्तैमियार०(एह पियानोफोर्ट यंत्र है॥ हार्पू॰(एह एक ग्रति प्रसिद्ध वाद्य
यंत्र है। इस्मे सात सें लेकर चोवीस पर्य्यन्त तन्तु जोयित होत्ते याँ हैं। एह यंत्र वहुत
प्रकार का है, जिसके मध्यमे त्रिकोणाकार कोही ग्रधिक देखते हैं। इसमे सात
सप्तक पर्यंत वांधन होसकता है। वांधनेकि चतुराई सें उसी सात सप्तकसे और
चोदां सप्तक का भि कार्य्य संपादित होता है। अब मैंजि नामक उसने इसीमेउौ
र एक अतिरिक्त के वरवरा सप्तक स्थापन किया था। उसीके द्वारा हर का शब्द के
पीछें जो फेर धनी होती सो विलुप्त होजाता है॥ हार्पवेल०(एह एक प्रकार तत
यंत्र विशेष है। चेम्वार्स साहेव कहते हैं जो) वडे ग्रंगुष्ठ मे शला का वांध करके
एह यंत्र वजाउते हैं॥ हार्पसिकर्ड(एह एक धातव तारयुक्त तत यंत्र विशेष है।
कागपत्र द्वारा इसकी वादन क्रिया संपादित होती है और काक पंछी के खंभ को
इस यंत्र को वजाउते है। और मध्यकाल मे इसका वहुत प्रचलन था॥ हार्पी०(हार्प)
हार्पि०(हार्प) इन दोंनो कौं हार्प मे ही देखो॥ हार्पि ज्वल वा ज्वल हार्प(एह
दोनों ही हार्प जोडे हुएका एक तत यंत्र विशेष है॥ हार्पि लुट(एह एक कुंजी युक्त

[illegible]

हार्पु०। फिर देश का हार्प जाति का तत यंत्र विशेष है॥ हार्पि०। एह हार्प यंत्र का जर्मन
देशी नाम॥ हार्पेन झोड़) (हार्पिशुट) मै देखो हार्मनिका। (पियानो फो
र्टे की न्याँई एक वाद्य यंत्र। इसकी धुनी वेहाला यंत्र की न्याँई है। कफमान का कि
या होया एक हस्त निर्मित यंत्र है॥ हार्मनिका०। एक काच निर्मित वाद्य यंत्र है। इ
सका स्वर परिष्कार बोल के इसी तरां नाम होया है॥ १७६२ वर्षाब्द मे बेञ्जामिन
फ्राङ्कलिन नामक ने एही आविष्कार किया था। इसमे जो सकल काच निर्मित
स्वर फलक है उन्हें अंगुलि वा छोटे मुद्गर द्वारा चोट करने से सुन्दर मधुर
स्वर निकसता है। उवूलिउ. सि, यह कोई साहेब कहते थे, जर्मन देश के इसी
प्रकार के एक यंत्र को भी हार्मनिका कहते हैं। इसका आकार नौका की अर्थात बेडी
की न्याँई है। और मध्य देश कि शून्य पोलार। इसी यंत्र मे काच के बदले धातु व स्वर
फलक आपस मे भाव से संलग्न होता है। सरबतो की चित्रशाला मे एक उक्त किस्म
देश का इसी तरह का यंत्र स्थापित है, किन्तु एह वंश निर्मित पतले पतले स्व
र फलक मे एक तंतू वाला आच्छादित हार्मनिका लकानन। एह प्राचीन

भी हार्मोनिका कहते हैं। इसका आकार वेणी की न्याईं है और मध्य देश शून्य
व्यापोलार इसी यंत्र में काच के बदले धातव स्वर फलके अन्योन्य के आपस में
भाव से संलग्न होता है। लखनऊ की चित्रशाला में एक ... देश का इसी तरह
का यंत्र स्थापित है, किन्तु एह वंशाकार पतले पतले स्वर फलक में (चौखाने ते)
कि एक तंदुवा आच्छादित हार्मोनिका का लकानन। एह प्राचीन ग्रीक देश का
एक तंदू वाला तत यंत्र विशेष है। कहा है कि पिथागोरस नामी सदेश में सबसे
पहिलें एहि यंत्र की सृष्टि करी गई थी किन्तु हमारे देश भारतवर्ष में एहि यं
त्र नाम भेद से बहुत काल पहिलें प्रचलित था — महादेव जी का पिनाक यंत्र
जिसका निदर्शन के हेतु बात स्थल है। पिनाक यंत्र से ही हमारे देश के एक तंत्रिका
यंत्र की सृष्टि है। ग्रीस देश के रहने वाला पिथागोरस नामक जिस काल में भा
रतवर्ष में दर्शन शास्त्र शिक्षा करणे में स्थापित किया था उसी समय में ही पिना
क वा एक तंत्रिका का अनुकरण करी के आपणे देश में हार्मोनिका का कानन की सृ
ष्टि करी गई थी॥ हार्मोनिका सिलो ०१ एह भा योग्लि। सिलो यंत्र की न्याईं एक तत यं
त्र विशेष है। इसमें पांच ही चमतन्तु योजित होती है और तिसके नीचे और एक

नं० ३ १२६६ १५ पृ० १८८

वा. ४ 140

हार्म्मोनिमेटार ०(एह स्वर समस्वरों का परिमापक यंत्र विशेष है। हियार्पि ०(
एह हार्प यंत्र का एक प्रसिद्ध नाम है॥ हुडुक, हुडुका वा हुडुक्का ०(एह हिं-
दुदेश का एक ग्राम्य आनद्ध यंत्र विशेष है। सो वंग देश के काहार इत्यादि कों
लोक यां स्त्रियां एही व्यवहार करते हैं। इसका आनुषङ्गिक
इसके साथ बजाउने वाला यंत्र करताल है। सिंहल देश
का उदकी यंत्र भी इसी तरहा का है। हुडुक्का का अपभ्रंश
नाम उदकी है॥ हुयेरा० पुहुरा०(एह आमेरिका का प्राचीन पिरुभीय दे-
श का एक प्रकार का सुषिर यंत्र है। एह पत्थर वा नल द्वारा निर्मित होता है॥
हुये हुयेटल०(एह मेक्सिकीय देश का ड्रम जाती का यंत्र विशेष है। इस
का खोल दो हाथ परमाल वाला होता है एक खंड काष्ठ द्वारा निर्मित और गि-
लकी वर्हि:

